स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी संघर्ष

हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद की पी-एच. डी. उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

1995

-: शोधार्थी :-

वन्दना हीरेकार

एम. ए., एम. फिल.

-: शोध निर्देशक और विभागाध्यक्ष :-

प्रो० शशि मुदीराज डी. लिट्.

हिन्दी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय,

हैदराबाद-500 046 (आं. प्र.)

NAME OF THE RESEARCH SCHOLAR : VANDANA HEEREKAR

DEPARTMENT / CENTRE : HINDI

UNIVERSITY OF HYDERABAD

This is to certify that, I VANDANA HEEREKAR have carried out the Research embodied in the present thesis for the full period prescribed under the Ph.D. Ordinances of the University.

I declare that no part of this thesis was earlier submitted for the award of any Research degree or diploma to any University.

Signature

Date : 5/1/96

5/1/96

(Research Supervisor)

5/1/96

(Head of the Department/ Centre)

(Dean of the School) 8/1/96

DEAN

SCHOOL OF HUMANITIES,

University of Hyderabad.

विषय-सूची

पृष्ठ संख्या

0· प्राक्कथन 1–8

0·1 प्रस्तुत अध्ययन का औचित्य

0·2 प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र

0·3 प्रस्तुत अध्ययन की योजना

प्रथम – अध्याय

1· नारी : संघर्ष, अस्तित्व एवं अस्मिता 1–52

1·1· नारी का जैविक अस्तित्व एवं अस्मिता 3–14

1·2· नारी का मनोवैज्ञानिक अस्तित्व एवं अस्मिता 15–20

1·3· नारी की सामाजिक स्थिति 21–27

1·4· नारी की आर्थिक स्थिति 28–33

1·5· नारी की दार्शनिक स्थिति 33–36

1·6· नारी की नैतिक स्थिति 37–39

1·7· नारी संघर्ष की प्रक्रिया 40–52

1·7·1· संघर्ष और विद्रोह 40–41

1·7·2· संघर्ष और क्रांति 41–42

1·7·3· नारी संघर्ष – अर्थ 42–43

1·7·4· नारी संघर्ष – स्वरूप 43–44

1·8· संघर्ष का प्रस्थान बिन्दु 44–50

1·9· निष्कर्ष 51–52

पृष्ठ संख्या

द्वितीय–अध्याय 53-88

2•0•	हिन्दी कहानी और नारी संघर्ष : स्वातंत्र्यपूर्व संदर्भ	54-57
2•1•	नारी मुक्ति एवं स्वतन्त्र अस्तित्व की कल्पना	57-62
2•2•	जाति, वर्ग तथा आर्थिक स्तर पर नारी–संघर्ष	62-66
2•3•	दैहिक शोषण के विरुद्ध नारी–संघर्ष	66-68
2•4•	देश की रक्षा एवं प्रेम के लिए नारी–संघर्ष	68-71
2•5•	मानव अधिकार प्राप्ति के लिए नारी–संघर्ष	71-73
2•6•	अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए नारी संघर्ष	73-77
2•7•	नारी–उपेक्षा के विरुद्ध संघर्ष	78
2•8•	अन्याय एवं अत्याचार के विरुद्ध नारी–संघर्ष	78-80
2•9•	सम्पत्ति के लोभ से आक्रान्त नारी का मानसिक संघर्ष	81-82
2•10•	अनैतिक मूल्यों के विरुद्ध नारी–संघर्ष	83
2•11•	नारी–संघर्ष का यथार्थ–बोध	84
2•12•	बौद्धधर्म के आडम्बरपूर्ण पक्ष के विरुद्ध नारी–संघर्ष	85-86
2•13•	नारी का भावनात्मक संघर्ष	86-87
2•14•	निष्कर्ष	87-88

पृष्ठ संख्या
89-142

तृतीय - अध्याय

3·0· स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी-संघर्ष : पुरुष सत्ता, शासन और शोषण के संदर्भ में । 90-93

3·1· पुरुष सत्ता, शासन और शोषण के विरुद्ध नारी - संघर्ष : पारिवारिक संदर्भ

3·1·1· पारिवारिक संबंध 93-94
3·1·2· पिता-पुत्री संबंध 94-96
3·1·3· पति-पत्नी संबंध 96-110
3·1·4· देवर-भाभी संबंध 111-112
3·1·5· ससुर-बहू संबंध 113-114
3·1·6· भाई-बहन संबंध 114-116
3·1·7· पुत्र-माता संबंध 116
3·1·8· पोता-दादी संबंध 117

3·2· पुरुष सत्ता, शासन और शोषण के विरुद्ध नारी-संघर्ष : सामाजिक संदर्भ 118-142

3·2·1· प्रेमी-प्रेमिका संबंध 118-125
3·2·2· देह-विक्रय एवं शोषण के स्तर पर 126-127
3·2·3· सामन्ती परिवेश : शोषण का दायरा 127-128
3·2·4· पूँजीवादी परिवेश : शोषण का क्रूरतर दायरा 129-130
3·2·5· नागरिक अधिकार प्राप्ति के लिए नारी-संघर्ष 130-132

पृष्ठ संख्या

3·2·6·	नारी शोषण : सामंतवाद और पूँजीवाद का गठबंधन	132-135
3·2·7·	नारी-संघर्ष कानून और व्यवस्था के संदर्भ में	136
3·2·8·	पुरुष सत्ता : कार्यालयीन परिवेश	137-138
3·2·9·	पुरुष - अत्याचार एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष	138-139
3·2·10·	निष्कर्ष	140-142

-=-

पृष्ठ संख्या
143-179

चतुर्थ-अध्याय

4·0· स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी : संघर्ष आर्थिक संदर्भ 144-145

4·1· आर्थिक शोषण के विरुद्ध नारी : संघर्ष 146-156

4·2· आर्थिक विवशता के कारण नारी का वेश्यावृत्ति अपनाना 156-159

4·3· आर्थिक अभाव के कारण नारी : संघर्ष 159-160

4·3·1· आर्थिक अभाव के कारण अपमान बोध 160-161

4·3·2· आजीविका के लिए नारी संघर्ष 162

4·3·3· आर्थिक अभाव के कारण उत्पन्न मानसिक कुण्ठा 163

4·3·4· आर्थिक अभाव के कारण अमानवीकरण 164

4·4· विषम आर्थिक स्थिति से उत्पन्न सामाजिक संवेदना 165-166

4·5· आर्थिक कठिनाइयों से संघर्ष 166-167

4·6· सीमित आय में गृहिणी द्वारा परिवार का गुजारा 167-168

4·7· आर्थिक अधिकार की पहचान के लिए संघर्ष 169-170

4·8· आर्थिक मुक्ति के लिए नारी संघर्ष 170-172

4·9· कामकाजी स्त्री का संघर्ष 172-174

4·10· आर्थिक स्वतन्त्रता के लिए नयी पीढ़ी का संघर्ष 175

4·10·1· भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित नयी एवं पुरानी पीढ़ी के बीच अंतराल तथा आर्थिक अभाव से उत्पन्न नारी : संघर्ष 176-177

4·11· निष्कर्ष 177-179

पृष्ठ संख्या

पंचम – अध्याय 180 – 221

5·0· स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी – नारी : संघर्ष –
भावनात्मक एवं नैतिक संदर्भ

5·1· भावनात्मक संघर्ष 181 – 182

5·1·1· संघर्ष के पूर्व की मानसिक स्थिति 182 – 184
5·1·2· अस्तित्व के लिए भावनात्मक संघर्ष 184 – 185
5·1·3· अस्मिता के लिए भावनात्मक संघर्ष 186
5·1·4· मुक्ति के लिए भावनात्मक संघर्ष 187 – 188
5·1·5· जिजीविषा के लिए संघर्ष 189
5·1·6· प्रेम पाने के लिए भावनात्मक संघर्ष 190 – 192
5·1·7· मानसिक तनाव से उत्पन्न अलगाव एवं मूक संघर्ष 193 – 194
5·1·8· दाम्पत्य संबंध में अलगाव एवं मूक संघर्ष 195 – 196
5·1·9· पीढ़ियों के अन्तराल के कारण उत्पन्न संघर्ष 197 – 198
5·1·10· प्रेम में अधिकार पाने के लिए संघर्ष 199 – 201

5·2· नैतिक संघर्ष 201 – 202

5·2·1· नैतिक मूल्य बचाये रखने के लिए भावनात्मक संघर्ष 203 – 204
5·2·2· नैतिक मूल्यों को तोड़ती नयी एवं पुरानी पीढ़ी के बीच संघर्ष 204 – 208
5·2·3· झूठी नैतिकता के विरुद्ध संघर्ष 208 – 213
5·2·4· धार्मिक बन्धनों से मुक्ति के लिए नारी संघर्ष 214 – 216
5·2·5· आत्मीयता की खोज में भावनात्मक संघर्ष 216 – 217
5·2·6· शोषण के विरुद्ध भावनात्मक संघर्ष 217 – 219
5·2·7· निष्कर्ष 219 – 231

पृष्ठ संख्या

222-254

षष्ठ - अध्याय

6•0• स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी-संघर्ष-अस्तित्व एवं अस्मिता 223-2

6•1• अस्तित्व के लिए संघर्ष 226-239

6•2• अस्मिता के लिए संघर्ष 239-242

6.3• अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष 243-248

6•4• मृत्यु और जीवन दोनों छोरों से जुड़ा संघर्ष 248-251

6•5• निष्कर्ष 252-254

पृष्ठ संख्या

255 – 292

सप्तम- अध्याय

7·0·	स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी संघर्ष रचनाकार के रूप में	
7·1·	हिन्दी कहानी और स्त्री रचनाकार	256 – 267
7·2·	महिला कहानीकारों का प्रमुख विषय बिन्दु और समस्यायें	270 – 282
7·3·	स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी–नारी संघर्ष रचनाकार पात्र के रूप में	282 – 290
7·4·	निष्कर्ष	290 – 292

अष्टम- अध्याय

8·	उपसंहार	293 – 324
	आधार ग्रन्थ सूची	325 – 339
	संदर्भ ग्रन्थ सूची	341 – 343
	अन्य पत्र पत्रिकायें	343 – 344
	कोश ग्रन्थ	344
	अंग्रेजी ग्रन्थ सूची	345

प्राक्कथन

प्राक्कथन

मानव जाति का उद्भव एवं विकास प्राकृतिक देन है। प्राकृतिक दृष्टि से मानव की शारीरिक संरचना में कुछ भेद है जिन्हें स्त्री और पुरुष की अलग-अलग पहचान और संज्ञा दी गई है। स्त्री और पुरुष का अपने-अपने मानवीय और सामाजिक जीवन पर पूर्ण अधिकार होता है और होना चाहिए जो इस अधिकार से वंचित किया जाता है वह स्वभावत: संघर्ष की ओर अग्रसर होता है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का विषय " स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी संघर्ष" है इस विषय के दो पक्षों का प्रतिपादन आवश्यक है एक, हिन्दी कहानी में नारी संघर्ष दो, स्वातन्त्र्योत्तर परिप्रेक्ष्य। नारी संघर्ष से अभिप्राय समाज में मानवीय अवसर-प्राप्ति से है। स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी बोध और संवेदना के स्तर पर पिछली कहानी से अलग दिखाई देती है। देश की मुक्ति के साथ रचना के स्तर पर नारी की मुक्ति का संघर्ष 20 वीं शताब्दी के आरम्भ से ही जुड़ गया था। इसलिए भारतीय नवजागरण और मुक्ति-संघर्ष का एक मुख्य बिन्दु नारी विषयक चिंतन और सृजन के स्तर पर अभिव्यक्त हुआ। स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में भी

नारी संघर्ष का यह प्रश्न केन्द्र में दिखाई देता है । स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ नारी संघर्ष का यह प्रश्न विशेषकर हिन्दी कहानी में दो स्तरों पर दिखाई देता है पहला स्वयं रचनाकार के रूप में और दूसरा रचना की विषय वस्तु के रूप में । उत्तरशती की हिन्दी कहानी की यह रेखांकनीय विशेषता है कि इस दौर में महिला कहानीकारों की दो पीढ़ियाँ तथा स्वतन्त्रतापूर्व एक पीढ़ी कुल मिलाकर तीन पीढ़ियाँ उभर कर आईं । नयी कहानी आन्दोलन के प्रस्थान बिन्दु के रूप में उषा प्रियंवदा की " वापसी " की चर्चा " नारी अस्मिता " को एक नई पहचान दे रही थी इसके साथ कृष्णा अग्निहोत्री, शशी प्रभाशास्त्री, मन्नु भण्डारी, शिवानी, ममता कालिया, मृदुलागर्ग आदि कई कहानी लेखिकाओं ने सृजन के स्तर पर नारी संघर्ष का एक मोर्चा खोल दिया था । दूसरी ओर रचना की विषय वस्तु के रूप में नारी जीवन की समस्याओं, विड - म्बनाओं, तनावों और दबावों को हमेशा से केन्द्रीय स्थान प्राप्त होता रहा है क्योंकि किसी भी समाज के विकास में नारी-संघर्ष को दो स्तरों पर विवेचित करना प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का उद्देश्य रहा है । प्रथम स्तर पर कहानी-लेखिका के रूप में नारी संघर्ष और दूसरे स्तर पर विवेच्य विषय वस्तु के रूप में । इस प्रकार प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी के संदर्भ में नारी संघर्ष के विविध रूपों का विवेचन किया गया है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का क्षेत्र स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी अर्थात् सन् 47 से लेकर आज तक के लगभग पांच दशकों की नारी संघर्ष की दृष्टि से उपलब्ध कहानियों तक सीमित रखा गया है। स्वतन्त्रता पूर्व जयशंकर प्रसाद, प्रेमचन्द, सुभद्रा कुमारी चौहान, जैनेन्द्र, यशपाल, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी, रांघेय राघव, अमृत लाल नागर, अमरकांत, विश्वम्भर नाथ कौशिक की नारी संघर्ष से सम्बन्धित कहानियों तथा स्वतंन्त्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी साहित्य में आए विभिन्न कहानीकारों मन्नू भण्डारी, मेहरुन्निसा परवेज, सूर्यबाला, चित्रा मुद्गल, कृष्णा सोबती, निरुपमा सेवती, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, राजीसेठ, मृदुलागर्ग, दीप्ति खण्डेलवाल, कृष्णा अग्निहोत्री, सुमति अय्यर, मृदुलागर्ग, अमृता प्रीतम, मणिका मोहनी, शशि प्रभा शास्त्री, मंजुल भगत, प्रभा खेतान, भीष्म साहनी, फणीश्वर नाथ रेणु, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, रवीन्द्र कालिया, महीप सिंह, गंगा प्रसाद विमल, शिव प्रसाद सिंह, संजय, निर्मल वर्मा, संजीव, शिवमूर्ति, कमलेश्वर, सुभाष कुमार, श्री नरेश मेहता, शैलेश मटियानी आदि की कहानियों में विभिन्न रूपों में मुखरित नारी संघर्ष का विश्लेषण किया गया है।

यद्यपि नारी जीवन की दृष्टि से हिन्दी शोध और आलोचना के क्षेत्र में काफी कुछ कार्य हो चुका है तथा हो रहा है। कहानी के क्षेत्र में डॉ॰मधु सन्धु की पुस्तक " साठोत्तरी महिला कहानीकार " मिलती है किन्तु प्रस्तुत प्रबन्ध में समस्या को एक नये कोण से उठाते हुए नयी दृष्टि से अद्यतन संदर्भों को लेकर निम्न लिखित विचार सूत्रों पर काम किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का उद्देश्य नारी को कहीं से भी देश और समाज की मुख्य धारा से काट कर देखना नहीं अर्थात् मैं यह मानकर चलती हूं कि नारी संघर्ष समूचे मानवीय संघर्ष का ही एक हिस्सा है और देश के भीतरी परिप्रेक्ष्य में तथा विश्व स्तर पर जिन संकटों से आज मनुष्य गुजर रहा है यह उसी का प्रतिरूप है किन्तु नारी संघर्ष का अलग से विवेचन करने की आवश्यकता रही है और इसका पूरा औचित्य है। कारण यह कि नारी इस पुरुष प्रधान समाज में एक ही दृष्टि, उपेक्षा भाव और शोषण का शिकार रही है जिसके कारण उसके शोषण की प्रक्रिया वर्ग-समाज के शोषण की प्रक्रिया से अलग और जटिल है। इसीलिए नारी संघर्ष को मानवीय संघर्ष का अंग मानते हुए भी इसका अपना एक विशिष्ट संदर्भ है जिसके लिए स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी बहुत उपयुक्त क्षेत्र प्रस्तुत करती है।

प्रस्तुत प्रबंध आठ अध्यायों में विभक्त है। पहला अध्याय " नारी संघर्ष, अस्तित्व एवं अस्मिता " है जो नारी की विभिन्न स्थितियों एवं नारी संघर्ष की प्रक्रिया को विश्लेषित करता है। प्राकृतिक रूप से स्त्री पुरुष की शारीरिक संरचना में कुछ अन्तर है लेकिन उस अन्तर के मूल्यांकन का प्रयास सदा-सर्वदा सामाजिक, सांस्कृतिक होता रहा है। अतः नारी की वास्तविक शारीरिक संरचना में अन्तर जैविक अस्तित्व स्पष्ट करता है और सदियों से नारी को अपने जैविकी के प्रति हीन भावना जगाकर उसकी मानसिकता

को विकृत किया गया है जिसका अध्ययन मनोवैज्ञानिक स्थिति करती है। नारी संघर्ष को स्पष्टत: जानने के लिए आर्थिक, सामाजिक, दार्शनिक, नैतिक संदर्भ भी विश्लेषित है।

प्रबन्ध का दूसरा अध्याय है "हिन्दी कहानी और नारी संघर्ष" यह अध्याय स्वातन्त्र्यपूर्व प्रमुख कहानीकारों की कहानियों में नारी संघर्ष के विविध रूपों का अध्ययन किया है। भारतीय नारी देश की मुक्ति में अपनी मुक्ति खोज रही थी।

प्रस्तुत प्रबन्ध के तीसरे अध्याय से हम इसके प्रतिपाद्य विषय पर आ जाते है। यह प्रतिपाद्य विषय है "स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी - संघर्ष : पुरुष सत्ता, शासन और शोषण के संदर्भ में" है इस अध्याय को दो उपशीर्षको में रखा गया है पहला, पुरुष सत्ता, शासन और शोषण के विरुद्ध नारी - संघर्ष : पारिवारिक संदर्भ। दूसरा पुरुष सत्ता, शासन और शोषण के विरुद्ध नारी संघर्ष सामाजिक संदर्भ। पारिवारिक संदर्भ नारी के विभिन्न रूपों का पुरुष के विभिन्न रूपों द्वारा शोषण के विरुद्ध नारी संघर्ष का अध्ययन करता है। अर्थात् पारिवारिक स्तर पर पुरुष द्वारा संरक्षण और शासक की भूमिका शोषक में रूपान्तरित होती है और समाज में व्यापक क्षेत्र में आकर यही भूमिकाएँ वृहत्तर रूप धारण करती है अत: इस अध्याय का दूसरा उपशीर्षक सामाजिक शोषण के विरुद्ध नारी संघर्ष का अध्ययन करता है।

चतुर्थ अध्याय स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी संघर्ष आर्थिक संदर्भ विश्लेषित है यह अध्याय आर्थिक समस्याओं से उत्पन्न नारी संघर्ष के विविध रूपों का अध्ययन करता है ।

पंचम अध्याय " स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी नारी - संघर्ष : भावनात्मक एवं नैतिक संदर्भ " है यह अध्याय स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में भावनात्मक एवं नैतिक स्तर पर नारी संघर्ष के विभिन्न रूपों से विश्लेषित है ।

षष्टम अध्याय " स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी संघर्ष अस्तित्व एवं अस्मिता " है । संघर्ष मूलत: सामाजिक होता है। नारी समाज में मानवीय अवसर प्राप्ति तथा अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष करती है । यह अध्याय नारी अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष का विवेचन करता है ।

सप्तम अध्याय " स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी संघर्ष रचनाकार के रूप में " है यह अध्याय स्त्री रचनाकारों का कहानी के क्षेत्र में प्रवेश, विकास तथा उनकी कहानियों में विषय बिन्दु और समस्याओं का परिचयात्मक अध्ययन करते हुए नारी संघर्ष रचनाकार पात्र के रूप में विवेचन करता है ।

प्रस्तुत प्रबन्ध का अन्तिम अध्याय है " उपसंहार " जिसमें इस शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्षों का आंकलन किया गया है ।

अत: प्रबंध के प्रारम्भ से पूर्व .... आभारी हूँ श्रद्धेया प्रो॰शशि मुदिराज जी का जिन्होंने इस प्रबन्ध का निर्देशन कर अपने अमूल्य सुझावों से " समग्रता " में प्रस्तुत करने की सुनिश्चित दृष्टि दी । वस्तुत: जो कुछ भी लेखन कार्य सम्पन्न हुआ है उन्हीं के विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन का परिणाम है । वस्तुत: उनके प्रति हृदयगत आभार को अभिव्यक्त करने में मेरे शब्द सर्वथा असमर्थ है । नारी संघर्ष के प्रति मेरी रुचि को देखते हुए आदरणीय प्रो॰शशि मुदिराज जी ने प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का विषय " स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी संघर्ष सुझाया है ।

इस अध्ययन के लिए मुझे जिन कहानीकारों की कहानियों समीक्षकों एवं विद्वानों के लेखो, पुस्तकों से सहायता मिली उनकी मैं कृतज्ञ हूँ ।

विभाग के सभी विद्वानों, सदस्यों, भैया नरसिंह राव भतीजे प्रमोद, राजेश तथा मित्रों का मैं सादर आभार प्रकट करती हूँ । जिनका सहयोग मुझे प्राप्त हुआ । मैंने अपने विश्वविद्यालय एवं " अन्वेषी " उसमानिया विश्वविद्यालय पुस्तकालयों से सामग्री

संकलित की है । उन सभी पुस्तकालयों के अधिकारियों की मैं आभारी हूँ । मैं अरुण कुमार जिन्होंने इस शोध प्रबन्ध का टंकण कार्य किया है उनको धन्यवाद देना अपना परम कर्तव्य समझती हूँ ।

अंततः अपने माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों की प्रेरणा ही जीवन का सम्बल है और प्रबन्ध का आधार कहने में अतिशयोक्ति नहीं ।

वन्दना हीरेकार

वन्दना हीरेकार

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

प्रथम - अध्याय

नारी : संघर्ष, अस्तित्व एवं अस्मिता

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

नारी : संघर्ष, अस्तित्व एवं अस्मिता

वस्तु जगत में अन्य प्राणियों की भाँति मानव जीवन भी प्राकृतिक देन है। अत: उसका जीवन प्राकृतिक नियमों में बँधा होता है। प्रकृति के माध्यम से ही उसमें चेतना, गति एवं प्रेरणा उत्पन्न होती है।

मनुष्य मुख्यत: प्राकृतिक परिवर्तन से प्रभावित होता है। अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए वह प्राकृतिक नियम, संपदा एवं प्रकोपों को अपनी सुख-सुविधा के अनुकूल ढालने, अपनी शक्ति एवं युक्ति से उसके विरुद्ध संघर्ष करता है। परिणामत: परिवर्तन परिलक्षित होता है।

"मनुष्य का जीवन प्राकृतिक नियमों में बंधा होता है। किन्तु प्रकृति से ही मनुष्य स्वचेता, स्वचालित, स्वप्रेरित प्राणी है। प्राकृतिक परिवर्तनों से वह प्रभावित होता है अपनी शक्ति और युक्ति से उसके विरुद्ध संघर्ष भी करता है। उसका संघर्ष प्राकृतिक नियमन, प्राकृतिक संपदा और प्राकृतिक प्रकोपों को अपनी सुख-सुविधा के अनुकूल ढालने अथवा उपयोगी बनाने के उद्देश्य से होता है। मनुष्य जीवन प्रकृति से ही निरन्तर धर्मी है। इसीलिए शाश्वत है। गतिशीलता निरन्तरता के क्रम को बनाए रखने के लिए परिवर्तन की अपेक्षा रखती है और मनुष्य की चेतना इस अपेक्षा का प्रत्युत्तर देती है। इसी प्रकार मनुष्य जीवन के क्रम की निरन्तरता कभी तो प्राकृतिक परिवर्तन से अभिप्रेरित संघर्ष है। या संघर्ष से प्रतिफलित परिवर्तन है और इस संघर्ष और परिवर्तन की प्रक्रिया का मूल केन्द्र मनुष्य का अपना अस्तित्व है।"[1]

आदिमयुग से ही मानव अपने अस्तित्व को बनाए रखने उदरपूर्ति, आत्मरक्षा एवं संकट आदि के समय संघर्ष करता रहा है। और अपने भावों को व्यक्त करने के लिए उसने अपने मस्तिष्क में भाषा की संरचना की जिसके माध्यम से अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की। अर्थात् सुखद या दुःखद अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की। अतः उसमें बुद्धि का विकास हुआ। वह चट्टानों पर रेखाएँ खींचने लगा। जबकि कला की दृष्टि से ये रेखाएँ सफल नहीं थी। किन्तु उसमें रचना करने की क्षमता को दर्शायी। इससे यह ज्ञात हुआ कि वह जीवन जीने के साथ-साथ कुछ करना भी चाहता है। यही उसकी अस्मिता की पहचान रही। कालान्तर में वह अपनी अस्मिता समाज में बनाने लगा।

---

1. "भाषा" त्रैमासिक पत्रिका : सितम्बर 1982 पृ. सं. 49.

नारी-संघर्ष को समझने के लिए नारी के अस्तित्व एवं अस्मिता से सम्बन्धित विभिन्न स्थितियों को जानना आवश्यक है जिनका हम विवेचन करेंगे ।

1.1. नारी का जैविक अस्तित्व एवं अस्मिता :-

मनुष्य लाखों वर्ष तक अपने को नहीं पहचान पाया । अन्य प्राणियों से स्वयं को अलग करके देखना उसकी विकास-यात्रा का एक महत्वपूर्ण मोड़ था । जैविक स्तर पर तो आज भी मानव-शरीर को पशु-शरीर से अलग नहीं किया जा सकता । चेतना का विकास ही मानव को अन्य प्राणियों से अलग करता है । इसी क्रम में यह भी निश्चितरूप से नहीं कहा जा सकता है कि कब मनुष्य ने नर-देह और नारी-देह के जैविक अन्तर को स्पष्टतः जाना ।

मातृसत्तात्मक व्यवस्था के व्याख्याकार यह स्पष्ट बतलाते हैं कि एक दीर्घकाल तक मनुष्य गर्भधारण की प्रक्रिया में नर और नारी की भूमिका को समझ नहीं पाया था ।

आज के युग में विभिन्न अध्ययन-क्षेत्रों की भाँति मानव-अध्ययन भी महत्वपूर्ण क्षेत्र सिद्ध हो रहा है । मानव-विज्ञान में नारी का अपना क्षेत्र है । विद्वानों ने नारी की समस्याओं एवं स्थितियों पर ध्यान केन्द्रित कर उसका अलग से अध्ययन करना अनिवार्य समझा । नारी की

जैविक स्थिति को समझने के लिए हम उसके जैविक अस्तित्व का प्रथम विवेचन करेंगे । क्योंकि नारी-संघर्ष उसकी विशिष्ट जैविक स्थिति से काटकर नहीं समझा जा सकता । किन्तु यह जैविक स्थिति कितना उसका अस्तित्व बन पायी है और विभिन्न सांस्कृतिक व्याख्याकारों द्वारा कितना इस अस्तित्व को विकृत किया जाता है यह समझने के लिए उसके प्राकृतिक और सामाजिक सांस्कृतिक दोनों रूपों को समझना नारी-संघर्ष के सही मूल्यांकन की ओर अग्रसर होना है ।

दृष्टि-निर्माण में किसी भी प्राणी की व्युत्पत्ति या आविर्भाव की प्रक्रिया को जानना आवश्यक होता है जिसके आधार पर जाति की पहचान की जाती है । प्राणी की व्युत्पत्ति की प्रक्रिया को प्राकृतिक नियमों एवं जीव विज्ञान की सहायता से ही समझा जा सकता है । जैविक विकास के अन्तर्गत "जीवाणुओं द्वारा स्वतन्त्र प्रजनन, जीवों द्वारा अलग-अलग जीवों की उत्पत्ति तथा उनके परस्पर मिलने के द्वारा प्रजनन, जीवाणुओं में यौन विभाजन तथा दो विपरीत जातियों के जीवाणुओं के मिलने से प्रजनन, विशेष प्रकार के जीवाणुओं का निर्माण तथा यौन सम्बन्धों का आरम्भ, यौन जीवाणुओं द्वारा शरीर तथा मन को प्रभावित करने की क्षमता और यौन जीवन को प्रभावित करने वाले तथा यौन जीवन से प्रभावित होने वाले संवेगों का आविर्भाव"।[1] आदि स्थितियों से गुजरना पड़ता है । स्त्री-पुरुष दो भिन्न सामाजिक प्राणी है । इनमें अन्तर लिंग भेद से है । इनका विभाजन मानव जाति में प्रजनन की

---

1. आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में प्रेम की परिकल्पना : विजय मोहन सिंह - पृ. 19.

प्रक्रिया पर आधारित होता है । नारी की शारीरिक संरचना तथा पुरुष की शारीरिक संरचना में कुछ भिन्नतायें होती है । जैविक संदर्भ में नारी के यौन अंगों की बनावट पुरुष के यौन अंगों की बनावट के विपरीत होती है । सीमोन द बोउवार के अनुसार " स्त्री और पुरुष के बीच कुछ मौलिक आधारभूत भेद तो रहेंगे ही उसका कामनात्मक जीवन उसकी संवेदनशीलता और उसको सेक्सुअल दुनिया के स्वाद ही अलग है ।"[1] इस अलग होने पर नारी का अपना जैविक अस्तित्व होता है ।

नारी के जैविक अस्तित्व को नैन्सी चाडो के शब्दों द्वारा समझा जा सकता है । मातायें निःसंदेह नारियाँ होती है क्योंकि माता एक मादा जननी है और ऐसी मादा जो जननी है । उसे अवश्य वयस्क होना चाहिए । अतः अवश्य ही स्त्री होना चाहिए ।"[2] अतः दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि प्रकृति ने प्रजनन के उद्देश्य से प्राणी जगत में नर और मादा का भेद किया और नारी का जैविक अस्तित्व उसके मादा होने में सन्निहित है । नर-नारी के बीच के भेद को मूलभूत रूप में तो प्रजनात्मक स्तर पर समझा जा सकता है ।

---

1. स्त्री उपेक्षिता : पृ. 346.
2. Mothers are women, of course, because a mother is a female parent and a female who is a parent must be adult. Hence must be a women (The Reproduction of Mothering Psychoanalysis and Sociological Inquiry P. 11).

नर का स्वभाव जैविक संदर्भ में अतिक्रमण करने योग्य होता है। नर अपनी सेक्सुअलिटी का ज्ञान परिस्थितियों के बीच करता है। परन्तु मादा की सेक्सुआलिटी प्रत्यक्ष एवं तात्कालिक होती है। नर निरन्तर अपनी काम भावना को लेकर इच्छुक रहता है। और संतुष्ट भी होता है। इसके अतिरिक्त अपनी चाहत और संतुष्टि के बीच दूरी रखता है। नर-मादा को प्यार करता है और आवेग से उसके अंगों का स्पर्श करता है इन प्रणय क्रियाओं द्वारा नर में शुक्राणु अधिक उत्पन्न होते है। नर जैविक शक्तियों को अपने आप में समा लेने का प्रयत्न करता है। इसके विपरीत मादा अपनी जाति के प्रजनन एवं पालन में ही प्रयत्नशील रहती है। शूलैमिथ फैयरस्टोन के अनुसार संतति-निग्रह के आगमन से पूर्व इतिहास में नारी लगातार अपनी जैविकी की दया पर आश्रित रही रज= स्त्राव, रजोनिवृत्ति और स्त्री रोग, संतान को जन्म देने की स्थायी पीड़ा, स्तनपान और शिशुओं की देखभाल आदि प्रक्रियायें उसे अपने भौतिक शरीर को बचाये रखने के लिए पुरुष पर निर्भर बनाती आयी है (चाहे भाई, पिता, पति, प्रेमी, चाचा व्यापक रूप से सरकारी समुदाय के रूप में)।[1]

---

1. The woman throughout history before the advent of birth control were at the continual mercy of their biology. Menstruation, Menopause and female ills, Constant painful child birth, wetnursing and care of infants; all of which made them dependent on male (whether brother, father, husband, lover, or clan, government community — at — large) for physical servival.

The Dialectic of Sex: Schulamith Firestone.

नर-नारी के अस्तित्व के साथ-साथ समय के अनुसार यौविक प्रक्रियाओं में प्राकृतिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से परिवर्तन होता है। नर के पन्द्रह या सोलह वर्ष की अवस्था में पहुँचते ही उसमें शुक्राणु बनने आरम्भ होते हैं। यह शुक्राणु उसके वृद्धावस्था तक बनते रहते हैं। मादा के जन्म के समय अण्डाशय की संख्या अधिक होती है। उसके विकास एवं शरीर के बढ़ने के साथ-साथ उसका गर्भाशय सिकुड़ता जाता है। परन्तु उसकी योनि में कोई परिवर्तन नहीं होता बारह से, तेरह वर्ष की अवस्था में ही मासिक स्त्राव शुरू हो जाता है। और शरीर कमनीय एवं सुडौल हो जाता है। स्त्री की संपूर्ण शक्ति उसके गर्भ में स्थित होती है।

नारी का यौविक जीवन जटिल होता है मासिक स्त्राव के समय हारमोन की ग्रंथियाँ अधिक सक्रिय होती हैं। परिणाम स्वरूप स्त्री अधिक परेशान रहती है इसका कारण मासिक धर्म के समय से पहले एवं बाद में उसका रक्तचाप बढ़ जाता है। सीमोन दबोउवार के अनुसार " किसी को बुखार आता है किसी के पेट में दर्द रहता है या कोष्ठ बद्धता और लीवर में सूजन होती है। गले में खराश, जुकाम-सर्दी शरीर में एक प्रकार की गंध की स्वाभाविक यौविक घटनाएँ घटती रहती हैं। ग्रंथियों की उत्तेजना के कारण स्नायविक दुर्बलता तथा असंतुलन पाया जाता है। केन्द्रीयस्नायु व्यवस्था प्रभावित होती है। जिसके कारण सर दर्द तथा मूड के दौरे अधिक पड़ते हैं और ज्यादा भावुक, ज्यादा नर्वस ज्यादा चिड़चिड़ी हो जाती है। बहुधा गंभीर मानसिक उथल-पुथल भी देखने में आती है। अपने इसी काल में औरत अपने शरीर की पीड़ा को ज्यादा महसूस करती है। शरीर उसके लिए एक पराई वस्तु

और किन्ही अन्य शक्तियों का शिकार लगने लगता है। ऐसा लगता है मानों हर महीने वह अपने बनाए हुए पालनों और खिलौनों को लाल रंग से बहा देती है।"[1] सम्पूर्ण मानसिक तनावों के फलस्वरूप स्त्री को मासिक स्त्राव का होना एक बोझ एवं बीमारी लगने लगती है। इस समय उसका शरीर उसके नियंत्रण में नहीं होता। प्राकृतिक दृष्टि से नर-नारी का अस्तित्व यौन जीवन के विरोध में जाता है जिस पर किसी का कोई नियत्रण नहीं होता सीमोन दबोउवार के शब्दों में "वास्तव में औरत को तरह पुरुष भी मांस पिण्ड ही होता है। उसकी अपनी ग्रन्थियां है। जिनके स्त्राव पर उसका कोई नियंत्रण नहीं होता वह भी अपनी कामना का शिकार बनता है। अत: दोनों को शरीर की विवशता झेलनी पड़ती है।"[2] पुरुष के द्वारा एक बार के सम्भोग से ही करोड़ की संख्या में पुरुषवीर्य से शुक्राणु निकलते है। स्त्री के अण्डाशयों में प्रजनन कोष्ठ, रजअण्ड एवं आन्तरिक रसों का निर्माण होता है। इन आंतरिक रसों द्वारा ही रसायनिक द्रव्य पैदा होते है। जिससे संन्तानोत्पत्ति की संभावनाएँ रहती है। पुरुष के अण्डकोषों की बनावट स्त्री के अण्डकोष की अपेक्षा सरल होती है। दो प्रकार के आवेगों द्वारा स्त्री और पुरुष में यौन आकर्षण होता है। प्रथम प्रकार के आवेग का प्रभाव पुरुष के जननेन्द्रिय पर पड़ता है और वीर्यपात होकर यह आवेग समाप्त हो जाता है। दूसरे प्रकार का आवेग स्त्री-पुरुष के निकट शारीरिक और मानसिक सम्पर्क से उत्पन्न होता है। इसे प्राक्-क्रीड़ा कहा जाता है।

---

1. The Second Sex : Simone de Beauvoir [हिन्दी रूपान्तर]
   स्त्री उपेक्षिता - पृ. 35.
2. The Second Sex: Simone de Beauvoir [हिन्दी रूपान्तर]
   स्त्री उपेक्षिता - पृ. 344.

मौले का कथन है प्राक् क्रीड़ा से यौन उत्तेजना होकर पुरुष जननेंद्रिय में कड़ाई और नारी जननेंद्रिय में स्त्राव उत्पन्न होता है । इन दोनों का आवेग इन्द्रियों में सीमित होकर उन्हें उत्तेजित करना प्रारम्भ करता है । जो रक्तवाहिनीयों को भी प्रभावित करके उनके प्रवाह को बढ़ा देता है । फलस्वरूप पुरुष के सांस का प्रवाह बढ़ जाता है । स्त्री के मुख एवं यौन अंगों पर लाली दिखाई देती है । संभोग के समय स्त्री-पुरुष दोनों का बराबर का योगदान होता है । यक्ष के शब्दों में -- " अण्डकोष में बननेवाले शुक्राणु वीर्यरस का अत्यन्त क्रियाशील भाग होते है । इन्हीं शुक्राणुओं में स्त्री के रज को अंकुरित करने की शक्ति होती है । यह शुक्राणु एक प्रकार का कीट होता है । इसकी सिर, गर्दन और एक लम्बी दुम होती है । इस कीट के सर के भाग में वह केन्द्र स्थित है जिसमें प्राणी के पटु तत्व होते है जो पैतृक गुण सन्तान में आ जाते है ।[1] शुक्राणु जब स्त्री के रजअण्ड की बाहरी दीवार को भेदकर घुस जाता है । और अण्डे में समा जाता है । तत्पश्चात प्रजनन की प्रक्रिया आरम्भ होती है । नारी के रजअण्ड का जीवाणु छोटे बिन्दु के आकार का होता है । यक्ष के अनुसार " अण्डाशयों से निकलकर एक विशेष अवधि के बाद रजअण्ड बाहर आता है । प्रत्येक रजअण्ड तरल द्रव्य पदार्थ की एक छोटी सी गाँठ बन जाता है जो परिपक्व होने पर अण्डाशय की सतह पर आकर फूट जाती है । फूटने पर रजअण्ड तरक कर नली में आ जाता है । अगर रास्ते में ही उसे पुरुष का कोई शुक्राणु

---

1. यौन शास्त्र - यक्ष - पृ. 134.

मिल जाय तो रजअण्ड अंकुरित होकर गर्भाशय की दीवार से जा चिपकता है । जहाँ उसकी रक्षा तथा विकास का प्रबन्ध प्रकृति द्वारा पहले से ही होता है । वहाँ आंतरिक रसों द्वारा शारीरिक क्रियाओं को प्रोत्साहन मिलता है । और गर्भाशय की दीवारें बढ़े हुए रजअण्ड को सम्भालने की तैयारी करती है यदि रजअण्ड अंकुरित नहीं होता तो सब तैयारियाँ बेकार जाती है । और रजअण्ड रक्त में घुलकर मासिक स्त्राव के साथ गर्भाशय से बाहर निकल जाता है ।"[1] स्त्री का मासिक धर्म इस बात का सूचक होता है अण्डाशय से निकला हुआ रजअण्ड अंकुरित नहीं हो सका । सन्तानोत्पत्ति के लिए एक रजअण्ड और एक शुक्राणु की आवश्यकता होती है । एक ही रजअण्ड अंकुरित हो सकता है । अन्य रजअण्ड व्यर्थ सिद्ध होते है । शुक्राणु में रजअण्ड को अंकुरित करने की शक्ति होना अनिवार्य होता है जो शुक्राणु रजअण्ड को अंकुरित करता है । उसी से रजअण्ड परिपक्व होता है अन्य शुक्राणु व्यर्थ सिद्ध होते है । स्त्री एवं पुरुष का सम्बन्ध प्राकृतिक दृष्टि से यौन सम्बन्ध कहलाता है । फ्रायड की यह मान्यता है कि यौन भावना की पहली अनुभूति बच्चों में माँ के स्तनपान, उसकी उष्णता तथा आनन्द से होती है । अतः यौन भावना मनुष्य में नवजात शिशु से ही आरम्भ होती है ।

गर्भावस्था से ही नारी पूर्ण रूप से पुरुष पर आश्रित होती गई । इस प्रजननात्मक भेद के कारण ही बुनियादी श्रम-विभाजन स्थापित हुआ, जो नारी की जैविक स्थिति का सर्वयुगीन सत्य है " प्राकृतिक प्रजनन

---

1. यौनशास्त्र - यश - पृ. 139.

की प्रक्रिया ही लिंग भेद को सीधे प्राथमिक श्रम विभाजन के मूल वर्ग से जोड़ देती है । इसके साथ-साथ उसका अन्तर बतलाने के लिए उदाहरण के रूप में तालिकायें बना दी जाती है ।[1] जैविक अस्तित्व के इस महत्पूर्ण आधारों के होते हुए भी मनोसामाजिक धरातल पर स्त्री-पुरुष का भेद इतना अधिक जटिल होता चला गया है कि उसे किसी भी अर्थ में प्राकृतिक नहीं कहा जा सकता । एक विशिष्ट सामाजिक व्यवस्था में एक विशिष्ट सामाजीकरण का ही यह परिणाम था । स्त्री के शरीर की संरचना एक अलग तथ्य है और उसकी भूमिका को निर्धारित कर देना एक नितान्त ही अलग तथ्य होगा । केटमिलेट ने सत्ता समूह के मूल्य संसार को ही इसके लिए उत्तरदायी बताया है । " मानव के व्यक्तित्व निर्माण में उसके स्वभाव की जटिलतायें सीमाएं यौन संवर्ग के साथ जुड़ी होती है ।"[2] इस उद्धरण से यह स्पष्ट होता है कि नारी की जैविक स्थिति 1. प्राकृतिक 2. सामाजिक सांस्कृतिक दो स्तरों पर होती है । जब किसी व्यवहार को स्त्र्योचित आदि कहा जाता है तो स्त्री का अस्तित्व प्राकृतिक परिप्रेक्ष्य में नहीं बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में अस्मिता पर निर्धारित होता है । इसी अर्थ में सीमोन द्बोउवर का यह वाक्य नयी सार्थकता प्राप्त करता है —

---

1. That the natural reproductive difference between the sexes led directly to the first division of labour at the origins of class, as well as furnishing the paradigm of caste (discrimination based on biological characteristics

The Dialectic of Sex : Schulamith Firestone P. 17

2. Temperament involves the formation of human personality along stereotyped lines of sex category.

(Theories of Sexual Politics : Kate Millett P. 26)

" स्त्री पैदा नहीं होती बल्कि उसे बना दिया जाता है ।" [1] सामाजिक क्षेत्र में स्त्री को मात्र गृहिणी और शिशु पालिका की भूमिका दे दी गई इसलिए " नारी की प्रदत्त सीमित भूमिका उसे जैविक अनुभवों के स्तर पर बन्दिनी रखती है ।" [2] केट मिलेट के इस कथन में नारी की जैविक अस्मिता का रहस्य छिपा है । देह संरचना नारी की नियति नहीं है । मनुष्य केवल देह नहीं है अतः नारी मात्र देह नहीं है । आज तक के मानव इतिहास में यदि नारी को सामाजिक भूमिकाएँ प्रदान करते समय उसकी देह संरचना को केन्द्र में रखा जाता था, तो उन्नीसवी शताब्दी के बाद हुए यांत्रिक प्रगति ने इसे अप्रासंगिक बना दिया है । बीसवी शताब्दी में तो कम्प्यूटर आदि का विकास हो चुका है और शारीरिक शक्ति का अधिक महत्व नहीं रह गया । परिवार नियोजन के उपकरणों ने संभोग और गर्भधारण के बीच के सम्बन्ध को भी समाप्त कर दिया है । नारी के जैविक अस्तित्व को लेकर दुर्बलता, मासिक धर्म, गर्भधारण आदि से सम्बन्धित सारी मान्यताएँ न्यूनाधिक रूप से सामाजिक सांस्कृतिक मिथक सिद्ध हो चुके है । समाज के लिए नारी की कार्य कुशलता के लिए इनसे कोई अन्तर नहीं पड़ता । इसका अर्थ यह नहीं है कि नारी की जैविक स्थिति अब सेक्सुअल नहीं रही लेकिन उसे मात्र एक विशिष्ट मांसपिण्ड करार देकर उसकी अस्मिता एवं नियति को सीमित कर देना गलत होगा ।

---

1. The Second Sex : Simone de Beauvoir [हिन्दी रूपान्तर]
 स्त्री उपेक्षिता : आवरण - पृष्ठ से उद्धृत
2. The limited role allotted the female tends to arrest her at the level of biological experience : Sexual Politics : Kate Millett P.26.

तसलीमा नसरीन के अनुसार स्त्री को दुर्बल कहना उस पर " आरोपित किए गए सामाजिक विशेषण है, स्त्री यदि विवेक - बुद्धि से परिचालित होने और ममत्व या प्यार धारण करने की अधिक क्षमता रखने के कारण हिंसक युद्ध में नहीं कूदती, तो इसका यह अर्थ नहीं कि वह अबला है आदिम युग में स्त्री-पुरुष दोनों नोंच - खसोटकर ही जीव - जंतुओं का मांस खाते थे वहीं भी यह प्रमाणित नहीं हुआ कि स्त्री दुर्बल है, इसलिए वह नोंचकर नहीं खा सकती स्त्री को गर्भवती होना पड़ता है इसलिए गर्भरक्षा के उद्देश्य से उसे कम परिश्रम का भी अभ्यस्त होना होता है, शिकार पर कम जाना पड़ता है, छीना झपटी कम करनी पड़ती है, देहबल की अपेक्षा वह बुद्धि के द्वारा जीवन निर्वाह करती है संतान के प्रति उसमें ममता पनपती है प्यार के सामने वह झुक जाती है, उसमें डूब जाती है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि स्त्री दुर्बल, डरपोक और लाजवंती है ।" [1]

स्त्री और पुरुष दोनों का भिन्न-भिन्न जैविक अस्तित्व होते हुए भी इसके आधार पर किसी एक को श्रेष्ठ और दूसरे को निकृष्ट नहीं कहा जा सकता । यदि सामाजिक विकास के अलग-अलग युगों में पुरुष को श्रेष्ठता और विशिष्टता प्रदान की गई तो इससे वह प्राकृतिक श्रेष्ठ और विशिष्ठ नहीं हो गया । सीमोन के अनुसार " किसी की दी हुई विशिष्टता से कोई श्रेष्ठ नहीं हो जाता क्या काफी नहीं कि हम सब एक साधारण इन्सान है । और अपने-अपने कामों के लिए जिम्मेदार है । स्त्री और पुरुष दोनों ने यह नाटक काफी अर्से तक खेल लिया है ।

---

1. हंस - नवम्बर - दिसंबर - और मत रखो अंधेरे में, देखने दो मुझे - तसलीमा नसरीन - पृ. 76.

हम सभी स्थितिग्रस्त है । अपनी सीमाबद्धता में कैद । प्रामाणिक जीवन इस कैद से छुटकारा पाना है । काल स्त्री और पुरुष दोनों का क्षय करता है । मृत्यु दोनों की होती है । दोनों को एक दूसरे की आवश्यकता होती है और अपनी-अपनी स्वतन्त्रता से दोनों मानवीय गरिमा हासिल कर सकते है ।"[1] अतः नारी के जैविक अस्तित्व को आधार बना कर उसकी सीमा बतानेवाली मान्यतायें एक विशिष्ट सामाजिक सांस्कृतिक युग के दबाव को सूचित करती है । आज आव - श्यकता है कि नारी अपने अस्तित्व जगत में अपनी सहज स्वाभाविक मानवीय गरिमा को पहचाने और हीन माने जाने की मनः स्थिति से अपने को मुक्त करे । यह सच है कि उसका अस्तित्व - जगत एक विशिष्ट ढंग से संचालित और नियंत्रित किया जाता रहा है और परिणाम स्वरूप वह अपनी सहज मानवीय स्वतन्त्रता को पहचान नहीं पायी किन्तु अब उसको अपनी इस क्षति का पता चल गया है । जिनसे उसकी जैविक स्थिति को उसका कारागार घोषित कर दिया गया था । वह एक मानवीय जीवन जीते हुए पुरुष के साथ अपने प्राकृतिक सम्बन्धों का निर्वाह कर सकती है और अपने को सही अर्थ में मान्य भी बना सकती है । अगर उसके जैविक अस्तित्व और अस्मिता में ऐसा अब तक नहीं हुआ तो अब होना आवश्यक है ।

---

1. The Second Sex : Simone de Beauvoir ॥ हिन्दी रूपान्तर ॥
स्त्री उपेक्षिता - पृ. 344.

1·2· नारी का मनोवैज्ञानिक अस्तित्व और अस्मिता :-

पूर्व विवेचन में नारी की दैहिक स्थिति को दो स्तरों पर देखा गया है । 1· प्राकृतिक अथवा तथ्यात्मक दैहिक स्थिति और 2· सामाजिक सांस्कृतिक अथवा मनोगत दैहिक स्थिति । जब कोई व्यक्ति चाहे स्त्री हो या पुरुष अपने शरीर के अस्तित्व का आभास करता है तो फिर वह शरीर उसका अस्तित्वगत सत्य बन जाता है । नारी की शरीर संरचना उसके अस्तित्व के मूल में रहती है । वह अपने शरीर को अपनी भावनाओं का विषय बना देती है ।

स्त्री-पुरुष की शारीरिक संरचना में अन्तर तो प्राकृतिक है लेकिन उस अन्तर के मूल्यांकन का प्रयत्न सदा-सर्वदा सामाजिक सांस्कृतिक होता है । किन्तु शारीरिक संरचना के आधार पर पुरुष का अपने आप को शक्तिशाली मानना और स्त्री का अपने आप को दुर्बल अनुभव करना एक प्राकृतिक यथार्थ से अधिक मनोवैज्ञानिक स्थिति है । तसलीमा नसरीन के शब्दों में " स्त्री को दुर्बल कौन समझते है ? जो कहते है कि स्त्री शारीरिक रूप से दुर्बल है वे गलत कहते है । वे झूठ बोलते हे - आज भी अगर एक नर और नारी शिशु को भरे तालाब में छोड़ दिया तो पहले जिस शिशु की मौत होगी, वह नर शिशु ही होगा यदि नारी शिशु का फेफड़ा या हृदय नर शिशु से ज्यादा शक्तिशाली है, यदि प्रतिरक्षा या जिंदा रहने की क्षमता नारी शिशु में अधिक है तो कैसे एक झटके में यह राय दे दी जाती है कि स्त्री दुर्बल, कोमल, भीरू और लाजवंती होती है ।"[1]

1· हंस : नवम्बर - दिसम्बर 1994 - और मत रखो अंधेरे में, देखने दो मुझे : तसलीमा नसरीन - पृ· 75·

शरीर संरचना के अन्तर को विचार का विषय मानते हुए प्राय: यौवन अंगों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है । यह प्रक्रिया अपने आप में ही एक विशिष्ट मनोविज्ञान की ओर ध्यान आकृष्ट करती है । यह विशिष्टता एक विशिष्ट सामाजिक सांस्कृतिक प्रशिक्षण द्वारा अस्तित्व में आती है । इसी संदर्भ में एनाओकले का कथन है " स्त्री की छुपी योनि उसकी परतन्त्रता, उसकी संवेदनशीलता, उसका आक्रमक न होना आदि बातें उसे पुरुष से बिलकुल अलग करती है । संभोग की स्थिति जिसमें कई स्तर है जैसे एक्साइटमेंट फेज, द प्लेटोफेज और द मैक्सिमम और दरिवुलुशन फेज में भी स्त्री की भूमिका पुरुष से बिल्कुल अलग होती है । पुरुष आक्रमक होता है स्त्री धीरे-धीरे परम सुख की ओर बढ़ती है । पुरुष के तनाव और उसके स्खलन में राह बड़ी चिकनी होती है जबकि स्त्री का तनाव और स्खलन कुछ अधिक समय लेता है ।"[1] मनोविज्ञान शारीरिक विकृतियों का विवेचन मानसिक धरातल पर करता है । फ्रायड का सारा मनोविज्ञान एक विशिष्ट चिकित्सकीय स्थिति का परिणाम है । जिसके अन्तर्गत प्रथम महायुद्ध से प्रभावित रोगी स्त्री-पुरुषों का अध्ययन किया गया था । अत: स्त्री के सम्बन्ध में भी फ्रायड की यही धारणा रही है । फ्रायड को आधार बना कर जिस नारी - मनोविज्ञान का समर्थन किया गया वह प्रारम्भ से ही स्त्री के विषय में यह अवधारणा लेकर चला कि वह पुरुष की तुलना में दोयम (Second) या निम्न है । फिर यह कहना सरल हो गया कि शारीरिक भिन्नता ही मस्तिष्क के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है । कॅरेन हॉरनी ने " स्त्री जननेन्द्रिय की जैविक संरचना को नारी के मस्तिष्क के

---

1. Sex Gender and Society : Annoakley P.P. 100-11

विकास के लिए अत्याधिक महत्वपूर्ण माना ।"[1] जिन स्त्रियों के आधार पर कॉरेन हॉरनी तथा अन्य फ्रायडवादी निष्कर्ष प्राप्त करते हैं वे सब के सब ऐसी रोगिणियाँ थी जो मनोचिकित्सकों के पास इलाज के लिए आती थी । अधिकांश मनोविज्ञान बीमारों के अध्ययन से तैयार हुआ । स्वस्थ व्यक्तियों का अध्ययन उसने नहीं किया । नारी-मनोविज्ञान के बारे में भी यही धारणा रही । मनोविज्ञान का आधार पुरुष को मान लेने से अपने आप ही स्त्री उसकी तुलना में देखी जाने लगी । परिवार में किसी न किसी रूप में पुरुष ही शक्तिशाली होता है । चाहे उसकी भूमिका कुछ भी हो । फ्रायडीय मनोविज्ञान के अनुसार परिवारों में बचपन से ही बेटी की घनिष्ठता पिता के साथ हो जाती है और यह एक प्रकार से उसकी हीन भावना की शुरुआत होती है । परिवार का शासक पिता आन्तरीकृत होकर सदा के लिए काम्य लक्ष्य बन जाता है । परिणाम यह होता है कि वह अपने प्रेमी या पति में भी पिता को ही खोजती है । कॉरेन हॉरनी की मान्यता है । उसका यौनमूलक प्यार भी शासित होने की इच्छा से घुलामिला होता है ।

मानव जीवन में काम-सम्बन्धों का अत्याधिक महत्व होता है । सार्त्र और मार्लोपोन्ती ने कहा था कि अस्तित्व के साथ सेक्स भी सर्व-विस्तृत होता है । याने सम्पूर्ण अस्तित्व में सेक्स की स्थिति व्याप्त है ।"[2] काम सम्बन्धों के परिप्रेक्ष्य में अस्तित्व की ऐसी ही व्याख्यायें

---

1. कॉरेन हॉरनी : फैमिनाइन साइकालोजी - पृ. 37.
2. The Second Sex : Simone de Beauvoir [हिन्दी रूपान्तर] स्त्री उपेक्षिता - [सौजन्य से] - पृ. 38.

होती रही इसीलिए सामाजिक सांस्कृतिक आयाम पूरी तरह से उपेक्षित रह गये। मनोविज्ञान मूलत: सामाजिक मनोविज्ञान होता है। मानव का पहला सत्य है उसका अपने शरीर के साथ सम्बन्ध, यह शरीर सामाजिक और प्राकृतिक दोनों भी है। पुरुष का पौरुष न केवल उसके लिए बल्कि समाज और व्यवस्था के लिए भी अधिक महत्व - पूर्ण मान लिया जाता है। यदि यथार्थ दृष्टि से देखा जाय तो लिंग को एक शारीरिक सुविधा से अधिक महत्व नहीं दिया जा सकता है। सीमोन द बोउवार के शब्दों में " सत्य तो यह है कि प्रकृति से प्राप्त एक शारीरिक सुविधा पर आधारित मानवीय सुविधा पूरी परिस्थिति के संदर्भ में ही महत्व पा सकती है न ही मानवीय इतिहास से परे। मनोविश्लेषक अपना सत्य केवल ऐतिहासिक संदर्भ में ही रख सकता है।"[1] स्त्री की निष्क्रियता का मिथक भी पुरुष दृष्टि द्वारा ही गढ़ा गया। पुरुष के दृष्टिकोण से कामना का अर्थ उत्तेजना होगा। सीमोन ने पहली बार फ्रायडीय और एडलरीय स्थापनाओं का खण्डन करते हुए लिखा - " मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि सक्रिय कामना शक्ति के बदले औरत की उत्तेजना बिल्कुल निष्क्रिय नहीं होती यह सक्रिय और निष्क्रिय का एक अद्भुत सम्मिश्रण होती है। जिसको समझने के लिए हमें गहरी अन्तर्दृष्टि चाहिए।"[2] मनोविज्ञान जीवविज्ञान के आधार पर स्त्री - मनोविज्ञान को परिभाषित करता है। " औरत ही अपनी

---

1. The Second Sex; Simone d Beauvoir [हिन्दी रूपान्तर]
   स्त्री उपेक्षिता : पृ. 41.
2. - वही - पृ. 42.

प्रकृति की परिभाषा अपने भावनात्मक जीवन की प्रवृत्तियों के माध्यम से करती है। वस्तुत: वह इस जगत में अपने शरीर के साथ अवस्थित रहती है। मनोविज्ञान की सारी व्यवस्था इसी परिप्रेक्ष्य पर आधारित है।"[1] नारी की मनोवैज्ञानिक स्थिति को पहचानने के लिए मनो - विश्लेषण के सिद्धान्त एकांगी सिद्ध होते हैं। नारी के सृजनात्मक जीवन के विषय में उनके पास कोई अवधारणा नहीं है। अधिक से अधिक अतीत की पड़ताल करके वर्तमान को कुछ निर्धारित चौखटों में बाँध देना किसी भी प्रकार से निष्पक्ष अध्ययन का आदर्श रूप नहीं माना जा सकता। भविष्य को अस्वीकार करके कोई भी सिद्धान्त पूर्ण होने का दावा नहीं कर सकता। नारी अपने अनुकूलित रूप का अतिक्रमण कर सकती है। एडलर उसे पुरुषोचित कहते हैं। यदि कोई लड़की पर्वतारोहण को अपने जीवन का लक्ष्य चुनती है तो एडलर के अनुसार यह पुरुषों से प्रतिस्पर्धा का परिणाम है। फ्रायड और एडलर ने नारी को पुरुष की सापेक्षता में आँका है यदि नारी चित्र उतारती है, पुस्तकें लिखती है या राजनीति में भाग लेती है तो यह भी हो सकता है कि यह सब वह अपने लिए करती है "इस तथ्य को नकारना और यह कहना कि उसमें पुरुष के प्रति डाह है, मानव इतिहास को गलत करना होगा वस्तुत: मनोविश्लेषण का पूरा विवेचन प्राय: पुरुष मनोविश्लेषकों द्वारा ही किया गया। यह मनो - विज्ञान ही है जिसमें पुरुष की परिभाषा मानव प्राणी के रूप में और

---

1. The Second Sex: Simone de Beauvoir (हिन्दी रूपान्तर)
स्त्री उपेक्षिता - पृ. 38.

स्त्री की परिभाषा नारी के रूप में की गई। जब स्त्री सर्वोपरिता की ओर बढ़ती है तो कहा जाता है कि वह पुरुष की बराबरी करती है।"[1]

नारी की मनोवैज्ञानिक स्थिति और उसके संघर्ष को इसी परि - प्रेक्ष्य में समझा जा सकता है कि अपने लिए मूल्य जगत का निर्माण वह स्वयं करे। इसके लिए आवश्यक है कि उसकी सामाजिक और आर्थिक परिस्थिति को परखा जाय। वस्तुत: सम्पूर्ण परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ही नारी पर कोई सार्थक टिप्पणी की जा सकती है। मनोविज्ञान को मात्र सेक्स मनोविज्ञान बना कर नारी के उस संघर्ष को नहीं समझा जा सकता जो शाश्वत और ऐतिहासिक दोनों "सेक्सुआलिटी ने कभी मनुष्य की नियति परिभाषित नहीं की और न मानव इससे व्यवहार की स्थिति की सम्पूर्णता को परिभाषित करने में अधिक सहायता मिलती है।"[2] इस प्रकार स्त्री पुरुष की शारीरिक संरचना को अधिक महत्व देकर जो भ्रम खड़े किए गए हैं उनका निराकरण सामाजिक तथा आर्थिक आदि दृष्टिकोणों से ही किया जा सकता है।

---

1. The Second Sex : Simone de Beauvoir (हिन्दी रूपान्तर)
स्त्री उपेक्षिता - पृ॰ 43॰

2॰ - वही - पृ॰ 337॰

1·3· नारी की सामाजिक स्थिति :-

वैयक्तिक मनोविज्ञान सामाजिक मनोविज्ञान होता है। वैय - क्तिकता की वैयक्तिक जैविकता भी सामाजिक जैविकता ही होती है। जैविकता के संदर्भ में चाहे डार्विन के सिद्धान्त हों या मनोविज्ञान के सिद्धान्त उन्हें सामाजिकता से संबद्ध करके ही समझा जा सकता है। मनुष्य की मनुष्यता उसके सामाजिक होने में ही निहित है। यही बात नारी पर भी लागू होती है क्योंकि वह अपने विवाहिता एवं माता रूप में परिवार की आधार होती है। परिवार को एक सामाजिक इकाई के रूप में ही स्वीकार किया जा सकता है। परिवार को स्त्री ही सम्भा - लती है और इस प्रकार सामाजिक जीवन को एक दिशा प्रदान करती है। आधुनिक युग में परिवार मूलतः दम्पति और उनकी संतान से बनता है। इसी अर्थ में परिवार की तरह दम्पति को भी सामाजिक इकाई माना जाता है। और इनकी व्याख्या उसी वर्ग और जाति के आधार पर की जाती है। समाज के साथ नारी का पत्नी रूप अधिक जुड़ा होता है। यदि दम्पति अपनी समानता वाले सामाजिक समूहों से जुड़े होते हैं। तो उसका श्रेय पत्नी को ही अधिक जाता है। बाह्यजगत की व्यस्तता के अभाव में वही सामाजिक औपचारिकता में सक्रिय होती है। अपना घर दूसरों को दिखाने की रुचि हो अथवा अपने रूप-प्रदर्शन की पूर्ति हो इनकी प्रासंगिकता समाज में प्रशंसा पाने से ही जुड़ी है। वस्त्र, आभूषण और प्रसाधन सामग्री स्त्री की जिस मानसिकता को जिस प्रकार प्रस्तुत करते है। वह उसकी सामाजिकता को ही पुष्ट करते है।

प्राय: सामाजिक रीति-रिवाज भी ऐसे ही बनाए गए है जिससे स्त्री का अधिक से अधिक आत्म प्रदर्शन हो और साथ-साथ उस पर शासन भी बना रहे । जैसा कि तसलीमा नसरीन ने वशिष्ठ धर्मसूत्र का हवाला देते हुए लिखा है, -- " पिता रक्षति कौमारे, भ्राता रक्षति यौवने रक्षति स्थविरे पुत्रा, न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति इसका अर्थ है कुमारी अवस्था में नारी की रक्षा पिता करेंगे, यौवन में पति और बुढ़ापे में पुत्र ; नारी स्वतंन्त्रता के योग्य नही है | 5/1, 2,2/1, 3,44,45 | पिता, पति और पुत्र के पिंजड़े में नारी को बंदी बनाये रखने का कौशल शास्त्र को खूब अच्छी तरह आता है ।"[1] स्त्री के वस्त्र प्राय: ध्याना - कर्षक होते है क्योंकि उसकी सामाजिक भूमिका की माँग ही यही होती है कि वह आकर्षक दिखे वस्तुत: अब तक की समाज-व्यवस्थाऐं यही चाहती रही है कि नारी अपने को कामवासना के साधन रूप में ही सीमित रखे । नारी मानसिक रूप से ऐसी ढल जाती है कि अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व को उद्घाटित करने के बजाय केवल पुरूष की इच्छाओं की पूर्ति करते हुए धीरे-धीरे अपने को भोग की वस्तु स्वीकार कर लेती है और श्रृंगार तथा रूप प्रदर्शन में आनन्द का अनुभव करने लगती है । इसी क्रम में एक कृत्रिमता भी क्रमश: उसके स्वभाव का अंग बन जाती है उसे भय होता है कि यदि वह सहज रहे तो संभवत: पुरूष उसे पसंद नहीं करेंगे । युगों-युगों से नारी की वेश भूषा अथवा आभूषणों की बनावट ही ऐसी होती रही है जिससे पुरूष की कामुकता संतुष्ट होती रहे ।

---

1. " हंस " - अगस्त 1994 " औरत के हक में - तसलीमा नसरीन - पृ. 34.

मूल्यवान वस्त्रों और आभूषणों को धारण करने की इच्छा एक दिन नारी के वास्तविक रूप को कुचल देती है । नारी अपने को पुरूष की आँखों से देखते-देखते अपनी आँखों से देखना भूल जाती है । परिणाम यह होता है कि नारी की सामाजिक स्थिति और उससे निर्धारित होती चेतना पुरूष की रूचियों द्वारा संचालित होती है । अधिकांश परिवारों में किसी भी लाड़ली छोटी बालिका को देखने से यह ज्ञात होता है कि वह सुन्दर वस्तुओं, आकर्षक वस्त्रों तथा चमकदार वेशभूषा से स्वयं को एकात्म करके यह समझती है कि इसी से उसका असली रूप दीख सकता है । प्रत्येक स्त्री के लिए उसका अपना श्रृंगार एक मूल्य का पद प्राप्त कर लेता है । इसी अर्थ में यह कहा जा सकता है " साज श्रृंगार स्त्री को केवल अलंकृत नहीं करता वह उसकी सामाजिक स्थिति की ओर भी संकेत करता है ।"[1] स्त्री समाज में अपने पति एवं बच्चों के अस्तित्व की पहचान करना चाहती है ।

पुरूष अपने रूप को अधिक महत्त्व नहीं देता वह पुरूष होने के अहं को ही महत्त्वपूर्ण समझता है । समाज में पुरूष अपने से निम्न स्तर की स्त्री को ग्रहण कर सकता है । किन्तु, स्त्री को इसी स्थान पर पतिता कहा जाता है । बर्ट्रेड रसेल का कथन है " पितृसत्तात्मक समाजों में ईर्ष्या की उत्कटता इस डर के कारण है कि कहीं उसकी पत्नी किसी अन्य पुरूष के साथ सम्पर्क के कारण सन्तानोत्पत्ति न कर दे । शिशु, पुरूष के अहं का

---

1. The Second Sex : Simone de Beauvoir

(हिन्दी रूपान्तर)

स्त्री उपेक्षिता : पृ. 233.

प्रसाद है और बच्चे के लिए उसका स्नेह अहं का ही रूप है ..... इसलिए पितृत्व का तथ्य मालूम हो जाने पर स्त्रियों की परतन्त्रता का ही श्रीगणेश हुआ ।"[1] नर-नारी का सामाजिक स्तर पर बातचीत का ढंग बदल जाता है । स्त्री-स्त्री के बीच बातचीत का ढंग भिन्न होता है । स्त्री को स्त्री के साथ मित्रता बड़ी मूल्यवान है - पर यह मित्रता पुरुषों की मित्रता से भिन्न होती है । पुरुष व्यक्ति के रूप में अपने विचारों का आदान प्रदान करते हैं और अपनी व्यक्तिगत रुचि प्रदर्शित करते है, किन्तु स्त्रियाँ अपने स्त्रीत्व की नियति से सीमित रहती है और एक प्रकार से विश्वव्यापी पराधीनता की भावना से बँधी रहती है । वे सबमें सामान्य रूप से मौजूद विश्व का अंश देखती है । आपस में अपनी गुप्त बातें कहती है और भोजन आदि के नुस्खों के बारे में बातचीत करती है । वे उस विश्व का प्रतिरूप बनना चाहती है, जिसकी मान्यतायें पुरुषों की मान्यताओं से अधिक श्रेयस्कर है । समष्टिरूप में वे अपने बंधनों को तोड़ सकती है । वे एक दूसरे को बताती है कि वे सेक्स के प्रति कितनी उदासीन है । इस तरह इस क्षेत्र में पुरुषों के आधिपत्य को वे अस्वीकार करती है । वे पुरुषों की इच्छा और उनके बेहूदेपन से मानों घृणा करती है । वे व्यंग्यात्मक रूप में अपने पति की नैतिक और बौद्धिक श्रेष्ठता की बातें करती है, साथ ही सम्पूर्ण पुरुष-समाज को सामान्य रूप में ।"[2] पुरुष द्वारा निर्मित सामाजिक

---

1. विवाह और नैतिकता : बर्ट्रेंड रसेल - पृ. 16.

2. The Second Sex: Simone de Beauvoir (हिन्दी रूपान्तर)

स्त्री उपेक्षिता - पृ. 240.

संविधान में नारी को समान अधिकार घोषित करने के बावजूद भी उसका समाज में दमन होता गया है । सामाजिक क्षेत्र में लगातार पुरूष द्वारा स्त्री के दमन के विरोध में स्त्री का अपनी सत्ता पुन: स्थापित करना एक प्रयत्न है । पुरूष प्रधान समाज में स्त्री के प्रति अविश्वास की भावना का कारण आज के प्रति स्पर्धा मूलक समाज में स्त्री आक्रामक होती जा रही है । यही स्त्री में सामाजिक स्तर पर एक द्वन्द्व दृष्टि गोचर होता है । इस ओर वह अपनी देह के माध्यम से पुरूष को अपना शिकार बनाना चाहती है और दूसरी ओर सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय होकर एक आदर्श स्थिति प्राप्त करना चाहती है । इस द्वन्द्व के कारण ही स्त्रियाँ अधिकांशत: अविश्वसनीय हो गई है । स्त्री को चाहिए कि वह वास्तविक मुद्दे को स्पष्ट समझे । यदि स्त्री दोहरी चाल का सहारा लेती हो तो उसे पुरूष के विरोध का सामना करना ही पड़ेगा सीमोन दबोउवार के अनुसार " बहुत सी स्त्रियाँ सफलता के लिए पुरूष का सहारा अपने उन्ही पारस्परिक हथियारों से याने शारीरिक समर्पण से लेती है । वो दोनों प्रकार की सुविधाएँ चाहती है । सेक्स एक हथियार है । पुराना जादुई तरीका जिससे पुरूष को मनचाहे तरीके से नचाया जा सकता है । दूसरी ओर वह आधुनिक बराबरी का हक और सम्मान भी चाहती है । यह स्वाभाविक है कि पुरूष इस दोहरी चाल से चिढ़े और अपने हक का बचाव करे ।"[1] इस प्रकार सामाजिक क्षेत्र में स्त्री-पुरूष सम्बन्ध एक द्वन्द्व का रूप ले चुके है ।

1· The Second Sex: Simone de Beauvoir, [हिन्दी रूपान्तर]
स्त्री उपेक्षिता - पृ· 338·

संभवत: यह द्वन्द्व तब तक चलेगा जब तक दोनों एक दूसरे को समान स्वीकार नहीं करेंगे । ये ऐसा सामाजिक दुष्चक्र है जिससे स्त्री और पुरुष दोनों ही आक्रांत हैं । स्त्री स्वाधीन भी होना चाहती है और परम्परा से मिली सुविधाएँ भी नहीं छोड़ना चाहती और जब स्त्री सुविधाओं में रहना चाहती है तो पुरुष यह दावा करता है कि तुम प्राप्त सुविधाओं के दायरे में ही रहो । यदि सुविधाएँ चाहिए तो उसका मूल्य भी देना पड़ेगा । ये सुविधाएँ वस्तुत: एक भ्रम की सृष्टि करती है । प्रत्येक समाज की परम्परा घर-गृहस्थी के उबाऊ कामों का एक काव्यशास्त्र रच डालती है । मातृत्व और शाश्वत नारीत्व के झूठे लेकिन आडम्बरपूर्ण मिथक गढ़ती है । बाल्जाक ने नारी के लिए एक धूर्त पूर्ण छलावा गढ़ने का एक सूत्र प्रस्तुत किया है । "उससे नौकरानी जैसा व्यवहार करो पर उसको समझा कर रखो कि वह महारानी है ।"[1] ये छलावा है । नारी की सामाजिक स्थिति का प्रतीक है ।

रामविलास शर्मा के शब्दों में "पुराना पितृ सत्तात्मक समाज जिसमें उसे गृहलक्ष्मी कह कर वास्तव में गृहदासी बनाया जाता है । तथा उसका आना एक अशुभ कदम माना जाता है । उसे पिछड़ा रहने के लिए बाध्य किया जाता है । इन सबसे मुक्त होना चाहिए । पितृ-सत्तात्मक समाज पूँजीवाद का प्रतीक रहा है जिस प्रकार पूँजीवाद समाज शोषण करता है क्योंकि उसके पास धन है शक्ति है, सारी व्यवस्था उस पर

---

1. The Second Sex : Simone de Beauvoir [हिन्दी रूपान्तर]

स्त्री उपेक्षिता - पृ. 339.

निर्भर है इसी प्रकार पुरुष धन लाता है जिससे गृहस्थी की व्यवस्था चलती है । घर की स्त्री सदस्या धन के लिए उसका मुँह देखती है यही निर्भरता की भावना पुरुष को शासक बना देती है और शोषित करने का भाव पैदा होता है । पूँजीवादी समाज के संस्कार समाज के स्त्रियों, पुरुषों में बहुत गहरे तक पैठे हुए है । उससे मुक्त होना आवश्यक है स्त्री को परिवार एवं समाज में पुरुष के बराबर दर्जा मिलना चाहिए । पढ़ने लिखने का समान अवसर मिलना चाहिए । और पढ़-लिख कर हर स्त्री को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने की ओर प्रवृत्त होना चाहिए । धन या पूँजी ही नियामक होती है, उसका केन्द्र जहाँ होगा शक्ति भी वही होगी और शक्ति शाली सबको दबा सकेगा न आपको दबने की आवश्यकता ही रहेगी । किसी क्षेत्र में किसी दृष्टि से अपने को कमजोर रखना वह शक्तिशाली का मुखापेक्षी होना हमेशा दासता का कारण बनता है । इस स्थिति से नारी को मुक्ति होना चाहिए ।"[1] यहाँ पर नारी की या स्त्री की आर्थिक निर्भरता का मुद्दा उभरता है । आज के पूँजीवादी युग में सामाजिकता बिना आर्थिक आधार के नहीं समझी जा सकती है । स्त्री की सामाजिक स्थिति उसकी आर्थिक स्थिति का प्रतिबिम्ब होती है और इसीलिए यह आवश्यक है कि इसीक्रम में स्त्री की आर्थिक स्थिति की पड़ताल की जाए ।

---

1. "अतएव" अगस्त - सितम्बर 1994 - पृ. 107.

1.4. नारी की आर्थिक स्थिति :-

पूर्व विवेचन में यह स्पष्ट हुआ है कि स्त्री अपने जीवन में विद्रोह एवं जोखिम से दूर रहने की अभ्यस्त हो जाती है। स्त्री और पुरुष का द्वन्द्व एक अन्तहीन बहस का रूप ले लेता है। इस बहस में किसने किसके कितना और कैसा दिया यही बार-बार दुहराया जाता है। सीमोन दबोउवार के अनुसार " औरत कहती है कि उसने अपना सर्वस्व दिया, पुरुष विरोध में कहता है कि औरत ने उसका सबकुछ छीन लिया, स्त्री ने विनिमय सीखा राजनीतिक अर्थव्यवस्था के एक मौलिक सिद्धान्त के अनुकूल ही अपनी कीमत नगण्य पाने पर वह अपने को बुरी तरह ठगी पाती है।" [1] भले ही स्त्री ने सम्बन्धों के नाम पर विनिमय मूल्य सीखे थे। किन्तु ये विनिमय मूल्य समान नहीं होते क्योंकि पुरुष के लिए स्त्री मनबहलाव अथवा सेक्स का साधन मात्र रही है। लेकिन स्त्री, पुरुष के साथ अपने अस्तित्व का औचित्य जोड़ना चाहती है। अर्थशास्त्र की दृष्टि से देखा जाए तो स्त्री और पुरुष का साथ-साथ बिताया गया समय मूल्य का नहीं होता ऊपरी तौर पर भले ही समान लग सकता है। किन्तु पुरुष जो क्षण स्त्री के साथ बिताता है वह अपने कैरियर और आजीविका सम्बन्धी कार्यों में लग सकता था। अतः पुरुष के लिए समय का आर्थिक मूल्य होता है उसके लिए प्रेम के अलावा पैसा, इज्जत और सुख भी जरूरी है। पुरुष का वश चले तो सेक्स के अलावा

---

1. The Second Sex : Simone de Beauvoir [हिन्दी रूपान्तर] स्त्री उपेक्षिता - पृ. 340.

स्त्री के साथ एक क्षण भी न रहे । स्त्री इसी वक्त को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मान कर अधिक से अधिक फायदा उठाना चाहती है । सीमोन दबोउवार के शब्दों में " उसकी हालत तो उस सब्जीवाली की तरह है जो आलू तभी बेचेगी जब खरीददार साथ में शलजम भी खरीदे वह शरीर समर्पित करती ही नहीं जब तक प्रेमी उससे घण्टों बातें नहीं करता या विहार पर न ले जाए । समझौता होता है । वह उस नदी की तरह होती है । जो किनारे का बाँध तोड़ कर बहने लगती है और तब पुरूष को लगता है कि ऐसे प्रेम से तो प्रेम का न होना ही अच्छा है । इस झगड़ों में बहुधा स्त्री अपनी माँग कम भी कर लेती है । किन्तु प्राय: दोहरे तनाव की कीमत पर सन्तुलन आता है । वह सोचती है कि ऐसे शरीर की कीमत महँगी पड़ी ।"[1] इसी अर्थ में प्रेम को तथा स्थूल रूप से स्त्री-पुरूष सम्बन्धों को आर्थिक सम्बन्ध कहा जाता है । इसी पूंजीवादी युग में आर्थिक स्वाधीनता ही वास्तविक स्वाधीनता होती है । स्त्री को चाहे मतदान तथा अन्य अनेक राजनीतिक अधिकार मिल जाए किन्तु आर्थिक स्वाधीनता के अभाव में वह पराधीन ही कही जाएगी । परिवार में स्त्री,पुरूष पर आर्थिक रूप से निर्भर रहती है । मातृत्व या गृहिणी धर्म द्वारा स्त्री को जीवन में सम्पूर्ण परितृप्ति नहीं मिल पाती । आर्थिक रूप से स्वाधीन व्यक्ति ही इस स्थिति में होता है कि वह अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा कर सके । वर्तमान व्यवस्था में नौकरी करना आर्थिक स्वाधीनता के साथ-साथ स्त्री के लिए एक प्रकार से गुलामी ही होती है । समाज में

---

1. The Second Sex : Simone de Beauvoir[हिन्दी रूपान्तर]
स्त्री उपेक्षिता - पृ० 341.

अधिकांश आर्थिक निर्णय पुरुष ही करता है । अर्थशास्त्र के लिए स्त्री के श्रम को सही तौर पर मूल्यांकित कर पाना एक जटिल समस्या रही है । एनओक्ले ने अपने प्रसिद्ध अध्ययन गृहकार्य का समाजशास्त्र (The Sociology of house work) में विस्तार से बतलाया है कि रसोईघर का कामकाज कितना विनिमय (Exchange) मूल्य रखता है जो स्त्रियाँ बाहर कामकाज करती है वे भी गृहकार्य से मुक्त नहीं हो पाती ।

मार्क्सवाद जीवन में आर्थिक समानता को अधिक महत्व देता है । मार्क्सवादी दृष्टि में समाज में अधिकतर समस्याएँ आर्थिक स्थिति को लेकर ही उत्पन्न होती है । आर्थिक अभाव के फलस्वरूप नारी की वैयक्तिक स्वतन्त्रता में बाधा पड़ने लगी और विभिन्न क्षेत्रों में नारी की प्रगति अवरुद्ध होती गयी । 20 वी शताब्दी में स्त्रियों ने आर्थिक क्षेत्र में अत्याधिक प्रगति की है । किन्तु आज भी स्त्रियों को न तो पूरी तरह से संतुष्ट कहा जा सकता है और न असंन्तुष्ट ही । विशेष रूप से पढ़ी-लिखी और बाहरी समाज में रोजगार से जुड़ी स्त्रियाँ अपने आप को बीच की स्थिति में पाती है । विशेषरूप से विज्ञापन एवं फिल्मी दुनिया के क्षेत्र में नारी रोजगार के नाम पर व्यापार की वस्तु बन गयी है । सिगरेट, मोटरकार और अन्य चीजों के विज्ञापन में सुन्दर और आकर्षक लड़कियों को देखा जा सकता है । स्त्रियों को पुरजों, पैकेट, डिब्बे और विलास के सामान की तरह नौकरानी की हैसियत से पेश करना मनुष्य की काम भावना को विकृत करना ही माना जा सकता है । सिनेमा, इश्तहारों, अखबारों में स्त्री को जिस

तरह पेश किया जाता है उसका बुरा प्रभाव समाज पर पड़ता है । स्त्री को नगण्य और तुच्छ बनाने के साथ-साथ विज्ञापन उत्तेजना और हताशा की भावना पैदा करते हैं । विज्ञापन में रेफ्रीजरेटर और प्रेशर कुकर के साथ स्त्री को दिखाया जाता है तो उससे इस ख्याल को बढ़ावा मिलता है कि स्त्री भी एक ऐसी " वस्तु " है जिसको मालिक चाहिए । यही ख्याल आगे चल कर स्त्री को खरीद-फरोख्त की चीज़ बना देता है । विज्ञापन में स्त्री को खास कामों रसोई बनाते, सिलाई करते, चीज़े खरीदते दिखाए जाने का तात्पर्य यह है कि एक भोग की वस्तु के रूप में उसका प्रतीक बनाया जाना । पुरुष, स्त्री को इच्छानुसार खरीदी करता है । अत: स्त्री को पुरुष के खर्च करने की क्षमता का प्रतीक बनाया जाता है । आज की सुन्दर स्त्री विज्ञापन का साधन बन गई है । इसके साथ-साथ परिवार में बच्चे, बूढ़े और नवयुवक भी खरीद फरोख्त की चीज़ बन गए हैं । आज की प्रति स्पर्धा मूलक फिल्मी दुनिया में स्त्री द्वारा प्रतिस्पर्धामूलक शारीरिक प्रदर्शन किया जाता है । इसका उद्देश्य अधिक से अधिक धन एवं यश अर्जित करने से है । नौकरी करने वाली स्त्रियाँ यदि विवाहित है तो उनकी कमायी जेब खर्च का पर्याय होती है । और यदि वे अविवाहित है तो पूरी कोशिश विवाह बाजार में एक अच्छा पति खरीदने के लिए पर्याप्त धन जमा करने की होती है । आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर स्त्रियाँ भी मानसिक, सामाजिक और नैतिक बराबरी का दावा नहीं कर सकती यही नारी की विडम्बना है । नारी स्वतन्त्रता से तात्पर्य नारी को जीवन में बेहतरी के मौके मिले और उनका उपयोग करने की क्षमता से है ।

परम्परा से प्राप्त नारीत्व की परिभाषाओं से मुक्त होकर ही वह अपनी पहचान पा सकती है । किन्तु यदि स्त्री निरन्तर श्रम पर और रोज़गार पर ध्यान दे तो उसे मर्दाना कहा जाता है और यदि वह अपने श्रृंगार का पूरा ख्याल रखे तो कहा जाता है कि स्त्री अन्ततः स्त्री ही रहती है । किसी अन्य शहर में बदली होने पर पुरुष के लिए यह सरल होता है कि वह किसी धर्मशाला या होटल में रह ले स्त्री चाहे कितनी बड़ी अधिकारी क्यों न हो उसे अपने लिए विशेष व्यवस्था करनी होती है । यदि आज स्त्री को स्वभावतः आत्ममुग्धा कहा और माना जाता है तो वह उसके संस्कारों में अपने परिवार में अपनी माँ, बहनों और अन्य स्त्रियों से वह आरम्भ से ही प्रेरणा पाती है इसलिए आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होने के बाद भी वह सुन्दर दिखने और पुरुष के लिए काम्यवस्तु होने की इच्छा को छोड नहीं पाती । स्त्री के लिए यह विवशता होती है कि वह आर्थिक दृष्टि से पुरुष की भूमिका निभाए और घर में स्त्री की भूमिका को जिए । " एक ही समय में स्त्री और पुरुष दोनों की भूमिकाओं में जीने के कारण वह अपने काम को कई गुना बढ़ा लेती है नतीजा होता है थकान और ऊब ।" [1] आर्थिक अभाव के कारण वेश्याओं को प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है स्त्रियों की आर्थिक स्थिति उनके लिए जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक स्थितियों का ही एक हिस्सा होती है । पुरुष प्रधान समाज में उनकी स्थिति पुरुष की सापेक्षता से ही आकार ग्रहण करती है और सार्थकता भी पाती है । आर्थिक स्थिति का निर्धारण पुरुष समाज ही

1.

The Second Sex : Simone de Beauvoir [हिन्दी रूपान्तर]

स्त्री उपेक्षिता - पृ. 321.

करता है । परिणाम स्वरूप स्वतन्त्रता का भ्रम पालती हुई कई पढ़ी-लिखी और रोजगार करती हुई स्त्रियाँ भी वस्तुत: परतन्त्रता के अनुभव जगत में छटपटाती रहती हैं प्रभाखेतान के शब्दों में वह अन्या है यहीं पर आवश्यक हो जाता है कि हम स्त्री की स्थिति की पड़ताल दार्शनिक संदर्भ में भी करें ।

1.5. नारी की दार्शनिक स्थिति :-

स्त्री की दार्शनिक स्थिति मुख्यत: उसकी ऐतिहासिक और सामाजिक स्थितियों के परिवर्तन के अनुपात में परिवर्तित होती रही है । प्रख्यात भारतीय विद्वान डॉ॰देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय ने अपने युगान्तर - कारी पुस्तक " लोकायत " में " गौरी " शीर्षक अध्याय के अन्तर्गत इसे भारतीय परिप्रेक्ष्य में समझाने की सफल चेष्टा की है । पशुपालक अर्थ व्यवस्था ही पुरुष की श्रेष्ठता का आधार थी । पशुपालक सामाजिक संघटन पितृसत्तात्मक होता था । उन्हीं के अनुसार " पुरुषों के हाथ में निश्चित रूप से आर्थिक सत्ता पहली बार तब आई जब जानवरों को पालतू बनाना शुरू किया । यह कार्य हमेशा से शिकारियों का कार्य समझा गया और ये तब शुरू हुआ जब जनजातियाँ विकसित होते-होते पशुपालक समाज में परिवर्तित होते गये ।"[1] इसी संदर्भ में ऋग्वेद की पुरुष सूक्त का केन्द्रीय महत्व है । यद्यपि डॉ॰राधाकृष्णन आदि विद्वानों ने पुरुष को एक अलिंग परमतत्व के रूप में देखा है । किन्तु यह आवश्यक है कि पुरुष के

---

1. लोकायत - देवी प्रसाद चटोपाध्याय - पृ॰ 192.

शाब्दिक अर्थ को न भुला जाए । डॉ॰चट्टोपाध्याय ने स्पष्ट बतलाया है कि इस सूक्त में ब्रह्मन् को आदि पुरुष के रूप में देखा गया है । परवर्ती वैदिक साहित्य में ही किसी सीमा तक स्त्री को महत्ता प्राप्त हुई क्योंकि कृषि प्रधान सभ्यता का आरम्भ हो चुका था । विद्वानों ने कृषि को मातृ सत्तात्मक व्यवस्था से जोड़ा है । स्पष्टतः भारत में वैदिक और अवैदिक परम्परा का द्वन्द्व रहा और डॉ॰ चट्टोपाध्याय अवैदिक परम्परा को लोकायत से जोड़ दिया । कृषि को स्त्रियों का अधिकार माना गया और बाद में परवर्तीकाल में स्त्रियों की सत्ता बहुपत्नी विवाह पद्धति द्वारा धीरे-धीरे हटती गई । प्रस्तुत विवेचन में स्त्रियों की दार्शनिक स्थिति आदिकाल से चले आ रहे उपर्युक्त शक्ति संघर्ष के परिप्रेक्ष्य में समझी जा सकती है । अतः दूसरे शब्दों में स्त्री की स्थिति सदा से ही अधीनस्थता की रही है । यह अधीनस्थता स्त्री का अस्तित्व रह गयी । चाहे जैविकीस्थिति हो या सामाजिक, आर्थिक स्थिति हो बिना अधीनस्थता को केन्द्र में रखे स्त्री को समझा ही नहीं जा सकता और यही बात उसके दार्शनिक स्थिति के बारे में भी लागू होती है ।

स्त्री के अस्तित्व को दार्शनिक संदर्भ में एक विशिष्ट परिवेश में ही समझा जा सकता है । स्त्री को अस्तित्ववाद की दार्शनिक शब्दा - वली में अन्या कह कर समझा समझाया गया । मार्क्सवादी दर्शन में शोषक और शोषित का रूपक प्रचारित हुआ । अन्य दर्शनों में भी भाव - वादी तथा उसके विपरीत भौतिकवादी शब्दावली का उपयोग किया गया । सामाजिक संरचना में यदि स्त्री के देवीरूप या गुलाम का मिथक प्रचारित हुआ तो उसे भी ठोस स्थितियों की विवेचना से ही समझा जा

सकता है । ये दोनों स्थितियाँ स्त्री की पराधीनता की सूचक रही हैं । सामाजिक संरचना में अधीनस्थता रहते हुए भी स्त्री की जिम्मेदारी बराबर मानी गई । अपनी स्थिति के लिए स्त्री को उसकी जिम्मेदारी से मुक्त नहीं किया जा सकता क्योंकि एक तो उसने अधिकांशतः उन स्थितियों को स्वयं स्वीकार किया और दूसरी ओर आत्मपीड़ा से उपजा द्वेष उसमें अन्य स्त्रियों की तुलना में आत्महीनता का भाव पैदा करता रहा । न तो स्त्री को गुलाम कह कर नकारा जा सकता है और न देवी कह कर माना जा सकता है क्योंकि वह पूरी मानवता का आधा हिस्सा है इतिहास के किसी पड़ाव पर मानव समाज के लिए यह शायद जरूरी भी रहा होगा कि स्त्री मात्र मातृत्व का दायित्व वहन करती रहे किन्तु अठारहवीं शती के बाद यह स्वीकार करना अनैतिक और मानव विरोधी ही कहा जा सकता है ।

दार्शनिक दृष्टि से देखा जाए तो स्त्री की परिभाषा उसकी देह रचना को केन्द्र में रखकर की गई । सारी भाववादी दार्शनिकता उसे अंततः गर्भ या गर्भाशय में घटा कर रख देती है । जब स्त्री की प्रशंसा में उसे शाश्वत मातृत्व से मंडित किया जाता है तो प्रकारांतर से उसकी देह रचना ही उसके केन्द्र में होती है । भारत में देवी या दुर्गा के सारे मिथक उसे जगत जननी या जगतमाता से सम्बोधित करते हैं । कुलमिला कर स्त्री के माता रूप को ही प्रधानता दी गई है और मातारूप सगर्भ होने का दूसरा नाम है ।

धार्मिक दर्शन में तो स्त्री को पुरुष की सापेक्षता में ही परिभाषित किया गया है । ईसाई धर्म में उसका निर्माण आदम की एक अतिरिक्त हड्डी से हुआ माना जाता है और अन्य धर्मों में भी पुरुष ही प्रधान रहा है । सीमोन के अनुसार " इसका अर्थ यह है कि वह अनिवार्यतः पुरुष के लिए भोग की वस्तु है और इसके अलावा और कुछ भी नहीं । वह पुरुष के संदर्भ में ही परिभाषित और विभेदित की जाती है । वह आनुषंगिक है, अनिवार्य के बदले नैमित्तिक है, गौण है । पुरुष आत्म है निःश्रायी है । वह पूर्ण है जबकि और बस अन्या है ।"[1] अर्थात् यही स्त्री की दार्शनिक स्थिति कही जा सकती है । अतः स्त्री की स्वयं के प्रति दार्शनिक स्थिति एक गौणता की स्थिति को स्वीकार करने में ही नीहित रही है । स्त्री सृष्टी के लिए अनिवार्य बनी रही एक साथ अनिवार्य और अनावश्यक होने के विपरीत अनुभवात्मकता उसके व्यक्तित्व को कुचलती रही और वह दर्शन के प्रधान जगत से लगभग छटती गई । भारत में गार्गी, मैत्रेयी के नामों के साथ-साथ कुछ कथाएँ ऐसी मिलती है, जिनमें इसके द्वारा किसी पुरुषों से प्रश्न न पूछने का आदेश है । परिणामतः आगे चल कर धीरे-धीरे स्त्री दर्शन के अध्ययन के लिए अक्षम और अपात्र घोषित होती गई । यही अक्षमता और अपात्रता ही सभी संस्कृतियों में नारी की दार्शनिक स्थिति रही है । अब हम स्त्री की नैतिक स्थिति का विवेचन करेंगे ।

---

1. The Second Sex: Simone de Beauvoir (हिन्दी रूपान्तर)
स्त्री उपेक्षिता - सीमोन द्बोउवार - पृ. 25.

1·6· नारी की नैतिक स्थिति :-

नैतिकता का आधार वैयक्तिक स्तर पर निर्मित होता है । नैतिकता के मूल में औचित्य और अनौचित्य सम्बन्धी धारणाएं होती है । नारी की नैतिक स्थिति किसी विशिष्ट ऐतिहासिक पड़ाव पर उपर्युक्त धारणाओं द्वारा ही गढ़ी गई । पितृसत्तात्मक व्यवस्था में वैयक्तिक सम्पत्ति की अवधारण और वंशानुगत स्वामीत्व का वैचस्व रहा । इसके लिए यह आवश्यक था कि गर्भाधान और संतान-उत्पत्ति की सहज नैसर्गिक क्रियाओं को पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्थाओं के अनुसार वैधता प्रदान की जाए । विवाह के आठ प्रकार में ब्राह्म, देव आदि को उत्कृष्ट घोषित करना इसीलिए था । पिता द्वारा कन्यादान की प्रथा भी पुरूष दृष्टि को प्रमाणित करती है ।

नैतिकता समाज द्वारा प्रतिष्ठित अच्छाई एवं बुराई पर निर्भर करती है । मंगल एवं अमंगल की भावना व्यक्ति के सुख तथा दुख से जुड़ी होती है मनुष्य को कुछ ऐसी वस्तुएं या व्यक्ति पसंद आती है जिनसे उसे आनन्द प्राप्त होता है । उन्हें वह स्वीकार करना चाहता है किन्तु पूर्ण रूप से स्वीकार करने में संकोच अनुभव करता है । अत: इसी पसंद एवं नापसन्द से भिन्न एक नैतिक भावना की व्युत्पत्ति होती है । यही भावना सामूहिक स्तर पर एक सामान्य चेतना का रूप धारण कर समाज विशेष की नैतिक धारणा के रूप में विकसित होती है ।

समाज में मानव द्वारा कुछ ऐसी चीजे़ पसन्द की जाती है जिन चीज़ों को समाज स्वीकृति नहीं देता। मनुष्य द्वारा पसन्द समाज द्वारा नापसन्द के अन्तर के कारण नैतिक द्वन्द्व आरम्भ होता है नैतिक चेतना से मुक्त व्यक्ति अपनी इच्छाओं के अनुसार अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता है किन्तु समाज द्वारा स्वीकृति से सहमत या असहमत होता है।

मनोवैज्ञानिक फ्रायड के विचार में नैतिकता को सामाजिक स्वस्थ से सम्बन्धित स्वीकारते हैं। नैतिक मूल्यों का निर्माण समाज की मानसिकता स्थिति एवं आदर्श समाज की कल्पना को केन्द्र में रख कर किया जाता है। अतः नैतिक मूल्य सामाजिक मूल्य होते हैं। अपने-अपने स्वभाव से रूढ़ होते है तथा मानव मन को रूढ़िवादी बनाते हैं। "मनुष्य प्रवृत्तियों का समूह है और कोई भी शुद्धतावादी नैतिक मूल्य उसे प्रवृत्तियों से सर्वथा पृथक अस्तित्व नहीं प्रदान कर सकता।"[1] ऐसे प्रेम नैतिक नहीं कहा गया जो केवल यौन भावना से युक्त होता है। विजय मोहन सिंह के अनुसार "प्रेम तथा नैतिकता को जोड़ने वाली अवस्था परिपक्वता है। एक परिपक्वता व्यक्ति ही पूर्ण प्रेम करने में सक्षम होता है तथा एक व्यक्ति की परिपक्वता में निश्चित रूप से नैतिकता का पूर्ण विकास भी निहित है। साथ ही प्रेम को नैतिकता

---

1. I don't cudgel my brain much about good and evil but I have not found much good in average human being. Most of them are in my experience 87% - 80% whether they loudly proclaim this or that ethical doctrine or none at all - Freud, In a letter to Oscarphisler, Oct. 9. 1918

से पृथक करनेवाली मनोवृत्ति उसके साथ जुड़ी हुई पाप की भावना है । पाप निश्चित रूप से अनैतिक है और प्रेम इसलिए पाप है कि उसमें यौन भाव सन्निहित है । मानवीय प्रेम भी इसी कारण पाप तथा अनैतिक है । केवल ईश्वर-प्रेम पाप या अनैतिक नहीं है । क्योंकि वह यौन भावमुक्त है ।" [1]

भारत में नैतिकता सामाजिक संरचना पर आधारित रही है । पुरुष के लिए भिन्न नैतिक मूल्य तथा स्त्री के लिए भिन्न नैतिक मूल्य निर्धारित किए गए । भारतीय दर्शन एवं धर्म के आधार पर समाज में नारी की पवित्रता, कौमार्य एवं सतीत्व पर अधिक बल दिया गया है । नारी को नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिए पुरुष के आधीन होना पड़ा ।

महाभारत काल में द्रौपदी के पाँच पति होने को नैतिक माना गया है । किन्तु रामायण काल में स्त्री को एक से अधिक पति की कल्पना मात्र करना भी अनैतिक माना गया है । अतः प्रत्येक युग में सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ स्त्री की नैतिक स्थिति में भी परिवर्तन होता रहा है ।

---

1. आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में प्रेम की परिकल्पना : विजय मोहन सिंह - पृ. 53.

1·7· नारी संघर्ष की प्रक्रिया :

1·7·1· संघर्ष और विद्रोह :-

संघर्ष, विद्रोह का एक प्रकार है । संघर्ष अमूर्त एवं अस्पष्ट होता है । विद्रोह नकारात्मक होता है । विद्रोह मानव का प्राकृतिक गुण है । गिरिराज शरण के अनुसार -- " विद्रोह की भावना मानव-स्वभाव में नैसर्गिक रूप में विद्यमान है । मनुष्य के मन में नित नई आशा आकांक्षाएँ जन्म लेती है । उनकी परिणति या तो उनकी अपूर्ण रह जाने पर एक भयंकर ज्वालामुखी बाहर फूट पड़ता है । जो समस्त सामाजिक चेतना और चिंता को अपनी लपटों से झुलस कर रख देता है परिणाम स्वरूप आदमी, आदमी से विद्रोह कर बैठता है । शोषित-शोषक के प्रति बेटा बाप के प्रति, नौकर मालिक के प्रति और प्रजा राज्य के प्रति विद्रोह का बिगुल बजा देती है । जमकर संघर्ष होता है । अभी विद्रोह का इतिहास सदा से इसी प्रकार दोहराया जा रहा है, क्योंकि सामाजिक परिवर्तन और विकास का आधार संघर्ष ही हुआ करता है । विद्रोह का मूल कारण असंतोष, असंतोष अर्थात् दमित आशाओं इच्छाओं का प्रतिफल "[1] होता है । विद्रोह की मानसिक स्थिति अधिकारों को पाने के लिए संघर्ष द्वारा आरम्भ

1· विद्रोह की कहानियाँ : गिरिराज शरण - आवरण पृष्ठ से उद्धृत

होती है निरन्तर संघर्ष द्वारा विद्रोह सफल हो सकता है । मानव की सहनशीलता की सीमा पार होने पर विद्रोह प्रारम्भ होता है । विद्रोह न्याय की माँग करता है । चन्द्रभान रावत का कथन है - " विद्रोह की स्थिति केवल भौतिक स्थिति नहीं होती, विद्रोह मूल्यों में भी होता है वे मूल्य जिनको अपरिवर्तनीय कह दिया जाता है जिनका सम्बन्ध मानवेतर मूल्य से जोड़ दिया जाता है । चाहे व्यक्त रूप में चाहे परोक्ष रूप में उसको तोड़ना विद्रोह मानस के संकल्प का हिस्सा होता है । विद्रोह का साकार रूप स्वतन्त्र होता है । मनुष्य का जीवन परिवर्तनशील होता है मनुष्य समाज में नित्य नया परिवर्तन चाहता है । मानव जीवन का विकास परिवर्तन द्वारा संभव होता है । डॉ॰नरेन्द्र मोहन के अनुसार - " मनुष्य जब दासता की मनोवृत्ति से उभरने के लिए प्रयत्नशील होता है और सामान्य की मनोभूमि पर अपने अधिकारों के प्रति सजग होकर संघर्षरत होता है तभी विद्रोह की नींव पड़ती है ।"[1] संघर्ष विद्रोह को विद्रोह की सफलता की ओर अग्रसर करता है ।

1·7·2· संघर्ष और क्रान्ति :-

क्रान्ति के लिए संघर्ष अनिवार्य है । क्रान्ति सका - रात्मक होती है परिवर्तन के लिए परिस्थितियों का अनुकूल होना आवश्यक है । समाज में कुरीतियाँ एवं रूढ़ियों की अस्वीकृति के लिए

1· विद्रोह के आधुनिक पहलू - डॉ॰नरेन्द्र मोहन - पृ· 17·

क्रान्ति का होना आवश्यक होता है । कार्ल बर्नाड्यों को विचार में क्रान्तियाँ संघर्षमयी होती है । उनके विचारहीन आक्रमण द्वारा हानि - कारक एवं अन्यायपूर्ण बातों का नाश होता है । परन्तु उसके साथ-साथ समाज लाभदायक ही नहीं, अपितु सामाजिक कल्याण के लिए शक्ति-वर्धक बातों का भी नाश होता है । परन्तु विनाश पुनर्निर्माण की भूमिका मात्र है । आक्रमक क्रान्ति वास्तव में प्रारम्भिक विस्फोट के समान कम्पायमान प्रतिक्रियाओं की ही अनुगामिनी होती है । संघर्ष साध्य है क्रान्ति साधन है ।

1.7.3. नारी संघर्ष - अर्थ :-

संघर्ष (Struggle) का अर्थ है " लड़ना "[1] अतः संघर्ष का पूर्ण अर्थ जीवन के संदर्भ में " अस्तित्व के लिए "[2] लड़ना है । वस्तुजगत में हर प्राणी में संघर्ष अनिवार्य होता है । प्रत्येक प्राणी जीवन जीना चाहता है । अतः उसका जीवन तभी साध्य हो सकता है जबकि वह संघर्षरत होता है ।

---

1. मानक अंग्रेजी हिन्दी कोश : सत्य प्रकाश - बलभद्र प्रसाद पृ. 1346.
2. मीनाक्षी हिन्दी अंग्रेजी कोश - डॉ.ब्रज मोहन - डॉ. बदरीनाथ कपूर - पृ. 685.

डार्विन ने विज्ञान के अन्तर्गत संघर्ष को विकासवाद के सिद्धान्त (Theory of evolution) के द्वारा समझाने का प्रयत्न किया, संघर्ष के तीन प्रकार बतलाते है 1· जीने के लिए संघर्ष 2· आत्मरक्षा के लिए संघर्ष 3· संकट के समय संघर्ष ।

नारी संघर्ष से तात्पर्य यह है कि नारी के प्रति किए जाने वाले अत्याचार, अन्याय आदि का बोध जब उसे होता है, तो उसमें असंन्तोष छा जाता है । इनसे छुटकारा पाने के लिए वह अत्याचार, अन्याय एवं असन्तोष्टी के विरुद्ध विद्रोह करती है यही से नारी संघर्ष आरम्भ होता है ।

1·7·4· नारी संघर्ष – स्वरूप :-

संघर्ष समाज सापेक्ष होता है । सामाजिक स्थिति के स्तर पर संघर्ष की दिशा निर्धारित होती है । संघर्ष का स्वरूप सामाजिक परिवेश, भौगोलिक स्थिति, सांस्कृतिक एवं देशकाल की स्थिति पर निर्धारित होता है । संघर्ष गतिशील होता है । संघर्ष जीवन एवं समाज से जुड़ता है । नारी अपनी अस्मिता को पहचानने के लिए संघर्ष करती है । समाज में एक मनुष्य के रूप में विकास की अवसर प्राप्ती उसका लक्ष्य होता है । व्यावहारिक पक्ष के अन्तर्गत नारी मानवीय बनना चाहती है । संघर्ष में सचेतनता होती है । नारी अस्तित्व के साथ संघर्ष करती है । संघर्ष के विभिन्न स्तर एवं

पड़ाव होते हैं। जिसके द्वारा मानव मूल्य निर्धारित होता है। संघर्ष न्याय के लिए किया जाता है। संघर्ष झूठी दृप्ति के लिए नहीं किन्तु वास्तविक लक्ष्य प्राप्ति के लिए होता है। संघर्ष मानव के पक्ष में होता है अर्थात् संघर्ष का स्वस्थ सौन्दर्य होता है। संघर्ष में दृष्टि (vision) होती है।

" संघर्ष अपने आप में एक मूल्य है बशर्ते कि वह रचनात्मक प्रकृति का हो। उसके केन्द्र में लोकहित की उपासना का भाव हो। संघर्ष की मूल्यवत्ता उसके फल से नहीं नीयत से आँकी जानी चाहिए। कारण यह है कि संघर्ष या क्रिया से कर्ता स्वतन्त्र है। उसका फल पाने में नहीं। क्रिया की जाती है। फल "होता" है इसीलिए फल को "होनी" कहा जाता है।" [1]

1.8. संघर्ष का प्रस्थान बिन्दु :-

स्वतन्त्रतापूर्व की कहानियों में नारी-संघर्ष का बीज रूप देखा जा सकता है। जैनेन्द्र की कहानी "पत्नी" में कहानी की नायिका सुनन्दा है जिसका पति एवं उसके मित्र स्वतन्त्रता सेनानी हैं। वह "भारतमाता की स्वतन्त्रता को समझना चाहती है पर उसको न भारत-माता समझ में आती है और न स्वतन्त्रता समझ में आती है। उसे इन लोगों की इस जोरों की बातचीत का मतलब ही समझ में नहीं आता।

---

1. जनसत्ता 11 सितम्बर 1994 - राममूर्ति त्रिपाठी

फिर भी, उत्साह की उसमें बड़ी भूख है जीवन की हौंस उसमें बुझती सी जा रही है पर वह जीना चाहती है। उसने बहुत चाहा है कि पति उससे भी कुछ देश की बात करें। उसमें बुद्धि तो जरा कम है, फिर धीरे-धीरे क्या वह भी समझने नहीं लगेगी, सोचती है कम पढ़ी हूँ, तो इसमें मेरा कसूर क्या है? अब तो पढ़ने को मैं तैयार हूँ।" 1

इस कहानी में कहानी की नायिका अपने भाव व्यक्त करना चाहती है। अपनी भावनाओं को व्यक्त करने उसे अवसर नहीं दिया जा रहा है उससे पूछा नहीं जा रहा है कि स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में उसका क्या अभिप्राय है। अतः वह असंतुष्ट है।

अज्ञेय की कहानी "गैंग्रीन" (रोज) में कहानी की नायिका के उदास दैनिक जीवन को दर्शाया गया है। जो कि एक मशीन बन कर घर के कामकाज में लगी है। जिसमें जीवन के प्रति कोई उत्साह दिखाई नहीं देता।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानियों में भी संघर्ष का बीज रूप मिलता है। अमरकान्त की कहानी "दोपहर का भोजन" में आर्थिक विपन्नता में घुलते परिवार के सदस्यों की मानसिकता का सफल चित्रण हुआ है। कहानी की नायिका सिद्धेश्वरी आर्थिक अभाव का सामना करती है वह इस अभाव से असंतुष्ट है। रोटी की कमी का ध्यान

---

1. जैनेन्द्र की कहानियाँ (आठवां भाग) - पृ. 180.

घर के सम्पूर्ण सदस्यों को है । किन्तु अधिक उत्तरदायी सिद्धेश्वरी ही होती है । वह दो लोटे पानी पीती है और आधी रोटी खाती है ।

राजेन्द्र यादव की कहानी " जहाँ लक्ष्मी कैद है " सामन्ती परिवेश में नारी की दयनीय स्थिति को दर्शाती है । चार दीवारी में कैद कहानी की नायिका लक्ष्मी है जो मुक्ति की खोज में छटपटाती है । " मैं तुम्हें प्राणों से अधिक प्यार करती हूँ ।"

मुझे यहाँ से भगा ले चलो ...... "
मैं फाँसी लगा कर मर जाऊँगी .... ।"[1]

यह नारी संघर्ष की पहली सीढ़ी है ।

भीष्म साहनी की कहानी " चीफ की दावत " उपेक्षित नारी की कहानी को दर्शाती है । कहानी में " माँ " - पात्र को वस्तु के रूप में देखा जाता है और उसे चीफ की नज़र से छिपाया जाता है । " माँ " पुत्र के ऐसे व्यवहार से असन्तुष्ट होती है । किन्तु पुत्र के प्रमोशन अर्थात् भलाई के लिए अपनी असंतुष्टी को व्यक्त नहीं कर पाती ।

---

1. जहाँ लक्ष्मी कैद है : राजेन्द्र यादव - पृ. 228.

कमलेश्वर की कहानी " दूसरे " आर्थिक अभाव को दर्शाती है । आर्थिक अभाव ही मानव को कमजोर एवं जड़ बना देता है । बढ़ती महँगाई उसे हर पल पछाड़ती है । कहानी की नायिका परिवार के वातावरण को महसूस करती है कि दूसरों के रहम पर सम्पूर्ण परिवार के सदस्यों का जीवन निर्भर है । सुनीता की पढ़ाई भी हर वर्ष विभिन्न संस्थाओं द्वारा दिये गये आर्थिक सहायता से की गई है । भाई-बहनों की पढ़ाई के लिए उसके पिता फीस माफ करवाने हर वर्ष स्कूल दौड़ते है ।

सुनीता को पक्की नौकरी की तलाश है वह ट्यूशन पढ़ाना, दूध डिपों पर दूध बाँटना इत्यादि किस्म की नौकरी कर थोड़ा कमाती है । जो कि घर के लिए पर्याप्त नहीं होता जिन दिनों सुनीता बेकार रहती है उन दिनों घर में उसकी शादी की चर्चा चलती है । उसे अपना अस्तित्व माता-पिता के लिए बोझ लगने लगता है यही एहसास उसे अपमान का बोध कराता है । सुनिता को इस बात का दुःख है कि उनके इर्द-गिर्द का समाज उनके परिवार के सभी सदस्यों के कार्य कलापों का निर्णय लेता है । " घर के सभी लोग जैसे दूसरों का मुँह देखते रहते है । .... घर का नितांत अपना निर्णय हो कोई नहीं होता जरा-जरा सी बात में उन दूसरों का दखल रहता है, जो घर के नहीं है । कितना छोटा-सा दखल है दूसरों का, पर कितना सम्पूर्ण । घर में मशीन आये कि न आये, इसे अपनी अनु - पस्थिति में ही कर्जदार तय कर लेते है .... बिलकुल अनजाने तरीके से माँ के और बच्चे हो या न हो, इसका फैसला पड़ोसी कर चुके होते है । पिताजी चुनाव में किसे वोट दे, यह दूसरे तय कर देते है और

उन्हें इस बात को कसक भी नहीं होती क्योंकि वह सोचकर अपना निर्णय ले सके, ऐसी जिन्दगी तो कभी हासिल नहीं हुई । भाई-बहन क्या पढ़े और किस लाइन में जाये, यह निर्णय उन स्कूलों ने नहीं लेने दिया, जो पूरी फीसें माँगते हैं । बच्चे किस तरह के कपड़े पहने .... यह बहुत हद तक दर्जी खुद तय कर लेता है ......

एक अस्पष्ट और अव्यक्त-सा घेरा है, जो उनके गिर्द पड़ा हुआ है और वे नज़रबन्द कैदियों की तरह जैसे सब कुछ कर सकने के लिए आज़ाद है ।-1

दूसरों द्वारा निर्धारित जीवन के क्रिया कलापों के प्रति सुनीता असन्तुष्ट है । अत: उसमें चेतना जागृत हुई है कि अपने परिवार के सम्बन्ध में निर्णय हमें स्वयं को लेना है । जो दूसरे निर्णय लेते हैं । वह ठीक नहीं है । अत: सुनीता ऐसी स्थिति से असहमत है । यही नारी संघर्ष का बीज या प्रस्थान-बिन्दु है ।

सूर्यबाला की कहानी " न किन्नी न " मध्यवर्गीय युवती की कहानी है । मध्यवर्ग में अधिकतर कमाऊ युवती को आजीविका का साधन बनाया जाता है आर्थिक अभाव के कारण माता-पिता के पुत्री के प्रति मात्र संवेदनायें होती है और उसकी भविष्य की कामनायें कुण्ठा के लिए की जाती है लेकिन मूल में स्वार्थ की भावना होती है । परिस्थि-तियों के दबाव के कारण पुत्री भी उसी परिवेश में ढल जाती है ।

---

1. माँस का दरिया : कमलेश्वर - पृ. 94

स्वार्थ के कारण उसके प्रति माता-पिता के बढ़ते अभाव का आभास करती है। परन्तु उन्हें दुःखी न करने के उद्देश्य से अन्याय को सहती है परिवार की भलाई के लिए त्याग की भावना रखती है। कहानी की नायिका किन्नी परिवार में आजीविका का साधन बनी है जिसकी मौसी बिजनौर में शक्कर की मील में मैनेजर की पत्नी है। उसके दो बच्चे मगन, रोजी है।

मौसी जब कभी घर आती है। परिवार में बहार छा जाती है। मौसी किन्नी एवं घर के सभी सदस्यों के लिए ढेर सारी वस्तुऐं लाती है। किन्नी के लिए रोजी के पहने हुए कपड़े तथा सैंडिल और अमर के लिए मौसा जी का बुशर्ट आदि अतः घर के सभी सदस्यों को ध्यान में रख कर मौसी वस्तुऐं बाँटती है। कालेज के दिनों में घर में शोर गुल के कारण किन्नी अपनी चाची के यहाँ पढ़ने जाती है। चाची के यहाँ उसकी भेंट चाची के रिश्ते के भांजे आकाश से होती है। आकाश भी पढ़ाई के लिए आता है। दोनों में मित्रता होती है। आकाश का विवाह मौसी की बेटी रोजी से किया जाता है और मौसी मौसाजी आकाश एवं रोजी को जर्मन भेजते है। रोजी के दो पुत्र होते है और तीसरे पुत्र के जन्म के समय रोजी का देहान्त हो जाता है। किन्नी की माँ, मौसी के पास जाती है और लौटने पर किन्नी से आकाश का घर सम्भालने का प्रस्ताव रखती है। यह सुन किन्नी के मन में तूफान उठता है और वह माँ का विरोध करती है। किन्तु परिवार की आर्थिक विवशता एवं स्वार्थ को महसूस करती है और वह आकाश के पास जाने

"हाँ" भरती है। किन्नी कहती है "और अब खुली आँखों से एक सपना देख रही हूँ - मौसी आईं और चहकती हुई, पूरे आत्मविश्वास के साथ मुझे कुछ थमाती हुई कह रही हैं -- "यह ले किन्नी! धूसर आसमान का यह टुकड़ा। ज़रा इसे धो-पोंछ देगी न खूब-संवर जाएगा। रोज़ी ने इसे सिर्फ दस साल ही तो इस्तेमाल किया होगा। मैंने सोचा इसे तेरे लिए लेती चलूँ, तुझ पर खूब फबेगा।"[1]

इस कहानी की नायिका परिवार द्वारा स्वयं पर होते अन्याय का बोध करती है। जिससे असंतुष्ट होती है। यही संघर्ष का प्रस्थान बिन्दु है।

---

1. थाली भर चाँद - सूर्यबाला - पृ. 30

1.9. निष्कर्ष :-

नारी के विभिन्न स्थितियों, संघर्ष की प्रक्रिया एवं प्रस्थानबिन्दु आदि का विवेचन करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि हिन्दी कहानियों में नारी-संघर्ष को समझने से पहले इन बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक है क्योंकि प्राकृतिक रूप से स्त्री-पुरूष की शारीरिक संरचना में अन्तर है । लेकिन उस अन्तर के मूल्यांकन का प्रयत्न सदा-सर्वदा सामाजिक सांस्कृतिक होता रहा है । शारीरिक संरचना के आधार पर पुरूष का अपने आप को शक्तिशाली मानना और स्त्री का अपने आप को दुर्बल अनुभव करना प्राकृतिक यथार्थ से अधिक मनोवैज्ञानिक स्थिति है । इसी स्थिति ने समाज में पुरूष को प्राणी रूप में तथा स्त्री को नारी रूप में परिभाषित किया है । परिणामत: स्त्री मानवीय अधिकारों से वंचित रही । अर्थशास्त्र के लिए स्त्री के श्रम को सही तौर पर मूल्यांकित कर पाना एक जटिल समस्या रही है । आर्थिक स्वतन्त्रता के नाम पर स्त्री समाज में पण्य वस्तु बनी है । स्त्री की दार्शनिक स्थिति मुख्यत: उसकी ऐतिहासिक और सामाजिक स्थितियों के परिवर्तन के अनुपात में परिवर्तित होती रही है । कभी उसे देवी या दासी, अन्या, शोषक-शोषित आदि सम्बोधनों से सम्बोधित किया गया । नैतिकता का आधार वैयक्तिक स्तर पर निर्मित होता है । नैतिकता के मूल में औचित्य और अनौचित्य सम्बन्धी धारणायें होती है । नारी की नैतिक स्थिति किसी विशिष्ट ऐतिहासिक पड़ाव पर उपर्युक्त धारणाओं द्वारा ही गढ़ी गई । स्त्री एवं पुरूष के लिए

भिन्न-भिन्न नैतिक मूल्य निर्धारित किए गये । संघर्ष, विद्रोह का एक प्रकार है । संघर्ष विद्रोह को उसकी सफलता की ओर अग्रसर करता है । क्रांति के लिए संघर्ष अनिवार्य होता है । संघर्ष साध्य है क्रांति साधन है । नारी संघर्ष का अर्थ समाज में मानवीय " अवसर प्राप्ति के लिए " तथा " अस्तित्व के लिए " लड़ना से है । संघर्ष में दृष्टि होती है । संघर्ष मानव के पक्ष में होता है ।

अतः प्राकृतिक रूप से नारी की शारीरिक संरचना को सदा-सर्वदा सामाजिक-सांस्कृतिक बना कर उसकी मानसिकता को और भी दुर्बल किया गया है । आज की नारी जिसका विरोध कर रही है । उसने अपने अस्तित्व को पहचाना है और वह समाज में मानवीय व्यक्तित्व के रूप में पहचान व अवसर प्राप्ति के लिए संघर्ष कर रही है ।

द्वितीय- अध्याय

हिन्दी कहानी और नारी-संघर्ष : स्वातंत्र्यपूर्व संदर्भ

2.0. हिन्दी कहानी और नारी-संघर्ष : स्वातंत्र्यपूर्व संदर्भ

स्वातंत्र्यपूर्व व्यक्तिगत स्वार्थों की प्रधानता नहीं थी। राष्ट्रीय भावना एवं समाज का हित ही उस समय प्रमुख रहा। फिर भी स्वातन्त्र्यपूर्व हिन्दी कहानी में स्त्री की आन्तरिक पीड़ा और छटपटाहट को देखा जा सकता है। कहानीकारों ने स्त्री की संवेदनशीलता एवं कोमल प्रकृति को अपनी कहानियों में चित्रित किया है और इसे ही दुःख का मूल कारण माना है। जीवन के वास्तविक अर्थ और आशय को जानने की प्रक्रिया में इन कहानीकारों के अनेक पात्र जीवन की गहराई से अधिक जुड़ते हैं।

जयशंकर प्रसाद एवं चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने प्रेमचन्द से पूर्व ही कहानियाँ लिखी किन्तु उस समय कहानी को आख्यायिका, गल्प, किस्सा आदि कहा जाता था, बाद में कहानी कहा जाने लगा। गुलेरी की कहानी " उसने कहा था " का हिन्दी कहानी के विकास में

महत्वपूर्ण स्थान है । प्रसाद के साहित्य की विभिन्न विधाओं में भावुकता एवं कोमल हृदय की छाप मिलती है प्रसाद का व्यक्तित्व अन्तर्मुखी रहा । वे अपनी कहानियों में किसी नैतिक आदर्श की स्थापना या उपदेश देने के पक्षधर नहीं थे । उनकी कहानियों में अंतिम निर्णायक बिन्दु नहीं होता किन्तु मनोवैज्ञानिक लक्ष्य होता है जो संवेदना को गहरा देता है । प्रसाद की कहानियों में चित्रात्मकता की दृष्टि से " पुरस्कार " एवं " आकाशदीप " अद्वितीय है ।

प्रेमचन्द द्वारा हिन्दी कहानी को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई अर्थात् प्रेमचन्द ने कहानी विधा को अर्थवत्ता प्रदान कर उसे जीवन और जगत के निकट लाया । प्रेमचन्द की प्रवृत्ति प्रसाद की प्रवृत्ति के विपरीत रही । इनकी प्रवृत्ति बहिर्मुखी है । प्रेमचन्द को आदर्शवादी एवं सुधारवादी कहा जाता है उनकी कहानियों में मानव के प्रति असीम प्रेम दृष्टिगोचर होता है । " प्रेमचन्द मात्र जीवन की विसंगतियों के कथाकार नहीं है पर उन्होंने अपनी जीवन यात्रा में संघर्ष झेले, कड़वाहट सही और अपने ही बनाए मान्यता के उच्चादर्श ध्वस्त होते हुए देखे इसीलिए उनका कहानीकार अपनी बनाई हुई लीक को तोड़कर " पूस की रात ", " ठाकुर का कुँआ " और " कफ़न " जैसी अत्यन्त जीवन्त रचनाएँ दे सका । प्रेमचन्द का समाज एवं व्यक्ति विकास सामाजिकता पर ही आधारित होता है । यह उनका मत है ।" [1]

---

1. हिन्दी कहानी - सात्वा दशक - प्रहलाद अग्रवाल - पृ० 3०

प्रेमचन्द की परम्परा को यशपाल ने आगे बढ़ाया। यशपाल पर मार्क्स, फ्रायड आदि का प्रभाव होने के कारण उनकी कहानियों में शोषक एवं शोषित वर्ग की सही पहचान की गई। यशपाल स्पष्टवादी थे। उनकी कहानियों में उनकी बातें स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। हिन्दी कहानी परम्परा में जैनेन्द्र, अज्ञेय एवं इलाचन्द जोशी प्रेमचन्द एवं प्रसाद के बाद आते है। " इनके द्वारा तात्कालीन कहानी के सन्दर्भ में निर्मित मान्यताओं में आमूल परिवर्तन हुए। संगठित घटना क्रम, प्रभावोत्पादक स्थितियों तथा सरल साधारण स्पष्ट चित्रण के लिए इनमें कोई आग्रह नहीं रह गया। जीवन की एक द्रुत झाँकी स्वभाव, चरित्र या मन:स्थिति को एकाएक आलोकित कर देनेवाली समस्या अथवा घटना को ही इन्होंने अपना उपजीव्य बनाया समाज गौण हो गया व्यक्ति उभर कर सामने आया। मानव-मन की जटिलताओं, कर्म की अत: प्रेरणाओं तथा चेतन-अचेतन के सामंजस्य से प्रादुर्भूत दुर्बोध रहस्यात्मकता की संवेदना को व्यापक रूप से कहानियों में अभिव्यक्ति प्रदान की जाने लगी।" [1]

जैनेन्द्र अपनी कहानियों में नारी के अन्तर्मन में बैठ कर सूक्ष्मतम परतों को कुरेदा है। इनकी बहुचर्चित कहानी " पत्नी " नारी मन के घुटन को दर्शाती है। यह कहानी अज्ञेय की " रोज " कहानी से मिलती जुलती है। जिनमें संघर्ष का बीजरूप मिलता है। स्वातन्त्र्यपूर्व महत्वपूर्ण कहानीकारों में उपेन्द्रनाथ अश्क, रांगेय राघव,

---

1. हिन्दी कहानी सातवा दशक : प्रहलाद अग्रवाल - पृ. 4.

द्विजेन्द्रनाथ मिश्र निर्गुण, अमृतलाल नागर, भगवती चरण वर्मा, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, पहाड़ी, विष्णु प्रभाकर, विश्वम्भर नाथ शर्मा, कौशिक, भगवतीचरण वर्मा, आचार्य चतुरसेनशास्त्री, सुभद्राकुमारी चौहान आदि है ।

" स्वातन्त्र्यपूर्व प्राय: कहानियों में जीवन के सभी पक्षों को चित्रित किया गया है । किन्तु तब लेखक के लिए प्रेरणास्त्रोत जीवन की विसंगतियों एवं जटिलतायें कम थी । प्राचीन मान्यतायें और आदर्श अधिक । उनके समय में इन बातों को एकाएक ठुकराया भी नहीं जा सकता था । इसीलिए अन्तत: कहानीकार प्राय: एक निरर्थक आशावादिता से जुड़ जाता था ।" [1]

2.1. नारी मुक्ति एवं स्वतन्त्र अस्तित्व की कल्पना :-

जयशंकर प्रसाद की कहानी " रमला " आकाशदीप संग्रह में संग्रहित है । इस संकलन का रचनाकाल 1925-1930 ई. है । रमला कहानी में प्रसाद जी ने सामंती परिवेश में नारी के स्वतन्त्र अस्तित्व की कल्पना की है । इस कहानी की नायिका " रमला " निम्न वर्गीय सुन्दर पहाड़ी युवती है । नायिका का नाम उसके सौन्दर्य से आकृष्ट होकर पहाड़ी के लोगों द्वारा दिया जाता है । वास्तव में " रमला " पहाड़ी में बहनेवाली सुन्दर झील का नाम है ।

---

1. हिन्दी कहानी - सातवां दशक - प्रहलाद अग्रवाल - पृ. 6.

रमला साहसी युवती है । गाँव का जमींनदार का लड़का " मंगल " को रमला के सौन्दर्य से ईर्ष्या होती है । एक दिन वह अपने साथियों के साथ पहाड़ी पर चढ़ने निकलता है, ठीक उसी समय रमला भी पशु चराने पहाड़ी पर चढ़ती है । सब मिलकर पहाड़ी चढ़ते है किन्तु रमला सबसे आगे बढ़ने लगती है और सबसे ऊँची पहाड़ी पर रुक कर कहती है कि सबसे पहले पहाड़ी पर वही पहुँची है । मंगल को रमला के चोटी पर प्रथम पहुँचना असहनीय लगता है वह रमला को छल से कहता है कि रमला उधर तो देख वह क्या है ? रमला देखने लगती है । उसे एक सुन्दर झील दिखाई देती है, मंगल धीरे से रमला को धक्का देता है रमला, रमला झील में गिर जाती है ।

रमला झील के किनारे रमला को " साजन " नामक युवक से भेंट होती है । वे दोनों वहाँ साथ रहते है तथा दोनो का आत्मिय सम्बन्ध होता है । एक दिन रमला और साजन घूमने गिरिपथ [पहाड़] पर जाते है, अकस्मात वहाँ उनको मंगल से भेंट होती है । मंगल को सन्देह होने लगता है कि क्या यह वही रमला है जिसे उसने झील में धकेला था वह रमला से क्षमा माँगता है " रमला, मुझे क्षमा करों मैंने तुम्हें ...... "

हाँ धक्का देकर गिरा दिया था । तब भी मैं बच गई ।"

युवक ने सोये हुए मनुष्य की ओर देखकर पूछा — " यह तुम्हारा कौन है ? "

रमला ने रुकते हुए उत्तर दिया " मेरा कोई नहीं ।"

" तब भी यह है कौन ?

रमला - झील का जल देवता " ।

इस कहानी में " मारने वाले से बचाने वाला बड़ा " लोकोक्ति लागू होती है । तथा साहसी युवती रमला के स्वतन्त्र अस्तित्व एवं मुक्ति के लिए संघर्ष परिलक्षित होता है ।

नारी भावनाओं के स्तर पर जीती है । हर नारी का स्वप्न भावी पति के प्रति सुन्दर होता है, किन्तु समाज में रूढ़िवादिता के कारण यदि किसी स्त्री को उसका पति उसके जीवन में संजोए सुखद स्वप्नों के विपरीत स्वभाव वाला मिलता है तो उसे अपना जीवन एक शव की भाँति निर्जीव लगने लगता है ।

यशपाल की कहानी " छलिया नारी " अभिशप्त कहानी संग्रह में संग्रहित है इस संकलन का रचनाकाल 1944 है । इस कहानी में कहानी की नायिका नन्दो की उपर्युक्त विवेचित दयनीय स्थिति को दर्शाया गया है । नन्दो का विवाह शहर के बाबू विनोद सिंह से होता है, विनोद नौकर शाह व्यक्ति है । शहर के बाबुओं के प्रति नन्दो के मन में विवाह से पूर्व अधिक श्रद्धा होती है किन्तु विवाह के

1· प्रसाद ग्रंथावली - जयशंकर प्रसाद - पृ· 197-198·

बाद विनोद सिंह के वास्तविक स्वभाव को जानकर वह उदास हो जाती है । पति का क्रूर व्यवहार उसे जीवन के प्रति असंतुष्ट करता है । वह अपने पति से मुक्त होना चाहती है ।

" आखिर एक दिन रात का विचार दृढ़ रखने के लिये, पति के दफ्तर चले जाने के बाद उसने ओठ दबा आँसू न बहाने का निश्चय कर लिया । रुके हुए आँसुओं की भाप से जोर से उसके कदम घर से निकल पड़े । लड़खड़ाते कदमों से चलती वह शहर के बाहर नदी के किनारे जा पहुँची ।"[1] लेखक कहते है कि नदी में डूब मरने के लिये नहीं, एक दफे जीवन का उन्मुक्त श्वास स्वतन्त्रता से हृदय में भर पाने के लिये ।

स्वातन्त्र्यपूर्व हिन्दी साहित्य में सुभद्राकुमारी चौहान का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । कविता एवं कहानी के क्षेत्र में लेखिका ने जीवन के यथार्थ को उभारा है । इन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलनों में भाग लेकर तथा लेखन को सक्रिय रखते हुए विषम-परिस्थितियों का साहसपूर्ण परिचय दिया है । इनका जीवन-संघर्ष नारी-संघर्ष के लिए प्रेरणास्त्रोत है । इनकी कहानी " मंगला " में नारी स्वतन्त्रता का चित्रण मिलता है । कहानी की नायिका मंगला है और नायक सुदर्शन है । मंगला की माँ मंगला के विवाह के लिए सुदर्शन को योग्य पात्र समझ कर अपने विचार मंगला के सम्मुख व्यक्त करती है कि यदि वह सुदर्शन से विवाह करेगी तो सुखी रहेगी, जीवन में उसे कोई

1· अभिशप्त - यशपाल - पृ· 68·

बन्धन नहीं रहेगा बल्कि मंगला स्वतन्त्र जीवन जी सकेगी । माँ के ये विचार सुन कर मंगला इनका विरोध करती है वह कहती है -- " यह सब अम्मा विवाह से पहले की बातें है विवाह के बाद पुरुष, पत्नी को अपनी सम्पत्ति समझने लगता है । पति चाहे जितना लिखा विद्वान हो, पब्लिक प्लेटफार्म पर खड़ा होकर स्त्री के समान अधिकार और स्वतन्त्रता देने के विषय में चाहे जितनी लम्बी-लम्बी स्पीचें झाड़े पर घर के अन्दर पैर रखते ही पुरुष, पुरुष हो जाता है । स्त्री यदि उसकी इच्छाओं को अपनी इच्छा न बना ले, उसके इशारे पर आँख, कान बन्द करके न चले तो खैर नहीं । पास पड़ोस के घरों में इन शिक्षित परिवारों में भी जो कुछ होता है वह जानती हो । यह सब जान बूझकर भी तुम क्यों चाहती हो माँ कि मैं विवाह कर लूँ ? फिर तुम मेरे स्वाभाव को भी जानती हो मैं किसी के इशारे पर आँख कान बन्द करके नहीं चल सकती । मैं किसी की इच्छा को अपनी इच्छा नहीं बना सकती ।" [1]

जैनेन्द्र की कहानी " मुक्ति " में कहानिकार ने नारी मुक्ति की कल्पना की है । कहानी की नायिका मनोरमा को उसका पति कहता है कि तुम जीवन में स्वतन्त्र हो । मनोरमा को पति द्वारा कहे गये सैद्धान्तिक रूप में कहे गये " स्वतन्त्रता " जैसे शब्द पर विश्वास नहीं है वह कहती है - " कह दिया है । लेकिन क्या मैं भी नहीं कह चुकी हूँ ! एक बार नहीं दस बार कि मैं स्वतन्त्र हो नहीं सकती, सोच नहीं सकती हूँ उस शब्द का ही मेरे लिए कुछ अर्थ

---

1. सीधे सादे चित्र - सुभद्रा कुमारी चौहान - पृ. 105-106.

नहीं है । तुम्हारे नजदीक अर्थ हो तो मेरी चिन्ता को तुम्हें ओढ़ना चाहिए । वह सब मैं समेट लूंगी । तुम मन को रोको मत, जिधर अभीष्ट हो बढ़ जाओ ।" [1]

कहानी की नायिका का उद्देश्य यह है कि नारी मुक्ति का व्यापक अर्थ होता है । व्यावहारिक रूप में अपनी सीमाओं में बंध कर कोई भी नारी मुक्ति की कल्पना नहीं कर सकती ।

अत: स्वातन्त्र्यपूर्व जयशंकर प्रसाद की " ममता ", यशपाल की " छलिया नारी ", सुभद्रा कुमारी चौहान की " मंगला " एवं जैनेन्द्र की " मुक्ति " आदि कहानियों में कहानीकारों द्वारा नारी मुक्ति एवं स्वतन्त्र अस्तित्व की कल्पना की गई है ।

2.2. जाति, वर्ग तथा आर्थिक स्तर पर नारी - संघर्ष :-

हिन्दी कथा साहित्य को सार्थकता प्रदान करने वाले " प्रेमचन्द ने स्वयं अपने जीवन में अत्यधिक संघर्ष किया । अत: उनके साहित्य में भूख, गरीबी आदि को लेकर संवेदनाएँ मुखरित हुई है । आर्थिक अभावों तथा सामाजिक अवहेलना के फलस्वरूप प्रेमचन्द जी के रचनात्मक अवचेतन में संघर्ष के कुछ सच्चे आदर्श निर्मित हो रहे थे ।" [2]

---

1. जैनेन्द्र की कहानियाँ भाग - 10 - जैनेन्द्र - पृ. 171-172.
2. साहित्य और जन संघर्ष - शंभुनाथ - पृ. 48.

जिन्हें इनके साहित्य में देखे जा सकते है । " प्रेमचन्द का आज जो व्यक्तित्व हमारे सामने है इसका निर्माण उनके संघर्षशील सामाजिक पात्रों ने किया है । उनका हर अगला संघर्षशील पात्र पिछले पात्र की लड़ाई को आगे बढ़ाता है और इसके माध्यम से भारतीय समाज में वर्ग संघर्ष के राजनीतिक, धार्मिक, नैतिक और आर्थिक आधार का भी खुलासा होता है ।" [1]

प्रेमचन्द के अनुसार साहित्य की उत्कृष्टता की वर्तमान कसौटी अनुभूति की तीव्रता और गति है । यह अनुभूति की तीव्रता ही व्यक्ति के गति या संघर्ष का उद्गम स्त्रोत है । संघर्ष परिवर्तन के लिए किया जाता है । तथा इनकी दृष्टि वर्ग संघर्ष की दृष्टि रही अतः प्रेमचन्द के चरित्र वर्तमान स्थितियों से उदास होकर राज - नीतिक एवं आर्थिक अधिकारों के लिए संघर्ष करते है । इसी संघर्ष का तेज उनकी कहानियों " घासवाली ", " बेटोंवाली विधवा ", अग्नि - समाधी आदि में झलकता है ।

प्रेमचन्द की " घासवाली " कहानी मान सरोवर भाग-1 में संकलित है । इसका प्रकाशन काल 1929 ई॰ है । लेखक ने इस कहानी में सामंतवादियों द्वारा समाज में किये जाने वाले निम्न वर्ग के शोषण को चित्रित किया है । समाज में सदैव नारी के प्रति सामंत - वादियों की दृष्टि निकृष्ट रही है, जिसे जब चाहो, जहाँ चाहो या

1॰ साहित्य और जन संघर्ष - शंभुनाथ - पृ॰ 58॰

सकते थे और जब न चाहो तब त्यागते थे । प्रेमचन्द कहते हैं —
" संघर्ष की गरिमा में चोट की व्यथा नहीं होती, पीछे से टीस होने लगती है ।" [1]

मुलिया चमार जाति की एक सुन्दर निम्न वर्गीय नारी है जो नवविवाहित गाँव में आई है । गरीबी की विवशता के कारण घास छिलने खेत में जाती है । एक दिन ठाकुर उसका हाथ पकड़ता है, वह अपमान महसूस करती है । दूसरे दिन वह अपने घरवाले से घास छिलने जाने से साफ इन्कार करती है किन्तु आर्थिक अभाव के कारण उसका जाना अनिवार्य होता है । वह अपनी बेबसी पर रोती है । खेत में भयभीत होती हुई आधा झाबा घास छिलती है परन्तु तब तक भी उसे चैनसिंह की उपस्थिति का पता नहीं चलता । चैनसिंह मुलिया के समीप आता है और उससे दया की भीख माँगता है । मुलिया जानती है कि अब उसे ठाकुर से कोई बचायेगा नहीं फिर भी वह अपने जीवन को खतरे में डालकर ठाकुर का सामना करती है वह कहती है —
" मुझ से दया माँगते हो इसलिए न कि मैं चमारिन हूँ नीच जाति हूँ और नीच जाति की औरत जरा सी घुड़की-धमकी या जरा से लालच से तुम्हारी मुट्ठी में आ जायगी । कितना सस्ता सौदा है । ठाकुर हो न ऐसा सस्ता सौदा क्यों छोड़ने लगे ।" [2]

---

1. मानसरोवर भाग - 1 - प्रेमचन्द - पृ. 306.
2. - वही - पृ. 309.

मुलिया चमार जाति की नारी है। एक ओर वह जाति की विवशता के कारण शोषण के विरुद्ध संघर्ष करती है तो दूसरी ओर आर्थिक अभाव के कारण ठाकुर से संघर्ष करती है वह कहती है -- " बेचारे गरीब आदमियों के लिए यह बातें कहाँ ? मेरे आदमी के लिए संसार में जो कुछ हूँ, मैं हूँ। वह किसी दूसरी महरिया की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता। "[1] अतः निम्नवर्ग की मुलिया शोषण के विरुद्ध दोनों स्तरों पर संघर्ष करती है।

दाम्पत्य जीवन में पति यदि कमाऊ नहीं होता तो स्त्री पर परिवार का बोझ और अधिक बढ़ जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप उसकी मानसिक स्थिति में परिवर्तन होता है। प्रेमचन्द की कहानी " अग्नि समाधी " इसी बात को लेकर चलती है। कहानी के मुख्य पात्र " रुक्मिनी " तथा उसका पति " पयाग " है। पयाग आलसी है किन्तु रुक्मिनी घास बेच कर दो समय की रोटी जुटाती है। पयाग नित्य प्रतिदिन रुक्मिनी से पैसे माँग कर चिलम पीता है। एक दिन रुक्मिनी पयाग को पैसे देने से इन्कार करती है। जिससे पति-पत्नी में संघर्ष छिड़ जाता है। रुक्मिनी कहती है " दम लगाने की ऐसी चाह है तो काम क्यों नहीं करते ? क्या आजकल कोई बाबा नहीं है। जाकर चिलम भरो ? पयाग ने त्योरी चढ़ा कर कहा भला चाहती है तो देदे, नहीं तो इस तरह तंग करेगी तो एक दिन कहीं चला जाऊँगा, तब रोयेगी। रुक्मिनी कहती है — रोये मेरी बला तुम रहते ही हो तो कौन सोने का कौर खिला कर देते हो ? अब भी छाती फाड़ती हूँ तब भी छाती फाड़ूँगी !

---

1. मानसरोवर भाग - 1 : प्रेमचन्द - पृ. 310.

तो अब यही फैसला है ?
हाँ तो कह तो दिया मेरे पास पैसे नहीं है ।"[1]

प्रेमचन्द की इन कहानियों में जाति एवं वर्ग तथा आर्थिक स्तर पर शोषण के विरुद्ध नारी-संघर्ष परिलक्षित होता है ।

2·3· दैहिक शोषण के विरुद्ध नारी - संघर्ष :-

इलाचन्द जोशी की कहानी " एक डाक्टर की फीस " में नारी के दैहिक शोषण के विरुद्ध नारी संघर्ष को देखा जा सकता है । कहानी का नायक श्यामलाल है वह कपड़े का व्यापार करता है । किन्तु वह कहानी की नायिका जमुना को ठगता है वह जमुना से झूठ कहता है कि शहर में उसकी कपड़ों की बड़ी दुकान है और जमुना को शहर लाता है । जमुना निम्न वर्गीय नारी है वह श्यामलाल पर पूरा विश्वास करती है परन्तु शहर आने के बाद उसे श्यामलाल की वास्तविकता का पता चलता है । श्यामलाल पीवट है वह जमुना को पैसे के लिए वेश्यावृत्ति अपनाने के लिए कहता है, अपनी छोटी पुत्री की बिमारी की ओर ध्यान नहीं देता ।

आर्थिक अभाव के कारण जमुना वेश्यावृत्ति अपनाती है । उसका शरीर इस वृत्ति से कमजोर हो जाता है । श्यामलाल को इनकी भी चिन्ता नहीं होती बल्कि वह जमुना पर अत्याचार करता है ।

1· मानसरोवर भाग - 5, प्रेमचन्द - पृ· 171·

प्रतिदिन वह पीने के लिए जमुना से पैसे माँगता है । एक दिन हर बार की तरह वह जमुना की कमाई छीनता है जमुना उसका विरोध करती है " छोड़ो ! छोड़ो । नहीं तो मैं तुम्हारा गला पकड़कर घोंट डालूँगी " वह छटपटाती हुई रोने के स्वर में कहती है । उसका हाथ दाँतो से काट कर अपने को छुड़ाती है " तुम आदमी नहीं पिशाच हो । वह फिर कहती है " मरघट का चाण्डाल भी इस तरह कफ़न नहीं खसोटता, जिस तरह तुम इतने बरसों से बूँद-बूँद रक्त चूसकर मेरी मरी हुई खाल खींचते चले जा रहे हो ।" [1]

इलाचन्द जोशी की दूसरी कहानी " क्रय-विक्रय " है । इस कहानी में पुरूष की अवसरवादी दृष्टि द्वारा नारी को दैहिक शोषण के लिए विवश होते देखा जा सकता है । कहानी की नायिका मालिनी है जिसका पति राजेन्द्र अवसरवादी व्यक्ति है । वह समाज में पद-प्रतिष्ठा चाहता है । इसके लिए वह अपनी पत्नी को तमा कर रखता है जिससे उसके साथ के अफसर मोहित हो जाए और अपनी पत्नी का भोग करे और राजेन्द्र की नौकरी की तरक्की हो सके किन्तु इस सच्चाई को राजेन्द्र नहीं मानता मालिनी की बातों का झूठ करार करता है मालिनी इसका विरोध करती है वह कहती है " मैं अक्षर-अक्षर सच कह रही हूँ । पचास रुपल्ली के साधारण क्लर्क की हैसियत से तुम आज केवल पाँच वर्षों के भीतर पाँच सौ रुपये की तनख्वाह पाने वाले अफसर बन बैठे हो यह केवल मेरी ही बदौलत ।" [2] मालिनी

---

1. कँटीले फूल लजीले काँटे : इलाचन्द्र जोशी - पृ० 7 - 8.
2. मेरी प्रिय कहानियाँ : इलाचन्द्र जोशी - पृ० 47.

पचास रुपये तनख्वाह पाने वाले पति के पाँच सौ रुपये तनख्वाह पाने तक निरन्तर दैहिक शोषण का शिकार बनी है जिसका वह विरोध उपर्युक्त उद्धरण में करती है ।

2.4. देश की रक्षा एवं प्रेम के लिए नारी - संघर्ष :-

जयशंकर प्रसाद की कहानी " पुरस्कार " में देश की रक्षा एवं प्रेम के खातिर नारी के बलिदान तथा संघर्ष को देखा जा सकता है । कहानी की नायिका " मधूलिका " कोशल के वीर रक्षक सिंहमित्र की एक मात्र पुत्री है । पिता की मृत्यु के बाद परिवार में मधूलिका अकेली हो जाती है । हर वर्ष की तरह कृषि-उत्सव के समय इस वर्ष कोशल के राजा द्वारा मधूलिका का खेत हल जोतने के लिए चुना जाता है किन्तु राजा द्वारा हर वर्ष जनता की खेती पर अधिकार छीने जाने के विरोध में मधूलिका आवाज उठाती है । जब राजा मधूलिका का खेत कृषि उत्सव के दिन जोत कर अपनी निजी सम्पत्ति करने के लिए उस खेत का मूल्य मधूलिका को स्वर्ण की अशर्फियों द्वारा चुकाने लगता है तब मधूलिका राजा का विरोध करती है । मधूलिका द्वारा राजा पर स्वर्ण न्योछावर करते समय मगध का राज कुमार अरुण देखता है और मधूलिका से मित्रता करता है और दोनो एक दूसरे से प्रेम करते है ।

मगध का राज कुमार अरुण दुर्ग पर आक्रमण करने के उद्देश्य से दुर्ग के चारों ओर अपनी सेना सहित घेरा डालता है और यह सूचना वह अपनी प्रेमिका मधूलिका को देता है। मधूलिका से यह रहस्य छिपाया नहीं जाता क्योंकि वह कोशल के वीर रक्षक सिंह मित्र की पुत्री है। उसका मन धिक्कारने लगता है अत: वह देश द्रोह नहीं कर सकती। अरुण द्वारा अपने ही देश पर आक्रमण की कल्पना मात्र भी करना उसके लिए असहनीय होता है। एक दिन वह कोशल के सेनापति को सूचित करती है कि मगध का राजकुमार कोशल पर शीघ्र ही आक्रमण करने वाला है। मधूलिका की इस सूचना द्वारा देश को आक्रमण से बचाए जाने से राजा एवं प्रजा प्रसन्न होते हैं और राजा मधूलिका से उपकार में पुरस्कार माँगने के लिए कहता है।

किन्तु मधूलिका, राजा द्वारा अपने प्रेमी अरुण को बन्दी बना कर लाये जाने तथा प्रजा की सहमती द्वारा अरुण को प्राणदण्ड की सजा घोषित किए जाने आदि को देख कर कहने लगती है " मधूलिका ने एक बार बन्दी अरुण की ओर देखा। उसने कहा - मुझे कुछ नहीं चाहिए। अरुण हँस पड़ा। राजा ने कहा नहीं, मैं तुझे अवश्य दूँगा। माँग ले। तो मुझे भी प्राणदण्ड मिले। कहती हुई वह बन्दी अरुण के पास जा खड़ी हुई।"[1] प्रेमचन्द की कहानी " अग्नि समाधी " में भी प्रेम के लिए नारी संघर्ष को दर्शाया गया है। कहानी का नायकपयाग आलसी है और अपनी पत्नी रुक्मनी

---

1. प्रसाद ग्रंथावली : जयशंकर प्रसाद - पृ. 286.

की कमाई खाता है । एक दिन स्कीमनी उसे चिलम पीने के लिए पैसे देने से इन्कार करती है और उसे पैसे कमाने के लिए कहती है तो वह घर से भाग जाता है तथा दूसरी स्त्री को कुछ दिन बाद लाता है । स्कीमनी उस स्त्री को कुछ दिन बाद लाकर अपने घर में शरण देती है । पयाग पैसों का यार है इसीलिए दोनों पत्नियाँ पति को प्रसन्न करने तथा अपनी ओर आकृष्ट करने जी तोड़कर मेहनत करती है । दोनों में पैसा कमाने की प्रतिस्पर्धा बढ़ जाती है । पयाग की दूसरी पत्नी " सिलिया " एक ही दिन में लकड़ी बेचना घास छीलना आदि काम करती है और स्कीमनी से अधिक पैसे कमाती है तथा चिलम के लिए पति को मुँह मागे पैसे देती है । जिससे पयाग सिलिया से अधिक संतुष्ट रहता है । परिणामत: दोनों पत्नियों में संघर्ष छिड़ जाता है ।

" रुक्मिनी और सिलिया में संग्राम छिड़ गया । सिलिया पयाग पर अपना आधिपत्य जमाये रखने के लिए जान तोड़कर परिश्रम करती है । पहर रात होसते उसकी चक्की की आवाज कानों में आने लगती । दिन निकलते ही घास लाने चली जाती है और जरा देर सुस्ताकर बाजार की राह लेती । वहाँ से लौटकर भी वह बेकार न बैठती कभी सन कातती, कभी लकड़ियाँ तोड़ती । रुक्मिनी उसके प्रबंध में बराबर रेख निकालती और जब अवसर मिलता तो गोबर बटोर कर उपले पाथती और गाँव में बेचती । पयाग के दोनों हाथों में लड्डू थे । स्त्रियाँ उसे अधिक से अधिक पैसे देने और स्नेह का अधिकांश अपने अधिकार में लाने का प्रयत्न करती रहती पर सिलिया ने कुछ ऐसा दृढ़ता से आसन जमा लिया था कि किसी तरह हिलाये न हिलती थी । यहाँ तक कि एक दिन दोनों प्रतियोगिताओं में खुल्लम खुला ठन गयी ।

एक दिन रुक्मनी सिलिया की घास चुरा लेती है। सिलिया के पूछने पर रुक्मनी मुकर जाती है। सिलिया क्रोधित होती है और कोसने लगती है "जिसने मेरी घास चुराई हो, उसकी देह में कीड़े पड़े उसके बाप और भाई मर जाय, उसकी आँखें फूट जाय रुक्मनी कुछ देर तक तो जब्त किये बैठी रही, आखिर खून में उबाल आ ही गयो। झल्ला कर उठी और सिलिया के दो-तीन तमाचे लगा दिये। सिलिया छाती पीट-पीट कर रोने लगी। सारा मुहल्ला जमा हो गया।"[1]

2.5. मानव अधिकार प्राप्ति के लिए नारी - संघर्ष :-

जयशंकर प्रसाद की कहानी "पुरस्कार" में सामंती परिवेश में मानव अधिकार के लिए नारी संघर्ष को दर्शाया गया है। कौशल देश में हर वर्ष कृषि महोत्सव मनाया जाता है। इस उत्सव का नियम यह होता है कि किसी नागरिक की उपजाऊ खेती को चुन लिया जाता है और उत्सव के दिन उस खेत में कौशल के राजा हल चलाते है वह खेत एक वर्ष के लिए राजा का खेत कहलाता है राजा उस खेत की देखभाल करवाता है और अनाज का वही मालिक होता है। खेत के मालिक को खेत के मूल्य से चौगुना मूल्य चुकाया जाता है।

---

1. मानसरोवर - भाग - 5 - पृ. 196.

इस वर्ष कृषि महोत्सव के लिए कहानी की नायिका " मधूलिका " का खेत चुना जाता है । मधूलिका कोशल के वीर रक्षक सिंह मित्र की एक मात्र कन्या है । मधूलिका उत्सव के दिन बीजों का थाल लेकर महाराजा के सामने जाती है और महाराजा बीज खेत में डालकर हल चलाते हैं उत्सव का मुख्य कार्यक्रम समाप्त होता है महाराजा मधूलिका को पुरस्कार रूप में थाल में कुछ स्वर्ण मुद्रायें देता है । यह धन राजकीय अनुग्रह के रूप में प्रतिवर्ष खेत के मालिक द्वारा स्वीकार किया जाता है । " मधूलिका ने थाली सिर से लगा लीं, किन्तु साथ में उसमें की स्वर्ण मुद्राओं को महाराज पर न्योछावर करके बिखेर दिया । और सविनय कहा देव यह मेरे पितृ-पितामहों की भूमि है इसे बेचना अपराध है । इसलिए मूल्य स्वीकार करना मेरे सामर्थ्य के बाहर है ।"[1] मधूलिका का संघर्ष यहाँ मानव अधिकार छीने जाने के विरोध में होता है ।

प्रेमचन्द की कहानी " बेटोंवाली विधवा " भी समान अधिकार को लेकर चलती है । कहानी की नायिका फूलमती के पति का देहान्त होता है । पति के जीवित रहने तक परिवार में अपनी संतान एवं सम्पत्ति पर पूर्ण अधिकार होता है किन्तु पति के देहान्त के बाद परिवार में पुत्र एवं बहुएँ फूलमती को इन अधिकारों से वंचित करते हैं । एक दिन फूलमती की एकलौती पुत्री कुमुद के विवाह के बारे में विवाद छिड़ता है फूलमती के बेटे अपनी बहन के विवाह पर

---

1. प्रसाद ग्रन्थावली - जयशंकर प्रसाद - पृ. 279.

पाँच हजार रुपये खर्च करने तैयार नहीं होते इसका फूलमती विरोध करती है । " विवाह तो मुरारीलाल के पुत्र से ही होगा पाँच हजार खर्च हो तो चाहे दस हजार । मेरे पति की कमाई है । मैंने मर-मरकर जोड़ा है । अपनी इच्छा से खर्च करूँगी । तुम्हीं ने मेरे कोख से नहीं जन्म लिया है । कुमुद भी उसी कोख से आयी है । मेरी आँखों में तुम सब बराबर हो मैं किसी से कुछ माँगती नहीं । " [1] यहाँ फूलमती का संघर्ष समान अधिकार प्राप्ती के लिए है ।

2.6. अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए नारी - संघर्ष :-

प्रेमचन्द की कहानी विध्वंस सामन्ती परिवेश को लेकर चलती है । " चीन की भाँति समन्तवादी शोषण से मुक्ति के लिए गाँवों को संघर्ष का प्रधान क्षेत्र नहीं चुना गया । प्रेमचन्द यही चाहते थे । वे मिलो को छोड़ कर खेत बनाना चाहते थे । " [2]

विध्वंस कहानी की नायिका " भुनगी " निम्नवर्ग की है । वह अपनी झोपड़ी में कई वर्षों से भाड़ झोंकने का काम करती है यही उसका जीविका का साधन है । उसकी झोपड़ी उसकी पैतृक सम्पत्ति है । गांव का जमीनदार उदयभानु भुनगी की झोपड़ी हड़पने की नीयत रखता है । इसीलिए वह समय-समय पर भुनगी की झोपड़ी पर आता है और बुरा भला कहता है ।

---

1. मानसरोवर भाग - 1 - प्रेमचन्द - पृ. 83.
2. साहित्य और जनसंघर्ष - शंभुनाथ - पृ. 58.

एक दिन जमींनदार झुनिया की झोपड़ी में प्रवेश कर उसका भाड़ फोड़ देता है और उसे गाँव छोड़ने की चेतावनी देता है झुनिया इसका विरोध करती है वह कहती है " क्यों छोड़ कर निकल जाऊँ। बारह साल खेत जोतने से असामी काश्तकार हो जाता है। मैं तो इस झोपड़े में बूढ़ी हो गयी। मेरे सास-ससुर और उनके बाप दादे इसी झोपड़े में रहे अब इसे यमराज को छोड़ कर और कोइ मुझ से नहीं ले सकता।"[1] इस कहानी में झुनिया द्वारा अस्तित्व के लिए नारी संघर्ष को देखा जा सकता है।

नारी आत्म निर्भर होने का प्रयत्न करती है। जीवन में विभिन्न विषम परिस्थितियाँ ही उसे साहसी बनाती है। जैनेन्द्र की " निःशेष " कहानी नारी अस्तित्व एवं अस्मिता को दर्शाती है। कहानी की नायिका " शारदा " पति द्वारा संतान सहित उपेक्षित है। पन्द्रह वर्ष पूर्व ही पति, बच्चों सहित शारदा को छोड़कर भाग जाता है और पन्द्रह वर्ष बाद उसकी नौकरी छूटने के कारण वह फिर अपनी पत्नि के साथ जीवन बिताने के उद्देश्य से अपने मित्र को पत्नि को मनाने के लिए भेजता है और जब पति स्वयं शारदा से अपने घर चलने के लिए कहता है तब शारदा पति का विरोध करती है वह कहती है -- " यह शरीर तुम्हें अब कभी नहीं मिलेगा। एक दफे नहीं दस दफे कह चुकी हूँ। फिर शर्म नहीं आती तुम्हें कि लार टपकाते आते हो भगवान के घर में न्याय है तो तुम्हें मिट्टी की औरत नहीं मिलेगी। औरत के मन थोड़े ही होता है। तुम समझते हो मन

---

1. मानसरोवर भाग-8, प्रेमचन्द - पृ. 183.

तुम्हारे ही है । जो भुगता है, मैं ही जानती हूँ । कोई और होता तो शक्ल न देखती । घर तक मैं कदम न रखने देती । पर तुम तो शरम चाट गये हो मालूम है तुम्हें कि तुम्हारे बच्चे छोटे कैसे पले है ? और उस वक्त तुम उपदेश पे चढ़े हुए थे । इन्सान को जीना होता है और जिलाना होता है । पहला फर्ज यह है, तुम फर्ज को किताब में और शास्त्तर में डाले रहे । ऊपर से बैठ कर गालियाँ देते रहे और खबर नहीं ली कि जिया जा रहा है तो किस विधि जिया जा रहा है । जीने में पैसा लगता है तुमने कमाया ? कभी कुछ किया ? कभी कुछ दिया ? बस देने को नीति के उपदेश दे रहे जैसे उन्ही से पेट भरता हो और कपड़े उन्हीं को काट-काट कर बन जाते हो ..... तुम्हें इसीलिए मैंने रोका कि आखिरी बार सुन लो कि तुम जाओ आध्यात्म में और धरम में रमो और जगह जाके उपदेश छांटा करो । हमको हमारे भाग पर छोड़ दो । कोई पैसा तुमसे नही माँगता, कोई तुम पर बोझ नहीं बनेगा बेटियाँ गई हम माँ बेटे जैसा होगा रह लेंगे । तुम्हारे आगे कोई हाथ पसार के नहीं आयेगा ।" [1]

जिस नारी का स्वभाव अपने परिवार में स्वायत्त शासन करना होता है ऐसे में यदि परिवार का कोई सदस्य उसके हुक्म की उपेक्षा करता है तो उसे असहनीय लगता है ।

---

1. जैनेन्द्र की कहानियाँ - भाग - 10 - पृ. 27.

" मनुष्यता की गरिमा को मानवीय नैतिकता का अ आधार बिन्दु मान लिया गया है । अपने आप में स्वतः सार्थक, बौद्धिक शक्तियों से परिपूर्ण प्रकृति की क्रूरताओं से जूझने वाला मनुष्य कहानी के माध्यम से मानव-निष्ठ मूल्यों की प्रतिस्थापना के लिए मनुष्यता के संग्रह के लिए निरन्तर संघर्षशील है ।"[1] प्रेमचन्द की कहानी बेटोंवाली विधवा में कहानी की नायिका फूलमती स्वाभिमानी नारी है । फूलमती के पति का देहान्त हो जाता है और तेरहवें दिन महाभोज रखा जाता है जिसकी तैयारी के लिए फूलमती सामान की सूची अपनी पुत्री को लिखाती है । किन्तु पुत्र एवं बहुत उसके हुक्म का उलंघन करते है जिसका विरोध फूलमती करती है । " वह क्रोध में भरी हुई आयी और कामतानाथ से बोली क्या आटा तीन ही बोरे लाये ? मैंने तो पाँच बोरे के लिए कहा था और घी भी पाँच ही टिन मँगवाया । तुम्हें याद है मैंने दस कनस्तर कहा था ? किफायत को मैं बुरा नहीं समझती लेकिन जिसने यह कुँआ खोदा, उसी की आत्मा पानी को तरसे, यह कितनी लज्जा की बात है ।"[2] यहाँ फूलमती का संघर्ष अस्मिता के लिए संघर्ष है ।

स्वातन्त्र्यपूर्व हिन्दी कहानी में अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए सामन्ती परिवेश को तोड़ते नारी संघर्ष को देखा जा सकता है ।

---

1. " भाषा " त्रैमासिक पत्रिका - सितम्बर - पृ. 58.
2. मानसरोवर भाग-1 - प्रेमचन्द - पृ. 69.

रांगेय राघव की कहानी " नारी का विक्षोभ "

" माया " अप्रैल 1946 हिन्दी पत्रिका में छपी कहानी की नायिका " सविता " का विवाह कहानी का नायक सूरज से होता है । ये दोनों कालेज के मित्र भी है । सविता शहर की लड़की है और सूरज गाँव का रहने वाला है । विवाह के बाद सूरज, सविता को अपने गाँव ले जाता है किन्तु सविता व्यवहार ससुराल वालों के व्यवहार से मेल नही खाता । परिवार के सदस्य सविता की शिकायते सूरज से करने लगते है और सूरज सविताता को पीटता है । सविता अपने भाई को शहर वापस ले जाने के लिए चिट्ठी लिखती है । परन्तु जब सविता का भाई गाँव आता है और सविता को अपने पति के साथ ही रहने का उपदेश देता है तब सविता भाई का विरोध करती है वह कहती है - " पति ही स्त्री का सब कुछ है ? किन्तु वह पति पुरुष होता है सीता जिस राम के पीछे चली थी, वह पुरुषार्थी था । जो व्यक्ति अपनी ही रूढ़ियों में जकड़ा हुआ हाँफ रहा है, वह मेरे जीवन का आदर्श नहीं हो सकता । किसलिए मैं अपने एकान्त सुख को इतना बड़ा बना दूं कि मेरे विश्वास, मेरी श्रद्धा मेरी शक्ति एक ऐसे व्यक्ति को देवता समझकर उसके पग पर जम जाय जो स्वयं लड़-खड़ा रहा हो जो स्वयं निर्बल हो और स्त्री को केवल वासना बुझाने और खानदान की इज्जत की चक्कियों में पीसने वाली दासी और बच्चे पैदा करने मात्र का एक साधन समझता हो, जो मेरी इंसानियत को धर्म के नाम पर कुचलकर मुझ पर घृणा से हंस देना चाहता हो ।" ।

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग - 1, सं. अशोक शास्त्री - पृ. 97- 98.

2.7. नारी उपेक्षा के विरुद्ध संघर्ष :-

प्रेमचन्द की कहानी बेटोंवाली विधवा में नारी उपेक्षा के विरुद्ध संघर्ष को देखा जा सकता है । कहानी की नायिका फूलमती का पुत्र कामतानाथ पति के महाभोज के दिन कम सामान लाता है और माँ से कहता है कि हानी-लाभ के बारे में वह भी जानता है यह सुनकर फूलमती क्रोधित होती है वह कहती है कि " मेरे हानि-लाभ के जिम्मेदार तुम नहीं हो । मुझे अख्तियार है उचित समझूँ वह करूँ । अभी जाकर दो बोरे आटा और पाँच टिन घी और लाओ आगे के लिए खबरदार, जो किसी ने मेरी बात काटी ।"[1] बड़ी बहू सास की आज्ञा के बिना ही तिजोरी खोलती है और पैसा सामान के लिए ले जाती है सास के विरोध करने पर विवाद करती है और फूलमती खून का घूँट पी लेती है ।

2.8. अन्याय एवं अत्याचार के विरुद्ध नारी - संघर्ष :-

सदियों से पुरुष, स्त्री को अपनी हाथ की कठपुतली बनाया है वह अपनी वासना तृप्ती के लिए स्त्री को ठगता रहा है । जैनेन्द्र कहते है स्त्री विश्वास करती है इसीलिए ठगी जाती है किन्तु सुभद्राकुमारी चौहान की कहानी " अभियुक्ता " की नायिका अभियुक्ता

---

1. मानसरोवर भाग-1 - प्रेमचन्द - पृ. 70.

ऐसे अन्याय का विरोध करती है । अभियुक्ता निम्न वर्ग की नारी है वह शहर के मशहूर बैरिस्टर गुप्ता के घर में नौकरानी है । एक दिन बैरिस्टर गुप्ता अपनी वासना को तृप्त न होते देख अभियुक्ता पर " सोने की चैन " चोरी का इल्ज़ाम लगाता है और पुलिस में रिपोर्ट कर उसे अपमानित करता है तथा कचहरी में उस पर दावा दर्ज करता है । कचहरी में अभियुक्ता से मैजिस्ट्रेट पूछताछ करता है उससे पूछा जाता है कि क्या वह बैरिस्टर गुप्ता के घर से रात को भाग गई थी उत्तर में वह कहती है कि " आहत अपमान उसके चेहरे पर तड़प उठा फिर कुछ सोचकर वह गम्भीर स्वर में बोली " जी हाँ मैं बैरिस्टर साहब के घर से भागी । पहले जब इन्होंने मुझे गुण्डों से बचाकर अपने घर में आश्रय दिया था, तब मेरे हृदय में इनके लिए श्रद्धा और कृतज्ञता के भाव थे । किन्तु वे धीरे-धीरे घृणा और तिरस्कार में बदल गये मैंने देखा कि बैरिस्टर साहब की कुछ की नीयत ठिकाने नहीं है । वह मुझे अपनी वासना का शिकार बनाने पर तुले हुए है धीरे-धीरे वह मुझे हर तरह की लालच दिखाने लगे और धमकियाँ देने लगे । एक दिन इसी तरह की छीना-झपटी में उन्होंने मेरी यह सोने की जंजीर देख ली थी इसीलिए चोरी का झूठा इल्ज़ाम लगाने का मौका मिला । मैं चोरों के डर के मारे कभी जंजीर को गले में नहीं पहनती थी । सदा कमर में खोंसे रहती थी ।" [1]

---

1. उन्मादिनी – सुभद्रा कुमारी चौहान – पृ॰ 41॰

नई पीढ़ी, पुरानी पीढ़ी के प्रति सदैव आशावादी दृष्टि रखती है । अमृतलाल नागर की कहानी " मलकाटूरिया का बेटा " इसी बात को लेकर चलती है । कहानी का नायक " बाबा चौबे बनारसीदास " का पुत्र राधेबिहारी अपने पिता द्वारा घर के हवाले अपने नाम करवाना चाहता है किन्तु बाबा चौबे अपने पुत्र की बात को स्वीकार नहीं करते जिससे राधे बिहारी अपने पिता से घृणा करता है । कहानी की नायिका " मलकाटूरिया " बाबा चौबे की बस्ती में रहती है वह अधिक मोटी होने के कारण उसका पति उसे छोड़ दिया है वह मुहल्लेवालों के साथ मिल-जुल कर रहती है । बाबा चौबे मलकाटूरिया को " माँ " कह कर पुकारते है जब कभी राधे बिहारी बाबा चौबे को पीटता है, मलकाटूरिया बाबा चौबे को बचाने का प्रयत्न करती है और राधेबिहारी से झगड़ती है " मलकाटूरिया अपने चबूतरे से उत्तर आई और सीधे जाकर राधे बिहारी की कमीज का कॉलर ही जा दबोचा ।

जूतों से पीटेगा नास पीटा । ले आ हिम्मत हो तो ।" मलकाटूरिया एक साँस में सौ बातें सुना गई ।" [1]

उपर्युक्त दोनो कहानियों में अन्याय एवं अत्याचार के विरूद्ध नारी संघर्ष का चित्रण मिलता है ।

---

1. एक दिल हजार अफ्साने - अमृतलाल नागर - पृ. 164.

2.8. सम्पत्ति के लोभ से आक्रान्त नारी का मानसिक संघर्ष :-

मानव ईश्वर में आस्था रखता है । वह मोहमाया के विषय में दूसरों को बड़े-बड़े वक्तव्य देता है । परन्तु स्वयं इससे छुटकारा नहीं पाता । इसका सुन्दर उदाहरण अमृतलाल नागर की कहानी " मोहमाया " में देखा जा सकता है । कहानी में लाला ठेकेदार की धर्मपत्नि श्रीमती श्यामकली देवी के घर में उनके पुत्र का टीका होता है । टीके में काफी मुल्यवान वस्तुएँ लड़की वालों द्वारा भेजी जाती है ।

मोहल्ला समाज की स्त्रियाँ कहानी का पात्र पन्नो की अम्मा के घर की छत पर प्रतिदिन अपनी मण्डली इकट्ठा किया करते है । टीके के दूसरे दिन, टीके में आई बहुमूल्य चीजों के बारे में बतियाने लगते है । स्त्रियों की मानसिक स्थिति में परिवर्तन होता है । स्त्रियों ने यह सुना है कि होनेवाली बहु कानी है और सम्पूर्ण नारी मण्डली इसका विरोध करती है । वे कहती है कि सम्पती को पाने के लिए उसने कानी बहु को अपने बेटे के गले में ढोल की तरह बाँधा है । श्रीमती श्यामकली के दमकदार चेहरे की ओर एक बार झक झकाई, फिर मन की बती साधकर ठंडे-मीठे स्वर में समझाकर बोली " कानी नहीं है भाभी, सीतला में एक आँख चली गई थी उसकी, उसके बाप ने पाँच हजार खर्चा करके बिजली की आँख लगवा दी है कहे है कमल ऐसी आँख हो गई है मेरी बहु की असली आँखों से जादा रोशनी होवे है उनमें ।"

हाँ-हाँ आँख न हुई गैस बिजली का हंडा हो गई निगोड़ी काटे मेरा मुँह झुलसाती हो बरत के दिन ।" अम्मो की म महतारी तीखी पड़ी आगे कहा "मेरा अम्मों कह बताये रहा था पन्नों की अम्मा, पत्थर की आँख होती है । सोई इसकी बहू को भी लगी है । पर उससे क्या कानी तो कानी ही कहलाएगी ।"

"अरे उसकी एक आँख में भगवान की दी हुई रोशनी है और दूसरी में बाप के लाखों की माया चमकती है । भाभी उसी माया में तो लुभाई है ।" किसो की बुआ ने कहा ।"

" पन्नों की अम्मा ने मुस्कुराकर कहा "ठीक ही तो कहती है बिचारी । गीता में लिखा है कि करम करो, फल न देखो । सो इन्होंने फल में तो पराये घर की लच्छमी ताकी और करम की कानी अपने बेटे के सिर मढ़ दी ।"

औरतें हंस पड़ी श्यामकली देवी का मुँह फूल गया । बोली "लड़का मेरा है मैं चाहे जो करूँ ।"[1] सम्पत्ति के लोभ से आक्रान्त नारी के मानसिक संघर्ष को इस कहानी में देखा जा सकता है ।

---

1. एक दिल हजार अफसाने - अमृत लाल नागर - पृ० 277.

2.10. अनैतिक मूल्यों के विरुद्ध नारी - संघर्ष :-

भारतीय नारी परम्परा से चाहे अशिक्षित या परिस्थिहीन होते हुए भी वह समाज के दायरे में जीने का प्रयत्न करती है। वह भी नैतिक मूल्यों में बंधना चाहती है। किन्तु विवाह के पश्चात् यदि उसके मूल्य समाप्त हो जाते है तो उसे उसका जीवन जड़ प्रतीत होता है। इलाचन्द जोशी की कहानी " क्रय-विक्रय " की नायिका " मालिनी " अपने जीवन मूल्य को आँक कर उसकी सही पहचान करती है और पति " रवीन्द्र " से कहती है " मैं आज अच्छी तरह जान गई हूँ कि तुमने क्या सोचकर मुझसे ब्याह किया था। ब्याह के पहले तुमने जब पहले पहल देखा था। उस दिन तुम्हारी दृष्टि में क्या भाव छिपा था। यह बात तब मेरे आगे स्पष्ट नहीं हो पाई थी आज मैं उसका मर्म ठीक समझ पाई हूँ। तुम अपनी आँखों से मेरी नाप जोख कर रहे थे, मेरा वजन ले रहे थे और मेरा मूल्य आंक रहे थे इस उद्देश्य से कि यह कच्चा माल पक्का होने पर बाजार में कितने दामों पर बिक सकेगा।" [1] यहाँ मालिनी द्वारा अनैतिक मूल्य के विरुद्ध संघर्ष को देखा जा सकता है।

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - इलाचन्द्र जोशी - पृ. 44.

2.11. नारी-संघर्ष का यथार्थ बोध :-

नारी संघर्ष का वास्तविक रूप अमरकान्त की कहानी " लड़का - लड़की " में देखा जा सकता है । कहानी की नायिका तारा मध्य वर्गीय युवती है जो पढ़ाई में अधिक रुचि रखती है । पिता एक क्लर्क है । कहानी का नायक चन्दर उच्च वर्गीय नवयुवक है जिसे गरीबी का कोई ज्ञान नहीं है और उच्चाकांक्षी विचारों वाला है वह महान कार्य कर दुनिया को दिखाना चाहता है । चन्दर, तारा से प्रेम करता है और तारा को उपदेश देता है कि जीवन में वह भी बड़ा त्याग करे । चन्दर तारा से शादी करना ही जीवन में सर्वस्व त्यागी होना समझता है । वह शादी का प्रस्ताव तारा के सम्मुख रखता है और कहता है " बड़े काम करने के बड़े तरीके होते है उसके लिए संघर्ष से गुजरना पड़ता है । तुम उनके काबिल नहीं हो " तारा इसका उत्तर देती है " प्यार की चरम परिणति है शादी इसी मंजिल तक पहुँचने के लिए संघर्ष और कुरबानियाँ की जाती है लेकिन जब यह मंजिल प्राप्त हो जाती है तो आपको खुशी नहीं होती । इसका अर्थ है कि आपकी संघर्ष की बातें जिम्मेदारियों से बचने और स्वार्थ को छिपाने का बहाना है । मैंने तो जीवन के आरम्भ से ही संघर्ष किया है आपने क्या किया है ? आप भूख जानते है ? आपको गरीबी, जलालत घुटन, ऊब, निराशा का पता है ? साफ बात तो यह है कि आपको एक नारी देह की जरूरत है और जरूरत है अपने अहंकार की तृप्ति की ।" [1]

---

1. मित्र मिलन - अमरकान्त - पृ. 18.

2.12. बौद्ध धर्म के आडम्बर पूर्ण पक्ष के विरुद्ध नारी-संघर्ष :-

जयशंकर प्रसाद की कहानी " देवरथ " इन्द्रजाल कहानी संग्रह में संग्रहित है इस संग्रह का रचनाकाल 1936 ई. है । इस कहानी में धर्म के नाम पर मनुष्य का जीवन किस तरह कुचला जाने लगा उसे दर्शाया गया है । बौद्धधर्म के लोग गृहस्थ त्याग कर संघ में भिक्षुक बन कर रहने लगे थे किन्तु वे अपनी वासना तृप्ति से वंचित नहीं हो सके अन्यथा उनकी वासना अधिक तीव्र होने लगी जिसका विरोध कहानी की नायिका सुजाता करती है वह भी संघ में भिक्षुक है ।

कहानी में एक और पात्र आर्यमित्र भिक्षुक एवं संघ का वैद्य है वह सुजाता से विवाह का प्रस्ताव रखता है संघ स्थविर सुजाता के प्रेम सम्बन्धी बातों को जानकर सुजाता से अपने और आर्यमित्र के पापों का प्रायश्चित करने के लिए कहता है संघस्थविर सुजाता से कहता है कि तुमने धर्मद्रोह किया है क्योंकि तुम्हारा शरीर देवता को समर्पित था । सुजाता संघस्थविर को असत्यवादी और पाखण्डी नर पिशाच कह कर अपमानित करती है । जिसके बदले में संघस्थविर सुजाता को मृत्यु दण्ड घोषित करता है सुजाता मृत्युदण्ड को स्वीकारते हुए कहती है कि " कठोर से कठोर मृत्युदण्ड मेरे लिए कोमल है । मेरे लिए इस स्नेहमय धरणी पर बचा ही क्या है ? स्थविर तुम्हारा धर्मशासन घरों को चूर-चूर करके विहारों की सृष्टि करता है कुचक्र में जीवन को फंसाता है । पवित्र गार्हस्थ्य बन्धनों को तोड़कर तुम लोग भी

अपनी वासना तृप्ति के अनुकूल ही तो एक नया घर बनाते है जिसका नाम बदल देते हो । तुम्हारी तृष्णा तो साधारण सरल गृहस्थों से भी तीव्र है । क्षुद्र है और निम्न कोटि की है ।"[1] यहाँ हम बौद्ध धर्म के आडम्बर पूर्ण पक्ष के विरुद्ध नारी संघर्ष को देख सकते है ।

2·13· नारी का भावनात्मक संघर्ष :-

विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक की कहानी " ताई " निस्संतान नारी मन की कुण्ठा को लेकर चलती है । कहानी की नायिका रामेश्वरी उच्चवर्गीय नारी है उसकी कोई संतान नहीं है संतान के अभाव में उसकी मानसिक स्थिति विकृत हो गयी है । पति बाबूरामजी दास अपने छोटे भाई कृष्णदास के बच्चों को अपने बच्चे समझते है यह रामेश्वरी को असहनीय लगता है । देवर के बच्चों को पराये समझती है और उसे माँ बनने की अधिक लालसा है ।

पति की मानसिक स्थिति को रामजी दास समझने का प्रयत्न नहीं करते बल्कि भतीजे को ही प्यार करने के लिए कहते है रामेश्वरी इसका विरोध करती है वह कहती है " मुझे क्या पडी जो मै प्रेम करूँगी । तुम्ही को मुबारक रहे । निगोडे आप ही आ-आ के घुसते है । एक घर में रहने में कभी हंसना-बोलना पड़ता ही है ।

1· प्रसाद ग्रंथावली - जयशंकर प्रसाद - पृ· 363·

अभी परसों जरा यों ही ठेल दिया, उस पर तुमने सैकड़ों बातें सुनाई। संकट में प्राण है न यों चैन न वों चैन।"[1]

देवर के बच्चों को पराया समझना, स्वयं को निस्संतान महसूस करना इन दोनों स्थितियों के बीच रामेश्वरी के मन में द्वन्द्व छिड़ता है जिसके परिणाम स्वरूप रामेश्वरी मानसिक स्तर पर संघर्ष करती है।

2.14. निष्कर्ष :-

स्वातन्त्र्यपूर्व हिन्दी कहानीकारों की दृष्टि नारी की विविधमुखी दासता से अपरिचित नहीं है। उनकी कहानियों में नारी-संघर्ष के विभिन्न आयाम बीजरूप एवं काल्पनिक रूप में उभर कर सामने आए है। उनका उद्देश्य संघर्ष के लिए नारी में चेतना जागृत करना रहा। देश की स्वातंत्र्ता के संघर्ष के साथ नारी भी अपनी स्वातन्त्र्ता की खोज करने लगी।

जयशंकर प्रसाद की " रमला ", " पुरस्कार ", " देवरथी ", " यशपाल " की " छलियानारी " सुभद्रा कुमारी चौहान की " मंगला " अभियुक्ता आदि कहानियों में नारी मुक्ति एवं स्वतन्त्र अस्तित्व की कल्पना तथा देश की रक्षा, समान अधिकार,

---

1. ।। श्रेष्ठ कहानियाँ - सं.सुरेश सिन्हा - पृ. 82.

अन्याय एवं अत्याचार, बौद्ध धर्म के आडम्बर आदि के विरुद्ध नारी - संघर्ष का चित्रण मिलता है । सुभद्रा कुमारी चौहान का जीवन-संघर्ष नारी-संघर्ष के लिए प्रेरणास्त्रोत है ।

प्रेमचन्द की कहानियाँ " घासवाली " अग्नि समाधि, " विध्वंस ", बेटोंवाली विधवा, इलाचन्द्र जोशी की कहानियाँ " एक डाक्टर की फीस, क्रय-विक्रय आदि जाति और वर्ग तथा आर्थिक, दैहिक शोषण के विरुद्ध नारी के संघर्ष को दर्शाती है । जैनेन्द्र की " पत्नी ", निःशेष, मुक्ति आदि कहानियों में नारी संघर्ष का बीजरूप मिलता है और उसके अस्तित्व व अस्मिता के लिए संघर्ष परिलक्षित होता है । अमृतलाल नागर की " मल्का टूरिया, मोहमाया, कहानियों में अत्याचार व अनैतिकता के विरुद्ध संघर्ष, अमरकान्त की " लड़का-लड़की " में नारी संघर्ष का यथार्थ बोध, विश्वम्भरनाथ कौशिक की " ताई " कहानी में नारी के मानसिक संघर्ष आदि का चित्रण हुआ है ।

स्वातंत्र्यपूर्व कहानियों में बीजरूप एवं काल्पनिक रूप में उभरकर आए नारी संघर्ष के विभिन्न आयामों का विकास स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानियों में परिलक्षित होता है इनके अतिरिक्त युगानुरूप कुछ नई प्रवृत्तियाँ भी दिखाई देती है ।

तृतीय-अध्याय

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी-संघर्ष : पुरुष-सत्ता, शासन और शोषण के संदर्भ में ।

3·0· स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी संघर्ष : पुरुष सत्ता, शासन और शोषण के संदर्भ में

मनुस्मृति एवं वेदों में आदर्श समाज की स्थापना के उद्देश्य से पुरुष को आक्रामक एवं स्त्री को निर्बल बताया गया । वशिष्ट धर्मसूत्र में लिखा है " पिता रक्षति कौमारे, भ्राता रक्षति यौवने, रक्षति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातंत्र महर्ति § 5/1,2, 2/1,3, 44, 45 § इसका अर्थ है कुमारी अवस्था में नारी की रक्षा पिता करेंगे, यौवन में पति और बुढ़ापे में पुत्र ·[1] अर्थात् पुरुष सर्व प्रथम शासन अपने परिवार पर करने लगा परिणाम स्वरूप पुरुष शोषक वर्ग का प्रतीक बना और स्त्री शोषित वर्ग की ।

1· यह पूरा उद्धरण प्रस्तुत प्रबन्ध के प्रथम अध्याय - पृ· सं· 22 पर दिया गया है ।

स्वातन्त्र्यपूर्व देश के मुक्ति-संघर्ष के साथ-साथ नारी भी अपने सदियों के पुरुषदासत्व से मुक्ति के लिए संघर्ष करने लगी । महात्मा गाँधी ने वास्तविक आजादी का अर्थ तभी माना जब देश की नारी रात के 12 बजे निर्भीक घर से बाहर निकल सके ।

स्वातन्त्र्योत्तर काल में देश का सम्पूर्ण परिवेश ही बदल गया । " अंग्रेजों की दासता से मुक्ति के बाद देश की भौगोलिक सीमाएँ घटने-बढ़ने लगी । देश के विभाजन के दुष्परिणाम ने जनता को " भावनात्मक, विचारात्मक, मनोवैज्ञानिक और आत्मिक स्तरों पर प्रभावित किया ।" [1] देश की व्यवस्था अव्यवस्थित होने लगी जिसने व्यक्ति को प्रभावित कर उसे संकीर्णता की परिधि में सोचने को बाध्य किया ।

स्वातन्त्र्योत्तर काल में राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विषम परिस्थितियों के दबाव में संयुक्त परिवार का विघटन होने लगा । अत्याधिक परिवर्तन पारिवारिक स्तर पर नारी-जीवन में हुआ । आर्थिक दबावों के कारण जीविका के लिए कमाने उसे बाहर निकलना पड़ा यहीं से नारी का अस्तित्व के लिए संघर्ष आरम्भ हुआ ।

औद्योगिक पूँजीवादी युग में नारी पण्यवस्तु में स्थानान्तरित हुई । नारी का दोहरे स्तर { घर, बाहर } पर शोषण प्रारम्भ हुआ । इसकाल में विशेषकर मध्यवर्ग का संघर्ष उभर कर आता है ।

---

1. " संचेतना " पत्रिका विभाजन की एक भूमिका और एक कथा संसार : डॉ. नरेन्द्र मोहन - पृ. 25.

स्वतन्त्रता के बाद व्यक्ति में आए विभिन्न परिवर्तन से कहानी - कार प्रभावित हुए फलस्वरूप इनका एक ऐसा समूह का उदय हुआ जिसने कहानी को नया आयाम देना आरम्भ किया । इसलिए " स्वतन्त्र्योत्तर कहानी " शब्द का प्रयोग किया जाने लगा ।

स्वतन्त्रता के बाद सम्पूर्ण देश के परिवर्तन से प्रभावित नारी में नया अहं पैदा हुआ उसने अपने रूप को समझा अर्थात् उसने अपने अस्तित्व को पहचान की और अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए विभिन्न परि - स्थितियों से जूझते हुए संघर्ष करने लगी । यह परिवर्तित परिवेश स्वात- न्त्र्योत्तर हिन्दी कहानियों से अछूता नहीं रहा ।

स्वतन्त्रता के बाद स्त्री को शिक्षा की सुविधाएँ प्राप्त होने लगी परिणामतः उसके व्यक्तित्व में भी परिवर्तन होने लगा । स्त्री के पारम्परिक रूप में उसके चिन्तन, मूल्य दृष्टि में परिवर्तन हो इस उद्देश्य से विविध प्रकार के आन्दोलन चलाए गए ।

स्त्री और पुरुष के पारस्परिक सम्बन्धों का पहला, आधार भूत और अपेक्षाकृत संकुचित क्षेत्र है परिवार और दूसरा अपेक्षाकृत व्यापक और समुन्नत क्षेत्र है समाज । इस अध्याय के आरम्भ में उद्धृत श्लोक स्त्री के प्रति पुरुष की प्राथमिक भूमिका तय करता है जो कि परिवार के दायरे में सीमित है यह भूमिका है पिता, भाई, पति और पुत्र की और प्रकारान्तर से यह भूमिकाएँ पुरुष की सत्ता को उसके शासन, संरक्षण को स्त्री के लिए अनिवार्य बनाती है । स्वाभाविक है कि शासक और संरक्षक की भूमिका

शोषक में स्थान्तरित होने लगी । समाज के व्यापक क्षेत्र में आकर यही भूमिकाएँ बृहत्तर रूप धारण करती है । अतएव नारी संघर्ष का मूलभूत आधार है पुरुष की इन विभिन्न भूमिकाओं के बहाने किए जाने वाले शोषण, अतिक्रमण और अनाचार का विरोध । इसी कारण इस अध्ययन को दो आधारों पर प्रस्तुत किया जा रहा है । §1. पुरुषसत्ता, शासन और शोषण के विरुद्ध नारी-संघर्ष : पारिवारिक संदर्भ 2. पुरुष सत्ता, शासन और शोषण के विरुद्ध नारी संघर्ष : सामाजिक संदर्भ §

इन संदर्भों में प्रस्तुत पुरुष की विभिन्न भूमिकाओं अथवा स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के विभिन्न आयामों को चर्चा का विषय बनाया गया है ।

3.1. पुरुष सत्ता : शासन और शोषण के विरुद्ध नारी-संघर्ष-पारिवारिक संदर्भ :

3.1.1. पारिवारिक संबंध :-

सबसे पहले हम स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में पारिवारिक सम्बन्धों में पुरुष की भूमिकाएँ शासक, शोषक एवं संरक्षक आदि का विश्लेषण करेंगे ।

" पुरुष द्वारा नारी का शोषण या कहे कि पूरे समाज की नारी के शोषण और दमन में सक्रिय हिस्सेदारी तथाकथित सभ्य मानव-समाज की पहचान रही है । आदिम मानव-समाज और लगभग वैसा ही जीवन जीने वाले आज के आदिवासियों या वनवासियों के समुदायों को बाद दे दे तो हजारों सालों से प्राय: विश्वव्यापी रूप में, नारी " सेकंड सेक्स की गौण, उपेक्षित और अभिशप्त जिन्दगी जीने को विवश रही है । इस दृष्टि से

मध्ययुग संभवतः इतिहास का सबसे काला युग कहा जा सकता है, जबकि नारी सामन्ती व्यवस्था में मात्र भोग विलास की " वस्तु " बन गई थी । निस्सन्देह आधुनिक युग में नारी के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव आया है और नारी खुद भी अपनी लड़ाई लड़ने की संकल्प-शक्ति से युक्त हो रही है । पर अभी इस संघर्ष की शुरुआती दौर ही है और कुल मिलाकर आज भी, भारत में, नारी अभी ग्राही या भोगने वाले छोर पर ही है । पुरुष देता है और वह लेती है । सुख या दुःख, स्त्री पुरुष पर अवलम्बित है । अपने अधिकार भी अभी उसे पुरुष से ही प्राप्त होते हैं । आज की स्त्री अपना अधिकार स्वयं हासिल करने के लिए अपना भाग्य आप निर्मित करने के लिए संघर्ष कर रही है ।"[1] जिसे हम नारी के विभिन्न रूपों में कहानियों में देख सकते हैं ।

3.1.2. पिता-पुत्री संबंध :-

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में शोषण के विरुद्ध नारी संघर्ष का चित्रण मिलता है । परिवार में पिता की भूमिका शासक के साथ-साथ शोषक की भी होती है । आर्थिक अभाव मनुष्य को विवश करता है । निम्न वर्ग में जन्मी लड़की अपने माता-पिता के लिए छोटी उम्र में ही आजीविका का साधन बन जाती है । बचपन की उसकी खुशियां दफना दी जाती है और माता-पिता उसे किसी के घर में बर्तन साफ करने के काम में लगा देते हैं ।

---

1. " समीक्षा " अप्रैल - जून 1993 - छिन्नमस्ता - गोपाल राय
   पृ. - 7.

भीष्म साहनी की कहानी " राधा-अनुराधा " में यही बात दर्शायी गई है । कहानी की नायिका " राधा " का परिवार में दोहरे स्तर पर शोषण किया जाता है । राधा धोबी की बेटी है बाप एक मुहल्ले की गली में इस्त्री का काम करता है । राधा उसी मुहल्ले के सात घरों में झाडू, बर्तन का काम करती है । राधा का बाप राधा की सत्तर रुपयों की कमाई से परिवार का खर्च चलाता है और काम से निपटने के बाद राधा को घर में खाना बनाना पड़ता है । यदि वह खाना नहीं बनाती है तो राधा का बाप उसे पीटता है । राधा जिन घरों में बर्तन का काम करती है उनमें सबसे अधिक पसन्द का घर उसे श्यामा का लगता है । श्यामा, राधा को चाहती है और उसे कुछ खाने को देती है । राधा के घरवाले इसी विश्वास के साथ राधा की रोटी का ठीक ध्यान नहीं रखते क्योंकि उसे श्यामा के घर में भोजन मिल जाता है ।

राधा का बाप राधा को समय-समय पर इसलिए आवाज देता है कि मुहल्लेवालों को ध्यान रहे कि उसका बाप मुहल्ले में ही उपस्थित है । अक्सर राधा को रविवार के दिन टेलिविजन पर फिल्म देखने का अत्यन्त शौक होता है । फिल्म देख कर वह अपने घरवालों के शोषण से बचना भी चाहती है । राधा, श्यामा के घर काम समाप्त करने के बाद टेलिविजन पर फिल्म देखने के लिए वहीं बैठ जाती है किन्तु श्यामा उसे अपने घर जाने के लिए कहती है राधा इसका विरोध करती है " देखो बीबीजी, जो फिल्म होगी, तो मैं देखकर जाऊँगी । घर जाती हूँ तो सबके लिए खाना मुझे बनाना पड़ता है । इधर सात घरों का काम करती हूँ उधर जाकर खाना भी बनाती हूँ । अगर फिल्म देखकर जाऊँगी तो सिर्फ पिटाई होगी खाना तो, सिर्फ पिटाई होगी खाना तो नहीं बनाना पड़ेगा। "[1]

---

1. वाङ्‌मय : भीष्म कहानी - पृ. 133.

इस कहानी में दोहरे स्तर पर शोषण के विरुद्ध राधा के संघर्ष को देखा जा सकता है । लेखक कहते हैं " तेरह साल की उम्र में ही राधा ने जिन्दगी का बहुमूल्य पाठ सीख लिया था । कोई फर्क नहीं पड़ता, किसी बात से कोई फर्क नहीं पड़ता । खाओ, न खाओ । सो ओ, नहीं सोओ, देर से जाओ सवेरे जाओ, किसी बात से कोई फर्क नहीं पड़ता ।"[1]

3·1·3· पति-पत्नी संबंध :-

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में पति द्वारा पत्नी पर संरक्षण एवं शासक की भूमिका निभाते हुए शोषण का शिकार बनाते देखा जा सकता है । आधुनिक युग में समाज की नैतिकता दांव पर है व्यक्ति नौकरी करता है और अपने परिवार का पोषण करता है उसे अपने कार्यालय या कम्पनी में अपने साथियों से जूझना पड़ता है उसकी तरक्की उसकी नैतिकता एवं अनैतिकता पर निर्भर होती है ।

सूर्य बाला की कहानी " पराजित " इसी बात को लेकर चलती है । कहानी का नायक बंसल प्रमोशन चाहता है किन्तु इन्चार्ज सेकन्ड आफिसर की कूटनीति के कारण उसे प्रमोशन नहीं मिल पाता बल्कि उसका स्वभाव कुण्ठित हो जाता है कुण्ठा के कारण बंसल चिड़चिड़ा भी होता है । दस साल तक उसका प्रमोशन रुका रहता है । कम्पनी में कई जूनियर्स, सीनियर्स और मैनेजर तक पदोन्नत होते हैं बंसल का मित्र बंसल को बतलाता है कि उनकी

1· वाङ्·चू - भीष्म सहानी - पृ· 137·

तरक्की के पीछे उनकी बीवियों का हाथ है। बंसल में भी स्वार्थ जागृत होता है वह अपनी बीवी द्वारा अफसरों को खुश करवा कर प्रमोशन लेना चाहता है। अपनी पत्नी निशा से वह अनुरोध करता है कि पार्टी में वह मैक्सी पहने जिससे अफसर आकर्षित हो सके। निशा पति की बातों से पीड़ित होती है और दोनों में मानसिक तनाव उत्पन्न होता है। निशा बंसल का विरोध करती है वह शारीरिक शोषण के विरुद्ध संघर्ष करती है। वह कहती है कि "पहनूँगी और वह सब करूँगी जो मिसेज गिडवानी करती है, तब तक करती रहूँगी जब तक तुम्हें प्रमोशन न मिल जाय और उसके बाद अगर कभी आत्महत्या करने की भी ख्वाहिश हुई तो मरने से पहले यह जरूर ख्याल करूँगी कि उस समय बदन पर पहने कपड़े और काट ढंग से हों, तुम्हारी पोजिशन के अनुकूल, क्यों तुम्हें अपनी मरी हुई बीवी के कपड़े देखकर लोगों के सामने शर्मिंदगी न उठानी पड़े इसलिए मैक्सी ही।"[1]

दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी के विचारों में एकता आवश्यक होती है। विचारों में भिन्नता के परिणाम स्वरूप संघर्ष उत्पन्न होता है। चित्रा मुद्गल की कहानी "बावजूद इसके" इसी बात को लेकर चलती है। कहानी की नायिका प्रीति का स्वभाव अपने पति गोयल के स्वभाव से मेल नहीं खाता। गोयल को क्लबों में रातें बिताने तथा बड़े होटलों में भोजन करने का अधिक शौक है। प्रतिदिन पति-पत्नी में झगड़ा होता है। गोयल, प्रीति को पीटता है गोयल की अमानवीयता से गोयल का भाई जतन भी तंग होता है। प्रीति गोयल के दुर्व्यवहार से पीड़ित माँ के घर चली जाती है। दुबारा न लौटने का निर्णय लेती है वह गोयल को

---

1. थाली भर चाँद - सूर्यबाला - पृ. 86.

सम्बन्ध विच्छेद के लिए पत्र लिखती है " विच्छेद के कागज मेरा वकील भेज रहा है जो स्थिति है उसके सच को स्वीकार कर लेना ही दोनो के लिए बचा-खुचा विकल्प है अलग होने के लिए मैं तुम पर कोई कारण नहीं थोप रही । बस मैं अलग होना चाहती हूं । छुटकारा चाहिए । माँ, भैया और भाभी इस पक्ष में नहीं किन्तु अब मैं किसी पक्ष-विपक्ष की दुविधा बनकर नहीं जी सकती ···· मोना जीवित होती तो शायद उसे बाप का नाम देना जरूरी होता । तब शायद ··· या शायद मेरा यह सोचना भी गलत हो । शायद तब भी यही करती ··· खैर ··· यहाँ " गोल्डन काण्टीनेण्टल " में रिसेप्शनिस्ट के पद पर हूँ । अच्छी तनख्वाह है । इस नौकरी के लिए गैर-शादी-शुदा ही आवेदन कर सकते है मैंने यही जाहिर किया है । यानी पत्नीत्व की भावना से मैं पहले ही मुक्ति पा चुकी हूँ अब औपचारिकताओं पर तुम्हें मात्र हस्ताक्षर करना है ···· ।"[1] यहाँ पति के शोषण के विरुद्ध पत्नी के मूक संघर्ष को दर्शाया गया है ।

नौकर पेशा व्यक्ति स्वार्थानुसार दफ्तर में काम करने वाली महिलाओं से प्रेम का नाटक रचता है । रवीन्द्र कालिया की कहानी "काला रजिस्टर" में नौकरी पेशा व्यक्ति के स्वभाव का चित्रण हुआ है । दफ्तर का एक सदस्य जिसका नाम "छोटा" है जो विभाग में दिलचस्प आदमी भी है वह विवाहित है और उसके चार बच्चे है वह दफ्तर की एक महिला "छायाजी" से प्रेम का नाटक करता है । छोटे की पत्नी को यह खबर मिलती है तो वह पहले विश्वास नहीं करती बल्कि वह हंस देती है जब छोटे की पत्नी छोटे के व्यवहार में परिवर्तन देखती है परिवार

1· ग्यारह लम्बी कहानियाँ – चित्रामुद्गल – पृ· 144·

के प्रति उसकी लापरवाही देख वह छोटे के प्रति अपना संतुलन खो देती है। प्रेम का अभाव एवं परिवार के प्रति लापरवाही के विरुद्ध वह पति से संघर्ष करती है। "उसने एक अच्छी सुबह बच्चों को छोटे के सामने पटक दिया और हमेशा के लिए मैके लौट जाने को आमादा हो गयी। छोटे उस दिन दफ्तर के "पास" से छायाजी को अरोकी जाँ सुनाकर लौटा था और अच्छे मूड में था। "पागल हो गयी हो क्या? वह बोला। हाँ, हाँ पागल हो गयी हूँ। कहाँ है वह चुड़ैल? मैं उसका खून कर दूँगी। छोटा जाँ सुनकर लौटा था और इस सबके लिए तैयार न था, बोला, डार्लिंग, मुझे गलत मत समझो। प्रिंस की कसम, मैंने कोई गुनाह नहीं किया। छोटे की पत्नी पर छोटे की कसम का कोई असर नहीं हुआ, उसने अटैची उठायी और दरवाजे की तरफ चल दी।"[1] प्रसिद्ध उपन्यासकार बाल्जाक ने नारी के लिए एक धूर्त पूर्ण छलावा गढ़ने का एक सूत्र प्रस्तुत किया है "उससे नौकरानी जैसा व्यवहार करो पर उसको समझा कर रखो कि वह महारानी है।"[2]

मनुष्य उच्चाकांक्षी होता है अपनी महत्वाकांक्षा को शिखर तक पहुँचने के लिए वह निम्न स्तर का कार्य करता है। तात्पर्य मनुष्य को और भी निम्न स्तर तक ले जाती है।

---

1. गली कूचे - रवीन्द्र कालिया - पृ. 206.

2. यह पूरा उद्धरण प्रस्तुत प्रबन्ध के प्रथम अध्याय - पृ. 26.

शिवमूर्ति की कहानी कसाई बाड़ा निम्नवर्गीय नारी के शोषण के विरुद्ध संघर्ष को लेकर चलती है । इस कहानी में गाँव का लीडर गाँव के प्राइमरी स्कूल का मास्टर है । उसे गाँव का प्रधान बनने की लालसा होती है वह गांव के प्रधान द्वारा गांव के लड़कियों को बेचे जाने की सच्चाई का परदाफाश करता है और लोगों में अपनी विश्वसनीयता जगाने का प्रयत्न करता है । बेची गई लड़कियों में कहानी की नायिका " शनिचरी " की पुत्री भी एक है । लीडर शनिचरी को प्रधान के विरुद्ध संघर्ष के लिए तैयार करता है ।

शनिचरी लीडर के कहे अनुसार प्रधान के घर के सामने अनशन करती है लीडर जानता है कि शनिचरी अनशन करते एक दिन मर जाएगी । वह शनिचरी के मरने के पहले ही शनिचरी को ठग कर दो बीघा खेत अपने नाम कर लेता है । प्रधान शनिचरी को अनशन न तोड़ते देख दूध में विष मिलाकर उसे पिलाता है शनिचरी मर जाती है । लीडर द्वारा खेत हड़पे जाने की खबर शनिचरी के मरने के बाद गाँव में फैलती है । लीडराइन, लीडर से पूछती है कि क्या यह खबर सही है लीडर कहता है यदि वह खेत नहीं हड़पता तो प्रधान हड़प लेता । लीडराइन इसका विरोध करती है वह कहती है " तुम लोग कसाई हो सारा गाँव कसाई बाड़ा है । मैं नहीं रहूगी इस गाँव में । वह हाथ झटककर आँगन में आ जाती है ।"[1] इस कहानी में पति की अमानवीयता के विरुद्ध पत्नी के संघर्ष का चित्रण हुआ है । इस कहानी में प्रधान, लीडर, दरोगा कसाई है । सम्पूर्ण गाँव को इन्होंने कसाईबाड़ा बनाया है । गाँव के लोग इनके द्वारा गाय या बकरी की भाँति समय-समय पर बलि चढ़ाये जा रहे है ।

---

1. कसाई बाड़ा - शिवमूर्ति - पृ. 87.

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में भारतीय नारी की दयनीय स्थिति को दर्शाया गया है । पति-पत्नी के सम्बन्ध विच्छेद के बाद भी कानून पत्नी को संतान पर अधिकार की अनुमति नहीं देता । केवल कुछ वर्ष संतान को माँ के संरक्षण में रखने की कानून अनुमति देता है और उसके बाद पति ही संतान का अधिकारी होता है ।

चित्रा मुद्गल की कहानी " शून्य " में इसी बात का चित्रण मिलता है । कहानी की नायिका " सरला " है जिसका पति " राकेश " और पुत्र दीपू है । राकेश की प्रेमिका बेला है सरला से विवाह के बाद भी वह बेला के साथ रहता और सरला से दुर्व्यवहार करता है जिसका परिणाम दोनों का तलाक होता है । राकेश दीपू को कानूनी फैसले से एक वर्ष पूर्व ही अपने साथ ले जाना चाहता है । सरला इसका विरोध करती है " एक विद्रूप भरी मुस्कान उसके होंठों पर खिल आयी । आज बेला उसके सामने हाथ पसारे खड़ी है ...... आज उसके पास कुछ है जिसके लिए बेला पूरी जिन्दगी भर तरसती रहेगी ... तड़पती रहेगी ... आज लड़ाई उसके और राकेश के बीच नहीं है उसके और बेला के मध्य है और वह बेला से लगातार मात की विरासत नहीं जी सकती । बरसों से एक शून्य उसकी जिन्दगी का हमसफर है । अब बेला को भी उसी अँधेरी घुटन भरी खोह से गुजरना होगा । दीपू नहीं पा सकती वह । हरगिज नहीं राकेश और बेला से अब वह कोर्ट में ही मिलेगी और देखेगी कि दुनिया का कौन-सा कानून उससे उसका बच्चा छीन कर बेला की गोद भर सकता है ... चाहे उसे सुप्रीम कोर्ट तक लड़ना पड़े ...... "[1] यहाँ पति द्वारा शोषण एवं अधिकार प्राप्ति के लिए नारी संघर्ष को देखा जा सकता है ।

---

1. अपनी वापसी : चित्रा मुद्गल - पृ. 101.

नारी मानवीय अवसर प्राप्ति के लिए संघर्ष करती है। उदर तृप्ति की भाँति मानव को जैविक तृप्ति भी आवश्यक होती है। शारीरिक सुख की बात यदि स्त्री करती है तो उसे अश्लील कहा जाता है कृष्णा सोबती की कहानी " मित्रो मरजानी " दाम्पत्य जीवन में जैविक संदर्भ में अतृप्त नारी संघर्ष को दर्शाती है कहानी की नायिका समित्रावन्ती अपने पति से शारीरिक अतृप्ति के विरुद्ध संघर्ष करती है। परिवार में विभिन्न परिस्थितियों से उत्पन्न संघर्ष के साथ-साथ मित्रो का जैविक स्तर पर उत्पन्न संघर्ष मूल संघर्ष है।

मित्रों की माँ वाली तवाइफ है किन्तु मित्रो एक आदर्श परिवार की बहू है वह आदर्श जीवन जीती है। ससुराल वाले उसकी भावनाओं की कोई कद्र नहीं करते वह अपने पति द्वारा उपेक्षित है। मित्रो एवं बनवारी को झगड़ते देख मित्रों की सास धनवन्ती अपने बड़े बेटे को बुलाती है और झगड़ा समाप्त करवाने के लिए कहती है। जेठ बनवारी अपनी पत्नी सुहाग से कहता है कि मित्रों को लेकर अपने कमरे में सोये और सरदारीलाल एवं बन - वारीलाल को एक कमरे में सोते देख मित्रो " माथे पर हाथ मार हंसी - बुरे माथेवाले। मर्दजन होते तो या पछाड़े ले-ले मुझे पाटते या फिर शेर की तरह कच्चा चबा डालते।

सुहाग ने देवरानी को ओर ताका नहीं खटिया खींच बिछाई और लिहाफ डालकर बोली - बहन मित्रो, घनी रात गई। अब चिन्ता जंजाल छोड़ तनिक आराम कर लो। मित्रों ने ओंठ बिचकाए चिन्ता जंजाल किसको ? मैं तो चिन्ता करनेवाली के पेट ही नहीं पड़ी।

छि: छि: । सुनकर सुहाग के कान जलने लगे । मित्रों उठ खटिया के पास आई । पहले लिहाफ उठाया, खेस टटोला फिर उलट-पलट सिरहाना टटोल बोली-जिठानी, तुम्हारे देवर सा बगलोल कोई और दूजा न होगा । न दुःख-सुख न प्रीति प्यार न जलन-प्यास बस आए दिन धौल-धप्पा·· लानत मलामत ।

एकाएक आँखों में कोई मद उतर आया । खींच गले की ओढ़नी उतारी कुरता, फिर सलवार उतार परे फेंक दी और हंस-हंस बोली-बनवारी कहता है, मित्रों, तेरी देह क्या निरा शीशा है शी ··· रा । उस नास होने से कहती हूँ ·······

— अरे इसी शीरे में तेरी जान को डंक मारते सर्पों की फौजे पालती है ।

मित्रो जिठानी से आगे कहती है देवर तुम्हारा मेरा रोग नहीं पहचानता बहुत हुआ हफ्ते पखवारे ····· और मेरी इस देह में इतनी प्यास है इतनी प्यास कि मछली सी तड़पती हूँ ।"[1]

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में उच्चवर्ग की झूठी प्रतिष्ठा के विरुद्ध नारी संघर्ष को देखा जा सकता है । स्वतन्त्रता के बाद की नारी मानवीय अवसर प्राप्त करना चाहती है उच्चवर्ग सदैव मध्यवर्ग का शोषण करता रहा है । निरुपमा सेवती की कहानी " चालाक " की नायिका

---

1. मित्रो मरजानी - कृष्णा सोबती - पृ. 17-18-20.

" मीरा " मध्यवर्गीय नारी है उसे ससुराल में वस्तु की भाँति तुच्छ समझा जाता है उसका पति विवाह के कुछ दिनों बाद केनडा चला जाता है और वहाँ उसका प्रेम सम्बन्ध शीला नामक स्त्री से रहता है । यह जानकारी मीरा को अपने पति का मित्र " सुनील " से प्राप्त होती है ।

सुनील एवं मीरा की घनिष्ठ मित्रता होती है । वे बाहर घूमने भी जाते है परन्तु ससुराल वाले अपनी झूठी प्रतिष्ठा बनाये रखने सुनील के साथ मीरा के बाहर घूमने पर रोक लगा देते है । मीरा की जिठानी कहती है सुनील को अपने कमरे में ही बुलाकर अपनी आवश्यकता की पूर्ति की जा सकती है । बाहर घूम कर समाज में चर्चा का विषय न बने और ससुर के खानदान का नाम बदनाम न करे । मीरा जिठानी से पूछती है कि अजीत का सम्बन्ध यदि पहले से ही शीला से था तो क्यों उसे ब्याह कर लाया गया ? इसका साफ उत्तर जिठानी देती है कि उसके ससुर को शीला जैसे दोगली स्त्री के बच्चों के दादा वह नहीं बन सके । मीरा इस बात का डट कर विरोध करती है । वह कहती है " ओह । अपनी एक जरा-सी इच्छा इतनी बड़ी बात बन जाती है लगता है आपको और यह जो दोगली कल्चर है -- इससे डर नहीं लगता । "[1]

1• कच्चे मकान - निरुपमा सेवती - पृ• 39•

कोई भी सम्बन्ध विश्वास पर आधारित होते है । पति-पत्नी के सम्बन्धों का आधार एक दूसरे पर पूर्ण विश्वास ही होता है । उषा प्रियंवदा की कहानी " दो अंधेरे " में कहानी की नायिका कौशल्या का पूर्ण विश्वास अपने पति दिनेश पर होता है किन्तु दिनेश जब उसके पड़ोस की लड़की " कंवल " को साड़ी भेंट करता है तब उसका विश्वास दिनेश पर समाप्त हो जाता है । कौशल्य कहती है " तुमने मेरा विश्वास तोड़ दिया दिनेश, तुमने मुझे छला । क्या मैंने तुम्हें प्यार नहीं दिया, क्या मैंने तुम्हे अपना शरीर नहीं दिया ? मैं कष्टों में भी मुस्कुराती रही, थोड़े में ही सन्तुष्ट रही उसका बदला तुमने मुझे इस तरह दिया ..... " ।[1] यहाँ पति पर अटूट विश्वास के लिए नारी संघर्ष को देखा जा सकता है । लेखिका कहती है उसकी बातों पर दिनेश कुण्ठित होकर चुप रह जाता । अन्त में कौशल्या ने यही निश्चित किया कि मकान बदल दिया जाये । जैसे ही नया मकान मिला, उसने घर बदल लिया और अपने रोपे हुए पौधे, यत्न से सजाये घर को एक बार भी बिना मुड़े देख निर्मम बन चली आयी ।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में मानसिकस्तरसमूक संघर्ष का चित्रण भी मिलता है । समाज में नारी पुरुष की भाँति बराबर की प्रतिष्ठा एवं सम्मान की अधिकारिणी होती है । राजीसेठी की कहानी " किसके पक्ष में " एक पारिवारिक कहानी है जो पति-पत्नी के बीच मूक संघर्ष को दर्शाती है । कहानी की नायिका " बेला " एक स्वाभिमानी नारी है जिसे छः वर्ष की पुत्री है बेला का पति " विक्की " बेला पर लगाये गये

---

1. जिन्दगी और गुलाब के फूल : उषा प्रियंवदा - पृ. 101.

चारित्रिक आरोपों के कारण दोनों का विच्छेद होता है । विक्की का मित्र जयन्त का बेला अधिक आदर करती है और विच्छेद के बाद अपनी पुत्री नोरू को खबर जयंत से लेती है बेला विद्रोह अपने इतिहास से लाई थी और विक्की अपनी आकांक्षाएँ अपने इतिहास से जयंत कहता है -- " अपने निर्णय पर कायम रहने को हद में खड़े होकर संवाद जारी रखने की जरूरत क्या है । मैं यह भी समझ नहीं सका ? पारस्परिक उलाहनों और चोरों का इतिहास खोला जा सकता है, परन्तु वह दर्द को नहीं ले जाता, जीवन को कोई दिशा इससे नहीं मिलती छुट्टी आम लड़ाई इससे अच्छी ।" [1]

मानव अपनी आयु के अनुसार ही अपने साथी द्वारा आत्मियता की अपेक्षा रखता है । आत्मियता के अभाव में मानसिक तनाव बढ़ता है जिसके परिणाम से संघर्ष प्रारम्भ होता है । मृदुला गर्ग की कहानी " वितृष्णा " में पति-पत्नी के बीच अलगाव से उत्पन्न मूक संघर्ष का चित्रण मिलता है ।

कहानी की नायिका शालिनी बोलचर्चा पूर्व अपने पति से खुलकर बात करना चाहती थी किन्तु पति आफिस की फैलों में निरन्तर उलझा रहता था । शालिनी कई बार निवेदन कर चुकी कि उससे केवल एक घण्टा बात किया करे परन्तु दिनेश इन्कार करता है और कहता है कि उसे काम से फुर्सत नहीं है । शालिनी को वह सुझाव देता है कि यदि शालिनी का वह स्वभाव बेला है भी घर को पूरे सलीके से चलाती है तो उसे भी बात करने की फुर्सत नहीं रहेगी ।

---

1. अन्धे मोड़ से आगे - राजी सेठी - पृ. 93.

पति-पत्नी में अलगाव बीस वर्ष तक निरन्तर बना रहता है दिनेश जब रिटायर्ड हो जाता है तब उसे शालिनी के साथ बात करने एवं शालिनी द्वारा आत्मीयता की पितृष्णा जागती है । वह सोचता है कि अब उसके पास काफी समय है वह खुल कर शालिनी से बीसवर्ष की बातें कर सकता है ।

दिनेश शालिनी का मौन भंग करने का प्रयत्न करता है । " एक दिन उसका ध्यान आकर्षण करने के लिए खाते-खाते वह कह उठा था " दाल में कंकड़ है ।" शालिनी चुपचाप उठी थी दाल का डोंगा और थाली में परोसी दाल की कटोरी उठाकर कूड़ेदान में उलट आयी थी । " फेंक क्यों दी ? खायी : जाती " वह बरबस कह उठा था । शालिनी ने जवाब नहीं दिया था पर उसके पूरे हाव-भाव से जाहिर था कि दाल में कंकड़ होने का सवाल पैदा नहीं होता । कहा उसने कुछ नहीं था, एक बार उसकी तरफ देखा भर था, पर वह देखना ऐसा था कि आदमी सब कहना सुनना भूल जाय ।" [1]

ऑफिस के क्लर्क के जीवन की विडम्बना ही कुछ और होती है । वह जितना सुव्यवस्थित ढंग से ऑफिस में काम करता है उतना ही अफसरों का उस पर विश्वास बढ़ता जाता है । अफसर उससे दफ्तरी काम के अतिरिक्त प्राइवेट काम भी करवाते हैं । रविवार सप्ताह में एक दिन आराम का दिन होता है किन्तु क्लर्क पर किसी भी समय काम का संकट आता है वह रविवार के दिन परिवार पर ध्यान देना चाहता है किन्तु

---

1. उर्फ सैम : मृदुला गर्ग : पृ. 28.

अपने अफसर को नाराज भी नहीं कर पाता । अफसर के बुलावे पर वह दफ्तर जाता है ।

कमलेश्वर की कहानी नौकरी पेशा एक ऐसे ही क्लर्क की जीवन गाथा को दर्शाती है । कहानी का नायक " राधेलाल " है जिन्होंने 21 वर्ष तक अनेक दफ्तरों में सब्जीवाली नौकरी की है जिन्हें सरकारी नौकरी की तलाश नहीं है उनकी दृष्टि में वे स्वयं को नयी नौकरी के काबिल नहीं समझते उनका कहना है नयी नौकरी के लिए शुरू में सर्टीफिकेट वगैरह दिखाना पड़ता है, डॉक्टरी जाँच होती है और उनके मुताबिक लाखों झंझट होते हैं जो उनके बस का नहीं ।

बाबू राधेलाल की पत्नी, पति के इस तरह जी तोड़ प्राइवेट नौकरी करने एवं रविवार को भी घर का ध्यान न रखने के सिलसिले में असंतुष्ट रहती है । घर का राशन लाने के लिए भी राधेलाल को फुर्सत नहीं होती । उनकी पत्नी, पति द्वारा परिवार की लापरवाही के विरुद्ध संघर्ष करती है वह कहती है कि " तो जाओ न । साहब की गुलामी से फुरसत मिले तो घर को देखना । तुम्हें खुद इसमें मजा आता है । जाके दफ्तर में बैठ गये सब का धन्धों से बरी ...... उन लाड़ले ने इम्तहान का बहाना बना रखा है ...... मेरी बला से .... लाओगे तो खाना पका दूँगी नहीं तो ...... " ।[1]

---

1. कस्बे का आदमी : कमलेश्वर - पृ. 86.

दाम्पत्य जीवन में पति, पत्नी के संरक्षण से अधिक ध्यान पत्नी पर शासन पर देता है फलत: वह अपने ही परिवार के प्रति वह क्रूर बन जाता है । रवीन्द्र कालिया की कहानी " रात के अंधेरे - नन्हें पांव " में आत्मीय अभाव के कारण उत्पन्न नारी संघर्ष को देखा जा सकता है ।

कहानी का मुख्य पात्र जिरेन जो (छोटा पुत्र) है अपने माता-पिता के झगड़ों से भयभीत एवं बीमार माँ के प्रति संवेदनशील है । जिरेन की माँ एक सप्ताह से बिमार रहती है । पिता, माँ की बिमारी पर ध्यान नहीं देता । पति की लापरवाही से जिरेन की माँ और भी दु:खी होती है । वह कहती है " सारी दुनिया काम करती है, कौन कहता है कि काम न करो ? एक हफ्ता से बीमार हूँ, हाल तक नहीं पूछा ।"[1]

शोषण की सीमा होती है । सदियों से नारी, पुरुष द्वारा शोषण का शिकार होती रही है । शिवमूर्ति की कहानी " कसाई बाड़ा " सत्ता के नाम पर पति द्वारा नारी शोषण के विरुद्ध पत्नी के संघर्ष को दर्शाती है ।

कहानी की नायिका शनिचरी निम्नवर्ग की नारी है । गांव का प्रधान गांव के लोगों को ठगता है । गाँव की दस लड़कियों को आदर्श अन्तर्जातीय विवाह के नाम पर बेचता है और धन अर्जित करता है ।

---

1. गली कूचे : रवीन्द्र कालिया - पृ. 57.

इन बेची गई लड़कियों में शनिचरी की पुत्री " रूपमती " भी एक है। रूपमती वास्तव में प्रधान की ही पुत्री है।

शनिचरी को जब वास्तविकता का पता चलता है तब वह प्रधान से अपनी बेटी को लौटाने के लिए लड़ती है। वह लीडर के कथन अनुसार प्रधान के घर के सामने अनशन करती है। अधरंगी शनिचरी का पक्ष लेता है। वह गांव के प्रधान एवं लीडर के पाप को जानता है। अधरंगी प्रधान एवं उसके बेटे का पुतला बनाकर शनिचरी से फांसी दिलवाता है। अंधेरे में प्रतिदिन शनिचरी प्रधान के दरवाजे को खटखटाने लगती है, प्रधान की पत्नी और बेटा भयभीत होते हैं। प्रधान की पत्नी, प्रधान से पूछती है कि क्या शनिचरी का कहना सही है। उत्तर में प्रधान कहता है घर की वस्तुएँ उन्हीं पैसों से लायी गयी हैं। प्रधाननी पति से सम्बन्धित भयानक स्वप्न देखती है और बड़बड़ाने लगती है प्रधाननी पति का सिर टटोलती है। प्रधान पत्नी को सोने के लिए बुलाता है। प्रधाननी पापी पति का हाथ झटकती है और कहती है " ई गांव लंका है। इहां-लंका दहन होवेगा। रावन तू ही हो। लिडरा बना है विभीषन। तोहरे दूनों के चलते गाँव के सत्यानाश होवेगा। होई रहा है। बहिन - बिटिया बेचो। हमहू का बेचि लेव। रुपया बटोरो। साथ ले जायेव, लेकिन अब हम ऐहि घरे मा न रहब। आपन बेटवा लइके चिरौरी मांगिव, मुला .... । " ।

---

1. कसाई बाड़ा - शिवमूर्ति - पृ. 84-85.

3·1·4· देवर-भाभी संबंध :-

नारी विभिन्न रूपों में, पुरुष के विभिन्न रूपों द्वारा शोषण का शिकार होती रही है। इसका ज्वलंत चित्रण स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में मिलता है।

भारतीय नारी समाज द्वारा उपेक्षित रही है। परिवार में उसकी दयनीय स्थिति देखी जाती है। वह धर्म एवं सेवा के नाम पर अपनी खुशियां त्यागती है। वह दासी का जीवन जीती है। "नारी जहाँ सेवा में लगी होती है, उसे घर कहते हैं यही उसकी परिणति है, यही उसे निष्पन्न होना है नारी पति की मति है और तभी वह श्रीमति है।"[1] किन्तु स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में प्रसिद्ध कहानी राघेय राघव की "गदल" मानी जाती है जिसकी नायिका गदल में चेतना है वह गुजरात के पहाड़ी इलाके की महिला है उस पहाड़ी इलाके का यह नियम होता है कि यदि किसी भी स्त्री के पति का देहान्त हो जाता है तो वह अपने देवर के साथ दूसरा विवाह कर सकती है।

गदल के पति (गुन्ना) का देहान्त होने के बाद उसका देवर "डोंडी" उससे विवाह नहीं करता। गदल अपने पुत्रों एवं बहुओं की सेवा में अपना जीवन खोना नहीं चाहती। वह नये पति "मौनी" के पास चली जाती है। डोंडी समाज की निन्दा के भय से गदल से

1· "हंस" नवम्बर - दिसम्बर 1994 - नारी - उत्तर कथा : कुछ क्लास नोट्स : गौतम सान्याल - पृ· 223·

विवाह नहीं करता । गदल को नये पति के पास जाते देख डोंडी चिन्ता में मर जाता है । डोंडी की मृत्यु का समाचार सुन कर जब गदल घर वापस लौटती है तो गदल का बड़ा बेटा " निहाल " उसे भीतर जाने से रोकता है । गाँव का पटेल गदल से पूछता है कि वह अब क्या लेने आई है ? उत्तर में गदल कहती है कि " जब छोटी थी, तभी मेरा देवर लट्ठ बाँध मेरे खसम के साथ आया था इसी के हाथ देखती रह गई थी मैं तो । सोचा था मरद है, इसकी छाया छाया में जी लूँगी । बताओं, पटेल वह ही जब, मेरे आदमी के मरने के बाद मुझे न रख सका, तो क्या करती ? अरे, मैं न रही तो इनसे क्या हुआ ? दो दिन में काका उठ गया न ? इनके सहारे मैं रहती तो क्या होता ?"[1] यहाँ गदल द्वारा शोषण के विरुद्ध नारी-संघर्ष को देखा जा सकता है ।

शिवप्रसाद सिंह की कहानी " धरातल " एक उपेक्षित विधवा की कहानी है । जिसमें देवर द्वारा अन्याय एवं शोषण के विरुद्ध नारी संघर्ष का चित्रण मिलता है ।

कहानी की नायिका " नैना " है जिसके विवाह के तीन-चार महीने बाद ही पति का देहान्त हो जाता है । नैना को ससुराल वाले दासी बनाने का प्रयत्न करते है किन्तु नैना बचपन से ही जिद्दी होने के कारण वह ऐसा जीवन नहीं स्वीकारती । नैना का देवर उसे मैके लौट जाने के लिए कहता है किन्तु वह उसका विरोध करती है । और ससुराल में समान सम्पत्ति का भाग माँगती है । वह कहती है कि " मैं निकल जाऊँ इसमें मेरा हिस्सा नहीं है ।"[2]

1· स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी कोश : महेश दर्पण - पृ· 58·

2· अन्धकूप {सम्पूर्ण कहानी संग्रह भाग-1} शिवप्रसाद सिंह - पृ· 16·

3.1.5. ससुर - बहू संबंध :-

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में सम्बन्धों के अर्थ का अनर्थ होते देखा जा सकता है । पुरुष प्रधान समाज में कामुक पुरुष अपनी वासना तृप्ती के लिए नारी रक्षक के स्थान पर नारी भक्षक का स्थान ले रहा है । इसका ज्वलंत उदाहरण शिवमूर्ति की कहानी " तिरिया चरित्तर " में देखा जा सकता है । यह कहानी एक निम्न वर्गीय युवती की दयनीय स्थिति को दर्शाती है । कहानी की नायिका " विमली " है जिसका ससुर उसके माता-पिता एवं उसे ठगता है । विमली के प्रति उसकी दृष्टि व्याभीचारी की होती है । विमली से वह गाय या बकरी की भाँति दुर्व्यवहार कर विमली का शोषण करता है । विमली नौ साल की उम्र से ही ईंट के भट्टे पर ईंट ढ़ोती है और अपने बुढ़े माता-पिता के आजीविका का साधन बनती है । विमली का बाल-विवाह होता है । किन्तु उसका पति " सियाराम " जिसे स्वयं वह भी नहीं देख पायी कलकत्ता भाग जाता है विमली को भट्टे पर काम करते समय लॉरी का ड्रैवर उसे प्रेम करता है, कुंईसा भट्टे का मिस्त्री भी विमली से शादी करना चाहता है, ट्रैक्टर चलानेवाला बिल्लर की बहन बिमली से विवाह का प्रस्ताव रखती है ।

विमली का ससुर " बिसराम " समय-समय पर विमली की खबर रखता है । वह गाँव का चौधरी है । विमली को वह गौना लाकर ले जाने के उद्देश्य से बार-बार गाँव आता है । और गौना लाकर वह विमली को ले जाता है । बिसराम बहू को घर ले जाने से पहले अपना पलंग झोपड़ी के बाहर डालकर सोया करता था परन्तु जब से विमली को गौना ले जाता है तब से प्रतिदिन रात के समय विमली पर अत्याचार करता

है, और वह झोपड़ी के अन्दर सोया करता है । गांव की औरतें बिसराम को शंका की दृष्टि से देखती है । गांव के मर्द बिसराम के झोपड़ी के अन्दर सोने का कारण पूछते है उत्तर में वह कहता है कि वह अपनी वासना की तृप्ति करना चाहता है वह कहता है " शुरू-शुरू में तो नयी पोतोहू जैसा शरम लिहाज था । रो-रो करके रोना-हम किटिया उठी । आप थी दोनों हाथों से । लगता था अब टूटी पड़ी कि तब । लेकिन बाद में तो बिल्ली जैसी खूंखार । वैसी ही गुर्राहट । पंजे मारना । हाथ झटकना बिल्ली जैसे नाखून । सारा मुंह, नाक, कान, नोंच लिया है । पूरा चेहरा परपरा रहा है । जलन । ईंट, पत्थर ढोते-ढोते सारा शरीर लोहे का हो गया है । ससुरी का । तीन दिन में तीन करम कर दिया । दोनों पैर सिकोड़ कर ऐसा लतावार किया छाती पर कि बिसराम उतने दूर जा गिरा खटिया से । तब से छाती और सिर में भयानक दर्द ।"[1] यहाँ हम शारीरिक शोषण के विरुद्ध नारी के मूक संघर्ष को देख सकते है ।

3·1·6· भाई-बहन संबंध :-

पारिवारिक सम्बन्धों में भाई-बहन की चर्चा महत्वपूर्ण है यह सच्चाई है कि माता-पिता का प्रभाव भाई-बहन पर पड़ता है । स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में भाई के रूप में पुरुष शोषण के विरुद्ध नारी को जागृत होते देखा जा सकता है ।

1· स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी कोश भाग - 2, महेश दर्पण - पृ·614-615

सृंजय की कहानी तख्त-ओ-ताज में कहानी की नायिका अनीता एक बालिका है और उसका भाई शरजिल है दोनों बादशाह एवं वजीर का खेल-खेलते है । शरजिल बालक होने के नाते वह बादशाह बनने का जिद करता है अनीता बालिका है किन्तु वह कहती है कि बादशाह के पद के लिए पुरुष ही अधिकारी नहीं होता स्त्री भी बादशाह बन सकती है । इस दृष्टि से अनीता बादशाह ही बनने की जिद करती है । दोनों में झगड़ा होता है दोनों सहमत नही होते अंत में अनीता वजीर बनने के लिए स्वीकृत होती है लेखक कहते है - " अपना पल्ला छोड़ते वक्त उसके गंदुमी चेहरे पर पसीने की बूंद झिलमिला गयी ।" वह नथुने फड़फड़ाकर बोली , " वजीर बनूंगी लेकिन तुम्हारी तानाशाही नहीं चलेगी ।" [1] यहाँ एक बालिका द्वारा शोषण के विरुद्ध नारी संघर्ष को देखा जा सकता है ।

परम्परा से चले आ रहे पुरुष द्वारा सत्ता पर पूर्ण अधिकार लिप्सा को इसी तख्त-ओ-ताज कहानी में सृंजय ने भंग करने का प्रयत्न किया है नारी भी पुरुष के समान शासन पर समान अधिकार रखती है इसी उद्‌देश्य को लेकर यह कहानी चलती है । कहानी के पात्र शरजिल एवं अनीता खेल में दोनों बादशाह बनना चाहते है शरजिल अनीता को वजीर बनने के लिए कहता है । वह स्वयं पुरुष होने के अंह को छोड नहीं पाता और बादशाह बनना चाहता है किन्तु अनीता स्वीकारती नहीं है जब वह कहती है कि बादशाह बनेगी, शरजिल यह सुन कर अनीता की हंसी उड़ाता है वह कहता है कि " धत्‌ । वह विद्रूप से हंस दिया " लड़की

---

1. कामरेड का कोट : सृंजय - पृ. 100.

होकर बादशाह बनोगी ? " यह सुनकर अनोका शरीजिल का विरोध करती है । वह कहती है कि " क्यों नहीं बन सकती ? बादशाह लड़कों के लिए रिजर्व है क्या ? "[1] इस कहानी में यहाँ समान अधिकार प्राप्ति के लिए बहन द्वारा भाई के विरुद्ध संघर्ष व्यक्त हुआ है ।

3·1·7· पुत्र-माता का संबंध :-

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नयी एवं पुरानी दोनों पीढ़ियों के बीच संघर्ष का चित्रण मिलता है । सदैव नयी पीढ़ी पुरानी पीढ़ी से आशावादी दृष्टि रखती है माता-पिता संतान का पालन-पोषण कर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करते है फिर भी संतान की आशा सम्पति के संदर्भ में अधिक रहती है । दीप्ति खण्डेलवाल की कहानी " सलीब पर " में इसी बात को दर्शाया गया है । इस कहानी की नायिका सुमित्रा के पुत्र सम्पति पर अधिकार की मांग के लिए संघर्ष करते है । घर में माता-पिता एवं पुत्रों के बीच तनाव बना रहता है । सुमित्रा घुटन भरे माहौल का शिकार होती है । सुमित्रा का पुत्र विशम कहता है कि उसे आज शाम तक सम्पति का बटवारा चाहिए नहीं तो वह खाना, खाना छोड देगा । सुमित्र कहती है " तो छोड दे, हमारा खून तो पी ही रहा है ।"[2] यहाँ पुत्रों द्वारा अत्याचार के विरुद्ध नारी संघर्ष को देखा जा सकता है ।

1· कामरेड का कोट - सृंजय - पृ· 97·
2· सलीब पर - दीप्ति खण्डेलवाल - पृ· 139·

3.1.8. पोता-दादी संबंध :-

मृदुला गर्ग की कहानी " हरि फल " एक वृद्धा नारी की कहानी को लेकर चलती है जिसका एक पुत्र और एक पोता है । कहानी की नायिका " दादी " की जमीन, जायदाद है वह नारी स्वाभिमानी है । पोता दादी के अस्तित्व को बेकार समझता है और दादी को परिवार पर अधिकार न रखते देख दादी पर व्यंग्य कसता है किन्तु दादी अपने स्वामीत्व का बोध पोते को कराने के लिए संघर्ष करती है । वह अपने ही बगीचे में लगे भुट्टा का लालच देकर उसे बुलाती है । " चश्मे को आँखों पर अच्छी तरह बिठाकर उन्होंने उसे घूरकर देखा और बोली " अरे जा पिल्ले, हुक्म चलाना अपनी बीबी पर हम तो अपनी मन की करते है खुद मुख्तार है, खुद मुख्तार । तीस बरस हो गये ..... । " हाथ में थमी खुरपी तेजी से घुमाकर उन्होंने दूर फेंक दी । वह ठोकरें खाकर बेखबर खड़े माली के पैरों के पास जाकर गिरी " क्या करती है मांजी ।" वह जोर से चीखी, लग जाती तो ? "

वे खिलखिला कर हंस पड़ी । " ठीक कर दिया चपड़-कनातिये को ।"[1]

---

1. उर्फ सैम : मृदुला गर्ग - पृ. 62.

3·2· पुरुष सत्ता, शासन और शोषण के विरुद्ध नारी संघर्ष :

सामाजिक संदर्भ :-

जैसा कि पूर्व विवेचित किया जा चुका है कि परिवार के सीमित दायरे में चलने वाली शासन और शोषण की प्रक्रिया ही सामाजिक परिवेश में जाकर विस्तृत और विकराल रूप धारण करती है । स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों में विवाहेतर या विवाहपूर्व प्रेमी-प्रेमिका का आयाम हो या कार्यालय में बॉस बनकर या देह व्यापार में ग्राहक बन कर चाहे किसी भी रूप में पुरुष स्त्री के जीवन में शासन और शोषण की नीयत से अवतरित हो, स्त्री का संघर्ष अपने प्रति इस अनाचार के विरोध में अनिवार्य हो जाता है इसी दृष्टि से प्रस्तुत चर्चा को आगे बढ़ाया गया है ।

3·2·1· प्रेमी-प्रेमिका संबंध :-

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नकारात्मक संघर्ष का भी चित्रण मिलता है । प्रेमी अपनी प्रेमिका के प्रति अवसरवादी होता है ।

निर्मल वर्मा की कहानी " अन्तर " नकारात्मक मूक संघर्ष को दर्शाती है । कहानी की नायिका प्राग-शहर में हॉस्टेल की युवती है । नायिका के गर्भवती होने की खबर सुनकर नायक, नायिका को अबॉर्शन करवाने की सलाह देता है किन्तु नायिका बलपूर्वक इच्छा के विरुद्ध अबॉर्शन करवाती है । " औरत बच्चा पैदा करने की मशीन के सिवा है ही क्या,

क्या फर्क पड़ता है, फिर पेट रह जायेगा तीसरी या चौथी बार "।[1] अस्पताल में नायक, नायिका से मिलने आता है और खाने के लिए कुछ सामान लाता है जिसे नायिका उसके जाने के बाद फेंक देती है " कुछ देर तक वह पलंग पर आँखें मूँदे रही जब उसे निश्चय हो गया कि वह अस्पताल से दूर जा चुका है, तो वह धीरे से उठी खिड़की खोल दी । बाहर अँधेरे में उस छोटे से शहर की बत्तियाँ जगमगा रही थी । उसे प्राग में अपने होस्टल का कमरा याद हो आया । सिर्फ दो दिन पहले उसे छोड़कर आई थी । लेकिन उसे लग रहा था, जैसे तब से एक लम्बी मुद्दत गुजर गई है । वह कुछ देर तक वहीं निश्चल खड़ी रही । मैटर्निटी वार्ड से किसी बच्चे के रिरियाने की आवाज सुनाई दी थी, फिर सब खामोश हो गया ।

वह चुपचाप बिस्तर के पास चली आई । अपने सूटकेस से एक पुराना तौलिया निकाला । फिर उसमें करीने से उन सब चीजों को लपेटा, जो वह उसके लिए छोड़ गया था । खिड़की के पास आकर उसने उन्हें बाहर अँधेरे में फेंक दिया ।

जब वह वापस अपने बिस्तर के पास आई, तो उसका सिर चकराने लगा । स्टूल पर लोपा का पाकेट अब भी पड़ा था । उसने एक सिगरेट सुलगाई लेकिन उसे उसका स्वाद फिर अजीब सा लगा । उसे फर्श पर बुझाकर वह पलंग पर लेट गई । एक छोटा-सा गरम आँसू उसकी आंखों

---

1. " हंस " नवम्बर - दिसम्बर 1994 बाहर और भीतर की दुनिया पृ. - 69.

की कोरों से बहता हुआ उसके बालों में खो गया, किन्तु पता नहीं चला। वह आराम से सो रही थी।"[1]

निरुपमा सेवती की कहानी "चुनौती और स्वीकृति" में शोषण के विरुद्ध नारी संघर्ष का चित्रण हुआ है। कहानी की नायिका "शिल्पी" अविनाश से प्रेम करती है। अविनाश के जीवन में कई प्रेमिकाएँ आयी है किन्तु वह उन लड़कियों का अपने स्वार्थानुसार इस्तेमाल करता है उनमें शिल्पी भी एक प्रेमिका है। शिल्पी के साथ भी वह प्रेम का नाटक रचता है और किसी अन्य लड़की के साथ विवाह करना चाहता है जिसका शिल्पी विरोध करती है वह बाथरूम में अविनाश को बन्द करती है और कहती है कि "तुम्हारी देह बड़ी अपवित्र लग रही थी।"

क ...... क ...... क्या ? "सच, जब तुम सिर्फ अंडर वीयर पहने फव्वारे के नीचे जा रहे थे न, तो वह इतनी बड़ी गंदी लगी। तुम्हारे पौरुष का प्रतीक जाने कितनों के भीतर ...... हो ...... मैंने खुद को बड़ा गंदा महसूस किया ..... "

"शि .... शिल्पी "

हाँ मैं तुम्हें छूना तक नहीं चाहती।"[2]

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - निर्मल वर्मा - पृ. 114-115
2. कच्चे मकान : निरुपमा सेवती - पृ. 24.

बहुपत्नित्व विवाह नारी के लिए एक प्रकार से मानसिक शोषण होता है। विवाहित पुरुष को परखना कठिन होता है चित्रा मुद्गल की कहानी " केंचुल " की नायिका कमला निम्न वर्ग की नारी है। उसका प्रेमी नन्दू का बम्बई में खोला है। नन्दू विवाहित है और उसके चार बच्चे है वह अपने पत्नि एवं बच्चों को गांव में रखता है। इस रहस्य को वह कमला से छिपाता है और कमला के सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखता है नन्दू के परिवार के सम्बन्ध में कमला को नन्दू के देहान्त के बाद जानकारी प्राप्त होती है तब से कमला को प्रेम सम्बन्ध पर कोई विश्वास नहीं होता।

कमला की पुत्री सरना जब सयानी होती है और स्टेशन रोड़ पर सब्जी बेचती है, वहाँ सरना का प्रेम बटाटे बेचने वाले वल्लू से होता है वल्लू भी गांव का रहने वाला है। और वह सरना से विवाह करना चाहता है। कमला को नन्दू प्रेम का नाटक रच कर ठगता है इसी अनुभव के आधार पर वह अपनी पुत्री को भी पुरुष द्वारा ठगने से बचाने का प्रयत्न करती है, किन्तु सरना की जिद्द पर वल्लू को अपने घर के अन्दर बुलाती है " अचानक वल्लू की कमीज को उसने सीने से दबोच लिया। पूरी ताकत से झकझोरती हुई चीखी " अब से क्या मतलब ? बनाना है तो जल्दी बना ,.... ठैरा काय को ? हाँ ? पईसा नई होयेगा तो मेरे से ले .... पन जल्दी कर शादी ..... देर नई मंगता .... भरोसा नई तेरा .... कभी मुलुक को चला गया तो ? वापस नई आयेगा तू ..... भैया लोगों का एतबार नई मेरे को .... ।"[1]

---

1. ग्यारह लम्बी कहानियाँ : चित्रा मुद्गल - पृ. 134.

दाम्पत्य जीवन में प्रेमिका से सम्बन्ध रखनेवाला व्यक्ति अपनी प्रेमिका एवं पत्नी से ठीक तरह से न्याय नहीं कर पाता। यदि वह पत्नी से न्याय करना चाहता है तो प्रेमिका को असन्तुष्ट पाता है और प्रेमिका से न्याय करता है तो पत्नी को असंन्तुष्ट।

प्रेमिका अपने प्रेम के खातिर जीवन में त्याग करती है "प्रेम का अर्थ नारी के लिए देना है, पुरुष के लिए लेना प्रेम का अर्थ नारी के लिए तर्पण है, समर्पण है, त्याग है दान है जबकि पुरुष के लिए ग्रहण है मात्र ग्रहण है और ग्रहण है।"[1]

भीष्म साहनी की कहानी "डोरे" प्रेम पर अधिकार प्राप्ति के लिए नारी संघर्ष को दर्शाती है। कहानी का नायक गिरिश की पत्नी "गृहलक्ष्मी" है परन्तु उसका अर्चना से प्रेम सम्बन्ध है अर्चना काम-काजी महिला है और गृहलक्ष्मी गृहिणी। अर्चना के दफ्तर में साथी महिलाएँ अर्चना के प्रेम सम्बन्ध पर व्यंग्य कसती है अर्चना गिरिश पर पूर्ण अधिकार स्थापित करना चाहती है गिरीश के बेटे (बिट्टू) के जन्म दिन पर गिरिश घर जल्दी लौटना चाहता है इसीलिए वह अर्चना से कहता है कि रेस्तराँ में अधिक समय बिताने के लिए उसके पास वक्त नहीं है परन्तु अर्चना गिरिश का विरोध करती है वह कहती है " मैं जानती हूँ तुम यही कहोगे मैं, मैं जानती हूँ तुम मेरे नहीं हो। मेरे कभी हो भी नहीं सकते। पर क्या मैं, तुम्हें देख तक भी नहीं सकती ? क्या हम दो घड़ी एक साथ बैठ भी नहीं सकते ? तुम बार-बार मुझे कहने लगते हो कि मेरा बचपन अभी तक नहीं गया मैं स्थिति को नहीं समझती ....."[2]

---

1. "हंस" - नवम्बर - दिसम्बर 1994 - नारी उत्तर कथा - कुछ क्लास नोटस - गौतम सान्याल - पृ. 223.
2. पटरियाँ - भीष्म साहनी - पृ. 168

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में रांगेयराघव की " गदल " कहानी बहुचर्चित कहानी मानी जाती है । कहानीकार ने कहानी की नायिका गदल के उदात्त चरित्र द्वारा नारी की स्वं अस्तित्व को दर्शाया है । गदल को अपने अस्तित्व स्वं अस्मिता की पहचान है वह गुजरात के पहाड़ी इलाके की खारी गूजर जाति की महिला है उस पहाड़ी इलाके का नियम यह होता है कि यदि किसी स्त्री के पति की मृत्यु हो जाती है तो वह अपने देवर से दूसरा विवाह कर सकती है । गदल की उम्र 45 वर्ष है जिसके पति (गुन्ना) का देहान्त हो जाता है गदल के दो पुत्र स्वं दो पुत्रियाँ है । चारो विवाहित स्वं संतान वाली है ।

पति की मृत्यु के बाद गदल अपने देवर से शादी करना चाहती है । गदल का देवर " डोड़ी " पचास साल का लम्बर खारी गुजर है उसकी पत्नी स्वं संतान की मृत्यु हो जाती है उसका अपना कोई नहीं है वह गदल के घर में ही खाता और रहता है और गदल के बेटों को अपने बेटे समझता है ।

डोंडी गदल से प्रेम करता है उसका प्रेम आत्मीय प्रेम है । वह समाज की निन्दा स्वं भय के कारण गदल से विवाह नहीं कर पाता । गदल भी ऐसे पुरुष के प्रेम की खोज में रहती है जो उसे अपना समझे अर्थात् उसे भी आत्मीय प्रेम की खोज है । गदल विधवा है । परन्तु वह परिवार के मोह में फँस कर बेटे, बहुओं की गुलामी करना नहीं चाहती वह बत्तीस वर्षीय लोहार के पास चली जाती है । उसके बेटे उसे पकड़कर लाते है देवर गदल से पूछता है कि तू चली गई है न ? तब गदल कहती है " अब मेरा यहाँ कौन है मेरा मरद तो मर गया । जीते-जी मैंने उसकी चाकरी की,

उसके नाते उसके सब अपनों की चाकरी बजाई । पर जब मालिक ही न रहा, तो काहे को हड़कम्प उठाऊँ ? यह लड़के यह बहुए । मैं इनकी गुलामी नहीं करूँगी ।"[1] यहाँ हम गदल चरित्र द्वारा आत्मीयता की खोज एवं शोषण के विरुद्ध नारी संघर्ष को देख सकते है ।

नारी में सहनशक्ति अधिक होती है किन्तु जब वह सहनशक्ति की सीमा पार करती है तो वह संघर्ष करना आरम्भ करती है । कृष्णा अग्निहोत्री की कहानी " बिखराव " की नायिका " संगीता " घर में बड़ी बेटी है । माँ के देहान्त के बाद घर का दायित्व उसी के कन्धों पर होता है । छोटे भाई एवं बहन को वह पालती है और अपनी पढ़ाई भी जारी रखती है । पिता की मृत्यु के बाद परिवार का बोझ और अधिक बढ़ने के कारण संगीता विज्ञापन विभाग में नौकरी करने लगती है । यहाँ कहानी का पात्र सुमन से उसकी मित्रता होती है सुमन, संगीता को जीवन भर साथ देने का वचन देता है परन्तु सुमन की अपनी विवाहित छोटी बहन के साथ प्रेम सम्बन्ध स्थापित करते देख संगीता सुमन का विरोध करती है वह कहती है --
" डायन भी अपना घर छोड़ देती है ..... पर तुम इस घर में अमर्यादा फैला रहे हो । क्या एक साथ दोनों पर हो । कोई पुरुष नहीं है इस घर में तो क्या इस तरह तुम हमारा शोषण करोगे ।"[2] यहाँ शोषण के विरुद्ध संघर्ष का चित्रण मिलता है ।

---

1. स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी कोश भाग - 2 - महेश दर्पण - पृ. 51.
2. जिन्दा आदमी - कृष्णा अग्निहोत्री - पृ. 120.

पारिवारिक संस्कारों द्वारा व्यक्ति सभ्यता सीखता है। सभ्य गुण संस्कारों द्वारा ही मनुष्य में आते हैं। राजेन्द्र यादव की कहानी " टूटना " में कहानी का नायक किशोर का स्वभाव अजीब होता है और वह असभ्य व्यवहार करता है। जिसके विरुद्ध कहानी की नायिका संघर्ष करती है। कहानी की नायिका किशोर की प्रेमिका है जिसका नाम " लीना " है। लीना को किशोर के स्वभाव से नफरत होती है वह किशोर को सभ्य बनाने के प्रयत्न से उसकी कमियों पर ध्यान दिया करती है किन्तु किशोर के अहं को ठेस पहुँचती है। उसमें इन्फीरियोरिटी काम्प्लेक्स की भावना जागृत होती है वह लीना पर क्रोधित होता है जिसका लीना विरोध करती है "लीना का स्वर गिर गया। वह न चीखी न चिल्लाई। बहुत सख्त आवाज में बोली, " देखो किशोर, आज से बल्कि इसी क्षण से हम लोग साथ नहीं रहेंगे। मैं भी सोच रही थी कि अब तुम से बात कर ही ली जाये। न तुम अन्धे हो, न बहरे। तुम सिर्फ इन्फीरियोरिटी काम्पलेक्स के मारे हुए हो इसीलिए तुम्हें मेरी हर बात वह नहीं लगती, जो होती है। उसके पीछे और बातें दीखती हैं। मैं समझती थी कि मैनर्स, बातचीत, उठने-बैठने के तौर-तरीके और व्यवहार ऐसी चीजें हैं जिन्हें बहुत जल्दी बदला जा सकता है लेकिन इस कॉम्प्लेक्स का कोई इलाज ही नहीं ..... तुम्हें मेरे हंसने-बोलने चलने,सबमें शेखी और दिखावा लगता है ..... "।

---

1. टूटना और अन्य कहानियाँ - राजेन्द्र यादव - पृ॰ 155-156.

3·2·2· देह-विक्रय एवं शोषण के स्तर पर :-

समाज द्वारा उपेक्षित नारी भी स्वाभिमानी होती है धन की लालसा मनुष्य को क्रूर बना देती है । स्त्री वेश्यावृत्ति आर्थिक विवशता के कारण अपनाती है ।

भीष्म साहनी की कहानी " अभी तो मैं - जवान हूँ " वेश्याओं की दिनचर्या तथा ग्राहक द्वारा अपमान के विरुद्ध संघर्ष को दर्शाती है । इस कहानी में एक वेश्या पर एक सरदार ग्राहक बीस रुपये की चोरी का इल्जाम लगाता है । वेश्या इस इल्जाम को अस्वीकार करती है ग्राहक वेश्या की तलाशी लेना चाहता है । वेश्या तलाशी देने से इन्कार करती है । ग्राहक पुलिस में रिपोर्ट करने की धमकी देता है और वेश्या को नग्न होकर तलाशी देने के लिए कहता है वेश्या इस अपमान के विरुद्ध झगड़ती है " रंडी अभी भी कमर पर हाथ रखे सरदारजी की ओर घूरे जा रही थी । इस पर दहलीज पर खड़ी उसकी हमसाइन बिफर उठी - निकलो यहाँ से दाढ़ीजार - बड़े तलाशी लेने आये । कौन लेगा तलाशी मैं भी सुनूँ ? जा बुला ला पुलिस को पुलिस के बाप को भी बुला ला ।

तमाशबीनी की अच्छी खासी भीड़ लग गयी थी । सरदार को विश्वास हो गया था कि रंडी ने उसके दो नोट छातियों के बीच छिपा रखे है ।

— मैं उसके कपड़े उतारूँगा । मैं पुलिस बुलाऊँगा ।

-- है, दाढ़ीजार, कपड़े उतरवायेगा । सरम नहीं आती । जा, बुला ला पुलिस वाले को जा, देखता क्या है ।"[1] वेश्या ग्राहक को "सेक्स" पर अधिकार मात्र पेट की आग बुझाने कुछ समय देती है । उसके बाद वह अपनी इज्जत बनाये रखती है ।

3.2.3. सामन्ती परिवेश : शोषण का दायरा :-

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में सामन्ती परिवेश परिलक्षित होता है । दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी का साथ एक दूसरे के लिए अनिवार्य होता है । सामन्ती परिवेश में शोषित मानव परिवार से पलायन होने का प्रयत्न करता है ।

संजीव की कहानी "जसी बहू" में कहानी का नायक जसी सामन्ती शोषण से विवश होकर अपनी पत्नी को गांव में छोड़ कर कलकत्ता चला जाता है उस गांव में नवविवाहित नारी एक वर्ष बाद गांव का सिहाईपंडित के शोषण का शिकार होती है जसी की कलकत्ता जाने के बाद कोई खबर नहीं मिलती उसकी एक पुत्री है । जसी की बहू-जसी का इन्तेजार करती है । गांव के लोग जसी-बहू के खेत में अकारण ही पानी छोड़ते है वह गांव वालों की शरारतों को सहती है । जसी-बहू आर्थिक अभाव के कारण एक दिन आम के बाग में आम चुराते पकड़ी जाती है ठीक उसी समय सिहाई पण्डित जसी-बहू को देखता है इस अवसर का लाभ उठाने सिहाई पण्डित जसीबहू को अपनी वासना का शिकार बनाता है जसी बहू गर्भ --

---

1. पटरियां - भीष्म साहनी - पृ. 106.

धारण करती है जसी जब गांव लौटता है और अपनी बहू के शोषण की खबर सुनकर सिताई पण्डित पर क्रोधित होता है । गांव का प्रधान एवं सिताई पण्डित जसी को अपनी गर्भवती पत्नी को स्वीकारने के लिए विवश करते है वह सहमत होता है किन्तु जसी बहू जसी का विरोध करती है --
" उसने हाथ झटक दिया, जाने भतार की सेंधी पे सोहागिन बनी रहे, भतार मरि गा रे, हट मोड़ा हाथ फिन देखते-देखते ही उसने सिंदूर पोंछ डाला चूड़ियाँ तोड़ दी और भुइलो को पिचक कर विलाप करने लगी ।"[1]
"जसी बहू सातवें माह में बच्चे को जन्म देती है जसी बहू जसी की दूसरी बहू लाते देख " इसी बीच एक दिन उसने दूर से देखा जसी को एक नयी औरत के साथ आते हुए । एक जबर्दस्त हूक हाती में उठी फिर जल्दी-जल्दी करके उसने भुइलो को कपड़े पहनाये, कपड़े के टुकड़े में बच्चे को उठाया, तेल की तलछट को उसके सिर पर थपथपाते हुए कटरोटी लेकर निकल पड़ी । गांव के लोगों ने देखा, दु:स्वप्नों भरी दोपहरी की तरह एक जसी बहू जा रही थी, शाम के सलोनेपन की तरह एक जसी बहू आ रही थी ।"[2] अत: इस कहानी में सामन्ती परिवेश में नारी शोषण श्रमिकवर्ग के शोषण के परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है । " नारी सामंती का उपभोग है, नारी मध्यवर्ग का उपयोग है ।"[3]

1· आप यहाँ है - संजीव - पृ· 16·

2· - वही - पृ· 16 - 17·

3· " हंस " नवम्बर - दिसम्बर - 1994 : नारी उत्तर कथा : कुछ क्लास नोट्स : गौतम सान्याल - पृ· 223·

3·2·4· पूँजीवादी परिवेश : शोषण का क्रूरतर दायरा :-

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में पूँजीवादी परिवेश में नारी संघर्ष का चित्रण मिलता है । औद्योगिकरण द्वारा सामन्ती परिवेश पूँजीवाद में परिवर्तित हुआ । पूँजीवादियों द्वारा श्रमिक निरन्तर शोषित होते रहे हैं ।

संजीव की कहानी " धनुष की टंकार " में भोजपुर में आयरन कम्पनी के श्रमिकों द्वारा मजदूरों को परमनेन्ट एवं अस्पताली सुविधाओं की मांग करते कम्पनी के विरुद्ध संघर्ष को दर्शाया गया है । कम्पनी के ठेकेदार, मजदूरों का शोषण करते हैं कहानी की नायिका " सुरसती " अमरण अनशन कर सम्पूर्ण ठेकेदार मजदूरों का प्रतिनिधित्व करती है और कम्पनी के मुन्शी द्वारा शारीरिक शोषण के विरुद्ध भी संघर्ष करती है । सुरसती को अनशन करते देख ठेकेदार का मुन्शी ठेकेदारी का पक्ष लेकर सुरसती को नल पर नहाते देख गेट के अन्दर प्रवेश करता है । सुरसती मुन्शी को देखकर अपने पति झम्मन के पास स्टोररूम में चली जाती है । झम्मन को सोते देख मुन्शी बड़बड़ाता है " साला भड़ुआ । सपनाते ही मर गया ...... ।" दूसरे कोने में देह के स्वाद में डूबे मुंशी की आवाज गाली की डंक रीढ़ में सरसराती है । सुरसती को अपना सारा बदन बदबू देने लगता है जिस पर मुंशी एक गुबरैले की तरह रेंग रहा होता है ।

" छोड़ हमरा कमुंहा ..... " मुक्त होने के लिए तड़फड़ाती है सुरसती ।

"काहे, ओवर टाइम तीता लगता है का ? मुंशी हर संभव कोशिश करता है । सुरसती को परास्त करने का ।"[1]

3.2.5. <u>नागरिक अधिकार प्राप्ति के लिए नारी-संघर्ष</u> :-

उच्च वर्ग दूसरों की समस्या को समझने के स्थान पर स्वयं प्रतिस्थिति बनाए रखने पर अधिक ध्यान देता है ।

भीष्म साहनी की कहानी "पिकनिक" निम्नवर्गीय नारी के नागरिक अधिकार प्राप्ति के लिए संघर्ष को दर्शाती है । कहानी की नायिका "गौरी" है । वह एक मुहल्ले के फ्लैट के घरों में झाड़ू बर्तन का काम करती है और परिवार का पोषण करती है । गौरी के तीन छोटे बच्चे एवं एक छोटा भाई है । चारों बच्चों को काम के घरों में नहीं ले जा पाती इसीलिए उन्हें वह मुहल्ले के खुली नाली में छोड़ जाती है । सबसे छोटा बच्चा खुली नाली के बाहर तब तक नहीं आ पाता जब तक कि वह काम से निपट नहीं आती किन्तु मुहल्लेवाले गौरी के बच्चों से नाराज होते है । और नाली में बक्से रखते है । गौरी अपने छोटे बच्चे के लिए खाट लाती है जिससे वह उस पर पड़ा रहे । गौरी खाट सड़क से थोड़ा हटाकर वकील साहब के घर के सामने डालती है और बच्चे को उस पर लिटाती है । वकील साहब गौरी को देख कर भी अनदेखे से रहते है परन्तु उनकी पत्नी खाट को सड़क के पार रख आती है । गौरी समझ

---

1. आप यहाँ है - संजीव - पृ. 24.

जाती है कि खाट वो वकील की पत्नी ही सड़क पार रख आयी होगी। गौरी फिर से खाट वकील के घर के सामने रखती है। गौरी और वकील की पत्नी का झगड़ा आरम्भ होता है "यह नहीं चलेगी गौरी, मैंने कहा दिया।" "क्या नहीं चलेगा बीबीजी ?"

"तुम यहाँ से हट जाओ, किसी दूसरी जगह जाकर बैठो।"

"कहाँ जाऊँ बीबी, आप ही बताओ। मैं तो आज खाट उठा लायी थी कि खाट पर बच्चा पड़ा रहेगा, पर बीबी, आपने तो खाट ही खींचकर हटा दी।"

"यहाँ कोठियों घर है, किसी दूसरे के घर के सामने जा बैठो।"

"यह जगह सड़क से थोड़ा हटकर है, बीबी" "नहीं, मैंने कह दिया, जहाँ मन आये इन्हें ले जाओ। मैं तो तुम्हें यहाँ नहीं बैठने दूँगी।"

"हम इधर बैठते है तो आपका क्या लेते है ?" गौरी ने भी सुनकर कहा उसका चेहरा फिर से पीला पड़ने लगा था और वह सिफरने लगी थी।"

"घर गन्दा होता है। तुम्हारे बच्चे जगह-जगह से कचरा उठाकर यहाँ फेंक जाते है। और शोर होता है अभी-अभी तेरे बच्चे चिल्ला रहे थे।"

अगर गन्दा डालेंगे तो हम मैं साफ करके जाऊँगी, बीबी जी ।"

नहीं मेरे साथ बहस नहीं करो किसी दूसरे घर के सामने जाकर बैठो । हमने तुम्हारा ठेका नहीं ले रखा है । बस, मैंने कह दिया । तुम यहाँ से उठ जाओ ।"

" क्यों उठ जायें ? आपका क्या लेते हैं ? " " हमारा घर गन्दा होता है ।" " यह आपका घर नहीं है । यह सड़क है ।" [1]

2·6· नारी शोषण : सामंतवाद और पूँजीवाद का गठ बंधन :-

स्वतन्त्रतापूर्व भारतीयों ने आजादी के लिए संघर्ष जिस उद्देश्य को लेकर किया उसकी याद दिलाते हुए लेखक शिवमूर्ति कहते हैं " स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करते समय हमारा स्वप्न था राम राज्य और लक्ष्य था हमारे अपने लोगों द्वारा सार्वभौम सत्ता संचालन । सार्वभौम सत्ता के रथ पर सवारी करते हुए आज तक हम उनतालीस बसन्त देख चुके हैं । फिर भी जब हम शान्तचित्त हो अपने चिंतन को ईमानदारी की कसौटी पर कसते हैं तो हमें कुन्दन जैसा चिलमी रेखा कहीं भी दिखायी नहीं पड़ती, हमें आंतरिक सुख की अनुभूति कभी भी नहीं होती । महानगरों की गगन चुम्बी अट्टालिकाएँ, वैभव की प्रतीक चमचमाती कारें और समृद्धि का दावा करती हुई सारी योजनाएँ एक ऐसा अनाकर्षक आकर्षण-सी लगती हैं जो लाखों के

1· वाड्चू : भीष्म साहनी - पृ· 53·

पत्तों के महल-सा खोखला आधार लिए किसी भी पल ढह जाने को तैयार है ।"[1] लेखक के कथन का अभिप्राय यह है कि आज की राजनीतिक एवं सामाजिक प्रणाली (System) व्यक्तिगत स्वार्थों के पीछे कलुषित हो रही है । विशेषरूप से पुरुष ही इसका उत्तरदायी हो सकता है जिसने समाज में अपने महत्त्वाकांक्षाओं के शिखर पर पहुँचने के लिए शतरंज का चौपड़ बिछाया है और नारी को इस खेल में गोट बनाया है । इसका ज्वलंत उदाहरण शिवमूर्ति की कहानी " कसाईबाड़ा " में देखा जा सकता है कहानी में बिना दहेज के अन्तर्जातीय आदर्श विवाह का नाटक गांव का प्रधान रचता है । गांव में निम्नवर्ग की लाकर उनकी बेटियों को बेचता ही और धन अर्जित करता है "पुरुष वास्तविक जगत का सम्राट है, नारी प्रजा है, नारी अंश है, नारी सत्ता है नारी जुए का दांव है ।"[2] गांव का लीडर जो गांव में प्राइमरी स्कूल का अध्यापक है उसे, प्रधान धन का भागीदार नहीं बनाता इस अवसर से लाभान्वित होने वह अगले चुनाव में प्रधान बनने की लालसा लिए चुनाव के छ: माह पूर्व गांव के लोगों में आदर्श-विवाह के वास्तविक रूप का प्रचार करता है । शनिचरी को प्रधान इलेक्शन में एक मात्र गोट बनाता है और उससे अनशन करवाता है ।

शनिचरी वास्तव में अपनी बेटी " रूपमती " को वापस पाने के लिए प्रधान के घर के सामने अनशन करती है "जो परधानजी गांव में आदर्श विवाह का आयोजन करवाकर तीन-चार महीनों के आसपास तक

---

1. कसाई बाड़ा : शिवमूर्ति - पृ. 15
2. " हंस " नवम्बर - दिसंबर - 1994 - नारी उत्तर कथा : कुछ खास नोट्स गौतम सान्याल - पृ. 223.

गांव में देवता की तरह पुजे जाने लगे थे उन्ही का अब घर से निकलना मुश्किल हो गया है । निकलते ही ग्रामीण उनका पैर पकड़कर गोहार लगाती है । " मोर बिटिया वापस कर दे बेईमानवा, मोर फूल ऐसो बिटिया गाय-बकरी को नाई बेंचि के बिटोरो भरोंवाले । तोरे अंग-अंग से कोढ़ फूटि के बदर-बदर चूई रे कोढ़िया ..... " [1] यहाँ हम सामंतवाद और पूँजीवाद के गठबंधन द्वारा अन्याय एवं दगाबाजों के विरुद्ध नारी संघर्ष को देख सकते हैं ।

आज तक किसी भी महापुरुष में औरत को समझने की क्षमता नहीं रही इसका कारण पुरुष, स्त्री के नियमों को रचता है और तोड़ता भी है । बाल-विवाह नारी जाति के लिए अभिशाप है ।

शिवमूर्ति की कहानी " सिरिया-परिहार " में कहानीकार ने पुरुष द्वारा स्त्री पर किए जाने वाले अन्याय एवं अत्याचार के विरुद्ध नारी संघर्ष को दर्शाया है । जो पुरुष स्त्री के जीवन से खिलवाड़ करता है उसका पक्षधर सम्पूर्ण गांव का पुरुष समाज होता है और स्त्री को गाय या बकरी की भाँति सजा देता है ।

कहानी की नायिका विमली को बिसराम अपनी वासना का शिकार बनाता है । उसका पुत्र कलकत्ता भाग जाता है किन्तु वह बहू का गौना कर अपने घर ले जाता है और प्रतिदिन विमली से दुर्व्यवहार करता है विमली उसका विरोध करती है । बहू को अपने वश में न आते देख बिसराम भगवान का

1· कसाई बाड़ा - शिवमूर्ति - पृ· 68·

तीरथ एवं प्रसाद के रूप में पानी में अफीम तथा प्रसाद में गांजा मिला कर चिमली से कहता है कि यह भगवान का चरणामृत एवं प्रसाद है। चिमली बिसराम की दुष्टता को नहीं समझती वह निःकपट रूप से पंजीरी खाती है और चरणामृत पीती है। उसे नशा चढ़ जाती है। और वह खटिया पर लुढ़क जाती है। बिसराम बहू का बलात्कार करता है।

चिमली को जब होश आता है। वह अपने ससुर की अमानवीयता से दुःखी होती है और अपने पति की खोज में कलकत्ता निकल पड़ती है। बिसराम घर लौट कर अपने दुर्व्यवहार को छिपाने चिमली पर चोरी का इल्जाम लगाता है। चिमली को गांव वाले रेल्वे स्टेशन से पकड़ कर लाते है और बिसराम की झोपड़ी के सामने पंचायत बिठाते है। चिमली पर एक और आरोप परपुरुष से प्रेम सम्बन्ध का लगाते है। पंच द्वारा इसकी सजा चिमली को दागने की सुनायी जाती है। पंच के अन्याय एवं अत्याचार फैसले के विरुद्ध चिमली आवाज उठाती है। वह कहती है कि "मुझे पंच का फैसला मंजूर नहीं पंच अन्धा है पंच बहरा है, पंच में भगवान का सत नहीं है। मैं ऐसे फैसले पर थूकती हूँ ..... आक-थू ..... । देखूं कौन माई का लाल दगनी दागता है।"[1]

---

1. स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी कोश : महेश दर्पण - पृ. 632

3·2·7· नारी-संघर्ष कानून और व्यवस्था के संदर्भ में :-

कानून के मात्र कान होते हैं प्रमाण ही उसके लिए सच्चाई होती है । कमलेश्वर की कहानी " बयान " पति-पत्नी के जीवन से सम्बन्धित कहानी है । कहानी का नायक जो कहानी में पति है वह अपनी नौकरी के छूट जाने की कुण्ठा से आत्महत्या कर लेता है कानून आत्महत्या की सच्चाई के प्रमाण इकट्ठे करने मृतक की पत्नी से बयान चालाकी से लेती है जिस चालाकी के विरुद्ध मृतक की पत्नी संघर्ष करती है ।

पति फोटोग्राफर, प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो, सरकारी पत्रिका, विज्ञापन कम्पनी आदि में फोटोग्राफरी का काम करता था । उसने किसी राजनीतिक मन्त्री के बयान के विरुद्ध गलती से फोटो अखबार में छपवाता है जिसके विरुद्ध कारवायी होती है और उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है । नौकरी छूटने के बाद उसे जीवन में असफलता ही हाथ लगती है जिससे वह और भी कुण्ठित होकर आत्महत्या कर लेता है । कानून जब उसकी आत्महत्या के सबूत के लिए उसकी पत्नी से बयान लेती है तब पत्नी कहती है कि पति की आत्महत्या की दोषी वह नहीं है । " नहीं नहीं, नहीं ··· मेरे निर्दोष पति पर इल्जाम मत लगाइए । मैं जानती हूँ आखिर में यही इल्जाम घूमकर मुझ पर आएगा । मेरी भरी-पूरी जिन्दगी की बखिया उधेड़ेगा । मैं खूब जानती हूँ, आप लोग मुझे कहाँ ढकेल रहे हैं । क्या कानून का काम सिर्फ सबूत इकट्ठे करके किसी को जलील कर देना है ? मैं अपने पति की मौत की जिम्मेदार कैसे हो सकती हूँ । "[1]

1· कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ : कमलेश्वर - पृ· 140-141·

3·2·8· पुरुष सत्ता : कार्यालयीन परिवेश :

समाज में मध्यवर्गीय कामकाजी युवती कार्यालयी स्तर पर बिना किसी दावेदार सिफारिश के पुरुष द्वारा मानसिक शोषण का शिकार होती है ।

सुनीता अय्यर की कहानी " एक और शुरुआत " की नायिका " वन्दना " मध्यवर्गीय युवती है जो शोधार्थी है । वह दिल्ली में एक आफिस में नौकरी करती है । प्रतिदिन बस से भीड़-भाड़ एवं धक्के आदि खाते हुए दूर का सफर तय करना पड़ता है आफीस पहुँचते-पहुँचते प्रतिदिन उसके मन में द्वन्द्व छिड़ता है कि आफीस का क्लर्क देर से पहुँचने के कारण रजिस्टर में क्रास लगा न दे, जिससे एक दिन का पगार न कट जाय ।

आफिस की कुछ लड़कियाँ पन्द्रह मिनट देर से आफीस आती है फिर भी क्लर्क " चोपड़ा " उन्हें कुछ नहीं कहता क्योंकि वे एम·पी· आदि की लड़कियाँ है । क्लर्क के अन्याय के विरुद्ध उसके मन में विद्रोह की भावना जागृत होती है, वह मानसिक स्तर पर क्लर्क से मूक संघर्ष करती है । " हर बार चोपड़ा से बुलाया जाता है, तो वह अन्दर जाती हुई एकबारगी सहम जाती है । उसे हर बार लगता है, कभी न कभी चोपड़ा उसको एक कागज पकड़ा देगा, नौकरी से निकाल देने का नोटिस और वह कुछ नहीं कर सकेगी । पर आज तक कुछ भी नहीं हुआ । पहले उसमें और चोपड़ा में कोल्डवार चलता रहा था । अब दोनों एक दूसरे को नीचा दिखाने की पूरी कोशिश

करने लगे है । चौधड़ा कई बार चेतावनी दे चुका है, देखिए, चन्दनाजी सोच लीजिए मुझसे दुश्मनी महंगी पड़ेगी । और वह केवल हंसकर रह जाती ।"[1]

3.2.9. पुरुष - अत्याचार एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष :-

आपत्ति किसी भी समय मानव को अपने शिकंजे में फंस सकती है जिसका अनुमान वह कभी नहीं कर पाता । निम्नवर्ग की आर्थिक अभाव के कारण दयनीय स्थिति होती है यदि उस पर कोई और समस्या आती है तो वह और भी दुर्भागी होता है ।

चित्रामुद्‌गल की कहानी " लेन " की नायिका " महेन्दरी " निम्नवर्गीय नारी है उसका पति रिक्शा चलाता है और परिवार का पालन-पोषण करता है । एक दिन जाड़े की रात तीन गुण्डे कस्टम गोदाम से लगभग पच्चीस लाख की कीमत का माल चुराते है । माल-पुलिस की नज़र से बचाने कुछ तो कुंए में डालते है जो व्यक्ति माल कुंए में डालता है, उसमें हीरे भी होते है उसको नोयत डोल जाती है उसके अन्य दो साथी उससे कुंए का पता पूछते हुए उसे लेकर गलियों में घूमते है किन्तु माल कुंए में छिपाया हुआ व्यक्ति उसके साथियों का घुमाता रहता है पर पता नहीं बतलाता । उसके साथ पता बतलवाने उसे पीटने लगते है उसी समय महेन्दरी का पति " दद्दूराम " उस व्यक्ति की चीख सुनकर किसी भी आदमी के लूट जाने की

---

1. घटना चक्र : सुमति अय्यर - पृ. 43.

गलतफहमी से उसे बचाने दौड़ता है । लुटेरों में से एक लुटेरा कुँए का बता न बताने के कारण मात खिसाए हुए लुटेरे के पेट में छुरा भोंकता है किन्तु छुरा गलती से टहुराम के पेट लग जाता है ।

टहुराम को अस्पताल में दाखिल किया जाता है महेन्दरी अपने बेकसूर पति को सेवा करती तथा परिवार के लिए दोनो समय की रोटी जुटाती है महेन्दरी को थाने में पुलिस द्वारा गवाह के लिए बार-बार बुलाया जाता है । तीनों लुटेरो के विरोध में पुलिस दिये गये रिपोर्ट की खबर लुटेरों को मिलती है कुछ दिन के बाद महेन्दरी के घर पर दो अपरिचित व्यक्ति आते है और महेन्दरी को टहुराम को छुरा भोंकने के सिलसिले में पैसो की गड्डी बताते है क्योंकि महेन्दरी उन तीन लुटेरों की शनाख्त कर सकती थी । वे महेन्दरी से कहते है कि यदि वह पुलिस में उनकी शनाख्त करने से मुकर जायेगी तो उसे पैसे दिये जायेंगे । महेन्दरी अपने पति का सौदा करनेवालों का विरोध करती है वह कहती है कि -- " नोटों की गड्डी उठाकर तिरस्कार से उनके मुँह पर मारते हुए वह परे संयम के बावजूद दांत पीसती हुई चीखी -- " मजाक उडाने आये मजदूर मानस का ? अरे कोई कितना भी गिर जाय, अपने मरद की जान की कीमत खायेगा ।

" उठाओ गड्डी .... सिद्द रास्ता नापों अपणा .... आगे मेरी कोठणी में पांव नई रखणा कमीने कुत्ते ..... "[1] यहाँ हमें अत्याचार एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध नारी संघर्ष का चित्रण मिलता है ।

---

1. इस हमाम में - चित्रा मुदगल - पृ. 156.

3.2.10. निष्कर्ष :

परम्परा से पुरुष, मनुस्मृति में उल्लेखित श्लोक को जीवन का पूर्ण आधार बना कर नारी की विभिन्न रूपों में संरक्षा करने के उद्देश्य से परिवार में शासक की भूमिका निभाने लगा वही भूमिका शोषक में रूपान्तरित हुई ।

स्वातन्त्र्योत्तर काल में राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विषम परिस्थितियों से नारी-जीवन अत्याधिक प्रभावित हुआ । नारी ने अपने रूप को समझा अर्थात् उसने अपने अस्तित्व की पहचान की । स्वतन्त्रता के बाद वह शिक्षा ग्रहण करने लगी जिससे उसके व्यक्तित्व में परिवर्तन के साथ उसके चिंतन एवं मूल्य दृष्टि में परिवर्तन हुआ । आर्थिक अभाव के कारण आजीविका के लिए उसे बाहर निकलना पड़ा फलस्वरूप उसका घर और बाहर शोषण होने लगा । सामंतयुग में वह दासी बनी तो पूंजीवादी युग में पण्यवस्तु ।

परिवार सामाजिक इकाई है । स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में कहानीकारों ने पारिवारिक एवं सामाजिक संदर्भ में विविधरूपों में नारी शोषण का चित्रण किया है । पारिवारिक संबंधों में पिता, पुत्री का शोषण आर्थिक अभाव के कारण करता है तो पति-पत्नी संबंध में पत्नी, पति के शारीरिक शोषण, अमानवीयता, अधिकार-प्राप्ति, लापरवाही, शारीरिक अतृप्ति, झूठी प्रतिष्ठा, अविश्वास, चारित्रिक आरोप, आत्मीयता के अभाव, आदि के विरुद्ध संघर्ष करती है । नारी भाभी के रूप में देवर द्वारा मानसिक शोषण, अधिकार से वंचित रखने के विरुद्ध भी संघर्ष करती है । ससुर को समाज में पिता के समान संरक्षक माना जाता है किन्तु स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में संबंधों के अर्थ बदलते देखे जाते हैं ससुर बहू को वासना का

शिकार बना कर शारीरिक शोषण करता है । परम्परा से चले आ रहे भाई-बहन संबंध में भाई के रूप में पुरूष अंह एवं सत्ता पर पूर्ण अधिकार लिप्सा को भंग करने बहन द्वारा संघर्ष का चित्रण स्वातन्त्र्योत्तर कहानी में हुआ है । पुत्र के रूप में सम्पत्ति के मोह के कारण माता पर अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष परिलक्षित हुआ है । प्रत्येक व्यक्ति बुढ़ापे में अपने ही परिवार के सदस्यों द्वारा उपेक्षित होता है पोते के रूप में पुरूष अपनी दादी के अस्तित्व को बेकार समझता है किन्तु दादी अपने स्वामीत्व के बोध द्वारा अस्तित्व को पहचान के लिए संघर्ष करती है । पारिवारिक स्तर पर पुरूष द्वारा उपर्युक्त संरक्षक और शासक की भूमिका शोषक में स्थानान्तरित होकर समाज के व्यापक क्षेत्र में आकर यही भूमिकायें वृहत्तर रूप धारण कर ली ।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में सामाजिक स्तर पर प्रेमी-प्रेमिका संबंध में प्रेमी, प्रेमिका का शोषण शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर करने लगा । प्रेमी, प्रेमिका को न ही माँ बनने का अवसर देता है और न ही सामाजिक नियमानुसार उससे विवाह करता है जिसके विरूद्ध नारी मूक संघर्ष करती है । कामुक पुरूष एक प्रेमिका से सन्तुष्ट नहीं होता बल्कि अनेक स्त्रियों को अपनी प्रेमिका बना कर उन्हें ठगता है । कुछ विवाहित पुरूष भी एक पत्नी से संन्तुष्ट नहीं होते वे स्वार्थानुसार एक और स्त्री से विवाह करते हैं जिसके विरूद्ध कहानियों में संघर्ष का चित्रण हुआ है । जब कोई पति विवाह के बाद भी अपनी पत्नी के अतिरिक्त प्रेमिका से सम्बन्ध रखता है तो वह दोनों से ठीक न्याय नहीं कर पाता वे दोनों स्पर्धा एवं प्रेम पर अधिकार प्राप्ति के लिए संघर्ष करती हैं । यदि कोई प्रेमी, अपनी प्रेमिका से आत्मीय प्रेम रखता हो और सामाजिक भय के कारण वह अपना प्रेम प्रकट नहीं करता बल्कि प्रेमिका का मानसिक स्तर पर शोषण करता है ऐसे प्रेमी के विरूद्ध प्रेमिका संघर्ष करती है । स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में यह भी

देखा गया है कि प्रेमी के रूप में पुरूष प्रेमिका से ही प्रेम सम्बन्ध नहीं रखता बल्कि उसकी छोटी बहन से भी वह प्रेम सम्बन्ध स्थापित करता है ऐसे पारिवारिक शोषण के विरूद्ध प्रेमिका संघर्ष करती है । एक और कहानी में असभ्य प्रेमी को सभ्य पुरूष बनाने के लिए प्रेमिका संघर्ष करती है ।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में वेश्यायें देह विक्रय एवं शोषण के स्तर पर शाब्दिक संघर्ष करती है । सामन्ती परिवेश में पुरूष विवाहित स्त्री को अपनी वासना का शिकार बना कर शारीरिक शोषण करता है । पूंजीवादी परिवेश में पुरूष द्वारा अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाती स्त्री का धन के बल पर पूंजीवादियों द्वारा बलात्कार का शिकार होते देखा गया है । समाज में नारी नागरिक अधिकार प्राप्ति के लिए संघर्ष करती है । नारी शोषण सामंतवाद एवं पूंजीवाद के गठबंधन द्वारा भी कहानियों में देखा गया है । कानून की चाल के विरूद्ध नारी संघर्ष करती है । मध्यवर्ग की स्त्री विशेष रूप से बिना किसी राजनैतिक सिफारिश के कार्यालयी स्तर पर पुरूष द्वारा मानसिक शोषण का शिकार होती है । वह इसके विरूद्ध मानसिक स्तर पर संघर्ष करती है । निम्नवर्ग की नारी दुर्भाग्य से किसी लुटेरे द्वारा आपत्ति में पड़ती है तो उसे पैसों की लालच दी जाती है किन्तु वह ऐसे अत्याचार एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष करती है ।

अतः स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर पुरूष शोषण के विरूद्ध नारी-संघर्ष का उद्देश्य पुरूष द्वारा संरक्षक, शासक की भूमिका नारी शोषण में परिणति होने से है ।

चतुर्थ—अध्याय

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी - संघर्ष : आर्थिक संदर्भ

4·0· स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी : संघर्ष आर्थिक संदर्भ

पुराणों में नारी के प्रति वस्तुपरक दृष्टि मिलती है । तसलीमा नसरीन ने मैत्रेयी संहिता तथा शतपथ ब्राह्मण का हवाला देते हुए लिखा है कि " नारी अशुभ है (3/8/3), यज्ञ करते हुए किसी कुत्ते, शूद्र और नारी की तरफ मत देखो (शतपथ ब्राह्मण , 3/2/4/6) आतिथ्य-उत्सव में, युद्ध में, यज्ञ में, उपहार, दान और दक्षिणा में गाय स्वर्ण, अनाज-रथ-गज अश्व के साथ-साथ नारी भी दी जाती थी नारी को भोग्यवस्तु समझा जाता था । इसलिए यहाँ गाय और घोड़े के साथ-साथ नारी का उल्लेख करने में कोई नहीं हिच -

किया ता कुत्ता, शूद्र, नारी सभी अछूत है, सभी समाज के उत्पीड़ित, शोषित वस्तु है ।" 1

स्वातन्त्र्योत्तर काल में जनसंख्या में वृद्धि के परिणाम स्वरूप देश में बेरोजगारी, गरीबी तथा महंगाई बढ़ती गयी । बढ़ती जनसंख्या एवं उत्पादन-साधनों के बीच असंतुलन बढ़ता गया । आर्थिक विषमता ने व्यक्ति के मन में असुरक्षा का भाव उत्पन्न किया तथा उसने सामाजिक तथा पारि - वारिक सम्बन्धों तक को आहत किया फलत: उसकी इच्छाओं की पूर्ति अधिक अभावों के कारण नहीं हो पायी वह निराशा एवं कुण्ठा का शिकार होता गया ।

नारी को निर्धन परिवार में पत्नी, बेटी, बहू आदि रूपों में आर्थिक कठिनाइयों से जूझने की हो गई । डा॰रामविलास शर्मा के शब्दों में " पुराना पितृसत्तात्मक समाज जिसमें उसे गृहलक्ष्मी कह कर वास्तव में गृहदासी बनाया गया है तथा उसका आना एक अशुभ कदम माना जाता है, उसे पिछड़ा रहने के लिए बाध्य किया जाता है । इन सबसे मुक्त होना चाहिए । पितृसत्तात्मक समाज पूँजीवाद का प्रतीक रहा है जिस प्रकार पूंजीवाद समाज शोषण करता है क्योंकि उसके पास धन है शक्ति है, सारी व्यवस्था उस पर निर्भर है इसी प्रकार पुरुष धन लाता है जिससे गृहस्थी की व्यवस्था चलती है । घर की स्त्री सदस्या धन के लिए उसका मुँह देखती है यही निर्भरता की भावना पुरुष को शासक बना देती है और शोषित करने

1· " हंस " मासिक पत्रिका : अगस्त 1994 : और के हक में : तसलीमा नसरीन - पृ· 35·

का भाव पैदा होता है । पूंजीवादी समाज के संस्कार समाज के स्त्रियों, पुरुषों में बहुत गहरे तक पैठे हुए है । उससे मुक्त होना आवश्यक है स्त्री को परिवार एवं समाज में पुरुष के बराबर दर्जा मिलना चाहिए । पढ़ने-लिखने का समान अवसर मिलना चाहिए और पढ़-लिख कर हर स्त्री को आर्थिक रूप से आत्म निर्भर होने की ओर प्रवृत्त होना चाहिए । धन या पूँजी ही नियामक होती है, उसका केन्द्र नहीं होगा शक्ति भी नहीं होगी और शक्तिशाली सब को दबा सकेगा न आपको दबने की आवश्यकता ही रहेगी किसी क्षेत्र में किसी दृष्टि से अपने को कमजोर रखना यह शक्ति - शाली का मुखापेक्षी होना हमेशा दासता का कारण बनता है इस स्थिति से नारी की मुक्ति होना चाहिए ।"[1]

आर्थिक विवशता के कारण कामकाजी स्त्री परिवार एवं समाज में दोहरे स्तर पर शोषण का शिकार होने लगी घर एवं बाहर के काम से वह मानसिक एवं शारीरिक रूप से अतिरिक्त थकान महसूस करने लगी ।

4.1. आर्थिक शोषण के विरुद्ध नारी : संघर्ष :-

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में आर्थिक संघर्ष करते पात्रों का चित्रण मिलता है । गरीबी इन्सान को कमजोर करती है विशेषकर निम्न वर्ग गरीबी से जूझता है । यदि इस वर्ग की नारी का पति आलसी होता है और अपनी पत्नी की कमाई पर निर्भर होता है तो वह पति द्वारा आर्थिक पीड़ित की जाती है ।

---

1. पूरे प्रसंग के लिए देखिए प्रस्तुत प्रबंध का - प्रथम अध्याय - पृ. 27.

भीष्म साहनी की कहानी " पिकनिक " में आर्थिक शोषण के विरुद्ध नारी-संघर्ष का चित्रण हुआ है । इस कहानी की नायिका गौरी निम्न वर्ग की महिला है जिसके तीन छोटे बच्चे एवं एक छोटा भाई है । गौरी का पति आलसी है वह गौरी की कमाई छीन कर मौज करता है । गौरी एक मुहल्ले के फ्लैट वालों के घरों में झाडू-बर्तन का काम करती है । प्रतिदिन वह अपने सबसे छोटे बच्चे को मुहल्ले की सूखी नाली में छोड़ जाती है । जब गौरी का पति मुहल्ले में गौरी से चोट छीने के लिए पैसे मांगने आता है और गौरी के पैसे न देने पर गौरी से झगड़ता है । इन दोनों का झगड़ा मुहल्लेवालों के लिए आम बात होती है । गौरी का पति गौरी से पैसे लेने के लिए उससे छीना-झपटी करता है " नहीं दूंगी ये राशन के पैसे है मर भी जाऊँ, तो भी नहीं दूंगी ।"

चेहरा पीला पड़ जाता है । वह आग की पीली लपट की तरह कांपने लगती है ।

" ला पैसे दे दे, मैं कह रहा हूं " गौरी का पति भी चिल्लाने लगा है नहीं दूंगी ये मैंने राशन के लिए रखे है ।"

" पैसे दे दे, नहीं तो मुझ से बुरा कोई नहीं होगा । घर में घुसने नहीं दूंगा ।"

कर ले, मेरा जो करना है । मैं एक पैसा नहीं दूंगी ।"[1]

1· वाङ्चू - भीष्म साहनी - पृ· 51 - 52·

मध्यवर्ग की अविवाहित युवती पर परिवार के खर्च का दायित्व होता है तो वह आर्थिक अभाव के कारण नौकरी और ट्यूशन करने लगती है । यदि परिवार का खर्च उसकी कमाई से भी अधिक होता है तो वह निरन्तर मानसिक एवं शारीरिक स्तर पर शोषण का शिकार होने लगती है ।

मन्नू भण्डारी की कहानी "क्षय" मध्यवर्गीय अविवाहित युवती की आर्थिक विवशता से उत्पन्न शोषण के विरुद्ध संघर्ष को दर्शाती है । कहानी की नायिका कुन्ती का पिता क्षय का रोगी है उसने पेन्शन के बाद पाँच हजार स्वयं कुन्ती के विवाह या छोटे पुत्र टुन्नी की पढ़ाई के लिए बैंक में रखा है । किन्तु यह पैसा धीरे-धीरे उसी के क्षय रोग की दवाई के लिए खर्च होने लगता है । यह देखकर कुन्ती दो सौ रुपयों की नौकरी स्कूल में करती है और दो सौ रुपयों पर ट्यूशन पढ़ा कर अपने पिता की दवाइयों पर खर्च करती है कुन्ती को कुल मिला कर प्रतिदिन नौ घण्टे मेहनत करना पड़ता है जिससे उसे मानसिक एवं शारीरिक स्तर पर अधिक थकान महसूस होती है । पिता की निरन्तर बढ़ती बिमारी उसे और भी मानसिक स्तर पर शोषण का शिकार बनाती है जिसके कारण वह एक महीने बाद ट्यूशन छोड़ने का निर्णय लेती है । "एक महीना पढ़ाकर कुन्ती को लगा कि सावित्री को वह अब नहीं पढ़ा सकेगी । डेढ़ घंटा पढ़ाने के लिए पूरा डेढ़ घंटा और उसे बस में बिगाड़ना पड़ता है और इस प्रकार स्कूल के बाद पूरे तीन घँटे सावित्री के नाम अर्पण हो जाते हैं उसके बाद वह इतनी थक जाती है कि किसी पत्रिका की दो पंक्तियाँ भी उससे नहीं पढ़ी जाती ।

कल जब वह लेटी थी तो उसने देखा था कि वायलिन पर धूल की हल्की-सी परत जम गई है। उनका मन टीस उठा था। उसने धूल पोंछी पर चाहकर भी बजाने के लिए वह उठकर नहीं जा सकी थी। बस, एकटक उसे देखती रही थी, और उसे लग रहा था कि यदि जिन्दगी का यही रवैया रहा तो वह शायद फिर कभी वायलिन नहीं बजा सकेगी। इस कल्पना से उसकी आँखें छलछला आई थी। नहीं, नहीं, जो भी होगा वह सहन कर लेगी, पर कल ही सावित्री की माँ से कह देगी कि वह अब पढ़ा नहीं सकेगी और सचमुच दूसरे दिन कुन्ती ने जाकर सावित्री की माँ से कहा, "देखिए, मैंने अपनी ओर से भरसक प्रयत्न किया, पर लगता है, सावित्री को पढ़ाना मेरे लिए सम्भव नहीं होगा।" सारे रास्ते वह संकल्प-विकल्प करती रही थी। एक महीने के मिले हुए दो सौ रुपयों से घर की आर्थिक स्थिति कितनी संभल जायगी, यह भी उसके सामने था, पर फिर भी उसने कह ही दिया।-[1]

आर्थिक रूप से स्वतन्त्र अविवाहित युवती मध्यवर्गीय परिवार में अपने माता-पिता के आजीविका का साधन बनायी जाती है परिवार के सदस्य ऐसी युवती के सुख की चिन्ता नहीं करते बल्कि उससे आर्थिक रूप से सहायता की अपेक्षा रखते है।

मन्नू भंडारी की कहानी "एखाने आकाश नाई" की नायिका सुषमा मध्यवर्गीय परिवार की कामकाजी युवती है जो परिवार में आर्थिक शोषण के विरुद्ध संघर्ष करती है। उसके माता-पिता उसका विवाह सम्पन्न

---

1. श्रेष्ठ कहानियाँ - मन्नू भंडारी - पृ. 78 - 79.

परिवार में करवा कर उससे उसकी छोटी बहन की शादी के लिए आर्थिक सहायता की अपेक्षा से उसे, उसके साथी महिप से विवाह की खबर सुनकर उसका विरोध करते है किन्तु सुषमा परिवार द्वारा किया जाने वाला शोषण को समझती है और वह अपने साथी से ही विवाह करती है वह कहती है " कल से ही घर में कोहराम मचा हुआ है। पिताजी गुस्से में कांपते हुए घूम रहे है और अम्मा ने रो-रोकर सारा घर सिर पर उठा लिया है।

" अरे, यह सब ठीक हो जायए ..... शुरू में सब ऐसे ही करते है। " खाली प्याला दिनेश ने लेखा के सामने सरका दिया।

हाँ, ठीक तो हो ही जाएगा, पर इस समय घरवाले भी साथ देते, तो ..... " बरबस ही आंखो में आए आंसुओं को पोते हुए सुषमा ने कहा, " पिछले तीन साल से मैं केवल घरवालों के लिए ही मरखप रही हूं। नौकरी के साथ दो-दो ट्यूशन करके मैने घर का सारा खर्च चलाया अब पिंकी ने बी॰ए॰ पास कर लिया, तो अपनी बात सोचना शुरू किया। पर इन लोगों से इतना भी नहीं होता कि मेरी हंसी-खुशी में भी साथ दें।" सुषमा रुकी। दिनेश उसे तसल्ली देने के लिए कुछ कहने जा ही रहा था कि उसने फिर शुरू कर दिया, " इन लोगों के ख्याल से मैं बहुत सुन्दर हूं, पढ़ी-लिखी तो हूं ही, सो ये सोचते है कि इस आधार पर तो ये मुझे बड़ी आसानी से किसी सम्पन्न परिवार में ब्याह सकते है — ऐसे परिवार में जहाँ जाकर मैं छोटी बहन का बोझ अपने ऊपर ले सकूं। पर मेरी समझ में नहीं आता कि ये ... ।" और आवेश में आकर उसने अपना होंट काट लिया।" [1]

1॰ श्रेष्ठ कहानियाँ - मन्नू भण्डारी - पृ॰ 91-92॰

पति द्वारा उपेक्षित नारी का जीवन दयनीय होता है। विशेषकर निम्नवर्ग की नारी को आर्थिक विवशता के कारण अपनी संतान के उज्वल भविष्य के लिए शारीरिक शोषण का शिकार होते कहानी में देखा जा सकता है।

निरुपमा सेवती की कहानी "माँ यह नौकरी छोड दो" की नायिका "माँ" निम्नवर्गीय नारी है जो अपने मालिक के शोषण के विरुद्ध मूक संघर्ष करती है। इसका पति पीयट है और इसका एक पुत्र है। पुत्र को अफसर बनाने की आकांक्षा से एक साहब की कोठी में खाना पकाने का काम के साथ साहब को खुश करने शारीरिक सम्बन्ध रखती है जिससे उसे पैसे मिलते है यह उसका दैनिक काम होता है। साहब को खुश करने के बाद वह साहब को चाय बना कर देती है और जब साहब चाय पीकर बाहर जाते है तब वह पैसे माँगती है "..... और मैं अभी ही जा रहा हूँ। तुम सब ठीक तरह से बंद करके जाना।"

"अच्छा।" माँ ने बहुत सफाई से चाबी पकड़ी थी। साहब की तरफ देखा भी नहीं।

फिर एकदम कड़े ढंग से बोली — "हिसाब में रुपये चाहिए। बहुत सा सामान है अपने घर का।"

"हाँ-हाँ तो पहले ही माँग लेती।" साहब ने दस के तीन नोट फेंके और तेजी से चला गया।"[1] इस कहानी में माँ के मन में शोषण के विरुद्ध विद्रोह है किन्तु आर्थिक विवशता उसे शोषण को स्वीकारने के लिए बाध्य करती है उसका पुत्र माँ की ऐसी नौकरी नहीं चाहता।

---

1. आतंक बीज - निरुपमा सेवती - पृ. 100 - 101.

आज के युग में बेरोजगारी एक गंभीर समस्या बन गयी है । मानव को बढ़ती मंहगाई और भी व्याकुल कर रही है परिणामत: वह दोनों तरह की समस्याओं में बुरी तरह से उलझा हुआ है । जिस नौकरी का वह चुनाव करता है यदि वह कम वेतनवाली नौकरी हो तो वह मंहगाई का सामना नहीं कर पाता और यदि वह अधिक वेतनवाली हो तो उसे निरन्तर मानसिक शोषण का शिकार होना पड़ता है ।

निरुपमा सेवती की कहानी " बुत्तुमिष्ट " एक अविवाहित मध्यवर्गीय युवती की आर्थिक मुक्ति के लिए मानसिक शोषण के विरुद्ध मूक संघर्ष को दर्शाती है । कहानी की नायिका शुभा मध्यवर्गीय युवती है वह एक फाइव-स्टार होटल में रिसेप्शनिस्ट का काम करती है, उसे होटल के ग्राहकों को खुश करने के लिए छ: सौ रुपये वेतन मिलता है । उसे ग्राहकों के द्विअर्थक बातों और अश्लील कटाक्षों को बर्दाश्त करके भी मुस्कुराना पड़ता है । वह इस बात को अच्छी तरह जानती है कि उसका ग्राहकों द्वारा मानसिक शोषण हो रहा है किन्तु वह मानसिक स्तर पर इसके विरुद्ध मूक संघर्ष करती है उसे भय है कि यदि वह व्यक्त रूप से ग्राहकों के शोषण के विरुद्ध संघर्ष करेगी तो उसे नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा फिर भी आर्थिक मुक्ति के लिए वह ऐसी नौकरी करने विवश होती है ।

होटल में उसे ग्राहकों को आकर्षित करने अपने अंगों का प्रदर्शन करना पड़ता है ग्राहक उसकी नाभिदर्शन साड़ी पर गंवारू ढंग से रिमार्क करते है । एक ग्राहक उसे गोलमोल भाषा में तंग करता है और उसे अपना कार्ड थमाता है वह होटल का ग्राहक होने के कारण कार्ड लेती है " दस मिनट बाद ही वह इस हाल का कोनेवाला दरवाजा ठेलती ऑफलेट की तरफ जा रही थी

तभी उस मझल मूँछोंवाले को भी साथ-साथ आते महसूस किया । वे कॉरीडोर में थे । वह लेडीज़-ट्वॉयलेट में जाने ही लगी कि उस आदमी ने अपना कार्ड उसे थमा दिया और बेशर्मी से दांत दिखाते बोला — " फोन नंबर भी इसमें लिखा है ।"

वह कस्टमर है - यह ख्याल आते ही गाली देने को मुड़-मुड़ रही जुबान सपाट होकर रह गयी । वह ओ. के. कहकर झट से टॉयलेट में घुस गयी थी और अंदर पहुँचते ही मुँह से निकला था, " सन आफ आऊ ला "

टॉयलेट की अटेंडेंट ने फौरन पुरस्त दिलचस्पी दिखायी थी — कौन भाई ? "

" छोड़ो न, ऐसे लफंगे कई मिलते है ।"[1]

राजी सेठ की कहानी " योगदीक्षा " निम्नमध्यवर्गीय परिवार की अविवाहित युवती के आर्थिक अभाव के कारण शोषण के विरुद्ध मानसिक संघर्ष को दर्शाती है । कहानी की नायिका तीन घर की महिलाओं को योग-दीक्षा सीखा कर पैसे कमाती है वह परिवार की विषम आर्थिक स्थिति को जानती है और अपने पिता, को साईकल दिलाने तथा छोटे भाई-बहन को पढ़ाने का संकल्प करती है । माता-पिता उसकी कमाई पर पूर्ण निर्भर होते है और छोटे-भाई-बहनों की भलाई के बारे में ही सोचते है । उसकी भाव - नाओं की कद्र नहीं की जाती इसीलिए वह असन्तुष्ट रहती है ।

---

1. आतंक बीज - निरुपमा सेवती - पृ. 41.

प्रतिदिन वह एक कप-चाय पीकर योग साधना सीखाने जाती है और घर लौटने पर उसे सूखा साग तथा ठण्डी रोटियाँ खानी पड़ती है इस तरह के भोजन से वह ऊब जाती है । घरवालों की अन्तहीन जरूरतों से उसे आश्चर्य भी होने लगता है और उसके मन में परिवार के प्रति विद्रोह की भावना उत्पन्न होती है । योग-साधना सिखाने का उसका पहला घर प्रतिदिन मिसेज बाटलीवाला का होता है । मिसेज बाटलीवाला को योग-दीक्षा देने के बाद ठीक नौ बजे जब उसका ब्रेक फास्ट नौकर लाता है तब कहानी की नायिका उसे देख कर तरसती है मिसेज बाटलीवाला उससे खाने का अनुरोध करती है किन्तु वह इसलिए नहीं खा पाती क्योंकि उसे और दो घरों में योग-साधना सिखाने जाना पड़ता है । स्वादिष्ट भोजन करने की लालसा उसके मन में दबी ही रह जाती है जिसके परिणाम स्वरुप उसे ट्यूशन जाने की इच्छा भी नहीं होती । " आज जाना नहीं है बिटिया ।" माँ शायद जाग रही थी । उसने सुन लिया परन्तु चुप रही उत्तर देने की उसकी इच्छा न हुई ।

माँ ने उसे सोता समझकर दो-चार आवाजें और दी ।

" जाग रही हूँ माँ । " उसने मां को चुप कराने की नीयत से कहा " सुन ।" माँ उस सन्नाटे में कुछ ऐसे बोली जैसे कोई बड़े भेद की बात कहने जा रही हों, " अब दीपी-मुन्नी के लिए दो-दो चार-चार चीजें बनाने की फिकर ।"

वह सन्न रह गयी और वह ? और वह ? और वह स्वयं ? क्या माँ को उसका कामना इतना रास आ गया है ।

उसने उस मद्धिम-सी रोशनी में माँ का चेहरा टटोलने की कोशिश की । माँ उसी रौ में थी । बोली "अगले अगहन में दोनों के हाथ पीले हो जायें, तो गोपाल की तो कोई बात नहीं ······ क्या कहती हो ? सुन रही हो ? "

उसने एक बहुत छोटी-सी हुंकारी भरी । माँ, करवट लेकर पीठ फिराते हुए फिर बोली, " तू अभी ट्यूशन के लिए उठेगी, जरा अंगीठी बालकर पानी रख दीजियो ···· कल से घुटनों में ऐसा दर्द ······ । "

वह उठी । हाथ-पैरों में एक गहरा इन्कार महसूस हुआ , परन्तु दीवार के सहारे बैठे हथौड़ी से उसने पथरीले काले कोयले तोड़े । अंगीठी जलायी । पानी रखा । दीवो सुन्नो को टेरा नहायी, वही कलवाली मलगुजी सी साड़ी पहिन ली । बाबा टहलने गये थे । नहाकर आयी तो अंगीठी में लाल-लाल अंगारे दहक रहे थे । चाय बनाने के लिए उसने पतीली में पानी लिया, फिर उसे वहीं ढुरकाकर, दरवाजा ढुलकाकर बाहर निकल गई । अपनी साधना करने का भी उसका जी न चाहा ।

सुबह की ठण्डक ने जैसे मन पर लेप रख दिया हो । रिक्शा लेने की उसने जल्दी न की चलती रही, चलती रही, जब तक अपने रास्ते घूम न घूम न गये ।

अचानक उसे लगा कि वह एकदम और अकारण बहुत अधिक थक गयी है । आगे बढ़कर वह बस स्टैण्ड के बेंच पर बैठ गयी । पहली बस जब आयी तो पूरी तरह भरी हुई थी । खड़े-खड़े सफर करने का साहस उसने अपने भीतर न पाया । लगा भी कि देर हो रही है ·······

सेठानी और उसकी दो अजीब तरह की लम्बी लड़कियों ने आने में खासा समय लिया । सेठानी तो किसी अज्ञान भक्ति-भाव से ऐसे लहरा रही थी कि टहल-टहलकर आयी और उसे देर से आने के लिए कहने सुनने लगी ।

उसे लगा उसके भीतर अप्रसन्न होने या अप्रसन्न जाहिर करने का माद्दा भी नहीं बचा । पेट का गड्ढा गहरा और गहरा होता जाता है और उसमें एक भक्षक खालीपन ऐसा गुड़गुड़ाकर उठता कि पेट की दीवारें तक रोने लगती है । आँखों की ज्योति उसे खिसकती-सी लगी .... दो घेर बाकी है अभी ...... । " 1

4.2. आर्थिक विवशता के कारण नारी का वेश्यावृत्ति अपनाना :

आर्थिक विवशता नारी को निम्न स्तर तक ले जाती है । जिस घर में पुरुष कमाऊ नहीं होता, परिवार की आय कम तथा परिवार में अनेक सदस्य होते है ऐसी स्थिति में परिवार के दायित्वपूर्ण सदस्य को आजीविका के लिए साधन जुटाना अत्यन्त कठिन समस्या होती है ।

डॉ.सुभाष कुमार की कहानी " स्थानपूर्ति " में आर्थिक अभाव के कारण नारी द्वारा वेश्यावृत्ति अपनाने की विवशता को देखा जा सकता है । कहानी की नायिका नीलिमा है जो परिवार में बड़ी बेटी है और वह एक प्राइमरी स्कूल में मिस्ट्रेस थी । नीलिमा आर्थिक अभाव एवं अपने बहनों के

---

1. तीसरी हथेली : राजीसेठ - पृ. 80-81.

उज्ज्वल भविष्य के लिए वेश्यावृत्ति अपनाती है "सीमोन दबउवार के शब्दों में "उसकी हालत तो उस सब्जीवाली की तरह है जो आलू तभी बेचेगी जब खरीददार साथ मे शलजम भी खरीदे वह शरीर समर्पित करती ही नहीं, जब तक प्रेमी उससे घण्टों बातें नहीं करता या विहार पर न ले जाए। समझौता होता है। वह उस नदी की तरह होती है जो किनारे का बाँध तोड़कर बहने लगती है और तब पुरुष को लगता है कि ऐसे प्रेम से तो प्रेम का न होना ही अच्छा है। इस झगड़ों में बहुधा स्त्री अपनी मांग कम भी कर लेती है किन्तु प्राय: दोहरे तनाव की कीमत पर संतुलन आता है। वह सोचती है कि ऐसे शरीर की कीमत मंहगी पड़ी।" [1]

कहानी में लेखक स्वयं उस मुहल्ले में रहते है वे इस परिवार के प्रति संवेदनशील है। लेखक कहते है कि "वह कह रही थी कि जिन बहनों के चरित्र को बनाए रखने के लिए उसने अपने जिस्म पर असमय बुढ़ापा लाद, लिया है वे आवारा हो रही है और उल्टे उसे ही ताना देती है। वह बुदबुदा रही थी कि इन लड़कियों के लिए उसने अपनी अस्मत की बलि दी है। केवल कुछ "सेन्टी मेण्टस" के लिए कोई कहाँ तक अपना जीवन चौपट करता फिरे। उसने मुझे एक विशेष खबर ी कि उसका एक मित्र उसने सिविल मैरेज करने को तैयार है और वह कुछ दिनों में अपना परिवार छोड़नेवाली है।" [2]

1· प्रसंग के लिए देखिए प्रस्तुत प्रबंध का प्रथम अध्याय – पृ·

2· अन्य रस तथा अन्य कहानियाँ – डॉ·कुमार कुमार – पृ· 13-14·

समाज में सबसे दयनीय स्थिति नारी के संदर्भ में विषम आर्थिक होती है । आर्थिक विवशता नारी को वेश्यावृति अपनाने के लिए मजबूर करती है ।

चित्रामुद्गल की कहानी " फातिमाबाई कोठे पर नहीं रहती " में बम्बई के रेडलाइट में स्थित कोठे की वेश्याओं की दयनीय स्थिति को दर्शाती है । वेश्याओं की समस्याओं का ब्योरा लेने एक रिपोर्टर कोठे में जाती है । कोठे की एक वेश्या " रेश्मा " की उसकी माँ आर्थिक अभाव के कारण यह वृति अपनाने के लिए कहती है । रिपोर्टर जब रेश्मा से सवाल करती है कि मानलो तुम्हे एक बेहतर सामाजिक जिन्दगी जीने का आश्वासन मिले तो क्या तुम यह पेशा छोड दोगी । तब रेश्मा जवाब देती है कि वह इसी कोठे में ज्यादा सुरक्षित एवं सुखी है रेश्मा का उत्तर सुनकर कर केतकी नाम की वेश्या क्रोधित होती है वह कहती है " हरामजादी डायलाग मरती है ? झूठ बोलती झूठ " अचानक केतकी गुस्से से बिफरती उस पर झपटी ।

वह केतकी के इस अप्रत्याशित हमले से हतप्रभ रह गयी । अन्य लड़कियों ने उसे इस सख्त हरकत के लिए लताड़ा फिर समझा बुझाकर शान्त किया । मगर केतकी का आक्रोश शान्त नहीं हुआ । वह रेश्मा को चुनौती देती सी बोली " सुख की बात करती इदर सुखी है ? ऐसे बोलती है जैसे इदर आने वाले राजा राम के अवतार है । अरे कोई निकल के जाना भी चाहे तो कैसे पांव उठा सकती है ? खोल उधेड़ के भूसा नहीं भर देंगे ? दिखाऊं ? दिखाऊं इस नरक की सड़न को ? देख ।" उसने आंचल हटा अपने ब्लाउज के बटन चट, " चट " खोल दिये उसके मममात्व से भरे-भरे उधेड़ स्तन नील और खरोंचों से क्षत-विक्षत बाहर लटक आये ।"[1]

1· इस हमाम में : चित्रामुद्गल - पृ· 34-35·

यहाँ हम आर्थिक विवशता के कारण नरक भोगती नारी के सामाजिक संघर्ष को देख सकते है ।

4·3·0· आर्थिक अभाव के कारण नारी संघर्ष :

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में विषम आर्थिक स्थिति के कारण व्यक्ति द्वारा वस्तु के प्रति मोह को टूटते देखा जा सकता है ।

उषा प्रियंवदा की कहानी " पैरेम्बुलेटर निम्न मध्यवर्गीय परिवार की विषम आर्थिक स्थिति के कारण संघर्ष को दर्शाती है । कहानी की नायिका जिस गाड़ी को वर्षों से अपने भावी बच्चे के लिए छिपाए रखती है उसे, उसी बच्चे की बीमारी पर बेचने को विवश होती है " डॉक्टर ने एक नज़र अँधेरे घुटे कमरे पर डाली, फिर बच्चे की परीक्षा करके कहा -- " ठण्ड लगने से निमोनिया हो गया है, आप लोग घबराइए नहीं ।"

फिर उन्होंने नुस्खा लिखकर कहा — " यह इंजेक्शन है, लाकर लगवा लीजिएगा ।"

बटुवे की तह में कहीं दबाया हुआ पांच का नोट निकालकर कालिन्दी ने उसकी फीस दी । हाथ में नुस्खा लिये खड़े हतबुद्धि परमेश्वरी ने कालिन्दी की तरफ देखा । एक गहरा अँधेरा उसे घिरने लगा । वह दरवाजे की ओर बढ़ा और रुक गया उसकी उँगलियों ने खाली जेब छुई और शिथिल हो गया ।

कालिन्दी ने बच्चे को गोद में लेकर अच्छी तरह ढंक दिया और कांपते कण्ठ से कहा - "खड़े क्या हो ? गाड़ी लेकर जाओ और कहीं बेचकर दवा ले आओ ।" और आंखों पर आंचल रख लिया ।

4.3.1. आर्थिक अभाव के कारण अपमान बोध :

मनुष्य सामाजिक प्राणी है । वह समाज से जुड़ा होता है । विवाह ऐसी सामाजिक संस्था है जो स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध को जीवन भर बनाये रखती है । विवाह के बाद पति-पत्नी को एक दूसरे के अभाव में अकेलापन बोझ प्रतीत होता है ।

निरुपमा सेवती की कहानी "किवाड भर रोशनी" की नायिका "गीता" के पति नरेश की मृत्यु के बाद सम्पूर्ण घर का वातावरण गंभीर त्रासदी में बदल जाता है । गीता को तीन वर्ष की लड़की है और सास-ससुर बूढे है घर की आर्थिक स्थिति पहले से ही बिगड़ी हुई है । नरेश एक कम्पनी में काम करता था कम्पनी की ओर से उसे एक क्वार्टर मिला था जिसके कारण मकान की दिक्कत परिवार में महसूस नहीं हुई थी । परिवारवालों को किराये पर एक कमरा लेना पड़ा जिसमें पार्टीशन लगा था और बहू, सास, ससुर तथा बच्ची आदि गुजारा करने लगे । नरेश की मौत के बाद गीता को नौकरी करना अनिवार्य हो गया । जब गीता की सास की ननद उनसे मिलने घर आती है और गीता की नौकरी की खबर सुन कर घर की तलाश करती है कि बहू के नौकरी करने से कौन-कौन सी चीजे घर में बदल गयी है । गीता का ससुर "हरिदास"

---

1. जिन्दगी और गुलाब के फूल : उषा प्रियंवदा : पृ. 11.

कमरे का डीपाजिट भरने अपनी बहन दमयंती से पैसे उधार लाए थे क्योंकि नरेश के फण्ड के पैसे मिलने तक देरी हो चुकी थी । कुछ पैसे अभी तक नहीं चुकाये गये हैं । जिसके कारण दमयंती की ननद प्रतिक्रिया में दमयंती से कहती है कि गीता जवान बहू है कहीं नौकरी करते करते शादी-वादी कर लेगी तो घर को मुड़ कर नहीं देखेगी । गीता, दमयंती एवं उसकी ननद की बातें सुनती है आर्थिक अभाव के कारण सास को ननद द्वारा किए गए अपमान के विरुद्ध संघर्ष करती है । "उधर बैठी गीता तब तक तेजी से उठकर चाय के लिए खौलता पानी स्टोव से उतारने लगी थी । और तभी चाय की पत्तियों की डिब्बी न मिलने से झुंझली पटकती बोली थी "उफ्, चीजें जाने कहाँ-कहाँ रख देती है । मांजी भी "

फिर डिब्बी की तलाश में वह पार्टीशन के साथ वाली दीवार में लगे ताक पर रखी चीजों को इधर-उधर पटक ही रही थी कि उधर वाले हिस्से के कोने में बैठी मिली दिखाई दे गई । वह लपककर उसके पास पहुँची, शैतान, तुझे कोई दूसरी चीज नहीं मिलती .... वाह -- वाह, चाय की डिब्बी से आप गुड़िया का स्टूल बनाएगी है ? और उसने एक चपत मिन्नी के गाल पर जमा दी ।

"अरे -- रे "दमयंती की ननद कहती ही रह गई और गीता ने झट से कहा था "गलती पर डांटना ही अच्छा है । आखिर जिंदगी भर मुझ अकेली को ही तो संभलना है इस लड़की को "साथ ही गीता एक कड़ी और उपेक्षापूर्ण दृष्टि उन पर भी फेंक आई थी ।"[1]

---

1. कच्चे मकान : निरुपमा सेवती - पृ. 96 - 97.

4·3·2· आजीविका के लिए संघर्ष :

जिस नारी में मेहनत की आग होती है वह अपने पति पर निर्भर नहीं होती बल्कि आत्मनिर्भर होने के लिए संघर्ष करती है ।

चित्रामुद्गल की कहानी " कैंचुल " में यही दर्शाया गया है । कहानी की नायिका कमला आजीविका के लिए संघर्ष करती है कमला निम्नवर्गीय नारी है जिसका पति विष्णु चोपट है और वह लिंक्वेन फैक्टरी में काम करता था । गृहस्थी की उसे कोई चिन्ता नहीं होती है । नौकरी से " चार्जशीट " मिलने के कारण वह घर पर बेरोजगार होकर बैठ जाता है । तेरह साल से वह बेरोजगार रहता है । कमला शराब बेचकर परिवार का खर्च चलाती है । एक ओर आर्थिक अभाव तथा दूसरी ओर पति के आलसी होने के कारण कमला की मानसिक स्थिति विकृत होती है वह अपना क्रोध बच्चों एवं पति पर व्यक्त करती है । वह पति के क्रूर स्वभाव से उसे आश्चर्य होता है क्योंकि पति को बच्चों पर प्रेम प्रकट करते उसने कभी देखा नहीं बल्कि विष्णु बच्चों को बुरी तरह से पीटता है । उसका एक पुत्र गोविन्दा विष्णु की पिटाई से घर से भाग गया किन्तु विष्णु ने कभी भी उसकी खोज खबर नहीं की बल्कि हर समय शराब पीकर नशे में धुत्त रहता है । कमला को अपने पति के ऐसे दुर्व्यवहार पर क्रोध आता है वह कहती है " आज तक नहीं समझ पायी कि कैसा बाप है न मरे को याद करता है, न भागे को झींकता है । औलाद के लिए इतना पत्थर कलेजा ? " थिच " से थूक ही दिया औंधी देह पर । घृणा के उबाल पर संयम टूट गया । लात दी हुमक कर कुल्हे पर स्वर ऊँचा नहीं था, चीख भरा था — " उट्ठ भड़ुवे, उठ ····· गिराक आने का वक्त है अज ······· " ।

1· ग्यारह लम्बी कहानियाँ : चित्रामुद्गल - पृ· 123-124·

4·3·3· आर्थिक अभाव के कारण उत्पन्न मानसिक कुण्ठा :

आर्थिक अभाव विभिन्न समस्याओं को जन्म देता है परिवार में विभिन्न समस्याओं का उत्तरदायित्व स्त्री पर लादा जाता है। पुरुष अपनी कमाई इच्छानुसार घर खर्च के लिए पत्नी को देता है। कमाई कम हो घर खर्च अधिक हो ऐसी स्थिति में पत्नी को विभिन्न खर्चों में कटौती करनी पड़ती है।

दीप्ति खण्डेलवाल की कहानी " विघटन " इसी बात को लेकर चलती है। कहानी का नायक शराबी है और वह अपनी पत्नी को कम पैसे घर खर्च के लिए देता है तथा अपनी इच्छानुसार बाकी पैसे शराब पीने में खर्च करता है। वह यह भी जानता है कि कम पैसे से घर में अच्छा भोजन बनाना कठिन होता है। उसकी पत्नी उसकी बुरी आदतों एवं घर की आर्थिक समस्याओं से ऊब जाती है। कम पैसों के कारण वह प्रतिदिन दाल रोटी ही बना पाती है किन्तु पति कहता है कुछ और बनाओ तब वह क्रोधित होती है। चीख कर पति से संघर्ष करती है " क्या बनाऊं अपना हाड ? चीजों में आग लगी हुई है। कीमते आसमान को छू रही है।"[1]

1· सलीब पर दीप्ति खण्डेलवाल - पृ· 29·

4.3.4. आर्थिक अभाव के कारण अमानवीकरण :

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में विवाह बाजार में दहेज के मोल बिकते पुरुषों का चित्रण मिलता है। राजेन्द्र यादव की कहानी "लकड़हारा" इसी बात को लेकर चलती है। कहानी की नायिका शोभा के विवाह की बारात आती है और कन्यादान के बाद शोभा के पिता द्वारा दिए गए दहेज से दूल्हे का पिता तृप्त नहीं होता वह शोभा के पिता के शक्ति से बाहर दहेज की मांग करता है। शोभा के पिता शंकरलाल इसका साफ विरोध करते हैं। दूल्हे का पिता लाई हुई बारात को वापस लौटा ले जाना चाहता है और दूल्हा अपने पिता के कहे अनुसार पटरे से उठ कर पिता के पीछे बढ़ने लगता है। "सहसा पूरे वातावरण में एक बिजली सी कौंध गई और शोभा डोर टूटी कमान की तरह एकदम सीधी तनकर खड़ी हो गई। हल्दी-तेल के पीले-कपड़े, बांधी सुपारी तथा हरी चूड़ियों वाली कलाई की आवेश के कसी मुट्ठी से उसके पांव की कामदार नई चप्पल चमक रही थी उसने क्रोध से कांपती हुई ऊंची आवाज में पूरे दम से कहा, "आप लोग सब इस घर से सीधी तरह निकल रहे हैं या जूते खाकर जायेंगे? खबरदार जो इस मकान में आगे कदम रखा। जाइए, मैं कहती हूँ फौरन निकल जाइये।" उत्तेजना से कांपती फिर वह शंकरलाल जी के पास आकर बोली "बाबूजी क्यों जलील कर रहे हो अपने आपको इन स्वार्थी लोगों के सामने? मैं कुत्ते बिल्ली किसी से भी शादी कर लूंगी लेकिन इन जानवरों पर थूकूंगी भी नहीं। मैं किसी भी गवांर का हाथ पकड़ लूंगी, लेकिन इन राक्षसों को घर से निकालिए मैं उसे कुछ पढ़ा लूंगी।"[1]

---

1. जहाँ लक्ष्मी कैद है : राजेन्द्र यादव - पृ. 118.

4·4· विषम आर्थिक स्थिति से उत्पन्न सामाजिक संवेदना :

आर्थिक अभाव के अलावा भी नारी में साहस होता है । वह स्वाभिमानी होती है । मन्नू भण्डारी की कहानी " रानी माँ का चबूतरा " निम्न वर्ग की नारी के आर्थिक अभाव से उत्पन्न सामाजिक संघर्ष को उभारती है । परिवार में स्त्री आर्थिक दृष्टि से पुरुष की भूमिका और घर में स्त्री की भूमिका निभाने के लिए विवश की जाती है । सीमोन दबोउवर के अनुसार -- " एक ही समय में स्त्री और पुरुष दोनों की भूमिकाओं में जीने के कारण वह अपने काम को कई गुना बढ़ा लेती है नतीजा होता है थकान और ऊब ।"[1]

कहानी की नायिका गुलाबी का पति पीयक्कड़ है तथा वह परिवार को छोड़कर भाग जाता है किन्तु गुलाबी समाज में साहस से जीती है । वह प्रतिदिन अपनी आजीविका के लिए कमाने मुहल्ले वालों को बिना बताए काम के लिए चली जाती है जिससे मुहल्ले वाले गुलाबी की निन्दा एवं उपेक्षा करते है । कहानी का पात्र रामेसुर रानी माँ के चबूतरे पर दीया जलाने के दिन गुलाबी की पुत्री मेवा के हाथों में चूड़ियाँ पहनाता है जिसका गुलाबी विरोध करती है । " दी है, तो क्यों दी है हम क्या भिखमंगे है जो किसी का दिया पहनेंगे ? आज मेरे घर में कोई मूँछोवाला नहीं बैठा तो सब लोग भीख देने चले है । थू : है उन पर बडे आए है दया दिखाने वाले ।"[2]

1· पूरे प्रसंग के लिए देखिए प्रस्तुत प्रबंध का प्रथम अध्याय - पृ·

2· यही सच है तथा अन्य कहानियाँ : मन्नू भण्डारी : पृ· 127·

समाज एक ओर गुलाबी के प्रति संवेदनशील है तो दूसरी ओर गुलाबी की निन्दा भी करता है ।

4·5· आर्थिक कठिनाइयों से संघर्ष :

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में आर्थिक कठिनाइयों से संघर्ष करते पात्रों को देखा जा सकता है । अमरकान्त की कहानी " दोपहर का भोजन " में निम्न मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक विपन्नता में घुलते सदस्यों की मान - सिकता का सफल चित्रण मिलता है ।

कहानी की नायिका " सिद्धेश्वरी " विशेषकर विषम आर्थिक स्थिति से संघर्ष करती है । वह अपने पुत्रों एवं पति को भोजन के समय रोटी का अभाव महसूस नहीं होने देती बल्कि उन्हें बिना संकोच के रोटी खाने के लिए कहती है । वह अपने पति एवं पुत्र से सम्मुख परिवार की प्रशंसा झूठ-मूठ करती है । रोटी की कमी के साथ जवान पुत्रों के पेट का ध्यान रखने का ख्याल उसे और भी झकझोर कर देता है । " मोहन अपनी माँ की ओर देखकर फीकी हंसी हंस पड़ा और फिर खाने में जुट गया । वह परोसी गयी दो रोटियों में से एक रोटी कटोरे को तीन चौथाई दाल तथा अधिकांश तरकारी साफ कर चुका था ।

सिद्धेश्वरी की समझ में नहीं आया कि वह क्या करे । इन दोनों लड़कों से उसे बहुत डर लगता था । अचानक उसकी आँखें भर आयीं वह दूसरी ओर देखने लगी ।" [1]

1· पत्थरों का देश : सं· मत्स्येन्द्र शुक्ल - पृ· 118·
 [अमरकान्त की कहानियाँ]

सिद्धेश्वरी का रोटी के अभाव में अपनी भूख मिटाने दो लोटा पानी पीना तथा बची आधी रोटी मात्र खाना आर्थिक कठिनाई से मूक संघर्ष करना है । " मुंशीजी के निबटने के पश्चात् सिद्धेश्वरी उनकी जूठी थाली लेकर चौके की जमीन पर बैठ गयी । बटलोई की दाल को कटोरे में उड़ेल दिया पर वह पूरा भरा नहीं । छिपुली में थोड़ी-सी चने की तरकारी बची थी, उसे पास खींच लिया । रोटियों की थाली को भी उसने पास खींच लिया । उसमें केवल एक रोटी बची थी । मोटी, भद्दी और जली रोटी को वह जूठी थाली में रखने जा रही थी कि अचानक उसका ध्यान ओसारे में सोये प्रमोद की ओर आकर्षित हो गया । उसने लड़के को कुछ देर तक एकटक देखा, फिर रोटी को दो बराबर टुकड़ों में विभाजित कर दिया । एक टुकड़े को तो अलग रख दिया और दूसरे टुकड़े को अपनी जूठी थाली में रख लिया । तदुपरांत एक लोटा पानी लेकर खाने बैठ गयी । उसने पहला ग्रास मुँह में रखा और तब न मालूम कहाँ से उसकी आँखों से टपटप आँसू चूने लगे ।"[1]

4·6· सीमित आय में गृहिणी द्वारा परिवार का गुजारा :

परिवार की सीमित आय में परिवार का गुजारा केवल गृहिणी ही कर पाती है वह परिवार के आर्थिक स्थिति को जान कर दायित्व पूर्ण भूमिका निभाती है । वह खाने की चीजों का उपयोग सम्भल कर करती है ऐसा जतन परिवार में कोई अन्य सदस्य नहीं कर पाता ।

1· पत्थरों का देश : सं· भत्सेन्द्र शुक्ल - पृ· 121-122·
[अकान्त की कहानियाँ]

उषा प्रियंवदा की कहानी " वापसी " मध्यवर्गीय परिवार की कहानी को लेकर चलती है । कहानी की नायिका गजाधर बाबू की पत्नी को कम आय में परिवार का गुजारा सुव्यवस्थित ढंग से करने के लिए संघर्ष को देखा जा सकता है । जब गजाधर बाबू नौकरी से रिटायर्ड होकर घर लौटते हैं तो वे घर के सदस्यों में परिवर्तन देखते हैं । उनकी पत्नी आर्थिक तंगी के बारे में उन्हें कहती है किन्तु गजाधर बाबू समझते हैं कि उनकी पत्नी सुखी है क्योंकि घर में काम करने रसोई बनाने, बहू तथा बेटी है । गजाधर बाबू की पत्नी पति के इस विचार का विरोध करती है वह कहती है --
" हाँ, बड़ा सुख है न बहू से । आज रसोई करने गयी है, देखो क्या होता है ।"

" अन्दर कुछ गिरा और उनकी पत्नी हड़बड़ाकर उठ बैठी --
" लो बिल्ली ने कुछ गिरा दिया शायद, " और वह अन्दर भागी, थोड़ी देर में लौटकर आयी, तो उनका मुँह फूला हुआ था, " देखा बहू को, चौका खुला छोड़ आयी, बिल्ली ने दाल की पतीली गिरा दी। सभी तो खाने को है, अब क्या खिलाऊँगी ? " वह सांस लेने को रुकी और बोली, " एक तरकारी और चार पराठे बनाने में सारा डिब्बा घी उंडेलकर रख दिया । जरा-सा दर्द नहीं है, कमानेवाला हाड़ तोड़ यहाँ चपोजे लुटे । मुझे तो मालूम था कि यह सब काम किसी के बस का नहीं है ?" [1] गजाधर बाबू की पत्नी सीमित आय मे परिवार का गुजारा करती है । गजाधरबाबू इसे समझ नहो पाते इसीलिए वह उनसे झगड़ती है ।

---

1. जिन्दगी और गुलाब के फूल : उषा प्रियंवदा - पृ॰ 136-137.

4·7· आर्थिक अधिकार की पहचान के लिए संघर्ष :

परिवार में वृद्ध व्यक्ति चाहे स्त्री हो या पुरुष उस परिवार के सदस्यों को फालतू या बेकार लगने लगता है । परिवार के सदस्य यह भूल जाते है कि परिवार का विकास उन्ही की देन है । वृद्धों द्वारा किया जाने वाला कार्य प्रत्यक्ष रूप में स्वीकारा नहीं जाता ।

मृदुलागर्ग की कहानी " बांतफल " एक स्वाभिमानी वृद्धा की कहानी है जो आर्थिक अधिकार की पहचान के लिए परिवार के सदस्यों से संघर्ष करती है । वृद्धा का पोता हर समय उस पर व्यंग्य करता है पोता-दादी का अस्तित्व ही बेकार समझता है वह सोचता है कि दादी घर में बेकार बैठी है किन्तु दादी अपने पति की जायदाद को देख-भाल करती है और वह जायदाद की मालकिन है । एक दिन पोता कहता है कि उसका मित्र " पवन " की दादी नौकरी करती है अत: उसकी दादी कुछ कमाती नहीं है । पोते की बात सुनकर दादी के अहं को ठेस लगता है वह क्रोध से जोर लगा कर क्यारी में खुरपी चलाती है और माली के पूछने पर वह कहती है " चुप । " बे गरजी ", हम से जबान न चलाना, कह दिया हमने । किसी के भरोसे नहीं पडे हम । जमीन-जायदाद सब है हमारी ।"

तो वहीं जाकर रहो न मौजी ।" माली ने लापरवाही से कहा । " वहीं रह रहे है ।" उन्होंने चीखकर कहा " एक बेटा है तो सब उसी के नाम करेंगे कि नहीं ? बाबूजी कहा करते थे ..... " पलक मारते उनकी आवाज अपना तमाम रुआब खोकर दयनीय और कमजोर हो आयी " औरत

को किसी न किसी के भरोसे रहना पड़ता है, पिता, पति या .... "
वे हड़बड़ाकर उठी और जोर से चिल्लायी " अजय कहाँ है रे अजय ?
आज तेरी हेकड़ी निकालकर रहूँगी ।" [1]

4.8. आर्थिक मुक्ति के लिए नारी : संघर्ष :

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में आर्थिक अभाव के कारण नारी की दयनीय स्थिति को देखा जा सकता है । मंजुल भगत की कहानी " झरोखे से मुंडेर तक " इसी बात को दर्शाती है । कहानी का नायक " रामा " आलसी है और उसके चार बच्चे हैं । कहानी की नायिका " केसरी " को वह अजीविका के लिए कमाने नहीं भेजता केसरी के लिए प्रतिदिन की रोटी जुटाना कठिन समस्या होती है ।

केसरी के घर रामा का छोटा भाई देवदत्त नौकरी की खोज में आता है और उसे चौकीदार की नौकरी मिलती है रामा को वह पैसे देकर उसी के घर में रोटी खाता है जिससे केसरी को रोज रोटी जुटाने की चिन्ता दूर हो जाती है किन्तु धीरे-धीरे केसरी, देवदत्त की कमाई के सामने समर्पित होती है जिसका विरोध केसरी का पति एवं बड़ा बेटा करते हैं । एक दिन रामा बीस रुपये की कमाई करता है और उसी समय केसरी से रोटी मांगता है । केसरी कहती है पैसे न रहने के कारण उसने रोटी नहीं बनाई ।

---

1. उर्फ सैम : मृदुला गर्ग - पृ. 61.

रामा क्रोधित होता है और केसरी को पीटने लगता है " केसरी कसाई हाथों से छूट दूर छिटककर खड़ी हो गई। फिर एक तड़प के साथ चीख पड़ी "तू मुझे चाकरी क्यों नहीं करने देता ? मैं यहाँ झरोखे से मुंडेर तक चिपकी, रुपया कहां से लाऊं ?"[1] इस कहानी में आर्थिक अभाव के कारण नारी संघर्ष को देखा जा सकता है।

प्रभा खेतान की लम्बी कहानी " आओ पेपे घर चले " भारतीय एवं पाश्चात्य परिवेश में नारी की दयनीय आर्थिक स्थिति को दर्शाती है। कहानी की नायिका स्वयं कहानी की लेखिका है जो कलकत्ता के व्यवसायी वर्ग की सजग दार्शनिक लड़की है। उसका संघर्ष अपने ही मारवाड़ी रीति रंजित समाज से है। वह अपने सामाजिक बन्धनों से मुक्ति के लिए संघर्ष करने की ओर प्रवृत होती है परन्तु इस लड़ाई से पूर्व वह अपने पैर मजबूत करने अर्थात् आर्थिक रूप से स्वावलंब होने के लिए कहानी में लास एंजल्स ब्यूटीकल्चर का कोर्स सीखने जाती है। आर्थिक रूप से स्वतन्त्र होने के लिए कहानी में लेखिका का विदेश जाना एक ओर से नारी समाज को आर्थिक दृष्टि से स्वतन्त्र होने के लिए संकेत है क्योंकि " विश्व का कोई कोना हो, औरत कितनी भी बदल गयी हो पुरुष उसे अपना उपग्रह ही समझता है और समझता रहेगा जब तक वह आर्थिक स्वावलम्बन के साथ अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व-विकास कर ले।"[2]

---

1. बावन पत्ते और एक जोकर : मंजुल भगत : पृ. 86.
2. आओ पेपे घर चले : अनामिका : हंस / अक्तूबर 1990 - पृ. 90.

आज की स्त्री अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व की पहचान कर रही है । वह संघर्ष के लिए तैयार है । जिस स्त्री को इसकी पहचान नहीं रह दु:खी है । कहानी में स्वयं लेखिका कहती है "मेरी लड़ाई इसी समाज से चलेगी आप नहीं जानती बहनजी । औरत की सारी स्वतन्त्रता उसके पर्स में निहित है ।"

"पैसे को इतना महत्व मत दो ।" "कुछ दिनों के लिए देना होगा, नहीं तो इस समाज में मुझे अपनी मर्जी से जीने नहीं दिया जायेगा ।"[1]

4·9· कामकाजी स्त्री का संघर्ष :

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में कामकाजी स्त्री को पति से अधिक वेतन पाने पर मानसिक तनाव किस तरह झेलना पड़ता है इसका चित्रण हमें मिलता है ।

निरुपमा सेवती की कहानी "तलफताहट" में एक मध्यवर्गीय कामकाजी नारी को पति की अपेक्षा अधिक वेतन पाने पर पति में हीन भावना जागृत होती है जिसके विरुद्ध उसे संघर्ष करना पड़ता है । पति की वेतन साढ़े-चार सौ रुपये है और पत्नी की वेतन छ: सौ रुपये है । पत्नी को घर के खर्च के लिए पैसो के अभाव में नौकरी करना आवश्यक होता है । उसको छ: महीने का लड़का है नौकरी करने के साथ-साथ लड़के की देखभाल करना उसके लिए

1· आओ पेपे घर चले [लम्बी कहानी] डा· प्रभा खेतान : हंस 1989 पृ· 73·

मुश्किल होता है अत: वह अपने लड़के को अपने माता-पिता के पास छोड़ती है किन्तु पति इससे भी नाराज रहता है। बच्चे का स्वास्थ बिगड़ने पर वह बच्चे को देखने नहीं जाता बिट्टू की तबीयत ठीक नहीं थी। आप देखने नहीं आये ? " क्यों तुम जो थी वहाँ। और तुम्हारे ममी-डैडी। इतने सब लोग कम है। क्या एक बच्चे की देखभाल करने को ? " मैं एक-बारगी ही थक-सी गयी और अगले ही पल प्रतिक्रिया की आंच में मन कठोर ढंग से सख्त भी बन आया। -- यह हीन भावना से भरे व्यंग्य ही क्यों देते रहते है ? जब इनके साढे चार सौ से काम नहीं चल सकता और मेरा नौकरी करना जरूरी है तो किया ही क्या जा सकता है छ: महीने के बच्चे को अकेला कहाँ छोडू। मैंने भी व्यंग्य की तिलमिलाहट में ही स्वेच्छन की चोट मिटा देनी चाही " बिट्टू हमारे साथ नहीं रह सकता - यह बात शायद आपसे ज्यादा मुझे बुरी लगती होगी। पर इतनी ही तड़प है तो मांजी को क्यों नहीं बुलवा लेते ? "

" कमाल है सब जानते हुए भी मुझे तंग करने को कह रही हो क्या ? वह अब आएगी थोडे ही यहां ? "

वे अब आएंगी नहीं -- और स्वाभिमान बनाये रखने के लिए बहाना जमा रखा था उन्होंने कि " सुनील के पिताजी की दुकान वहीं है। चली आयी तो वहाँ की रसोई कौन चलायेगा" --- पर इस बहाने को तुड़वा क्यों नहीं सकते थे ? जान बूझकर इसी प्रश्न की चोट देकर तो मैं उनकी तमाम सख्तायी का बदला ले लेना चाहती थी जैसे।

"पर बिट्टू को देखे भी कौन ? मांजी, दीदी और भैया सभी ने तो मुझे पराया समझा और यहाँ से पिताजी के पास चले गये रहने को ।"

"देखो, सचि अब यहीं बात खत्म करो ।" इतना कह वह बेहद झुंझलाते हुए बाहर बाल्कनी में चले गये ।

— और मैं रात का खाना बनाने के लिए सब्जी काटने में जुट गयी थी और वह मुँह चिढ़ाता सूनापन मेरे ऊपर मंडराने लगा था — जैसे कोई अदृश्य मुकदमा मुझ पर चला दिया गया हो " कि देखो, हर अभाव की, हर नाखुशी की और बिट्टू को ममी के यहाँ रखनेवाले मामले की भी जिम्मेदार तुम हो — सिर्फ तुम ।" .... ओफ्, इतनी जलन क्यों अगर मेरी तनख्वाह डेढ़ सौ रुपये ज्यादा है तो इसमें मेरा क्या दोष है । और अगर कहूँ कि अच्छा नौकरी छोड देती हूँ तो भी कहने को तो कहेंगे कि हाँ-हाँ छोड़ो । पर फिर कुछ झगड़ा मचेगा किन्हीं दूसरी छोटी-छोटी बातों के बहाने ही । और मुझे भी तो कुछ पता है कि मुझे अपने घर को, बच्चों को ठीक-ठाक बनाये रखने के लिए नौकरी करनी ही है । ओफ्, मैं उलझनों के दायरे में घूम-सी रही हूं, थक रही हूं, घूम रही हूं ।"[1]

---

1. आतंक बीज : निरुपमा सेवती : पृ. 59-60.

4·10· आर्थिक स्वतन्त्रता के लिए नयी पीढ़ी का संघर्ष :

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में कामकाजी नयी पीढ़ी के आर्थिक स्वतन्त्रता के लिए मानसिक संघर्ष का चित्रण मिलता है ।

कमलेश्वर की " तलाश " कहानी मध्यवर्गीय कामकाजी विधवा स्त्री एवं उसकी पुत्री सुमी की कहानी है । सुमी अपनी विधवा माँ को इस संदेह की दृष्टि से देखती है कि उसका किसी अन्य पुरुष से शारीरिक सम्बन्ध है । सुमी तथा उसकी माँ कामकाजी महिलायें हैं । सुमी की माँ अपने प्रेम सम्बन्ध की बात सुमी से छिपाए रखती है । इसीलिए सुमी अपनी माँ के प्रेम-सम्बन्ध में बाधक बनना नहीं चाहती अत: वह भी आर्थिक रूप से स्वतन्त्र होने के कारण वर्किंगगर्ल्स हॉस्टल में चली जाती है ।

" आखिर सुमी ने दिल कड़ा करके एक दिन कह ही दिया था, " ममी, यहाँ से मुझे ऑफिस बहुत दूर पड़ता है .... अगर दो-तीन महीने में तुम्हें कॉलिज का क्वार्टर मिल गया, तो ऑफिस और भी दूर हो जायेगा ... इस वक्त वर्किंग गर्ल्स हॉस्टल में जगह मिल सकती है .... अगर तुम कहो तो मैं वहाँ सीट ले लूं ...... ।" [1]

1· मांस का दरिया : कमलेश्वर - पृ· 29·

4·10·1· भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित नयी एवं पुरानी पीढ़ी के बीच अंतराल तथा आर्थिक अभाव से उत्पन्न नारी संघर्ष :

भारतीय संस्कृति की आदी पुरानी पीढ़ी तथा पाश्चात्य संस्कृति को अपनाती नयी पीढ़ी के बीच आर्थिक अभाव से उत्पन्न नारी संघर्ष मृदुला गर्ग की कहानी " लौटना और लौटना " में मिलता है । कहानी का नायक हरीश पाँच वर्ष से अमेरिका में रहता है जिससे वह पाश्चात्य संस्कृति का आदी हो जाता है । पांच वर्ष बाद जब वह चार महीने की छुट्टी लेकर घर अपना विवाह करने आता है तब उसे अपने घर के वातावरण से घृणा होने लगती है । अपने माता-पिता के प्रति उसके मन में कोई आदर भावना नहीं होती किन्तु माता-पिता हरीश के प्रति आशावादी दृष्टि रखते है । उनकी आशा यह होती है कि हरीश अमेरिका से काफी पैसा कमाकर लाया होगा और अमेरिका जाने से पहले वह घर खरीद कर उन्हें दे जाएगा । इसी विचार से हरीश के माता-पिता हरीश का विवाह भारतीय लड़की से करवाना चाहते है । विवाह के सम्बन्ध में हरीश के पिता अपनी पत्नी को हरीश के विचार जानने को कहते है परन्तु हरीश की माँ इसका विरोध करती है " न मैंने नहीं की परसों तो आया है और तब से हरदम काटने को दौड़ रहा है । करनी है तो तुम्हीं करो ।"

" ठीक है मैं ही करूँगा पर तुम भी तो कुछ ख्याल रखो । अब देखो, खाने में मिर्च बिल्कुल मत डालना, सूप का टीन खोल लेना ले आया हूँ और सलाद काटा ?

" तुम्हीं काट लो ।"

" अच्छा - अच्छा मैं ही काट लेता हूँ पर सुनो, सुबह उसे बिस्तर पर " बैड टी " ज़रूर पहुंचा देना । आज तुमने क्या किचकिच लगा रखी थी ? "

" किच-किच क्या लगा रखी थी ? न मुंह धोया, न दांत मांजे चाय पीने बैठ गया ।"[1]

4·11· निष्कर्ष :

नारी के प्रति पुराणों में भोग्यवस्तु की दृष्टि मिलती है । स्वातन्त्र्योत्तरकाल में परिवर्तित विषम सामाजिक परिवेश से आर्थिक स्थिति भी प्रभावित हुई मुख्यतः नारी की नियती आर्थिक कठिनाइयों से जूझने की होने लगी । पितृसत्तात्मक समाज पूंजीवाद का प्रतीक रहा है क्योंकि घर की स्त्री कौड़ी के लिए उसका मुंह ताकना पड़ता है यही भावना पुरुष को शासक बनाकर शोषित करने का भाव पैदा करनी लगी ।

समाज में विशेषकर निम्नवर्ग की नारी के लिए आर्थिक अभाव के कारण रोटी जुटाना एक कठिन समस्या है और आलसी एवं अत्याचारी पति द्वारा उसकी कमाई छीन कर निरन्तर शोषण करना दूसरी समस्या है ।

1· कितनी कैदें : मृदुला गर्ग - पृ· 62·

जिसके विरुद्ध वह संघर्ष करती है । निरन्तर आर्थिक कठिनाई से जूझती नारी एक दिन क्षय रोग का शिकार हो जाती है । नारी के लिए आर्थिक अभाव के कारण अपनी संतान के उज्ज्वल भविष्य की कामना करना कठिन होता है अतः संतान के उज्ज्वल भविष्य के लिए वह पैसे कमाने हेतु शारीरिक शोषण का शिकार होती है । जिसके विरुद्ध वह मानसिक स्तर पर संघर्ष करती है ।

कामकाजी स्त्री के वेतन मे वृद्धि को लेकर मानसिक स्तर पर मूक संघर्ष एक और आर्थिक शोषण का रूप है । अक्सर मध्यवर्ग में अविवाहित युवती को आर्थिक सहायता का साधन बनाया जाता है और उसकी भावनाओं की कोई कद्र नहीं की जाती है । माता-पिता उसके प्रति मात्र संवेदना प्रकट करते है और उसका जीवन परिवार में अप्रत्यक्ष रूप से दासत्व का जीवन होता है ।

आर्थिक विवशता ही नारी को वेश्यावृत्ति अपनाने के लिए मजबूर करती है जिसके विरुद्ध नारी संघर्ष करती है । विषम आर्थिक स्थिति नारी की वस्तु के प्रति मोह को भंग करती है । आर्थिक अभाव के कारण नारी कर्ज की शिकार होती है और वह समाज में अपमानित भी की जाती है । परिवार के गुजारे का दायित्व अधिकांशतः पत्नी पर होता है । पति अपनी कमाई इच्छानुसार खर्च करता है और परिवार के खर्च के लिए जो पैसे वह अपनी पत्नी को देता है वह जानता है कि उन पैसो से घर का खर्च चलाना कठिन है फिर भी वह ऐसी कठिनाई में पड़ना नहीं चाहता इसीलिए वह भार वह अपनी पत्नी को सौंप कर निश्चिंत जीवन जीता है ।

विवाह बाजार में दहेज के मोल बिके पुरुषों के अमानवीय व्यवहार के विरुद्ध नारी संघर्ष करती है । स्वाभिमानी स्त्री अपनी मेहनत पर जीती है आर्थिक अभाव के कारण वह समाज की संवेदना के विरुद्ध संघर्ष करती है । सुखद जीवन की आशा नारी में अधिक होती है सुखमय भविष्य की कामना कर परिवार में वह वर्तमान आर्थिक कठिनाइयों से संघर्ष करती है । परिवार का बोझ नारी पर अधिक होता है सीमित आय में वह परिवार का गुजारा करती है जिसके लिए उसे खाने की वस्तुओं का इस्तेमाल जतन से करना पड़ता है । अत: वह मानसिक शोषण का शिकार होती है । पति-पत्नी का सम्पत्ति पर समान अधिकार होता है । अप्रत्यक्ष सम्पत्ति की तुलना में प्रत्यक्ष सम्पत्ति व्यक्ति को अधिक आकृष्ट करती है । नारी अपनी अप्रत्यक्ष सम्पत्ति पर पूर्ण अधिकार की पहचान के लिए संघर्ष करती है ।

आलसी पुरुष न ही स्वयं कमाता है और न ही अपनी पत्नी को कमाने बाहर भेजता है क्योंकि विवाह के बाद वह अपनी पत्नी पर निजी अधिकार जताता है । जिसके विरुद्ध पत्नी संघर्ष करती है । जो नारी अधिक वेतन पाने की आकांक्षा रखती है वह अधिक मानसिक शोषण का शिकार होती है ।

आर्थिक स्वतन्त्रता एवं आर्थिक अभाव के कारण नयी एवं पुरानी पीढ़ी की नारी अव्यक्त एवं व्यक्तरूप से संघर्ष करती है । उसमें अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करने की चेतना जागृत हुई है अत: सबसे पहले उसने आर्थिक रूप से स्वतन्त्र होना चाहता

आज की नारी पुरुष की पूँजीवादी दृष्टि की दासता से मुक्ति के लिए आर्थिक स्तर पर स्वतन्त्र हो रही है अब उसे पैसों के लिए पुरुष का मुँह ताकना नहीं पड़ रहा है वह आत्मनिर्भर हो रही है ।

पंचम – अध्याय

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी नारी-संघर्ष भावनात्मक एवं नैतिक संदर्भ

5·0· स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी – नारी – संघर्ष – भावनात्मक एवं नैतिक संदर्भ

5·1· भावनात्मक संघर्ष :-

प्राकृतिक रूप से स्त्री–पुरुष की शारीरिक संरचना में कुछ अन्तर है किन्तु इस अन्तर के मूल्यांकन का प्रयत्न सदा – सर्वदा सामाजिक सांस्कृतिक आधार पर होता रहा है । शारीरिक संरचना के आधार पर पुरुष का अपने आप को शक्तिशाली मानना और स्त्री का स्वयं को दुर्बल अनुभव करना प्राकृतिक यथार्थ से अधिक मनोवैज्ञानिक स्थिति है । सीमोन द बउवार के शब्दों में " औरत ही अपनी प्रकृति की परिभाषा अपने भावनात्मक जीवन की प्रवृत्तियों के माध्यम से करती है । वस्तुत: वह इस जगत में अपने शरीर के साथ अवस्थित रहती है । मनोविज्ञान की सारी व्यवस्था इसी परिप्रेक्ष्य पर आधारित है ।" [1]

1· पूरे प्रसंग के लिए देखिए प्रस्तुत प्रबन्ध का प्रथम अध्याय – पृ· 18–19·

स्वातन्त्र्यपूर्व तक पुरूष, नारी के जीवन का निर्णायक रहा इसीलिए उसने उसे घर की चार दीवारी में बंद रखा । देश की मुक्ति के साथ नारी भी अपनी सदियों के पुरूष-दासत्व की मुक्ति के लिए संघर्ष करने लगी । आजादी के बाद वह अपने मानवीय अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करने लगी । अतः उसके जीवन में आये विभिन्न परिवर्तनों में सबसे महत्वपूर्ण परि - वर्तन है पुरूष के समान जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत रहना परिणामतः नारी की मानसिक स्थिति, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, प्रेम आदि के सम्बन्धों में परिवर्तन होने लगा । कामकाजी स्त्री विवाह के पूर्व अपने परिवार तथा विवाह के पश्चात पति के परिवार के लिए आर्थिक सहायता का साधन बनने लगी ।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में गृहिणी तथा कामकाजी स्त्री के घर एवं बाहर के मानसिक तनाव से उत्पन्न मानसिक संघर्ष का चित्रण मिलता है ।

5·1·1· संघर्ष के पूर्व की मानसिक स्थिति :-

संघर्ष मूलतः सामाजिक होता है । नारी अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष करती है ।

मोहन राकेश की कहानी "मिसपाल" नारी जीवन की एकान्त विडम्बना के कारण संघर्ष के पूर्व की स्थिति मानसिक अंतर्दृष्टि को दर्शाती है। मिसपाल दिल्ली में जिस आफिस में काम करती है उस आफिस के सदस्य उसे छेड़ते हैं जिससे उसके मन को ठेस पहुँचती है। वह उनके विरुद्ध संघर्ष नहीं करती बल्कि उसके मन में उनके प्रति घृणा जागृत होती है। वह नौकरी छोड़ देती है और अपनी पेंटिंग की कला को और भी उभारने के उद्देश्य से एकान्त स्थान कुल्लू और मनीला के बीच छोटे से गांव चली जाती है।

कुल्लू में भी मिसपाल को देखकर स्कूल के बच्चे छेड़ने लगते हैं वह भाग्य को दोषी ठहराती है। मिसपाल की भेंट अपने साथी रणजीत से होती है ये दोनों दिल्ली में सूचना विभाग में काम किया करते थे। रणजीत भी मिसपाल के त्याग पत्र देने का कारण जानता है मिसपाल रणजीत से कहती है - "ये लोग इतने ओछे और बेईमान हैं।" वह कहा करती, "इतनी छोटी और कमीनी बातें करते हैं कि मेरा इनके बीच काम करते हर वक्त दम घुटता रहता है। जाने क्यों ये लोगइइतनी छोटी-छोटी बातों पर एक दूसरे से लड़ते हैं और अपने छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए एक दूसरे को कुचलने की कोशिश करते रहते हैं।"[1]

तसलीमा नसरीन "शतपथ ब्राह्मण" का हवाला देते हुए लिखती हैं कि — "शतपथ ब्राह्मण में लिखा हुआ है, "सुन्दर पत्नी पति का प्रेम प्राप्त करती है" [9/6], लेकिन जो पत्नी सुन्दर नहीं है, वह अवश्य ही पति के प्रेम से वंचित रहती है, असुन्दर पत्नी को पवित्र वैदिक साहित्य में भी

---

1. मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - मोहन राकेश - पृ. 10.

क्षमा नहीं किया गया है । इस पक्षपातपूर्ण श्लोक को लोग काफी श्रद्धा के साथ उच्चरित करते है ।" [1]

5·1·2· अस्तित्व के लिए भावनात्मक संघर्ष :-

निरुपमा सेवती की " पातक " कहानी में अस्तित्व के लिए भावनात्मक नारी संघर्ष का चित्रण मिलता है । कहानी की नायिका मीरा ससुरालवालों की झूठी-प्रतिष्ठा, अपने पति अतीत के विवाह के कुछ ही दिन बाद कनाडा चले जाने तथा वहाँ अतीत का प्रेम-सम्बन्ध उसकी प्रेमिका एलिजा आदि से होने की खबर सुन कर ऊब जाती है ।

ससुराल में अतीत के मित्र सुनील से मीरा की घनिष्ठ मित्रता होती है । ससुरालवाले सुनील के साथ मीरा का घूमना पसन्द नहीं करते । मीरा ससुराल से निकल जाने का निर्णय लेती है । मीरा की सास जब मीरा से पूछती है कि वह कहाँ जायगी लेखिका कहती है घर या और कहीं भी किन्तु वह नौकरी तो करेगी ही । मीरा सुनील के साथ जा रही है । वह स्वयं कहने के बदले नौकरी करनेवाली परित्यक्ता कहलाना अधिक पसन्द किया उसे सुनील पर संदेह होने लगता है कि क्या सुनील जीवन भर साथ देगा कि नहीं मीरा, अतीत के आने के बाद भी वह अतीत से लड़ कर मीरा को ही अपनायगा कि नहीं । मीरा सोचती है " बस अभी तो

1· औरत के हक में : तसलीमा नसरीन : पृ· 10
हंस - अगस्त 1994 - पृ· 34·

पता है कि नीना और मीरा दोनों को ही खत्म कर दिया है मैंने और न ही दोनों की कोई मिली-जुली आकृति ही मुझमें शेष है । और अगले पलों में लगता है कि यहाँ तो सुख का उफान है निहायत अपनेपन की उछलती गरिमा और अब मैं - सिर्फ "मैं" हूँ ।"[1]

उषा प्रियंवदा की कहानी "दो अंधेरे" नारी के भावनात्मक संघर्ष को लेकर चलती है । कहानी की नायिका कौशल्या गृहिणी है उसकी छोटी बहन "सुमित्रा" आत्म निर्भर युवती है अतः वह स्वतन्त्र जीवन जीती है । आर्थिक रूप से स्वतन्त्र छोटी बहन को देखकर कौशल्या की मानसिक स्थिति में परिवर्तन होता है उसे अविवाहित बहन के विवाह की चिन्ता होती है । साथ ही उसे यह आभास होता है कि उसका भी जीवन आत्मनिर्भरता से स्वतन्त्र हो सकता है । विवाह के बाद उसे अपना जीवन दासत्व का लगने लगता है वह मन ही मन सोचती है -- "पागल सुमित्रा । अच्छी नौकरी है, अपना घर है, स्वतन्त्रता है । समझती है । उसी में सुख है, जबकि मैं उसकी सहोदरा उसके सामने एक उदाहरण हूँ कि विवाह नारी को क्या कर देता है ।"[2]

---

1. कच्चे मकान : निरुपमा सेवती : पृ. 18.

2. जिन्दगी और गुलाब के फूल : उषा प्रियंवदा - पृ. 98.

5·1·3· अस्मिता के लिए भावनात्मक संघर्ष :-

समाज का उच्च वर्ग संस्कारों को तोड़ नहीं पाता अत: छटपटाता है संस्कारों के कारण इसी वर्ग के जीवन में रुकावटे आती है ।

निरुपमा सेवती की कहानी " चालाक " में अस्मिता के लिए भावनात्मक संघर्ष का चित्रण मिलता है । कहानी की नायिका मीरा मध्यवर्गीय आत्मनिर्भर नारी है जिसका उच्चवर्ग में विवाह होता है । मीरा का पति " अजीत " विवाह के कुछ ही दिन बाद कनाड़ा चला जाता है । वहाँ उसका प्रेम सम्बन्ध एलिजा नामक युवती से होता है । विवाह के बाद जब अजीत मीरा को नीना नाम से पुकारता है । मीरा को अजीब लगने लगता है वह सोचती है " अजीत की बाते ऐसी ही अजीब थी कि चिढ़ने के बीच अचानक बेफिक्र से अंदाज में मजाक भी जड़ देता है । अजब मूड । समझना मुश्किल । नीना नाम दिया भी पर मीरा कह कर भी बुला लेता । हाँ, कोई एक नाम नहीं दे सका । चाहे नीना ही सही । पर एक नाम तो देता ।" [1]

1· कच्चे मकान : निरुपमा सेवती - पृ· 16·

5·1·4· मुक्ति के लिए भावनात्मक संघर्ष :-

आज की नारी अपनी पढ़ाई समाप्त होने के बाद आत्म निर्भर होना चाहती है और साथ ही वह परम्परा से चले आ रहे पारिवारिक बन्धनों में बंध कर नहीं रह पाती बल्कि रूढ़िवादी परिवेश को तोड़कर मुक्त होने का प्रयत्न करती है । मुक्ति एवं परिवर्तन के लिए वह संघर्ष करती है ।

निरुपमा सेवती की कहानी " तलाश के बाद " की नायिका मोनल का यही विचार है । मोनल बी·ए· पास है । उसकी माँ उसकी शादी के सम्बन्ध में बात चलाती है किन्तु मोनल इसका डट कर विरोध करती है । वह कामकाजी युवती है । मोनल अपने मित्र धीरेन से प्रेम करती है और इस सम्बन्ध को जीवन भर बनाए रखना चाहती है । मोनल को धीरेन पर अधिक विश्वास होता है परन्तु जब वह धीरेन की अन्य सहेलियों की चिट्ठियाँ धीरेन के नाम पढ़ती है तब उसका धीरेन पर विश्वास टूट जाता है । उसके मन में द्वन्द छिड़ जाता है किन्तु वह द्वन्द को नकारने में ही अपनी जीत समझती है " नहीं उसे जीतना ही है । भरे अंधेरे के बीच गई रात सड़कों से आने वाले तेज हॉर्न को सुनते-सुनते वह एक तीव्र विश्वास को बटोरने के लिए छटपटाने सी लगी । नहीं· जीत उसी की है । वह मुक्त है । जरा सा भी सहारा हो ही क्यों । सेंट, पौधे, धीरेन, घर , बड़ी नौकरी ···· सब अपनी जगह ठीक है । पर उनके बिना भी वह

पूरी है । अगर एक बच्चा हो भी जाए उसका वह बड़ा होकर उसे छोड़ जाए । तब ? - तब अपनी पूर्णता को ही सबसे ऊपर जानना होगा।"[1]

विवाह के बाद नारी का जीवन सामाजिक बन्धनों में बंध जाता है । परिवार का दायित्व उसे चिन्तित रखता है । उषा प्रियंवदा की कहानी " दो अंधेरे " की नायिका " कौशल्या " का मुक्ति के लिए भावनात्मक संघर्ष देखा जा सकता है । कौशल्या का पति दिनेश की नौकरी का तबादला केरल होता है वह अज्ञात स्थान पर पत्नी को तुरन्त अपने साथ ले जाना उचित नहीं समझता इसीलिए कौशल्या अपने ससुराल चली जाती है । और कुछ दिन बाद वह मन बहलाने अपने बच्चे के साथ अपनी अविवाहित बहन सुमित्रा के घर कुछ दिन ठहरती है । आत्मनिर्भर अपनी छोटी बहन के स्वतन्त्र जीवन को देखकर उसकी मानसिक स्थिति में परिवर्तन होता है । " सुमित्रा को देख उसे बड़ा सुख मिला । एक प्राणी के उपयुक्त छोटा सा घर था । फर्नीचर, परदे, फूल पत्तियाँ सभी कुछ । पूर्ण स्वतन्त्रता, जब जी में आता कहीं भी चली जाती, सिनेमा, पिकनिक, कॉफी हाउस । इन सबसे उसका साथी शेखर था । कौशल्या के मन में अक्सर यह विचार उठता कि अगर उसने विवाह न कर नौकरी कर ली होती तो वह भी शायद सुखी रहती । न बतीस दिन से टायफायड में पड़े हरी की चिन्ता, न मुन्ने की याद न दिनेश की ओर से आशंका - बंधा, सन्तुष्ट जीवन होता - यौवन ढलने पर भी युवती बनी रहती लम्बी, छरहरा, शरीर, पतली कमर ।"[2]

---

1. कच्चे मकान : निरुपमा सेवती - पृ॰ 12॰
2. जिन्दगी और गुलाब के फूल : उषा प्रियंवदा - पृ॰ 102॰

5.1.5. जिजीविषा के लिए संघर्ष :

उषा प्रियंवदा की "नींद" कहानी मौत से पलायन तथा जीजीविषा के लिए भावनात्मक संघर्ष को दर्शाती है कहानी की नायिका "मैं" पात्र को जीवन में एक साथी की खोज है और साथ ही उसे मौत का डर भी है। किन्तु वह मरना नहीं चाहती। एक मनोवैज्ञानिक चिकित्सक मैं पात्र की मृत्यु होने का कारण "मैं" पात्र की मानसिक विकृति बतलाता है। परन्तु मैं पात्र इसका विरोध करती है वह मानसिक स्तर पर संघर्ष करती है "मैं बहुत कम चीजों से डरती हूं — न रोग से, न गरीबी से न ठंड से, डरती हूँ तो बस एक लम्बी अंधेरी रात के अकेलेपन से।"[1]

"मैं" पात्र इस स्थिति से छुटकारा पाने इधर-उधर भटकती है और स्वयं से कहती है कि "नहीं मैं रुग्ण नहीं हूं, न मुझ में कोई मानसिक विकृति है। वह डॉक्टर मेरा मनोविद झूठ कहता है। मैं पूर्णतया स्वस्थ हूं, मैं केवल साथ ढूँढती हूं।"[2]

---

1. कितना बड़ा झूठ - उषा प्रियंवदा - पृ. 65.
2. - वही - पृ. 68.

5·1·6· प्रेम पाने के लिए भावनात्मक संघर्ष :

फणीश्वरनाथरेणु की कहानी " टेबुल " दफ्तरशाही परिवेश में नारी की स्थिति एवं टेबुल के माध्यम से प्रेम पाने के लिए भावनात्मक संघर्ष को लेकर चलती है । कहानी की नायिका मिसदुर्बादास कॉन्टिनेण्टल कास्मेटिक्स एण्ड ड्रग्स लि· पटना में असिस्टेंट ब्रांच मैनेजर के पद पर पदोन्नत हुई है । दुर्बादास अविवाहित एवं स्वाभिमानी युवती है । कहानी में " टेबुल ", कहानी का नायक अनुरंजन गुप्ता का प्रतीक है । अनुरंजन गुप्ता इसी ब्रांच में हेड क्लर्क के पद पर ट्रांस्फर होकर आया है । पिछले वर्ष मिसदुर्बादास एवं अनुरंजन गुप्ता दोनों कलकत्ता में एक साथ ट्रेनिंग कर चुके हैं तब से दुर्बादास के मन में अनुरंजन गुप्ता के प्रति प्रेम भावना जागृत होती है । मिस दुर्बादास अनुरंजन गुप्ता को अपना जीवन साथी बनाने के उद्देश्य से अनुरंजन गुप्ता को अपने ब्रांच मैनेजर चेम्बर में ही अपने साथ बिठाना चाहती है । अतः टेबुल के माध्यम से वह अनुरंजन गुप्ता को पाने का प्रयत्न करती है ।

दुर्बादास ने जिस टेबुल पर बैठ कर आठ वर्ष तक हेडक्लर्क का कार्य किया है उसी टेबुल को फिर से प्राप्त करने के लिए कम्पनी के बड़े साहब से झगड़ती है " सर, वह टेबुल तो मुझे चाहिए ही । चाहे जैसे भी मिले मैं नया टेबुल दे रही हूँ अपना ।"

तब बड़े साहब ने बात बदल दी "उहूँ"। यह टेबुल स्कीउम के लिए है। हेडक्लर्क को नहीं दिया जा सकता और आप देनेवाली कौन होती है।"

बड़े साहब ने जान बूझ कर एवं कड़ा किया।

"सर, तब मैं कोई काम नहीं कर सकूँगी।" बड़े साहब के चेहरे पर अब झुँझलाहट स्पष्ट हो गयी।

इसके पहले कभी दुर्गादास ने ऐसी झिड़की नहीं सुनी थी — किसी भी बड़े साहब की। और न देखी थी ऐसी झुँझलाहट। वह बोली, "सर सेण्टिमेण्टल कहिए या पागलपन। मैं किसी को उस टेबुल पर नहीं बैठने दूँगी। नहीं ....."¹

प्रेम में त्याग की भावना अधिक होती है जिस व्यक्ति का सम्बन्ध पत्नी एवं प्रेमिका से होता है वह जीवन में दोनों के साथ ठीक न्याय नहीं कर पाता उसका झुकाव किसी एक ओर अधिक होता है अर्थात् प्रेमिकाओं की ओर अधिक झुकाव देखा जाता है। किन्तु पत्नी अपने पति पर पत्नीधर्म के माध्यम से पूर्ण अधिकार चाहती है और प्रेमिका, प्रेमी पर प्रेम के माध्यम से। अक्सर इन दोनों में अधिकार को लेकर टकराव होता है।

---

1. अच्छे आदमी : फणीश्वर नाथ रेणु - पृ. 47.

भीष्म साहनी की कहानी " डोरे " इसी बात को दर्शाती है। कहानी का नायक " गिरीश " का प्रेम सम्बन्ध अर्चना से पन्द्रह वर्षों से है। अर्चना कामकाजी महिला है। गृहलक्ष्मी गिरीश की पत्नी केवल अपने पति के प्रेम के अभाव में असन्तुष्ट रहती है। गिरीश अर्चना से अधिक प्रेम करता है परन्तु जब गिरीश के दफ्तर में गिरीश के प्रमोशन के विरुद्ध दफ्तर का कोई व्यक्ति डाइरेक्टर के कान भरता है कि गिरीश अपनी पत्नी को बसा नहीं पाया बल्कि दूसरी स्त्री के साथ रहता है अतः इस बदनामी के कारण गिरीश का असिस्टेंट मैनेजर का प्रमोशन रुकने संभावनाएँ रहती है। गिरीश अर्चना से कहता है कि यदि प्रमोशन का यह मौका निकल गया तो वह उम्र भर छोटी नौकरी में ही घिसटता रहेगा। अर्चना प्रेम के खातिर बलिदान एवं भावनात्मक स्तर पर मूक संघर्ष करती है वह गिरीश की ओर देखकर सोचने लगती है कि " मौका ? कैसा मौका ? यह भी कोई मौका है ? क्या मैंने जिन्दगी के मौके नहीं खोये ? अर्चना सोच रही थी। मैंने अपने मौके खोकर तुम्हें दिये हैं। तुम अपने माँ-बाप की इच्छा के खिलाफ मेरे साथ शादी करना चाहते थे। मैंने तुम्हें उनकी आज्ञा का पालन करने पर बाध्य किया मैंने कहा था, अगर मेरा प्रेम सच्चा है। तो तुम सदा मेरे बने रहोगे। आज से सात बरस पहले तुम्हारा ब्याह टूट सकता था। तुम्हारी पत्नी गिड़गिड़ाती हुई मेरे पास आयी थी तुम तो उसे छोड़ने के लिए भी तैयार थे, मैंने ही ब्याह नहीं टूटने दिया, यह पाप मेरे प्यार के सिर चढ़ता मैंने कहा नहीं, मैं सह लूँगी, इसका घर नहीं टूटे मेरी निष्ठा हमारे प्रेम के प्रति आज भी वैसी की वैसी बनी है।"[1]

---

1. पटरियाँ - भीष्म साहनी - पृ. 169-170

5.1.7. मानसिक तनाव से उत्पन्न अलगाव एवं मूक संघर्ष :-

शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से तृप्त मानव, जीवन में पूर्ण सुखी होता है किन्तु किसी एक के अभाव में वह कुण्ठित रहता है ।

रवीन्द्र कालिया की कहानी " पत्नी " एक सैनिक की पत्नी के मानसिक तनाव से उत्पन्न अलगाव एवं मूक संघर्ष को दर्शाती है । कहानी का नायक गुरतेज सेना का सिपाही है । छुट्टियों में हर वर्ष अपने गांव आता है और अपने परिवार में सन्तुष्टि के साथ छुट्टियाँ बिताता है और छुट्टियाँ समाप्त होने के बाद वापस सेना में चला जाता है । गुरतेज हर वर्ष पत्र में पत्नी द्वारा एक और बच्चा पैदा होने की खबर पाता है ।

गुरतेज इस वर्ष भी छुट्टियों में गांव आया है किन्तु वह अपनी पत्नी " भरपाई " की ढलती उम्र से उदास रहता है । एक दिन वह पत्नी से पूछता है कि क्या वह भोजन का ध्यान नहीं रखती ? पति की उदासी को समझकर भरपाई दूसरा विवाह करने की सलाह देती है ।

" भरपाई ने खाना परोस दिया और खुद भी हाथ में रोटी पकड़कर गुरतेज के पास ही बैठ गई । बच्चे जाने कब से सो रहे थे ।

" मैंने कल आपसे एक बात कही थी । " भरबाई ने कहा ।

" कौन - सी बात ? "

" वही बात, जिसे लेकर आप उदास है, चुप है ।"

" मैं चुप कहाँ हूँ ? अपने घर में हूँ, खुश हूँ । "

गुरतेज को लगा कि वह किसी मरुथल में से गुजरने वाला है । भरपाई बहुत संयम से बात कर रही थी । परन्तु उसने पाया कि इस सब के पीछे भी उत्तेजना की महाग्नि धधक रही है ।

मुझसे आपकी यह चुप्पी, यह उदासी नहीं देखी जाती । मैं आपको इस तरह नहीं रहने दूँगी । मैं आपको खुश देखकर ही खुश हूँ ।" वह अंधेरे में घूरती रही । रोटी का उसने एक ग्रास भी नहीं लिया ।"[1] यहाँ पर गुरतेज के परिवार से दूर रहने के कारण भरपाई की तनावपूर्ण मानसिकता के परिणाम स्वरूप अलगाव एवं मूक संघर्ष को देखा जा सकता है ।

" मानवीय समाज स्वयं में प्रयोगशाला है । सामाजिक संबंधों को लेकर अनेक प्रकार के विविध प्रयोग होते रहे है, अब भी हो रहे है, भविष्य में भी होते रहेंगे । हमारे धर्मशास्त्रों, स्मृति ग्रन्थों और कर्मकाण्ड का जन्म भी इसी प्रयोग-प्रक्रिया की देन है । विधि-निषेध का जन्म भी इन्हीं प्रयोगशाला का परिणाम है । विवाह प्रथा भी एक प्रयोग ही था । विवाह-प्रथा ने पूरे समाज और उसकी व्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया, परिणाम-स्वरूप नारी की सामाजिक स्थिति में भी परिवर्तन हुआ ।"[2]

---

1. गली कूचे - रवीन्द्र कालिया - पृ. 140-141
2. " प्रकर " जनवरी 1984 - पृ. 4.

5·1·8· दाम्पत्य सम्बन्धों में अलगाव एवं मूक संघर्ष :-

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में पति-पत्नी के बीच तीसरे की समस्या उभर कर आयी है । गंगाप्रसाद विमल की कहानी " सम्बन्ध " विवाह के बाद प्रेम सम्बन्धों में अलगाव एवं पति के विरुद्ध मूक संघर्ष को दर्शाती है ।

कहानी की नायिका एक पुत्र की माँ है । कहानी में पुत्र ही कहानी का कथानक है । विवाह से पूर्व नायिका का किसी अन्य व्यक्ति से प्रेम सम्बन्ध रहा किन्तु विवाह के बाद जब उसका प्रेमी घर आता है तब वह स्वतन्त्र रूप से उसके प्रति प्रेम अभिव्यक्त नहीं कर पाती अतः उसके तथा उसके पति के बीच इसी बात पर झगड़ा होता है । कथानक कहता है -- " उस रात फिर माँ रोई थी और उसी तरह पिता उन्हें चुप कराने की कोशिश में कभी-कभी जोर से भी बोल उठते थे । जिस आदमी को लेकर ये बातें घर में चल रही थी वह आदमी निश्चिंत नीन्द सो रहा था । यह आश्चर्य जनक था । मैं अभी सोकर उठा ही था कि मैंने सोचा उन्हें जगाऊँगा और उनके लिए चाय ले जाऊँगा, परन्तु वे उस जगह पर नहीं थे । " 1

1· कोई शुरुआत - गंगा प्रसाद विमल - पृ· 88-89·

पति-पत्नी के बीच आयु में अन्तराल से उत्पन्न मानसिक संघर्ष को रवीन्द्र कालिया की चर्चित कहानी " नौ साल छोटी पत्नी " में देखा जा सकता है । " कुशल " कहानी का नायक है उसकी पत्नी " तृप्ता " उससे नौ साल उम्र में छोटी है । तृप्ता का विवाह के पूर्व अपने प्रेमी " सोम " से प्रेम सम्बन्ध रहा । इस रहस्य को तृप्ता अपने पति से छिपाए रखती है । उसे भय है कि इस जानकारी से उसका कुशल से सम्बन्ध विच्छेद हो सकता है । वह अपने प्रेम पत्र ट्रंक में छिपाती है ।

कुशल को एक दिन ट्रंक में किताबें ढूँढते समय तृप्ता के प्रेम पत्र पढ़ने का अवसर प्राप्त होता है किन्तु वह इस रहस्य को व्यक्त नहीं करता । कुशल जब तृप्ता से पूछता है कि सोम रिश्ते में तृप्ता को क्या लगता है तब तृप्ता बुआ का लड़का बतलाती है अत: भाई का रिश्ता कहती है । कुशल तृप्ता को कुरेदने के उद्देश्य से अपनी प्रेमिका की बातें तृप्ता से कहता है - तृप्ता इसका विरोध करती है । " बस, बस मैं और नहीं सुनूंगी तृप्ता ने कोशिश से आँखें उठाकर कुशल की ओर अविश्वासपूर्वक देखते हुए कहा, आप मेरा बेवकूफ बनाओ । इस बार उसने नाक से धुँआ छोड़ा । तृप्ता को चुप देखकर उसने कहा बनाओ भी । क्यों ?

वह बेवकूफ । " उसने तृप्ता की ओर सरकते हुए कहा, " तुम शायद समझती हो कि मैं पहले ही बेवकूफ हूँ ।" [1]

---

1. गलीकूचे - रवीन्द्र कालिया - पृ० 39.

5.1.9. पीढ़ियों के अन्तराल के कारण उत्पन्न संघर्ष :-

विवाह के लिए नारी को सही जीवन साथी चुनना एक कठिन समस्या होती है । जिस लड़की के माता-पिता का सम्बन्ध विच्छेद होता है उनकी संतान को समाज शंकित दृष्टि से देखता है ।

कृष्णा अग्निहोत्री की कहानी " खुली राह पर बंद दरवाजे " पुरानी पीढ़ी द्वारा अन्याय के विरुद्ध भावनात्मक संघर्ष को दर्शाती है । यह कहानी एक मुहल्ले के पांच परिवारों की कहानियों को लेकर चलती है । जिनमें एक परिवारवाले श्री ठक्कर है जो व्यवसायी है जिनकी पत्नी दूसरा कर उन्हें त्याग देती है । ठक्कर की एक लौती पुत्री मालती है वे पत्नी के वियोग में शराब पीने तथा मिसशुक्ला से प्रेम सम्बन्ध रखने आदि में सदैव लीन रहते है । मालती के विवाह की कभी चिन्ता नहीं रखते । उनके घर में सत्संग होता है और पांचो घरों के लोगों को आमंत्रित किया जाता है ।

सत्संग के समय मालती गुजराती पल्ला डालकर गरभा करती है परन्तु चारपारों घर की महिलाएँ अविवाहित मालती का अपमान करती है । मालती गरभे के बाद लौटकर पिता को शराब पीते देखकर क्रोधित होती है और अपने पिता से कहती है कि वे उसके विवाह के सम्बन्ध में ध्यान नहीं रखते । मालती के पिता, मालती को हर समय वही रटा-रटाया वाक्य सुनाते है कि उनका किसे ध्यान है । माँ ने तो दूसरी शादी कर ली । पिता की बातों को सुन कर मालती सोचती है कि —

" पिताजी कहते हैं, वह परायी अमानत है परन्तु ऐसा कहाँ । कितनी जगह शादी की बात चली और लड़की पसन्द आने पर भी खानदान की बात उठ गयी और लड़की की माँ दूसरी शादी की है इस बात की छीछा - लेदर से बात तोड़ ली गयी । कुछ ने तो यहाँ तक कह दिया न बाबा ना लड़की भी माँ की तरह ..... जरा सी बात पर छोड़ छुट्टी ले लेगी ।"

" अच्छा ही है कि इस शहर में अभी माँ की बात गर्म हवा -- सी नहीं फैली है केवल पिता की प्रेमिका मिससुंघला को लेकर कानाफूसी होती रहती है । लेकिन पिताजी पर अधिक दिन भरोसा नहीं किया जा सकता । किसी भी दिन भावुकता के जोर में सब कुछ उगल देंगे ।"

वैसे मालती स्वयं माँ के इस कार्य को कभी बुरा नहीं मानती परन्तु जब लोगों की बात आती और उसके विवाह में रुकावटें खड़ी होती है तो वह भी माँ को भला-बुरा कह देती थी । " तुम कैसी माँ हो ? तुम्हें कुछ भी करने से पहले आनेवाली संतान का तो सोचना था या तो संतान पैदा ही न करती ।" [1]

---

1. जिन्दा आदमी - कृष्णा अग्निहोत्री - पृ. 102-103.

5·1·10· प्रेम में अधिकार पाने के लिए संघर्ष :-

विवाह के बाद प्रत्येक स्त्री का अपने घर में पति एवं बच्चों पर पूर्ण अधिकार होता है । वह घर की स्वामिनी होती है उसका अपना गौरवपूर्ण अस्तित्व होता है जिसे वह बनाये रखने का प्रयत्न करती है । वह अपने अधिकार एवं स्वामित्व की भावना को वंचित होने नहीं देती । समाज में वह अपना गौरवपूर्ण अस्तित्व बनाए रखने का प्रयत्न करती है तथा उसका स्थान प्रेमिका नहीं ले पाती । पत्नी का अपना समाज में धार्मिक स्थान होता है ।

अमृता प्रीतम की कहानी " शाह की कंजरी " में इसी बात को दर्शाया गया है । कहानी का नायक " शाह " की प्रेमिका " कंजरी " है । जिसका नाम पहले नीलम था । शाह का विश्वास यह होता है कि जब से " कंजरी " से उसका प्रेम सम्बन्ध स्थापित हुआ है तब से उसके व्यवसाय में वृद्धि हुई है अतः वह धनी बना है । कंजरी गायिका [तवायफ] है और गायिका के रूप में भी प्रसिद्ध है । शाह अपनी पत्नी को शाहनी के सम्मुख कंजरी के बारे में कहता है किन्तु वह कंजरी की छाया मात्र भी अपने परिवार पर पड़ने नहीं देती है ।

शाह के बड़े पुत्र का विवाह निश्चित होता है और विवाह की तैयारियाँ की जाती है । शाह के मित्र शाह की कंजरी से गाना गवाने की फरमाईश करते है । शाह कंजरी को बुलाकर अपने ही घर में गाना गवाता है । शाहनी कंजरी के सौंदर्य को देखकर अपने स्वामीत्व की तुलना करने लगती है । कंजरी पहला गीत सगुन का गाती है जिससे शाहनी को अपने पति एवं पुत्र पर अपने अधिकार का आभास होता है ।

महफिल के अंत में अन्तिम गाना जब कंजरी अपने प्रेमी शाह पर गाती है तब सम्पूर्ण महफिल दंग रह जाती है । कंजरी शाह के मुँह को देखकर गाना गाती है जिससे शाह भी लीन हो जाता है । महफिल का सम्पूर्ण वातावरण शाहनी को जड़ होता सा प्रतीत होता है । शाहनी को जड़ होता सा प्रतीत होता है । शाहनी बेचैन होकर छटपटाती है । वह औरों की तरह जड़ होना नहीं चाहती वह अपने स्वामित्व के अधिकार को बनाए रखने के लिए कंजरी से भावनात्मक स्तर पर संघर्ष करती है " और शाहनी ने मुट्ठी में लपेटा हुआ सौ का नोट निकालकर अपने बेटे के सिर पर से वारा, और फिर उसे पकड़ा दिया, जिसे लोग शाह की कंजरी कहते थे ।"

" रहने दो, शाहनी । आगे भी तेरा ही खाती हूँ ।" उसने जवाब दिया और हंस पड़ी । उसकी हँसी उसके रूप की तरह झिलमिलकर रही थी ।

शाहनी के मुँह का रंग हल्का पड गया उसे लगा, जैसे शाह की कंजरी ने आज भरी सभा में शाह से अपना सम्बन्ध जोड़कर उसकी हतक की थी । पर शाहनी ने अपना आप थाम लिया । एक जोरासा किया कि आज उसने हार नहो खानी थी । वह जोर से हँस पड़ी । नोट पकड़ाती हुई' कहने लगी,

" शाह से तूने नित लेना है, पर मेरे हाथ से तूने फिर कब लेना है ? चल आज ले ले .... "

और शाह की कंजरी सौ के नोट को पकड़ती हुई एक ही बार में हीना सी हो गयी .....

कमरे में शाहनी की साड़ी का सगुवाला गुलाबी रंग फैल गया ...... " ।

5·2· <u>नैतिक संघर्ष</u> :-

स्वतन्त्रता के बाद राजनैतिक परिवेश ने जीवन मूल्यों को अधिक प्रभावित किया जिससे सम्पूर्ण देश का जन-जीवन अस्त-व्यस्त हुआ । व्यक्ति शंकालु, निराशा जनक होने लगा फलत: देश का चारित्रिक एवं नैतिकपतन होने लगा । मनुष्य में व्यक्तिगत स्वार्थ बढ़ने लगा । विशेषरूप से " देश के

1· सत्रह कहानियाँ - अमृता प्रीतम - पृ·72- 73·

विभाजन के बाद असन्तोष तथा भय की भावना, राजनीतिक भ्रष्टाचार का बढ़ना, मोह भंग की स्थिति, यांत्रिकता के विकास व अनेक विसंगतियों से प्रेम, स्नेह, वात्सल्यता, पारिवारिक मूल्य, सामाजिक नैतिक तथा आर्थिक मूल्यों में बदलाव आया । यह परिवर्तन बाह्य से आन्तरिक था, सामाजिक से व्यक्तिगत था, सारे देश की मानसिकता अनेक दबावों तथा परिस्थितियों से आक्रान्त हो गयी । यह मानसिकता सेक्स, अर्थ, जमाखोरी, चोरबाजारी, रिश्वत, भ्रष्टाचार तथा मूल्यहीनता से जुड़ जाने से तनाव कुंठा, हताशा की भावना बढ़ी और नयी पीढ़ी तथा पुरानी पीढ़ी का सन्तुलन बिगड़ने लगा । इन समस्त विसंगतियों का चित्रण नई कहानी में होने लगा था । इस प्रकार नगर बोध, कस्बाई मनोवृत्ति, आंचलिकता तथा व्यंग्यात्मक की प्रवृत्ति विकसित हुई ।

आजादी के पश्चात् बढ़ती जनसंख्या से नगरों की स्थिति में भारी परिवर्तन आया और उनसे नये-नये बोधों का जन्म हुआ । नगरों के अन्तर्गत आधुनिकता, कृत्रिम जीवन, अनैतिक रोजगार, शारीरिक भूख से टूटते नैतिक बंधन/व पवित्रता, भ्रष्टाचार, परम्परा से मुक्ति, जीवन-मूल्य का टूटना, नये सम्बन्ध, नये पुराने का द्वन्द्व एकजुट का अभाव, स्त्री-पुरुष का संघर्षपूर्ण जीवन कार्य व्यस्तता स्नेहाभाव, टूटना आदि है ।[1]

1· साठोत्तर हिन्दी कहानी मूल्यों की तलाश:मधुरेश-पृ· 55-56·

5·2·1· नैतिक मूल्य बचाये रखने के लिए भावनात्मक संघर्ष :-

स्त्री अपने घर की प्रतिष्ठा बचाए रखने परिवार के सदस्यों के दुर्व्यवहार एवं परिवार की कठिनाईयों का समाज में व्यक्त नहीं करती । वह परिवार के नैतिक मूल्यों को बचाए रखने का प्रयत्न करती है । निरन्तर संकटों से जूझते हुए वह कभी भावुक हो जाती है फिर अपनी गलती पर बाद में पछताती है ।

फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी " संवादिया " में कहानी की नायिका बड़ी हवेली की बड़ी बहू का परिवार के नैतिक मूल्यों के लिए मानसिक संघर्ष चित्रण मिलता है । पति के देहान्त के बाद शेष तीन भाइयों में लड़ाई होने के कारण गाँव छोड़ कर तीनों भाई शहर में बसते हैं । गांव में विधवा बड़ी बहू ही रहती है । बड़ी बहू के गहने देवर छीन लेते हैं । खेत की फसल एवं आम के मौसम में देवरानियां अपने बच्चों को लेकर धान एवं आम लेने गांव आती हैं और अपना हिस्सा लेकर वापस शहर लौट जाती हैं ।

गांव में खेत की देखभाल मात्र बड़ी बहू ही करती है । वह सूखा चूड़ा खा कर अपने दिन गुजारती है किन्तु गांववालों से अपनी कठिनाई नहीं कहती । वह देवर एवं देवरानियों के दुर्व्यवहार से ऊब जाती है और एक गांव का संवादिया " हरगोबिन " को अपनी माँ के पास संवाद भेजते समय कहती है कि वह गाँव छोड़कर अपनी माँ के पास हरदम के लिए चली जायेगी लेकिन उससे अब यहाँ रहा नहीं जायेगा ।

हरगोबिन बहू की माँ के घर संवाद लेकर जाता है परन्तु वह संवाद कहने का साहस नहीं करता । वह बड़ी बहू को गांव की लक्ष्मी तथा गांव की माँ मानता है । संवाद कहे बिना वह गांव लौट आता है । और बड़ी बहू से कहता है "बड़ी बहुरिया । मुझे मांफ करो । मैं तुम्हारा संवाद नहीं कह सका ...... तुम गांव छोड़कर मत जाओ । तुमको कोई कष्ट नहीं होने दूँगा । मैं तुम्हारा बेटा । बड़ी बहुरिया, तुम मेरी माँ, सारे गांव की माँ हो । मैं अब निठल्ला बैठा नहीं रहूँगा । तुम्हारा सब काम करूँगा .... बोलो बड़ी माँ तुम .... तुम गांव छोड़कर चली तो नहीं जाओगी ? बोलो .... "

बड़ी बहुरिया गर्म दूध में एक मुट्ठी बासमती का चूड़ा डालकर मसकने लगी । संवाद भेजने के बाद से ही वह अपनी गलती पर पछता रही थी ।"[1]

5.2.2. नैतिक मूल्यों को तोड़ती नयी एवं पुरानी पीढ़ी के बीच संघर्ष :-

अहं भावना मानसिक विकृति है परम्परा से चले आ रहे पुरानी पीढ़ी के नैतिक अहं को जब नयी पीढ़ी तोड़ती है तो दोनों पीढ़ियों के बीच संघर्ष को देखा जा सकता है ।

---

1. एक श्रावणी दोपहरी की धूप : फणीश्वरनाथ रेणु - पृ. 178.

कृष्णा अग्निहोत्री की कहानी "खुली राह पर बंद दरवाजे" एक मुहल्ले के पाँच घरों की कहानी को लेकर चलती है। पाँचों घरों की कहानी कोको लेकर चलती है। पाँचों घरों की अपनी-अपनी मान्यतायें होती है। वे सब स्वयं को नैतिकता का ठेकेदार समझ कर दूसरों की आलोचना बेहद गर्व से करते है किन्तु पाँचों घर की लड़कियाँ जब अन्तर्जातीय प्रेम विवाह कर इनके नैतिक अहं को तोड़ती है तो वे आपस में संघर्ष करते है।

ठक्कर साहब की पुत्री "मालती" का विवाह "माइकल" से तय हो जाता है। सगाई में मुहल्लेवाले शामिल नहीं होते। श्रीमती शर्मा कहती है कि "राम-राम घोर कलयुग आ गया है ... श्रीमती शर्मा ने होंठ तिरछे किए क्रिश्चयन ही ढूँढ़ कलमुही ने।"[1]

रडके की पुत्री "अना" अपने मामा के साथ भाग जाती है "दूसरे दिन शाम को अना का तार आया कि "मैरिड सुभाष हैपली।" सुभाष की माँ बौखलाती हुई रड़के के दरवाजे तक जा पहुँची और जोर-जोर से गालीयाँ देने लगी, "डायन भी छंद का घर छोड़ देती है। तूने तो यह भी नहीं छोड़ा। दोस्ती के बहाने मेरे बेटे को फांसा।"[2]

---

1. जिन्दा आदमी : कृष्णा अग्निहोत्री - पृ. 104.
2. - वही - पृ. 106.

तीसरे घर में पन्द्रह दिन बाद श्रीमती सेठ की लड़की " गीत " चार दिन से भूख हड़ताल पर है यह खबर सुनकर श्रीमती शर्मा श्रीमती सेठ के यहाँ " गीत " को समझाने आती है । श्रीमती शर्मा को देखते ही गीत ने मुँह टेढ़ा कर लिया और बोली " आँटी मैं जानती हूँ, आप क्या कहेंगी, ... पर अब मैं बच्ची नहीं रही । " अपना जीवन साथी खुद चुन सकती हूँ । शादी मुझे करनी है या मेरे बाप को ? " [1]

चौथे घर की घरवाली श्रीमती मुखर्जी मुहल्ले की लड़कियों के माहौल को देखकर चौंक रह जाती है और कहने लगती है कि उसकी लड़की का क्या होगा ? उसकी लड़की शेफाली जवाब में कहती है कि " क्या होना है माँ । तुमको भी जिम्मेदारी से मुक्त किये देती हूँ । विनोद अग्रवाल मुझसे शादी के लिए तैयार है ।" शेफाली ने खाट के एक कोने पर बैठते हुए कहा ।

" रहने दो .... रहने दे .... यहाँ मत बैठो ... वैसे ही खाट चरमरा रही है .. बड़ी आयी अग्रवाल से शादी करने । शर्म नहीं आती ? अग्रवाल भाई सुनेंगे तो आत्म हत्या कर लेंगे । इतना बड़ा घर ..... इतना रुपया पैसा ..... वे क्या तुम्हें बहू बनाकर घर ले जायेंगे ? बड़े आदमी का लड़का देख क्या अपनी जाति और औकात ही भूल गयी ? " श्रीमती शर्मा फुत्कारने लगी ।

---

1. जिन्दा आदमी - कृष्णा अग्निहोत्री - पृ. 106.

दफ्दम आगा के विपरीत श्रीमती मुखर्जी उठकर उनकी ओर क्रोध से घूरती बोली "तुम कौन होती हो मेरी बेटी की हैसियत बखारने वाली ? मेरे ही घर मेरी चारपाई पर बैठकर मेरी ही बेटी को बैठने के लिए मना करती हो ? श्रीमती शर्मा स्तब्ध हो गयी ।

"हाँ मैं कह रही हूँ । तुम्हें क्यों जलन हो रही है । यदि मेरी बेटी की शादी बड़े घर में हो रही है । लड़का-लड़की राजी तो क्या करेगा काजी ? "[1]

श्रीमती शर्मा पांचवी घरवाली है जिसकी बड़ी बेटी "आभा" का विवाह हो गया । दूसरी पुत्री विभा विवाह के लिए है । श्रीमती शर्मा घर लौटकर पति से कहती है कि विभा का शीघ्र विवाह कर दिया जाय क्योंकि विभा भुवन में बहुत दिलचस्पी लेती है । वह अपनी बड़ी पुत्री आभा से विभा पर कड़ी नजर रखने को कहती है । विभा का रिश्ता डाक्टर से तय होता है । उसी दिन भुवन नीला थोथा खा लेता है । उसके मित्र अस्पताल में उसकी सेवा में जुट जाते है महेश विभा को भुवन के भुवन की आत्महत्या का प्रयत्न की खबर देते है विभा कहती है --
"मैं तो भुवन से ही शादी करना चाहती हूँ परन्तु माँ ने तो घर से निकलना बन्द करवा दिया है । आभा मुझे कहीं नहीं अकेली जाने देती .... वे

---

1. जिन्दा आदमी - कृष्णा अग्निहोत्री - पृ. 107.

लोग जबरदस्ती मुझे उस डाक्टर से बाँध देंगे । मैं कैसे समझाऊं उन्हें कि मैं भुवन के बच्चे की माँ बनने जा रही हूँ । "[1]

5·2·3· झूठी नैतिकता के विरुद्ध संघर्ष :-

समाज में पुरुष के लिए भिन्न नैतिक मूल तथा स्त्री के लिए भिन्न नैतिक मूल्य निर्धारित किए गए है । नारी इन मूल्यों को तोड़ती है तो उसे अनैतिक कहा जाता है ।

कमलेश्वर की कहानी " तलाश " में नैतिक मूल्य को बनाए रखने सुमी की माँ तथा सुमी का अनैतिक मूल्य के विरुद्ध मानसिक संघर्ष देखा जा सकता है । सुमी एवं सुमी की माँ की उम्र में 19 वर्ष का अन्तर है दोनों कामकाजी महिलाएँ है । सुमी के पिता की मृत्यु के बाद सुमी की माँ का किसी अन्य पुरुष से प्रेम सम्बन्ध होता है किन्तु सुमी की माँ अपनी पुत्री को अपने प्रेम सम्बन्ध का आभास भी नहीं होने देती । विजय मोहन सिंह के अनुसार "प्रेम तथा नैतिकता को जोड़नेवाली अवस्था परिपक्वता है । एक परिपक्वता व्यक्ति ही पूर्ण प्रेम करने में सक्षम होता है तथा एक व्यक्ति की परिपक्वता में निश्चितरूप से नैतिकता का पूर्ण विकास भी निहित है । साथ ही प्रेम को नैतिकता से पृथक करनेवाली मनोवृत्ति उसके साथ जुड़ी हुई

1· जिन्दा आदमी - कृष्णा अग्निहोत्री - पृ· 109·

पाप की भावना है । पाप निश्चित रूप से अनैतिक है और प्रेम इसलिए पाप है कि उसमें यौन भाव सन्निहित है । मानवीय प्रेम भी इसी कारण पाप तथा अनैतिक है । केवल ईश्वर-प्रेम पाप या अनैतिक नहीं है । क्योंकि वह यौन भावमुक्त है ।" [1]

जब सुमी की माँ दो दिन के लिए कॉलेज के लिए सामान खरीदने बाहर जाते समय सुमी देखती है "वह जरा तेजी से ही सीढ़ियाँ उत्तर गयी थी । सुमी बारजे पर आ गयी । टैक्सी की खिड़की से उन्होंने ऊपर देखते हुए धीरे से हाथ हिलाया था । टैक्सी चल पड़ी थी । उधर वाली खिड़की से सिगरेट का एक सुलगता हुआ टुकड़ा सड़क पर गिरा था । सुमी वहीं खड़ी-खड़ी उस टुकड़े को ताकती रही थी ।

बहुत-सी पेटियों में सामान आया था । ममी रात को वापस आयी थी, इसलिए पेटियाँ घर पर ही उतारी गयी थी । वह बहुत खुश थी, "हमारे कॉलेज में जो-जो इन्स्ट्रूमेंटस अब आ गये है, किसी भी कॉलेज की लैब में नहीं है"। और गन्दे कपड़े निकालने के लिए जब उन्होंने होल्डाल खोला था, तो सबसे पहले रूमाल निकालकर सुमी को दिये थे, "एक भी नहीं खोया ... पांच ये रहे, एक पर्स में है । ठीक है न ...... "

---

1. इस पूरे प्रसंग के लिए देखिए प्रस्तुत प्रबन्ध का प्रथम अध्याय - पृ. 38-39.

मलगुजे रुमालों में उड़ा-उड़ा सेण्ट महक रहा था .... एक साड़ी से उन्नी मोजा झांक आया, तो ममी ने वह साड़ी होल्डल की जेब में दबाते हुए कहा था, फिर निकाल लेंगे, जब धोबी आयेगा और उसे लपेटकर पलंग के नीचे सरका दिया था ।

कहानीकार कहते है "उन दोनों के बीच पानी का एक रेला आ गया था । वे सिर्फ किनारों की तरफ समानान्तर खड़ी रह गयी थी ।" और कभी-कभी ममी उसे देखकर ऐसे घबरा उठती थी, जैसे पापा आ गये हो । और वह ममी को देखकर ऐसे अकुला उठती थी, जैसे पापा चले गये हो । पर पापा थे कि न आते थे, न जाते थे .... वह सिर्फ रुके हुए थे ।" 1

इस कहानी में विधवा नारी पर थोपे गये झूठे नैतिक बंधनों को सुमी की माँ तोड़ती है किन्तु उसे अपने जीवन में प्रेमी की आवश्यकता है वह प्रेमी के साथ सम्बन्ध एक ओर बनाए रखने का प्रयत्न करती है तो दूसरी ओर अपनी पुत्री सुमी से इस सम्बन्ध को रहस्यमय भी रखना चाहती है । इन दोनों स्थितियों में वह मानसिक संघर्ष करती है । "नारी जीवन का एक पक्ष यह भी है कि जब उसकी यौवनगत भावनाएँ, आशा-आकांक्षाएँ निःशेष नहीं हो गयी होती और तलाक अथवा पति के दिवंगत हो जाने पर उसे प्रेमी या पुरुष मित्र के साथ की आवश्यकता होती है किन्तु बच्चों का साथ, बच्चों की पुरुष मित्र के संबंध को लेकर

---

1. मांस का दरिया - कमलेश्वर - पृ. 29.

जिज्ञासाएँ और दोनों की असमानता, के बीच नारी बंटती जाती है। उसका एक पग यदि प्रेमी की ओर उठता है तो दूसरा पग बच्चों की ममता में उसे रोक देता है। इन दोनों के संघर्ष में उसका मन दिग्भ्रमित-सा झूलता है। कभी उसके मातृ-हृदय की विजय होती है तो कभी प्रेमी-हृदय में उठती हूक उसे बच्चों से अलग प्रेमी की बना देती है। "[1]

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में सेक्स के संदर्भ में नैतिक बंधनों को तोड़ते नारी पात्रों का चित्रण मिलता है।

कृष्णा सोबती की कहानी " मित्रोमरजानी " की नायिका समित्रावन्ती अपने पति से जैविक संदर्भ में अतृप्ति का कारण जिठानी को बतलाती है। मित्रों की जिठानी " सुहाग " मित्रों को इस तरह की बातें न करने के लिए समझाती है " सुहाग फटी-फटी आँखों देवरानी को ऐसे ताकती रही कि पहली बार देखा हो, कि नाक-नक्शा ध्यान में न आता हो, सिर हिला फीके गले कहा - देवरानी, इन भले लोगों को भुलावा दे तुम्हारी माँ ने अच्छा नहीं किया, तब एकाएक मुँह तमतमा आया, देवरानी, बहू - बेटियों के लिए तो घर-गृहस्थी की रीति ही लक्ष्मन की लीक। जाने अनजाने फलांगी नहीं कि ......

---

1. समकालीन कहानी - युग बोध का संदर्भः पुष्पपालसिंह - 166.

मित्रो ने कानों पर हाथ दे आँखें नचाई-ठोंक-पीट मुझे अपने लबक दोगी तो मैं भी मुंडी हिला लूँगी, जिठानी पर जो हौंस इस तन व्यापी है । ...... "।

मन्नू भण्डारी की "ऊँचाई" कहानी की नायिका शारीरिक पवित्रता के परम्परागत मूल्यों को तोड़ती है । कहानी की नायिका विवाहित होते हुए भी विवाह से पूर्व अपने प्रेम सम्बन्ध को विवाह के बाद भी बनाए रखने में कोई अनैतिकता नहीं समझती वह अपने पति से पूछती है कि "शरीर देने के बाद औरत के लिए अस्वाभाविक हो जाना क्या अनिवार्य हो है ...... शायद तुम ठीक ही कहते हो क्योंकि अब तो सचमुच ही मुझे इस सम्बन्ध में पवित्रता नज़र नहीं आती । मैं तो सोचती थी, यह सम्बन्ध इतना पवित्र है कि सारे संसार की अपवित्रता इसमें आकर पवित्र हो जाती है, पर ज़रा से स्पर्श से यदि ..... "2

इस कहानी में "मानवनिष्ठ नैतिक बोध की अछूती "ऊँचाई" का स्पर्श किया गया है । नूतन नैतिक बोध की प्रतीक पत्नी है और पारम्परिक बोध का प्रतिमान पति है । नायिका पत्नी का पूर्व प्रेमी पति-पत्नी के बीच द्वन्द्व का कारण है । पति आधिपत्य का दावा करता है किन्तु पत्नी उसके अधिकार की इस संकुचित सीमा का उल्लंघन करती है और

---

1. मित्रो मरजानी - कृष्णा सोबती - पृ. 20.
2. एक प्लेट सैलाब - मन्नू भण्डारी - पृ. 138.

वह मानती है कि पत्नी होते हुए वह एक व्यक्ति भी है, मानव भी है। परिवार के साथ-साथ उसके कुछ मानवीय दायित्व भी है। उसका भूतपूर्व प्रेमी स्त्री-जाति के प्रति अविश्वास की ग्रंथि से रुग्ण है और एकांकी जीवन जी रहा है। नायिका अच्छी गृहिणी है किन्तु वह उस व्यक्ति के साथ हुए अन्याय के लिए संवेदनशील है। वह कहती है -- " मेरे प्यार ने तुम्हें जीता जागती तस्वीर बना दिया है, मेरा प्यार ही तुम्हें नया जीवन देगा।" वह मानती है कि यदि परिस्थितिवश कुछ क्षणों के लिए किसी आत्मीय पुरुष के साथ शारीरिक सम्पर्क होता है तो अपवित्रता का प्रश्न कहाँ उठता है। उसके जीवन में जिस ऊँचाई पर पति स्थित है वहाँ कोई नहीं पहुँच सकता। वह अपने आपको कहीं भी " गिल्टी " अर्थात अपवित्र नहीं महसूस करती। यदि अर्पण में वासना नहीं तो पास क्से, भोग का उद्देश्य ऊँचा है तो वह पवित्र है, आत्मा में पर-दुःख-कातरता है तो शरीर अपवित्र क्यों कर होगा। अतः वह दृढ़ता से कहती है, " यदि वैवाहिक सम्बन्धों का आधार इतना छिछला है कि एक झटके को भी संभाल नहीं सकता तो सचमुच उसे टूट जाना चाहिए।" [1]

---

1. " धर्मयुग " पत्रिका - सितम्बर 1982 - पृ. 53.

5.2.4. धार्मिक बन्धनों से मुक्ति के लिए नारी संघर्ष :-

धार्मिक रूढ़ियाँ नैतिकता का पाठ सिखाती हैं । "मनुष्य पैदा तो स्वतन्त्र होता है किन्तु सर्वत्र जंजीरों में जकड़ा दिखाई देता है ।" रूसो का यह कथन मन्नू भण्डारी की कहानी "ईसा के घर इन्सान" पर लागू होता है । इस कहानी में चर्च की चार दीवारी में कैद की गई सिस्टर्स की छटपटाहट को देखा जा सकता है । नारी जीवन के महत्व को कहानी के पात्र एंजिला और लूसी जान जाते हैं । वे अपने ढंग से जीवन जीना चाहते हैं ।

एंजिला नयी सिस्टर है वह चर्च में आई है । पहले वह चर्च से भाग गई थी । फिर से उसे पकड़कर लाया गया है । किन्तु वह चर्च की चार दीवारियों में अपना मूल्यवान जीवन बिताना नहीं चाहती बल्कि इसका विरोध करती है । "और फिर वह एकाएक चिल्ला उठी "देखो कितनी सुन्दर साड़ी पहन रखी है इसने । फिर हम क्यों अच्छे कपड़े नहीं पहने ? हम इन्सान नहीं है ...... ? मैं नहीं रहूँगी यहाँ, मैं कभी नहीं रहूँगी । देखो मेरे रूप को । मैं अपनी जिन्दगी को अपने इस रूप को चर्च की दीवारों के बीच नष्ट नहीं होने दूँगी । मैं जिन्दा रहना चाहती हूँ आदमी की तरह जिन्दा रहना चाहती हूँ । मैं इस चर्च में घुट-घुटकर नहीं मरूँगी -- मैं भाग जाऊँगी, मैं भाग जाऊँगी ...... "।

---

1. मैं हार गई - मन्नू भण्डारी - पृ. 19.

धर्म एवं धार्मिक सेवाएँ इच्छानुसार अपनायी जाती है । मनुष्य को इच्छाओं, मूल्यवान जीवन एवं अधिकारों से वंचित कर उसे धर्म के नाम पर उसका सर्वस्व दमन नहीं किया जा सकता है । इसका स्पष्ट विरोध शैजला इस कहानी में करती है । धार्मिक बन्धनों से मुक्त नारी संघर्ष को इस कहानी से दर्शाया गया है ।

कोई भी धर्म इच्छानुसार अपनाया जाता है । विभिन्न धर्मों से सम्बन्धित विचारों की टकराहट संघर्ष को जन्म देती है ।

मेहरुन्निसा परवेज की कहानी " साल की पहली रात " की नायिका रेशमा है । रेशमा का प्रेम सम्बन्ध हिन्दू लड़के " देव " से रहता है । रेशमा को विवाह के पूर्व ही बच्चा होता है । परन्तु रेशमा की माँ रेशमा एवं देव के सम्बन्ध से प्रसन्न नहीं रहती । वह क्रिश्चन लड़के से ही विवाह करने के लिए रेशमा को बाध्य करती है । उसे देव के पास जाने से रोकती है और रेशमा को चर्च जाने के लिए बाध्य करती है । रेशमा चर्च जाने से इन्कार करती है । वास्तव में रेशमा के पिता हिन्दू है । रेशमा की सहेली रेशमा की माँ से विनती करती है कि उसे देव के पास भेज दिया जाय । " आँटी जिद छोड़ो, रेशमा को तो बच्चा भी है ।" बच्चा - बच्चा । भाड़ में जाए वह और उसका बच्चा, जाने किस भेड़-चमार से जन्मा है । मैं क्रिश्चन के अलावा कहीं उसका संबंध नहीं जोड़ सकती ।"

रेशमा का मुँह क्रोध से तमतमा गया, " मामा, तुम चुड़ैलनी हो ।"

क्या ? आंटी ने हाथ का चप्पल रेशमा पर फेंक दिया, जो उसके गाल पर चोट करता गिर गया वातावरण अजीब सा हो गया था । आंटी रेशमा को क्रोध में गालियाँ बाक रही थी । सब लोग समझ गए थे कि आंटी के जिंदा रहते तक रेशमा की समस्या सुलझने वाली नहीं है ।"[1]

5•2•5• आत्मीयता की खोज में भावनात्मक संघर्ष :-

निरपराध व्यक्ति को दुर्भाग्य से कानूनी सजा होती है तो उसकी मानसिकता विकृत हो जाती है । इस स्थिति में वह अपने परिवार के हर सदस्य को निरन्तर दु:ख पहुँचाता है ।

मन्नू भण्डारी की कहानी " सजा " आत्मीयता की खोज में कहानी की नायिका आशा के भावनात्मक संघर्ष को दर्शाती है । कहानी में मध्यवर्गीय परिवार का निरपराधी व्यक्ति आशा का पिता है जिस पर आफिस का पैसा चोरी करने का झूठा इल्जाम लगा कर नौकरी से सस्पेंड किया जाता है तथा कानूनी सजा भी दिलायी जाती है । आर्थिक अभाव के कारण घरवाले आशा और उसके छोटे भाई को मामा के पास भेज देते है ।

1• गलत पुरुष - मेहरुन्निसा परवेज - पृ• 80•

अन्तिम फैसले की सुनवाई के सम्बन्ध में पिता का पत्र पापा के नाम आता है और जिसमें सुनावाई पर आने के लिए लिखा होता है। पत्र पढ़ कर आशा को लगता है कि पिता ने उसके और मुन्नू के बारे एक लाइन भी नहीं लिखा अत: वह दु:खी होती है। उसे अपने पिता की आत्मीयता की खोज है। "मेरे और मुन्नू के लिए एक लाइन तक नहीं लिखी थी। न प्यार, न आने के लिए कुछ। पूरे साल में पप्पा का यह पहला कार्ड था और हमारे विषय में कुछ नहीं लिखा, जैसे उन्हें मालूम ही नहीं हो कि हम यहाँ है।" [1]

5.2.6. शोषण के विरुद्ध भावनात्मक संघर्ष :-

परिवार का दायित्व माता-पिता के स्थान जब संतान पर आता है तो उस दायित्व को निभाना कठिन होता है। विशेषकर मध्यवर्ग में संतान को परिवार के दायित्व का बोझ छोटी उम्र में सम्भालते देखा जाता है।

---

1. श्रेष्ठ कहानियाँ - मन्नू भण्डारी - पृ. 143.

मन्नू भण्डारी की कहानी " क्षय " परिवार के दायित्व के बोझ से बोझिल मध्यवर्गीय अविवाहित युवती के भावनात्मक संघर्ष को दर्शाती है । कहानी की नायिका कुन्ती एक ईमानदार अध्यापिका है इसीलिए वह अपने भाई को आठवी कक्षा में फेल होने पर, पिता के कहने पर उसे नवी कक्षा में बैठाने के सम्बन्ध में हेडमास्टर से सिफारिश नहीं करती बल्कि उसे अपने मामा के पास भेज देती है । वहाँ भी उसे आठवी कक्षा में ही बैठना पड़ता है ।

कुन्ती को घर खर्च एवं पिता के " क्षय " रोग की दवाइयों का खर्च चलाना पड़ता है । इसके लिए वह स्कूल में दो सौ रुपयों की अध्यापक की नौकरी तथा सावित्री को दो सौ रुपयों का ट्यूशन पढ़ा कर कुल चार सौ रुपए कमाती है फिर भी पिता की बिमारी के खर्च का सामना नहीं कर पाती । प्रतिदिन उसका दिन भर का समय नौकरी तथा ट्यूशन पढ़ाने में ही समाप्त हो जाता है । जिससे उसे अपना जीवन नीरस लगने लगता है क्योंकि परिवार के खर्च का दायित्व उसकी खुशियों को निरन्तर दफनाने लगता है । वह अपने जीवन की तुलना अपने साथियों से करती है तो उसे ज्ञात होता है कि उसके पिता की बीमारी के बोझ से वह निरन्तर मानसिक शोषण का शिकार हो रही है । " कुन्नी के जाने के बाद कितना नीरस हो गया है उसका जीवन । बिस्तर पर लेटे हुए पापा और काम में व्यस्त बुआजी । उसके बराबर की और लड़कियाँ कितनी मौज करती है । घूमना-फिरना, सैर-सपाटे, हंसी-मजा ... उसके जीवन में तो यह सब दूर-दूर तक भी नहीं है .... क्या कहीं

भी नहीं होगा ? क्या उसका सारा जीवन यों ही निकल जायगा ? जितना रुपया वह कमाती है, उसमें कितने ठाठ से वह रह सकती है। पर वह तो जानती ही नहीं कि ठाठ क्या होता है, मौज क्या होती है। पापा क्या अब कभी अच्छे नहीं होंगे ? ..... कितने दिन तक वह इस तरह पड़े रहेंगे ? .... टुन्नी होता तो वह कब ही उसके साथ सिनेमा जाती कब टुन्नी बड़ा होगा और उसके कन्धों का भार हल्का करेगा ? सच, अब तो वह ऊब गई है।"[1]

5.2.7. निष्कर्ष :-

गर्भधारण की प्रक्रिया को नारी-जीवन का पूर्ण आधार मानकर उसे शारीरिक रूप से दुर्बल करार किया गया। इस विकृत मानसिकता से वह समाज के निरन्तर शोषण का शिकार होती रही। सदियों से नारी के बौद्धिक सौन्दर्य से अधिक उसके शारीरिक सौन्दर्य को महत्व दिया गया फलत: नारी प्रदर्शन का साधन बनी।

स्वतन्त्रता के बाद परिवर्तित राजनैतिक परिवेश ने जीवन मूल्यों को बदल दिया। बढ़ती महंगाई ने नारी में आर्थिक मुक्ति एवं आत्मनिर्भरता की भावना जागृत की तथा वह समाज में अपनी अस्मिता की पहचान के लिए संघर्ष करने लगी। नारी दास-जीवन एवं पति-शोषण

---

1. श्रेष्ठ कहानियाँ - मन्नू भण्डारी - पृ. 81-82.

के विरुद्ध लड़ने लगी । मनोवैज्ञानिकों पर नारी का अब विश्वास नहीं रहा क्योंकि मनोवैज्ञानिक मानसिक शोषण करता है । नारी में प्रेमी के प्रति बलिदान की भावना अधिक होती है । वह प्रेमी को पाने के लिए संघर्ष करती है ।

विवाह प्रथा एक प्रयोग है । पति-पत्नी में स्थान की दूरी भी अलगाव की भावना उत्पन्न करती है । कहानी में तीसरे की समस्या हल करने नारी संघर्ष करती है । समाज में पत्नी पर लागू होनेवाले नियम उसे और भी भयभीत एवं शंकालु बनाते हैं । माता-पिता का दायित्व संतान को जन्म देने से अधिक उनके सुख सुविधाओं की ओर ध्यान देना अधिक होता है । पति का सम्बन्ध यदि प्रेमिका से होता है तो पत्नी एवं प्रेमिका क्रमश: अपने सामाजिक एवं भावनात्मक अधिकार प्राप्ति के लिए संघर्ष करती हैं ।

परिवार की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए नारी संघर्ष करती है । परम्परा से चले आ रहे पुरानी पीढ़ी के नैतिक अहं को नयी पीढ़ी बदलते सामाजिक परिवेशानुसार तोड़ती है परिणामत: इन दोनों पीढ़ियों में संघर्ष होता है । माँ अपनी संतान को नैतिक मूल्य सिखाती है किन्तु जब स्वयं वह मूल्य तोड़ती है तो संतान का व्याकुल होना तथा मानसिक संघर्ष करना सहज होता है । नारी जब सेक्स की बात करती है तो उसकी धारणा अनैतिक कही जाती है । किन्तु जैविक अतृप्ति के विरुद्ध नारी संघर्ष करती है ।

पति-पत्नी के बीच तीसरे की समस्या को मन्नू भण्डारी की " ऊँचाई " कहानी की पत्नी हल करती है । वह पति के सम्बन्ध को जीवन का स्थायी सम्बन्ध समझती है । इसीलिए विवाह के बाद अपने प्रेमी को एक बार तृप्त करना अनैतिक नहीं समझती ।

धार्मिक रूढ़ियाँ नैतिकता का पाठ सिखाती हैं । धर्म इच्छानुसार अपनाया जाता है । अतः उसे किसी पर बलपूर्वक लादा नहीं जा सकता नारी अनइच्छा के विरुद्ध संघर्ष करती है । परिवार में पिता दुर्भाग्य से जब कानूनी सजा भोगता है उसकी मानसिकता परिवर्तित होती है वह अपनी संतान की उपेक्षा करता है किन्तु संतान आत्मीयता के लिए मानसिक संघर्ष करती है । परिवार का दायित्व छोटी उम्र की संतान को सुविधाएं दफना देता है । आर्थिक अभाव के कारण उसका अधिक शोषण होता है । जिसके विरुद्ध वह भावनात्मक संघर्ष करती है ।

षष्ठम – अध्याय

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी – संघर्ष अस्तित्व एवं अस्मिता

षष्ठम अध्याय

6.0. स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी-संघर्ष-अस्तित्व एवं अस्मिता

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में नारी संघर्ष को समझने के लिए हमने नारी अस्तित्व एवं अस्मिता से जुड़ी जैविक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, दार्शनिक, नैतिक इत्यादि विभिन्न स्थितियों का विवेचन किया जिससे यह ज्ञात होता है कि समाज में नारी अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष करती है।

"भारतीय समाज में नारी की जीवन-यात्रा उसी छिन्न - मस्ता देवी की भाँति है । यहाँ स्त्री प्रकृति है, शक्ति है और जननी किन्तु आदिकाल से ही वह सर्वाधिक शोषित और पीड़ित भी है । उसका कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है, उसकी कोई सत्ता नहीं है और उसे कोई आजादी भी नहीं है । समाज की सारी वर्जनाएँ सिर्फ स्त्री को ही बाँधती है, जबकि पुरुष उन वर्जनाओं के बन्धन में कभी नहीं बंधता । यदि कभी बंधता भी है तो जब जी चाहे उन्हें तोड़ फेंकता है । स्त्री कभी पिता और भाई के लिए तो कभी पति और पुत्र के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देती है । नतीजा यह है कि औरत को हर क्षेत्र में हर जगह सिर्फ रोते हुए ही जीवन कुर्बान कर देना पड़ता है ।"[1]

सदियों से नारी की मानसिकता को दुर्बलकर उसके साथ छलावा किया गया इसीलिए सीमोन कहती है कहीं और किसी समाज में "स्त्री पैदा नहीं होती, बल्कि उसे बना दिया जाता है ।" सदियों के छलावे के विरुद्ध वह संघर्ष करती आधुनिक नारी का संघर्ष समाज में मूलरूप में अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए होता है । वह पुरुष की भाँति एक इन्सान की तरह जीवन जीना चाहती है उसमें कोई कमी नहीं है । संसार की हर नेमत पर उसका अधिकार है ।

1· स्त्री की त्रासदी और संघर्ष का जीवन्त दस्तावेज : अनिल कुमार तिवारी : साक्षात्कार पत्रिका मार्च 1994 - पृ· 99·

" दाम्पत्य जीवन में स्त्री-पुरुष के प्रचलित शब्दावलियों पर गौर करें तो हम देखते हैं कि इस शब्दावली में स्वतः स्त्री की पराधीनता और पुरुष की श्रेष्ठता निहित है जैसे " वर " शब्द श्रेष्ठता का सूचक है जबकि " कन्या " हीनता का या पति शब्द का अर्थ होता है मालिक या स्वामी यहाँ यह स्पष्ट करना जरूरी है कि पति शब्द का बल श्रेष्ठता का ही नहीं सत्ता का भी सूचक है जैसे वैदिककाल में प्रयुक्त " भूपति " या ग्रामपति जैसे शब्द स्वामित्व के द्योतक हैं इस हिसाब से स्त्री भी पुरुष के लिए एक सम्पत्ति की तरह है जिसका पति पतित होने पर भी पति (स्वामी) बना रहता है यह सारी शब्दावली लोकमत का भी अभिन्न हिस्सा है ।" [1]

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी अस्तित्व एवं अस्मिता का चित्रण हुआ है जिसका हम विश्लेषण करेंगे ।

---

1. अश्लीलता के बहाने नारी के प्रश्न पर विचार : मैनेजर पाण्डेय : " हंस " पत्रिका नवम्बर (- दिसम्बर - पृ. 27.

6·1· अस्तित्व के लिए संघर्ष :-

शिवमूर्ति की कहानी " तिरिया चरित्तर " एक निम्न वर्गीय बालिका " विमली " के अस्तित्व के लिए संघर्ष को दर्शाती है। विमली नौ साल की बालिका है। वह पहलीबार ईंट के भट्टे पर ईंट ढोने का काम करती है और अपने बूढ़े माता-पिता की आजीविका का साधन बनती है। विमली का बड़ा भाई विवाह के बाद अपनी पत्नी के साथ माता-पिता को छोड़ कर चला जाता है।

विमली में मेहनत की आग है इसीलिए उसने गाँव की औरतों में सबसे पहले भट्टे पर मजदूरी करने का निर्णय लिया है। विमली अपने माता-पिता को पुत्र का अभाव महसूस होने नहीं देती है। पहले पहल जब विमली के माता-पिता उसे भट्टे पर जाने से रोकते हैं तब वह उनका विरोध करती है।[1] " अपना ही क्यों ? सबका पेट पालेगी वह। भाई भाग गया तो क्या ? वह लड़का बनकर रहेगी नया - नया भट्टा खुला है। गाँव में। काम की अब क्या कमी है ? ··· कौन कहता है कि आदमी लड़के ही काम कर सकते हैं। भट्टे पर ? राँची की मजदूरने औरतें नहीं है ? वे किसी से कम काम करती है ? तब वह क्यों नहीं कर सकती ? कितनीबार तो बुलाने आ चुका है भट्ठे का मुंशी गाँव की औरतों, लड़कियों को वह कल से ही भट्टे पर नाम लिखा देगी ····· जितनी ईंट ढोओ उतना पैसा। ठेके पर।" [1]

1· स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी - महेश दर्पण - पृ· 595·

नारी को अपने व्यक्तिगत जीवन पर अपना पूर्ण अधिकार होता है । वह शोषण के विरुद्ध एवं मानवीय जीवन जीने अतः अस्तित्व के लिए संघर्ष करती है ।

भीष्म साहनी की कहानी "रास्ता" में अस्तित्व के लिए नारी - संघर्ष का चित्रण हुआ है । कहानी की नायिका गोविन्द माँ रुढ़िवादी नारी है अपने प्रेमी द्वारा समय-समय पर शोषण का शिकार होती है उसका प्रेमी ब्राह्मण है । गोविन्द माँ को गर्भवती होते देख उसे छोड़ कर प्रेमी भाग जाता है । गोविन्द माँ उसे खोजने दिल्ली जाती है और वहाँ एक घर में काम करती है ।

गोविन्दमाँ के मालिक का प्रेम सम्बन्ध किसी अन्य स्त्री से होने के कारण मालकिन दुःखी रहती है और मालकिन का भी किसी अन्य पुरुष से प्रेम-सम्बन्ध होता है । प्रतिदिन वह अपने प्रेमी से मिलने जाती है और फोन भी किया करती है । मालकिन को अपने प्रेमी से फोन पर बाते करते देखकर गोविन्दमाँ को आश्चर्य होता है और वह मालकिन से कहती है कि विवाह के बाद स्त्री को परपुरुष से सम्बन्ध शोभा नहीं देता । मालकिन गोविन्द माँ का विरोध करती है "मालकिन उठ बैठी थी और फटी-फटी आंखों से उसकी ओर देखती रही थी फिर सिर झटककर लेट गयी, " मैं क्यों यहाँ पड़ी-पड़ी गलती रहूँ ? वह कर सकता है तो मैं भी कर सकती हूँ । उसे मेरी परवाह

नहीं तो मैं ही क्यों उसकी परवाह करूँ ? पर तू किसी को बताना नहीं । खबरदार जो किसी के आगे मुँह खोला ।"[1]

सदियों से नारी अपने अस्तित्व एवं अस्मिता की पहचान के अभाव में ठगी गई । आज वह अपनी गलती को जान गई है अर्थात् समाज में अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है ।

निरुपमा सेवती की कहानी " चालाक " की नायिका मीरा को पति के कैनाडा चले जाने के बाद पता चलता है कि उसे विवाह के नाम पर ससुरालवालों ने ठगा है । ससुरालवाले मीरा की भावनाओं की कोई कद्र नहीं करते । ससुर अपने घर की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए मीरा को अपने बेटे का मित्र सुनील के साथ बाहर घूमने पर रोक लगाते है उससे कहा जाता है कि उसका पति शीघ्र ही विदेश से लौट आयेगा । जिठानी के इस कथन का मीरा विरोध करती है क्योंकि मीरा अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती है । वह कहती है कि " यह कब से सुन रही हूँ और आसेंगे तो सबसे ज्यादा तो मेरा दुख ही दूर होगा लेकिन इसी आस में अपने को यूँ नहीं खत्म कर सकती मैं यहाँ से चली जाऊँगी ।"[2]

1· पटरियाँ - भीष्म साहनी - 126·

2· निरुपमा सेवती - कच्चे मकान - पृ· 36 - 37·

आज की नारी अतीत की स्मृतियों एवं भविष्य की सुखद आशाओं की कामना लिए अपने महत्त्वपूर्ण वर्तमान को खोना नहीं चाहती क्योंकि वह अपने वर्तमानगत अस्तित्व से न्याय करना चाहती है ।

यथार्थ के धरातल पर नारी का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व होता है । मणिका मोहनी की कहानी " ढाई आखर प्रेम का " कहानी में लेखिका अपनी सहेली के तर्कों द्वारा नारी अस्तित्व की पहचान करवाती है । लेखिका की सहेली के पति एवं बच्चे हैं वह अपने पति की सेवा करती है । पति-पत्नी का सम्बन्ध विच्छेद होता है लेखिका की सहेली का पति सहेली को अपने बच्चों पर अधिकार से वंचित करता है । लेखिका की सहेली बच्चों के प्रति मोह एवं पत्नीत्व का धर्म आदि त्याग कर स्वतन्त्र जीवन जीती है । वह अपने अस्तित्व के महत्व को जानती है । वह लेखिका से कहती है कि " अब हम रोने-धोने में विश्वास नहीं करते । हम का मतलब मैं और तू ।"[1]

नारी का भी मन होता है उसकी अपनी भावनाएँ होती हैं लेखिका अपनी सहेली से कहलवाती है कि " लोग बड़े आराम से जी रहे हैं लोगों को हमारी परवाह है कि हम कैसे जीते हैं, अकेले हम कैसे जी पायेंगे लोगों के पास मन है, क्या हमारे पास मन नहीं है ? लोगों

---

1. अपना - अपना सच : मणिका मोहनी - पृ. 74.

के पास शरीर है क्या हमारे पास शरीर नहीं है ? हमारे मन और शरीर की अपनी-अपनी माँगे नहीं है ।"[1]

नारी सदियों की दासता से मुक्त होने का प्रयत्न करती है वह अपने आप से न्याय करना चाहती है चाहे समाज को उसकी परवाह न हो उसे अपने अस्तित्व की परवाह है ।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में रांगेयराघव की बहुचर्चित कहानी " गदल " मानी जाती है । कहानी की नायिका " गदल " अपने पति की मृत्यु के बाद देवर डोंडी से विवाह की संभावनाएँ रखती है किन्तु डोंडी उससे विवाह न करने के कारण वह नये पति " मौनी " जो जाति का लोहार है उसके यहाँ चली जाती है । गदल परिवार के मोह में बंध कर परिवार की गुलामी करना नहीं चाहती बल्कि वह अपने अस्तित्व के महत्व को जानती है ।

जब डोंडी, गदल से कहता है कि उसका इस तरह पराये आदमी के यहाँ जाना ठीक नहीं है । तब वह डोंडी का विरोध करती है कहती है कि "तूने मुझे पेट के लिए पराई ड्योढ़ी लघाई । चूल्हा मैं तब फूंकू जब मेरा कोई अपना हो । ऐसी बाँदी नहीं हूँ कि मेरी कुनी बजे, औरों के बिछिया झनके । मैं तो पेट तब भरूँगी, जब पेट का

---

1. अपना-अपना सच : मणिका मोहनी - पृ० 78.

मोल कर लूँगी । समझा देवर । तूने तो नहीं कहा तब । अब कुनबे की नाक पर चोट पड़ी, तब सोचा । तब न सोचा, जब तेरी गदल को बहुओं ने आँखें तरेरकर देखा । अरे कौन किसकी परवाह करता है ।" 1

उपेक्षित स्त्री भी साहसी होती है । वह अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए संघर्ष करती है ।

भीष्म साहनी की कहानी "पहचान" की नायिका उपेक्षित नारी है । जिसे दो पुत्रियाँ और एक पुत्र है । यदि उसे कोई सताता है तो वह उसकी शिकायत बड़े अफसरों से करती है । लोग उसके वास्तविक जीवन को पहचान नहीं पाते । यह स्त्री अपनी बड़ी पुत्री का विवाह अपने ही घर पर पत्थर फेंकने वाले शराबी फौजी जमादार से करवाती है । इसने उस जमादार को बेटी के विवाह के एक महीने पहले चिट्ठी लिखकर छटी का दूध याद दिलवाया था । बेटी का कन्यादान लेखक को आमन्त्रित कर, लेखक से करवाती है ।

विवाह के बाद बेटी अपने पति के साथ अम्बाला घूमने आते समय उनके ट्रंक से जेवर चोरी होते है और बेटी तथा दमाद पुलिस में रिपोर्ट करते है । वास्तव में चोरी करनेवाली कहानी की नायिका

---

1. स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी कोश भाग - 2 - महेश दर्पण पृ. 51.

" माँ " ही रहती है । चोरी हुए जेवरों में से दो कड़े फौजी अफसर के घर से बरामद होते हैं फौजी अफसर उल्टे इसी स्त्री पर रिपोर्ट करता है जब इस स्त्री की छोटी बेटी दिल के रोग से बीमार हुई तब वह फौजी अस्पताल में बेटी को दाखिल करवाते समय, दाखिल करवाने की अनुमति न मिलने के कारण वह दो कड़े फौजी अफसर को भेंट करती है ।

यह स्त्री जिस क्वार्टर में रहती है वह क्वार्टर लेखक के घर के समीप रहता है वह अपने छोटे बेटे को उसी घर में छोड़ गई थी और अपने साथ छोटी बेटी को ले गई थी । चोरी के सिलसिले में उसे शहर छोड़ने का हुक्म मिलता है वह शहर छोड देती है किन्तु कुछ दिन बाद लेखक को चिट्ठी लिखवाती है कि उसका छोटा बेटा क्वार्टर में ही है और वह दिल्ली जाना चाहती है । अतः उसके लड़के को दिल्ली की ट्रेन में बिठा दिया जाए । लेखक उसके पुत्र को स्टेशन ले जाता है स्टेशन पर एकी गाड़ी में वही स्त्री बैठी होती है वह लेखक से बातें करती है यह स्त्री कई नामों से जानी जाती रही है वह लेखक से कहती है कि —
" मेरे सात बच्चे थे वीर जी । पाँच को मैं खा चुकी हूँ, मगर इस सबसे छोटे को तो मैं आँच नहीं आने दूँगी । मैं बर्तन मांज लूँगी, मगर इसे छाती से लगाये रखूँगी ।" [1]

1· पहला पाठ - भीष्म साहनी - पृ· 55·

दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी वैचारिक धरातल पर ऐड - जेस्ट होने का प्रयत्न करते हैं किन्तु किसी एक के ऐडजेस्ट होने के अभाव में दोनों में तनाव उत्पन्न होता है ।

राजेन्द्र यादव की कहानी " भविष्य के आस-पास मंडराता अतीत " उपेक्षित नारी के अस्तित्व के लिए संघर्ष को दर्शाती है । कहानी का नायक चरित्रहीन है और विवाह के बाद उसका किसी अन्य स्त्री से शारीरिक सम्बन्ध रहता है । पत्नी उसके दुर्व्यवहार को पाँच वर्ष तक सहती है किन्तु पति उसकी सहनशीलता को नहीं समझ पाता बल्कि पत्नी के स्वभाव पर आरोप लगाता है । पत्नी उसका विरोध करती है वह कहती है कि " सब ठीक है, तुम अपनी उसी हूर को परी के साथ रहो मुझसे और मेरी बेटी से तुम्हें कोई मतलब नहीं, मैं इसे खुद पढ़ा लिखा लूँगी और तुमसे अच्छा पाल लूँगी .... मैं ने तो तुम्हें इतने दिनों निभे या न निभे, फिर मेरे पास आने की जरूरत नहीं है । यह रोने-धोने का सिनेमाई सीन मैं बिलकुल नहीं चाहती मेरी बेटी पर तुम्हारी छाया भी पड़े, यह मुझे अच्छा न लगेगा । फिर यह न हो कि आज बेटी से मिलने चले आ रहे हैं, कल उसकी बर्थ डे पर उपहार भेज रहे हैं और उसे ही पुल बनाकर मुझे कमजोर बनाने की कोशिश कर रहे हैं । समझ लेना, हम दोनों मर गये ..... मैं भी बुलबुल को समझा दूँगी कि तेरे पापा नहीं रहे । बिना बाप के हजारों बच्चे पलते हैं ऐसी भी क्या बात है ..... "।

---

1. अपने पार - राजेन्द्र यादव - पृ. 28.

दाम्पत्य जीवन प्रेम एवं विश्वास पर टिका होता है। महीपसिंह की कहानी "लोग" में अस्तित्व के लिए संघर्ष का चित्रण हुआ है। कहानी का नायक "मदन" प्रेम के अभाव में पत्नी को छोड़कर भाग जाता है। किन्तु पत्नी "नीता" काम-काजी महिला है वह मदन के मित्र से कहती है "मदन का तीन साल से कुछ पता नहीं है। उसका पता था भी तो, वह अपना पता कहाँ देता था। हफ्तों - हफ्तों गायब हो जाना उसके लिए बड़ी बात नहीं थी। तुम्हीं बताओ यदि मेरे पास यह नौकरी न होती, यह बिल्लू न होता तो मैं कहां की रहती ? कहाँ-कहाँ मुझे लाचार न होना पड़ता। एक कोआपरेटिव सोसाइटी में एक फ्लैट मैंने बुक कर लिया है। कल नौकरी छूट भी जाय तो अपने फ्लैट में से एक कमरा "सबलेट" करके दो रोटी तो खाती रहूँगी बिल्लू का भी क्या भरोसा है ? कहीं बड़ा होकर यह भी अपने बाप जैसा निकला तो ..... "।

यहाँ उपेक्षित नारी का अस्तित्व के लिए संघर्ष देखा जा सकता है।

मणिका मोहनी की कहानी "भागीदार" में कहानी की लेखिका कहानी की नायिका अनु की बड़ी बहन है जो साहसी एवं आत्मनिर्भर महिला है वह अस्तित्व के लिए संघर्ष करती है।

---

1. कील : महीप सिंह - पृ. 57.

लेखिका कहानी में अपने पति से सम्बन्ध-विच्छेद होने पर उदास जीवन का आभास अपने माता-पिता को होने नहीं देती -- " माँ-बाप भी बूढ़ा गए थे। उसे तो अपनी जिन्दगी के निर्णय में माँ-बाप के विचारों का प्रत्यक्ष द्वन्द्व नहीं सहना पड़ा था क्योंकि वह आर्थिक रूप से स्वतन्त्र थी और सब कुछ अलग कर लेने के बाद ही उसने मैके में सूचित किया था। अनु की भाँति वह पल-पल की लड़ाइयों का ब्यौरा माँ-बाप को नहीं दिया करती थी। इसीलिए जब पहलीबार माता-पिता उसके अकेले घर आए थे तो उन्हें जैसे विश्वास ही नहीं हुआ था। वह एक तरह से टूट चुकी थी लेकिन घर में कहीं टूटने का आभास नहीं मिलता था जैसे उनका दामाद ऑफिस से शाम तक लौट आएगा। उसने भी मन की व्यथा को चेहरे तक नहीं आने दिया था। अपनी पराजय के दुःख में वह किसी को शामिल नहीं करना चाहती थी। विशेषरूप से उन्हें तो नहीं जिन्होंने उसे जन्म दिया था।" [1]

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में आर्थिक मुक्ति एवं अस्तित्व के लिए कामकाजी स्त्रियों के सफल चित्रण मिलता है। शशिप्रभा शास्त्री की संघर्ष कहानी "क्रोध" पति-पत्नी के सम्बन्ध में अलगाव एवं अस्तित्व के लिए संघर्ष को दर्शाती है। पत्नी के पदवृद्धि एवं प्रतिष्ठा के कारण पति में हीनभाव उत्पन्न होता है। "जो स्त्रियाँ घर पर बैठी रहती हैं, जो अभिभावक या पुरुषों के साथ निरापद घर से बाहर जाती हैं, या अकेले ही मान्य सीमा के अंदर घूम-फिरकर जरूरत पूरी करते

---

1. अपना - अपना सच : मीनाक्षी मोहनी - पृ० 59.

हुए घर लौट आती है, समाज उन्हें भली औरत का दर्जा देता है - इस भद्रता का अतिक्रमण करने पर स्त्री को वेश्या कहकर गाली दी जाती है।"[1]

कहानी की नायिका "उमादेवी" का पति किशोरी बाबू अस्पताल में बीमार रहता है। डाक्टर का कहना यह है कि उसकी अस्वस्थता का एक और कारण यह भी हो सकता है कि किशोरी बाबू के गले की हड्डी के पास एक अजीब तरह की गांठ उगी दिखाई देती है। उमादेवी को घर एवं बाहर का काम से अधिक थकान होती है। पति उससे खुलकर बात न करने के कारण पति-पत्नी में दिन-ब-दिन मानसिक तनाव दोनों बढ़ने लगता है। उमादेवी डाक्टर से कहती है कि -- "डाक्टर आप भी पुरुष है, हो सकता है कि इस प्रकार की औरत से आपके अहं को ठेस पहुँचे पर जरा आप एक स्त्री को दृष्टि में रखकर सोचिये, जिसने पुरुषों की तरह संघर्ष किया है, पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर पुरुषों की तरह जिन्दगी जी है और साथ ही साथ औरत को निभायी है" आगे कहती है " शंक की सीमा इस हद तक बढ़ गयी है कि हर पुरुष अब उनकी निगाह में मेरा यार भी था और पति भी। काश औरत के चरित्र का उन्होंने अंश भर भी अध्ययन किया होता। एक दिन ओवरटाइम की वजह से कुछ असाधारण देर हो जाने के कारण इन्होंने मुझे बुरी तरह धुनक डाला - मैं स्त्री थी कुछ देर सहती रही।

---

1. और मत रखो अंधेरे में, देखने दो मुझे - तस्लीमा नसरीन : "हंस" पत्रिका नवंबर - दिसम्बर - 1994 - पृ. 76.

फिर मैंने भी उल्टे-सीधे हाथ चला डाले । मुझमें ताकत थी, जोश भी फिर पागलपन में इन्सान क्या कुछ नहीं कर बैठता । मेरी चोट इन्हें गहरी ही लगी तन और मन की चोट ? "[1]

मध्यवर्ग में दिखावे की प्रवृत्ति अधिक होती है यह वर्ग उच्चवर्ग के संस्कारों को अपनाने का प्रयत्न करता है किन्तु पूर्णरूप से अपना नहीं पाता ।

चित्रामुद्गल की कहानी "बावजूद इसके" पर यही बात लागू होती है । कहानी की नायिका "प्रीति" मध्यवर्गीय परिवार की महिला है । जिसका पति "गोयल" उच्चवर्ग के संस्कारों को अपनाने का आदी है किन्तु ऐसे संस्कारों को अपना नहीं पाती । पति - पत्नी के विचारों में भिन्नता के कारण दोनों में प्रतिदिन झगड़ा होता है । गोयल गर्भवती प्रीति को पीटकर घायल करता है । प्रीति को गोयल का दुर्व्यवहार असहनीय लगता है वह अपने देवर के साथ माँ के घर चली जाती है वहाँ एक बच्ची को जन्म देती है परन्तु कुछ महीनों बाद बच्ची मर जाती है ।

1· अनुतरित - शशिप्रभा शास्त्री - पृ· 23 - 24·

प्रीती गोयल के पास कभी नहीं जाने का स्वयं निर्णय लेती है। वह आत्मनिर्भर होने के लिए गोल्डन काण्टीनेण्टल में रिसेप्शनिस्ट के पद पर कार्य करती है। किन्तु गोयल उसे नौकरी से निकालने का षड्यन्त्र रचता है किन्तु प्रीती अपनी नौकरी छोड़ना नहीं चाहती वह सोचने लगती है कि " कहाँ-कहाँ से भागेगी। गोयल के लिए नौकरी छोड़ दे? लौट जाये? भैया के लिए करती रहे? द्विवेदी-त्रिवेदी तो हर दफ्तर के केबिन में मौजूद हो सकता है। लड़ाई खुद की है ... फिर? कोई अन्त? कोई अन्त नहीं उसके हिस्से में नहीं तो जूझने की चुनौती क्यों न स्वीकारे? मोहरे सी क्यों इस्तेमाल हो। त्याग पत्र निकालकर उसने चिन्दी-चिन्दी कर डाला।"[1]

रांगेय राघव की कहानी " गदल " की नायिका " गदल " सामाजिक बन्धनों से मुक्त मानवीय जीवन जीना चाहती है वह स्वतन्त्र अस्तित्व के लिए संघर्ष करती है। गदल का पति " गुन्ना " की मृत्यु के बाद पहाड़ी नियमानुसार वह देवर " डोड़ी " से शादी करना चाहती है किन्तु डोड़ी गदल से शादी न करने के कारण नये पति " मौनी " के पास चली जाती है। मौनी से गदल का सम्बन्ध आत्मीय सम्बन्ध रहता है। गदल के जाने के बाद डोडी की गदल की चिन्ता में मृत्यु हो जाती है। डोडी की मृत्यु का समाचार सुनकर गदल अपने घर वापस लौटती है। गदल को वापस जाते देख नया पति मौनी उसे रोकता है किन्तु गदल मौनी का विरोध करती है। वह कहती है कि —

---

1. ग्यारह लम्बी कहानियाँ - चित्रामुद्गल - पृ. 155.

" तू रोकेगा ? अरे, मेरे खास पेट के जाए मुझे रोक न पाए । अब क्या है ? जिसे नीचा दिखाना चाहती थी, वही न रहा और तू मुझे रोकने वाला है कौन ? अपने मन से आई थी, रहूँगी नहीं रहूंगी, कौन तूने मेरा मोल दिया है । इतना बोल तो भी लिया । तू जो होता मेरे उस घर में, तो जीभ कढ़ा लेती तेरी ।" [1]

कहानी की नायिका यह प्रमाणित करती है कि किसी भी पुरुष का चाहे वह पति या देवर रूप में हो नारी पर उसका कोई अधिकार नहीं होता बल्कि उसकी इच्छाओं पर उसका अपना अधिकार होता है । डोंडी को गदल से विवाह करने के लिए समाज का भय है किन्तु गदल पहाड़ी नियमानुसार विवाह के लिए डरती नहीं है । वह नियम के अनुसार अपने जीवन से न्याय की मांग करती है ।

6•2• अस्मिता के लिए संघर्ष :-

समाज में नारी अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष करती है । निम्न वर्ग की स्त्री आर्थिक अभाव के कारण उत्पन्न समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न करती है ।

1• स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी कोश भाग - 2, महेश दर्पण - पृ• 57•

शैलेश मटियानी की कहानी " महाभोज " में निम्नवर्ग की नारी के अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष को दर्शाया गया है । कहानी का नायक चैतीराम है जो धोबी का काम करता है । परिवार में पत्नी " शिवरती " एवं चार बच्चे हैं । शिवरती गर्भिणी है । चैतराम शराबी है । चैतीराम के पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर आये लोगों को देख कर चैतीराम को विश्वास नहीं होता है कि उसके बाप की मृत्यु हुई है क्योंकि शराब के नशे में वह बेहोश सा रहता है । जब उसे होश आता है तब उसे अपनी दयनीय स्थिति का पता चलता है और वह रो पड़ता है । लोग उसके प्रति संवेदना प्रकट करते हैं । आर्थिक अभाव के कारण वह अपनी पत्नी शिवरती से कहता है कि गुड़ की डेली देकर लोगों को विदा करे । शिवरती पति के इस सलाह से क्रोधित होती है । " शिवरती एकाएक आहत सर्पिणी की सी आत्म सन्नद्धता से लैस हो गयी । चैतीराम के घुटे हुए सिर पर उसने अपना कांपता हुआ हाथ रखा तो चूड़ियों का बज उठना चैतीराम को किसी अलौकिक आवाज जैसा लगा । शिवरती की कोमल और कारुणिक आवाज जैसे अब पारे की सी गहरी रेखा में बदल गयी थी । वह कहती गयी । " मोती के बाबा, बाप के मरे का मरोना मुझसे बर्दाश्त न होगा । अरे बेवकूफ, मैं कोई किसी राह चलते की बेलटा हूँ या तुम्हारी घरवाली ? जिस बहुरिया से अपनी घर-गिरस्ती ही न सधी, उसका तो मोरगंज में जा बैठना भला । .... देखो, मेरे पे बीतनी होती, तो सब सुन-सह लेती, मगर लोग तो मुझ औरत जात पर थोड़े ही थूकेंगे ? सभी यही कहेंगे कि देखो, ससुरे

घैतोराम से स्गे बाप का किरिया करम भी ठीक से न किया गया । "
...... मोतो के बाबू अपने पेट का रोना तो जिन्गी भर का लगा
हैगा, मगर बाप तो रोज नहीं मरेगा ना ।" [1]

नारी का अपने व्यक्तिगत जीवन पर पूर्ण अधिकार होता है उसके अपने स्वतन्त्र विचार होते हैं । मुख्यतः नारी संघर्ष अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए किया जाता है । आधुनिक नारी के विचार परम्परागत नारी के विचारों से भिन्न होते हैं क्योंकि आज की नारी अपनी अस्मिता की पहचान कर रही है ।

सुमति अय्यर की कहानी " दो किनारे " में अस्मिता के लिए संघर्ष का चित्रण हुआ है । कहानी की नायिका " अनु " के जीवन में कई प्रेमी आए किन्तु उनका प्रेम मात्र नाटकीय रहा । जब अनु ने उनसे विवाह का प्रस्ताव रखा तब वे समाज के भय से मुकर गये । अब अनु को ऐसे प्रेमियों पर कोई विश्वास नहीं रहा । अनु जान गई कि पुरुष प्रेम का अभिनय करता है और स्त्री उसके लिए विलास का साधन मात्र है । अन्य प्रेमियों की भाँति कुमार भी उसका एक प्रेमी है । परन्तु अनु को उसकी बनावटी बातें अखरने लगती है । वह कुमार की प्रेम भावना के प्रति मात्र कृतज्ञ है । विजय अनु के कॉलेज का साथी है । उसकी आत्मीयता अनु को बेहद अच्छी लगती है । कुमार, अनु से विवाह

---

1. महाभोज - शैलेश मटियानी - पृ. 139.

का प्रस्ताव रखता है किन्तु अनु नापसंद व्यक्ति से विवाह करने के बदले में अकेला जीवन जीना अच्छा समझती है । इसीलिए वह कुमार से काम्प्रोमाइज नहीं कर पाती ।

कुमार का तबादला होता है वह तीन पत्र अनु को लिखता है जिसमें विवाह का प्रस्ताव रखा जाता है । अनु उन पत्रों का कोई जवाब नहीं देती वह सोचती है कि – " कुमार के साथ विवाह के बाद मिलेगा भी क्या ? आज तो उसके साथ क्षणों को काट-काटकर बाँटने में समझौता नहीं कर पाती, पर कल तो जब विचार तक टुकड़े-टुकड़े कर उसे सौंप देने होंगे तो मैं रह ही कहाँ जाऊँगी ? वह जिस स्वतन्त्रता की बात करता है उसमें मेरा व्यक्तित्व शामिल नहीं ? मेरी हत्या के बाद लाश बनकर मैं जी सकूँगी ? उसकी पत्नी बनकर उस दायित्व को निभाने में मुझे इतना उलझ जाना होगा कि मैं अपना व्यक्तित्व भुला दूँगी या मुझे हठात् उसे भुलाना होगा सह सकूँगी मैं यह सब ? शरीर पर वह अधिकार जताए यह बात तो कुछ सीमा तक समझ में आ सकती है पर मेरे स्वतन्त्र व्यक्तित्व पर वह अंकुश लगाए, मैं सह सकूँगी ?"[1]

---

1. घटना चक्र : सुमति अय्यर – पृ. 120-121.

6·3· अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष :-

विवाह से पूर्व नारी माता-पिता के आश्रय में रहती है। परिवार से जुड़ी होने के कारण परिवार के सदस्यों में अपनत्व की भावना पाती है। घर की वस्तुओं पर उसका समान अधिकार होता है किन्तु विवाह के बाद उसे परिवार के सदस्यों की अपनत्व की भावना से उसे वंचित किया जाता है उसे यह सीख दी जाती है कि विवाह के बाद उसका अधिकार ससुरालवालों पर होता है।

मंजुल भगत की कहानी " तीसरा अस्तित्व " की नायिका " कोमिला " की कहानी में यही स्थिति है। विवाह के बाद बदलते जीवन के परिवेश को महसूस करती है उसे अपना अस्तित्व एवं अस्मिता नज़र नहीं आता। वह ससुराल में अड्जस्ट नहीं हो पाती क्योंकि वह घर में एकांत एवं प्राइवेसी चाहती है। ससुरालवालों द्वारा हरकदम टोकना उसे अच्छा नहीं लगता। वह समाज में अलग से अपनी अस्मिता बनाना चाहती है। वह माता-पिता एवं ससुराल वालों द्वारा समाज में सम्बोधित होना नहीं चाहती इसीलिए वह सोचती है कि " ठीक है भई बेटी, आप-घर या पिया, बाप घर। तीसरा दरवाजा खट-खटाया नहीं कि गयी।" यह पीहर भी क्या ससुराल बन जायेगा ? उससे पहले क्या तीसरे दरवाजे का निर्माण मैं स्वयं नहीं कर सकती ? बी·ए· तो हूं। वही जॉब लेकर बरसाती में रह लूंगी। पीहर में और वहाँ ससुराल में अपनी जगह खोजते-खोजते मेरा मस्तिष्क पथराने लगा है। शादी होते

हो यह क्या हो गया ? मुझसे इतनी ढेर सारी नयी अपेक्षाएँ, सबकी क्यों है ? सचमुच मेरे पाँव के नीचे से धरती खिसक गयी है । मेरी अपनी जमीन । यह भी सबकी नजरें तराजू बनती जा रही है । अंतर इतना है कि, मामी-पापा मुझे नहीं स्थिति को तोल रहे है ।"[1]

वेश्याओं में ग्राहकों को लेकर प्रतिस्पर्धा होती है ग्राहक जिस वेश्या के पास जाता है वह वेश्या स्वयं पर गर्व करती है । ग्राहक उसके लिए आजीविका का साधन होता है ।

भीष्म साहनी की कहानी "अभी तो मैं जवान हूँ " में वेश्याओं के बीच प्रतिस्पर्धा एवं ग्राहकों द्वारा शोषण आदि को दर्शाती है । वेश्या ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करती है । यदि कोई ग्राहक उसके समाने से बेकार चला जाता है तो वह नाराज हो जाती है और कोई एक वेश्या ग्राहकों के मार्ग में रुकावट बन बैठती है तो दूसरी वेश्या उसे सहन नहीं करती ।

इस कहानी में एक चमेली नाम की वेश्या का ग्राहक बूढ़ी वेश्या के सिगड़ी के धुएँ से खाँसता हुआ उसके पास से गुजर जाता है । गुजरते ग्राहक को देखकर चमेली, बूढ़ी वेश्या से झगड़ती है वह कहती है कि "... " तू कल से इधर न बैठा कर बस, बोल दिया । आगे कहीं जा के बैठ, नहीं मैं सिगड़ी उठा के फेंक दूँगी ।

---

1. बावन पत्ते और एक जोकर : मंजुल भगत - पृ. 43-44.

-- अरे तू बड़ी आयी हमें यहाँ से हटानेवाली । चुड़ैल कहीं की बुढ़िया बिफरकर बोली, हमने इस कोठरी में चालीस साल काटे हैं आज तेरी कोठरी बन गयी ।

लोग यहाँ भी इकट्ठे होने लगते हैं । तो बुढ़िया की जबान ज्यादा खुलने लगी-हमने हजारों कमाये हैं यहाँ बैठ के । चकले में सारा वक्त हीराबाई, हीराबाई होती थी । तीन-तीन कत्ल हुए हैं हम पर । बड़ी आई हमें उठानेवाली । चुड़ैल की सूरत तो देखो । टके-टके के आदमी आते हैं तेरे पास ।" [1]

फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी "लालपान की बेगम" में कहानी की नायिका बिरजू की माँ की आत्म गौरव का भान होता है अतः अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए नारी संघर्ष को दर्शाया गया है ।

बिरजू की माँ मुहल्ले में गौरवपूर्ण जीवन जीती है । बिरजू का बाप खेती करता है । बालमपुर में मेला लगता है वह अपनी पत्नी से कहता है कि किसी से बैलगाड़ी मांगकर लाएगा और सारेपरिवार को नाच दिखाने ले जाएगा । बिरजू की माँ यह बात मुहल्ले की स्त्रियों को बतलाती है । जंगी की बहू ईर्ष्या भाव से बिरजू की माँ को मुहल्ले में "लालपान की बेगम" और बिजली की बत्ती की तरह झक् झक् जलने - वाली आदि कह कर चिढ़ाती है ।

---

1. पटरियाँ - भीष्म साहनी - पृ. 111.

बिरजू की माँ मन ही मन जंगी की पोतोहू का विरोध करती है। मेले में जाने के लिए बैलगाड़ी का इन्तेजार करती है किन्तु गाड़ी जल्दी न आने के कारण उसे जंगी की पतोहू की बातें मन में चुभने लगती है। झक-झक बिजली की बत्ती, उसके मन में द्वन्द्व चलने लगता है। जब बिरजू का बाप बैलगाड़ी लेकर आता है तब वह प्रसन्न होती है और जल्दी से तैयार होती है। गाड़ी में बैठ कर मुहल्ले से गुजरते समय जंगी की पतोहू की रोती आवाज सुनकर उसे भी गाड़ी में बुला कर बैठाती है और पड़ोसी स्त्रियों को भी बैलगाड़ी में बैठाती है वह अपनी महत्व को मुहल्ले की स्त्रियों को दिखाती है। चम्पिया को बैइस्कोप का गाना गाने के लिए कहती है। "बिरजू की माँ ने जंगी की पतोहू की ओर देखा धीरे-धीरे गुनगुना रही वह भी। कितनी प्यारी पतोहू है। म गौने की साड़ी से एक खास किस्म की गन्ध निकलती है। ठीक ही तो कहा है ? उसने ? बिरजू की माँ "लालपान की बेगम है" लालपान की बेगम। यह तो कोई बुरी बात नहीं। हाँ वह सचमुच लालपान की बेगम है।

बिरजू की माँ ने अपनी नाक पर दोनों आँखों को केन्द्रित करने की चेष्टा करके अपने रूप की झाँकी ली, लाल साड़ी की झिलमिल किनारी माँग टिकवा पर चाँद। ...... बिरजू की माँ के मन में अब कोई लालसा नहीं।"[1] बिरजू की माँ को आत्मगौरव का भान होता है।

1· मेरी प्रिय कहानियाँ - फणीश्वरनाथ रेणु - पृ· 67·

पति-पत्नी का सम्बन्ध पारिवारिक सम्बन्ध होता है अधिकांशतः पत्नी की भावनाओं को महत्व नहीं दिया जाता है बल्कि उसे चार दीवारी में कैद किया जाता है । पत्नी की इच्छाओं के दमन की एक सीमा होती है जब वह सीमा लांघ जाती है तो अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करती है ।

विवाह के बाद दम्पती के बीच शारीरिक सम्बन्ध आधार भूत होता है । श्री नरेश मेहता की कहानी " ओबार रैसी " उच्च वर्गीय संस्कारों से उबी महिला के अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष को लेकर चलती है । कहानी की नायिका कल्याणी है । कल्याणी का विवाह से पूर्व एक लेखक से प्रेम सम्बन्ध रहता है । चालीस वर्ष की आयु में पति-पत्नी के सम्बन्धों में ठण्डापन तथा संतान को आत्मनिर्भर होने आदि को देखकर कल्याणी नौकरी की तलाश में निकलती है । " ओबार " जाते समय पड़ाव में वह अपने प्रेमी [लेखक] के घर पर रूकती है । नौकरी की तलाश में लेखक द्वारा किए गए प्रश्नों का उत्तर कल्याणी देती है । " क्यों क्या ? बच्चे बड़े होकर अपने-अपने काम में लग गये । इतने लम्बे दाम्पत्य के बाद सभी जानते हैं कि पति-पत्नी में आकर्षण रह ही नहीं सकता तब क्या हो, मुझे लगा कि सम्पन्न वर्ग की महिलाओं की सबसे बड़ी समस्या उनका खाली समय ही है । श्रृंगार प्रसाधन हो गया । पार्टियों में हा-हूं कर लिया - उसके बाद ? और क्या रोज-रोज इस सबसे जी नहीं घबरा उठेगा । एक सीमा के बाद इन सबसे मन भी तो वितृष्ण हो जाता है । गहनों कपड़े-लत्ता, मार्केटिंग को लेकर कोई कितना माथा फोड़े । सवाल तो यह है कि उसके बाद क्या ? हैसियत-

टेबुल के सामने एक बार खड़े रहो तो वही बात और दस बार देखो तो वही बात । नाक, नाक ही रहेगी, आंखों को खींचकर तो बढ़ाया नहीं जा सकता और फिर हो गया जो होना था । आखिर कब तक ? पुरुष तो अपने काम-काज में बड़ा [व्यस्त] रहता है इष्ट मित्र है । बाहर थोड़ा बौद्धिक वातावरण मिल ही जाता है । पर स्त्री क्या करे ? वही की वही मिलनेवालियाँ है । किसर ही से देखों मिसेज कपूर, मिसेज कपूर ही रहेगी । श्रीमती साहनी को मरने के दिन तक अपने पद्मनी होने का गुमान कम तो होने से रहा । मुसीबत तो उसकी है न जो इस विषमता को समझती है, ऐसी मनःस्थिति वाले को ही खालीपन लगता है ।" 1

6.4. मृत्यु और जीवन दोनों छोरो से जुड़ा संघर्ष :-

सदियों से स्त्री पुरुष पर निर्भर होने के कारण उसके जीवन पर निरन्तर अंकुश बना रहा । उसके जीवन का निर्णय सदैव पुरुष ही रहा ।

कृष्णा सोबती की बहुचर्चित कहानी " ऐ लड़की " भारतीय परम्परागत नारी के जीवन -संघर्ष को दर्शाती है । इस कहानी में दो पीढ़ियों का सीधा संवाद है । जिसमें पुरानी पीढ़ी की स्त्री नयी पीढ़ी

---

1. जलसाघर - श्री नरेश मेहता - पृ. 74.

की युवती को समाज में अपने अस्तित्व एवं अस्मिता की पहचान के लिए सचेत करती है । "मोटे तौर पर यह कहानी देखा जाय तो दो पीढ़ियों का सीधा संवाद है । बूढ़ी अम्मी जिस तरह बात-बेबात पर अपनी सेविका को "ऐ लड़की" कह कर बुलाती है । दरअसल उसके बुलाने में ही नयी पीढ़ी की स्त्री की गाथा को सुन रही है । यह गाथा उसके जीवन संघर्ष की अकेली गाथा नहीं है । पुरानी पीढ़ी की हर औसत भारतीय स्त्री की गाथा है, जो एक भरे पूरे परिवार की देखभाल में अपना पूरा जीवन गंवा देती है । अंत में उसके पास सिर्फ बचता है - दादी माँ का संबोधन । उस स्त्री को जीवन भर किसी के माध्यम से जाना जाता है वह किसी की पत्नी होती है, किसी की प्रेमिका, किसी की माँ, किसी की दादी । वह खुद क्या है ? वह क्या पाना चाहती है, क्या बनना चाहती है वह अपरिभाषित रह जाता है । यह कहानी बड़े जागरूक ढंग से भारतीय स्त्री की पहचान को रेखांकित करने के लिए इशारा करती है । वह खुद तो पहचानी न जा सकी । पर उसकी आखिरी इच्छा है कि उसकी सेवा करती लड़की की "आइडेंटिटी समाज के पुरुषों के तरह अलग हो । वह खुद से जानी और पहचानी जाय इसके लिए उसे अपने पति के नेम प्लेट" की जरूरत न पड़े ।"[1]

---

1. "साक्षात्कार" जून 1993 पुस्तक समीक्षा - ऐ लड़की / लम्बी कहानी / कृष्णा सोबती - पृ. 99.

इस कहानी में बूढ़ी स्त्री का बिमार होना एक माध्यम है । शारीरिक रूप से कहानी में उसे रोग से पीड़ित दिखाया गया है किन्तु मानसिक रूप से भी वह सम्पूर्ण नारी जाति की पीड़ा को व्यक्त करती है अतः वह नयी पीढ़ी को अपना अस्तित्व एवं अस्मिता बनाये रखने के लिए जागृत करती है । " असल में यह कहानी एक बूढ़ी स्त्री के बहाने भारतीय स्त्री के समग्र जीवन की गाथा है, जिसमें उसका पूरा संघर्ष बहुत कारगर तरीके से उजागर हुआ है । यह संघर्ष मृत्यु और जीवन दोनों के संघर्ष छोरों से जुड़ा हुआ है इसलिए यह मृत्यु बोध से जीवन के पलायन की कहानी नहीं है । बूढ़ी स्त्री को जितना प्रिय जीवन है उतनी ही प्रिय मृत्यु भी । रोग से घिर जाना और उसका असाध्य हो जाना तो एक माध्यम भर है । इस कहानी की मुख्य चुनौती है जीवन को प्यार करने के साथ-साथ मृत्यु की महाचुनौती को जीवन की तरह प्यार करना ।" [1]

इस कहानी में मृत्यु का भय एवं हाहाकार परिलक्षित नहीं होता बल्कि मृत्यु एवं जीवन का सामना साहस के साथ बुढ़िया का करना व्यक्त होता है । कहानी में एक स्थान पर बुढ़िया कहती है कि --
" मेरी देहरी की सांकल तो खुल चुकी । दरवाजे पर खटखट हुई नहीं कि मैं बाहर । मगर, सुन लड़की, मैं मजबूती से अड़ी हूं । रोग-बीमारी मनुष्य के बड़े दुश्मन है .... अपने तन-मन तक को नजदीकी धाक कर डालते है । देह की अपनी गंध तक बाकी नहीं । दवाइयाँ

---

1. " साक्षात्कार " जून 1993 - पुस्तक समीक्षा / ऐ लड़की / लम्बी कहानी कृष्णा सोबती - अरविंद त्रिपाठी - पृ. 98.

धुन में धुल जाती है तो बदन ठंडा हो जाता है । सिर पर जाने क्या चढ़ा पड़ा है ।"[1]

इस कहानी में मृत्यु और जीवन दोनों के संघर्ष छोरों से जुड़ा संघर्ष देखा जा सकता है । "ऐ लड़की कहानी की मरणा सन्न - प्रौढ़ा एक दरम्याने किस्म की औरत है जिसने अपनी दरम्यानी ढब की जिन्दगी से, दरम्याने ढंग के निष्कर्ष निकाले है रोग शैय्या पर निष्क्रिय पड़ जाने पर, वह एक-एक करके उन्हें अपनी अविवाहित अकेली, कामकाजी बेटी को थमाती है, स्त्री-पुरुष संबंध पर, नर-नारी प्रकृति की विषमता पर, ब्याह-शादी की अनिवार्यता पर, औरत के "अपने" परिवार के शाश्वत मोह पर, उसके तमाम निष्कर्ष, समाज में रची बसी, पोकन्नी, दुनियादार, सलीकेदार औरत के निष्कर्ष है उन सबको नकारती हुई, उसकी बेटी साक्षात सामने है बहस की जरूरत नहीं है, उसका होना काफी है, दो ध्रुवों पर जीने वाली से दो औरतें, माँ-बेटी होने के कारण, एक-दूसरे को झेलती है, बेटी माँ के अंतिम दिनों को आराम देह बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ती एकदम भौतिक स्तर पर वे दोस्त भी बनी रहती है । स्वादिष्ट खाने-पीने की जिजीविषा उन्हें अंत तक, जब से साथ बैठकर जिन का पैग पीती है, जोड़े रखती है ।"[2]

1· ऐ लड़की : कृष्णा सोबती : पृ· 8·

2· आधुनिक हिन्दी कहानी : नारी चेतना, मई - आलोचना : मृदुला गर्ग : "हंस" पत्रिका मई 1993 - पृ· 34·

6.5. निष्कर्ष :-

संघर्ष समाज सापेक्ष होता है । समाज में नारी अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष करती है उसे सदियों से देवी या दासी की प्रतिष्ठा प्राप्त हुई । मानवीय अस्तित्व के अभाव में निरन्तर शोषण का शिकार होती रही । समाज की सारी वर्जनाएँ सिर्फ उसे बाँधती रही उसका अपना स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं रहा । उसकी सहनशीलता की उपमा धरती से दी गयी तथा उसे त्याग की मूर्ति भी कहा गया यह सब मात्र छलाव रहा है ।

आधुनिक नारी अपने अस्तित्व एवं अस्मिता की पहचान करने लगी । समाज में वह भी एक इन्सान की भाँति जीवन जीना चाहती है और उसका संसार की हर नेमत पर पूर्ण अधिकार है जिसके लिए वह संघर्ष कर रही है ।

समाज में पुरुष को " पति " याने स्वामी तथा नारी को " कन्या " याने हीनता के भाव से परिभाषित कर उसे वस्तु के रूप में देखने की दृष्टि रही है । स्वतन्त्रता के बाद नारी के मन में यह प्रश्न उठा कि मैं क्या हूँ, तथा क्या होना चाहिए यहीं उसकी अस्तित्व एवं अस्मिता की पहचान की चेतना रही है । स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के अस्तित्व एवं अस्मिता से सम्बन्धित विभिन्न संघर्ष के रूपों का चित्रण मिलता है । आर्थिक अभाव के कारण निम्नवर्ग की बालिका का परिवार के पोषण के लिए श्रम करना अस्तित्व के लिए संघर्ष करना है ।

नारी में मेहनत की आग होती है आज की नारी ने परिवार में पुत्र के प्रति मोह को तोड़ दिया है । नारी को अपनी इच्छानुसार जीवन जीने का पूर्ण अधिकार होता है । आज की उपेक्षित नारी को पतिव्रता जैसे शब्द पर विश्वास नहीं रहा वह परम्परागत रूढ़िवादी उपेक्षित नारी की भाँति इच्छाओं का दमन कर अपने जीवन को सड़ाना नहीं चाहती है । क्योंकि आगे वह छलना नहीं चाहती है । अतः वह अतीत की स्मृतियों एवं भविष्य की सुखद आशाओं की कामना किए अपने महत्वपूर्ण वर्तमान को खोना नहीं चाहती क्योंकि वह अपने वर्तमानगत अस्तित्व से न्याय करना चाहती है । परिवार द्वारा शोषण के कारण नारी का अब परिवार पर मोह नहीं रहा क्योंकि वह अपने अस्तित्व की परवाह करने लगी ।

नारी का समाज में गौरवपूर्ण अस्तित्व होता है । वह साहसी होती है । दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी का वैचारिक धरातल पर एडजेस्टमेन्ट होना अनिवार्य होता है और वह प्रेम तथा विश्वास पर टिका होता है ।

आत्मनिर्भर नारी अपने पति के अभाव में भी साहसपूर्ण जीवन जीती है जिस नारी पर पुरुष का अंकुश बना रहता है उसे पतिव्रता कहा जाता है और जो अतिक्रमण करती है उसे वेश्या कहा जाता है । मध्यवर्ग में दिखावे की प्रवृत्ति अधिक होती है वह वर्ग उच्चवर्ग के संस्कारों को अपनाने का प्रयत्न करता है किन्तु पूर्णरूप से नहीं अपना पाता परिणामतः परिवार में संघर्ष आरम्भ होता है ।

नारी सामाजिक नियमानुसार न्याय की मांग करती है उसकी परिवार एवं समाज में गौरवपूर्ण अस्मिता होती है जिसके लिए वह संघर्ष करती है । विवाह के बाद नारी को अपने माता-पिता और ससुरालवालों के घर अपना कोई वास्तविक अस्तित्व नजर नहीं आता अत: वह तीसरे अस्तित्व की खोज में मूक संघर्ष करती है । नारी प्रेम में नाटकीयता के विरुद्ध भी संघर्ष करती है ।

वेश्याओं में ग्राहकों को लेकर प्रतिस्पर्धा होती है उसके लिए ग्राहक आजीविका का साधन के साथ गर्व का कारण भी होता है । ग्रामीण महिला भी गौरवपूर्ण जीवन जीने के लिए संघर्ष करती है । उच्चवर्गीय संस्कारों की महिला उन संस्कारों से ऊबने पर अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष करती है । आज की नारी अपने जीवन में संघर्ष कर रही है और साथ ही नयी पीढी को अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष करने को संकेत कर रही है ।

:=-:=-:=-:=-:- x/"x/"x/"x/"x/"x/" :=-:=-:=-:=-:=-:=-

सप्तम- अध्याय

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी संघर्ष रचनाकार के रूप में

:=-:=-:=-:=-:=- :=-:=-:=-:=-:=-:=-:- x/"x/"x/"x/"x/"x/"

7·0· स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी संघर्ष रचनाकार के रूप में

7·1· हिन्दी कहानी और स्त्री रचनाकार :-

स्वतन्त्रता से पूर्व अर्थात् 19 वी शताब्दी से पूर्व कथा रूपों में कथा, आख्यायिका, गाथा, आख्यान वृतान्त आदि मिलते है । ये आधुनिक कहानी के प्राचीन पर्याय है जिन्हें कहानी नहीं कहा जा सकता किन्तु जिनमें कहानी के तत्व और लक्षण मिलते है । आधुनिक कहानी का वास्तविक रूप 19 वी शताब्दी में विकसित एवं पुष्ट हुआ ।

राजेन्द्र बाला घोष की कहानी " दुलाईवाली " को कुछ विद्वान आधुनिक हिन्दी कहानी की पहली कहानी मानते है । यह कहानी पहली बार मई 1907 में " सरस्वती " पत्रिका के अंक 5 में छपी जिसमें लेखिका ने अपने नाम के स्थान पर एक बंग महिला रखा । अत: उस समय के परिवेश के दबाव के कारण एक नारी का रचनाकार के रूप में कहानी के क्षेत्र में प्रवेश करना साहस का काम रहा ।

देश की आज़ादी के लिए नारी ने पुरूष के कदम से कदम मिलायी । विभिन्न आन्दोलनों में भाग लेकर पुरूषों का साथ दिया । स्वतन्त्रता से पूर्व कुछ लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से भारतीयों को देश के संघर्ष के लिए जागृत किया और जेल भी गयी ।

प्रमुख रूप से इस काल में हिन्दी साहित्य में सुभद्रा कुमारी चौहान का महत्वपूर्ण योगदान रहा । इनका प्रथम कहानी संग्रह " बिखरे मोती " है । " बिखरे मोती " का भी उनके कविता-संग्रह " मुकुल " की भाँति हिन्दी संसार ने मुक्त हृदय से स्वागत किया । घरेलू जीवन की अंतरंग झाँकिया और अपने व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा के लिये व्यग्र स्त्री की छटपटाहट, पहलीबार किसी स्त्री की लेखनी द्वारा व्यक्त की गयी । यह नहीं कि पुरूष लेखक उन भावों को व्यक्त नहीं करते थे या बहुत से सहृदय लेखकों ने, स्त्री शिक्षा के लिए पर्दे की बुराइयों को बतलाते हुए और स्त्री के मानवोचित अधिकारों के लिए अपने लेखन द्वारा संघर्ष नहीं किया । इस दशा में पुरूषों का योगदान बहुत बड़ा है लेकिन किसी लेखिका द्वारा लिखे जाने वाले इन भावनाओं में जैसे सच्चाई का एक

और ठप्पा लग जाता है । अपने परिवार में और समाज में प्रचलित रूढ़ियों से लड़ने में और अपने व्यक्ति-स्वातन्त्र्य के लिये लड़ने में उसे कितने स्तर के और कैसे-कैसे युद्ध कौशल से काम लेना पड़ा है इसे कोई भुक्त-भोगी कहे तो उस संघर्ष की कथा, और यदि उसमें उसकी हार भी हुई है तो वह वर्णन भी एक अनुकूल वातावरण तैयार करने में समर्थ होता है ।" [1]

सुभद्रा कुमारी चौहान के कहानी संग्रह " बिखरे मोती ", " उन्मादिनी " तथा " सीधे-सादे चित्र " है । सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम हिन्दी साहित्य में महादेवी वर्मा के साथ लिया जाता जाता है ।

महादेवी वर्मा ने कहानियों से भी अधिक आकर्षक संस्मरणात्मक रेखा-चित्र और निबन्ध लिखे है उन्हें पढ़कर यह सिद्ध होता है कि पद्य के समान ही गद्य पर भी इनका गहन अधिकार था । इनके संस्मरणात्मक रेखा चित्र है -- " अतीत के चल चित्र ", " रेखा चित्र ", स्मृति की " रेखाऐं " " पंथ के साथी "

शृंखला की कड़ियों में महादेवी वर्मा ने भारतीय नारी की समस्याओं का विवेचन किया है । जिसमें उन्होंने कहा है कि नारी में नारीत्व की सजग चेतना का जागरण जरूरी है ।

---

1. सुभद्रा कुमारी चौहान की जीवनी : सुधा चौहान - पृ. 38.

स्वतन्त्रता से पूर्व रचनाकारों के अन्तर्गत उमा नेहरू, शिवरानी देवी, उषा देवी मित्रा, सत्यवती मलिक, होमवती देवी, तारा पाण्डेय, रत्न कुमारी, चन्द्रकिरण, सौन रिक्सा आदि स्त्री रचनाकारों का भी हिन्दी साहित्य में योगदान रहा। इन्हें कथा साहित्य में पहली पीढ़ी के अन्तर्गत रखा गया है।

इनकी कहानियों में आदर्श का पुट अधिक मिलता है। कुल मिलाकर यदि कहा जाए तो इस काल की नारी, पुरुषों से साहित्य सेवा में विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा, अध्ययन की सीमाएं, कार्यक्षेत्र में व्यापकता के अभाव, पारिवारिक उत्तरदायित्वों, समाज और परिवार के विरोध एवं वांछित प्रोत्साहन की कमी के कारण महिला लेखिकायें उतनी सक्षम नहीं हो पायी। साथ ही मातृत्व तथा आर्थिक विषमतायें भी उनकी प्रतिभा में रुकावट बनी।

स्वतन्त्रता के बाद कथाकार की दुनिया सर्वथा एक नयी दुनिया थी। नारी लेखिकायें स्वतन्त्र रूप से लेखन करने लगी। उनने पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं के हल के लिए अपने लेखन में विभिन्न पहलुओं के स्पांकन में उपेक्षित सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि को पकड़ा है। नारी होने के नाते नारी की विभिन्न परिस्थितियों को यथार्थ परख स्वर दिया है। इनमें मुख्य रूप से निम्न प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है " पूंजीवादी शोषण की निन्दा, पीड़ित वर्गों के प्रति संवेदना, वर्तमान सभ्यता में निहित विकृतियों का व्यंग्यपूर्ण अन्वेषण, समाज सुधार की आकांक्षा से परम्परागत रूढ़ियों पर प्रहार,

शोषित नारी वर्ग के उत्थान की अकुलाहट, प्राकृतिक एवं मानसिक वातावरण का सूक्ष्म चित्रण, व्यक्तिगत चरित्र स्खलनों एवं यौन विकृतियों का यथार्थपरक विश्लेषण, शरणार्थी समस्या, साम्प्रदायिक वैमनस्य, बेकारी, मंहगाई जैसी समसामयिक राजनैतिक समस्याओं का स्वतन्त्र निरूपण अथवा प्रासंगिक उल्लेख ।" [1]

स्वतन्त्रता के बाद स्त्री रचनाकारों की आज तक दो और पीढ़ियाँ आ चुकी है । जिन्हें दूसरी तथा तीसरी पीढ़ी के स्त्री रचनाकार कहा गया है । जिनमें निम्न स्त्री रचनाकार आते है ।

शशि प्रभा शास्त्री :-

शशि प्रभा शास्त्री का कहानी क्षेत्र में प्रवेश विवाहोपरान्त 1956 से हुआ । इनकी प्रथम कहानी " इला " सरिता में प्रकाशित हुई । " धुली हुई शाम ", दो कहानियों के बीच ", " अनुत्तरित " आदि कहानी संग्रह है । इनकी कहानियों का मुख्य विषय सामाजिक मनोवैज्ञानिक समस्याओं का चित्रण है ।

---

1. स्वतन्त्र्योत्तर कथा - लेखिकाएं : उर्मिला गुप्ता - पृ. 362.

प्रतिमा वर्मा :-

प्रतिमा वर्मा की प्रथम कहानी " मधचंद दानी " 1957 में कहानी पत्रिका में प्रकाशित हुई । इनकी कहानियाँ महत्वपूर्ण पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई इनके कहानी संग्रह है । धूपछूप साया साया, छोटे पांव का सफर " ।

श्रीमती विजय चौहान :-

श्रीमती विजय चौहान स्वतन्त्रता सेनानी थीं । ये विद्यार्थी जीवन में 1942 ई॰ में भारत छोडो आन्दोलन के संदर्भ में जेल गई । इनके कहानी संग्रह " एक बुतशिकन का जन्म एवं धर्म क्षेत्र है इनकी कहानियों में मुख्यरूप से निराशा, व्यक्ति के अवमूल्यन के साथ-साथ युद्ध विरोधी-कहानियाँ भी मिलती है ।

कृष्णा अग्निहोत्री :-

कृष्णा अग्निहोत्री की प्रथम कहानी " साक्षी " और " मानव जग उठा " धर्मयुग में 1960 में प्रकाशित हुई । इनके कहानी संग्रह है " टिन के घेरे ", " गलियारे ", " विरासत ", " नपुंसक ", " जिन्दा आदमी " है । इनकी कहानियों में नवीन पनपती परि - स्थितियाँ तथा उनकी अर्थवत्ता को स्पष्ट किया गया है ।

मणिका मोहिनी की प्रथम प्रकाशित कहानी " धूप के दायरे में " ज्ञानोदय 1962 में प्रकाशित हुई इनके कहानी संग्रह हैं " खत्म होने के बाद " अभी तलाश जारी है, " अभिशंस ", " पारू ने कहा था " तथा अपना अपना रूप " । इनकी कहानियों में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को विशेष समझदारी और गहराई से स्पर्शाया गया है । जीवन संघर्ष अभाव एवं बौद्धिकता उनके कथ्य का अभिन्न अंग है । इनकी कहानियों में भावुकता से बचने का प्रयत्न, सम्बन्धों के टूटने का तटस्थ चित्रण मिलता है ।

मेहरुन्निसा परवेज :-

इनकी प्रथम प्रसिद्ध कहानी " पाँचवी कब्र " नई कहानियाँ " अक्टूबर 1963 में प्रकाशित हुई । " आदम और हव्वा ", " गलत पुरुष " " आकाशनील, " अन्तिम चढ़ाई ", " धूम के अहसास " तथा " फाल्गुनी " " टहनियों पर धूप " इनके कहानी संग्रह हैं । इनकी कहानियों में मध्यवर्ग एवं मुख्यत: निम्नवर्ग के असाधारणगत जीवन-संघर्ष का चित्रण और उसमें आंचलिकता का पुट मिलता है ।

शिवानी :-

ये कहानी क्षेत्र में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से प्रविष्ट हुई। पहले ये गौरा पंत को नाम से लिखती थी। बाद में शिवानी नाम से ही साहित्य क्षेत्र में प्रतिष्ठित हुई। इनके कहानी संग्रह " रति विलाप ", लाल हवेली, " करिमा छिमा ", " स्वयं सिद्ध ", लाल हवेली, " करिमा छिमा " " स्वयं सिद्ध ", " पुष्पहार ", " अपराधिनी ", " पुतोवाली " , " गेंदा, रथ्या, मेरी प्रिय कहानियाँ आदि है। हिन्दी में इनकी अलग पहचान का कारण आधुनिक युग में जीवन यथार्थ को रूमानी प्रेम-सौन्दर्य से आप्लावित करने से है।

ममता कालिया :-

ममता कालिया की प्रथम उल्लेखनीय कहानी "यों ही मर जाऊंगे " "ज्ञानोदय " जनवरी 1964 में प्रकाशित हुई। इनके कहानी संग्रह है " छुटकारा ", एक अदद औरत " सीट नं. छह, " प्रतिदिन "। व्यंग्य और करुणा के सहारे युगीन अन्तर्विरोधों को समर्थ और चुटीली भाषा द्वारा अभिव्यक्ति मिली है।

नमिता सिंह :-

नमिता सिंह की कहानियाँ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी है । इनका कहानी संग्रह है " नाले पार का आदमी " ।

निरुपमा सेवती :-

इनकी प्रथम कहानी " निरावरण " कहानी पत्रिका में जुलाई 1968 में प्रकाशित हुई । इनके कहानी संग्रह " खामोशी को पीते हुए ", " आतंक बीज ", " काले खरगोश " , " कच्चे मकान " एवं " भाड़ में गम " है । इनकी कहानियों में यन्त्रणा, संत्रास एवं तनाव से मुक्त होने की इच्छा एवं अस्तित्व की तलाश का सार्थक प्रयास मिलता है ।

सिम्मी हर्षिता :-

सिम्मी हर्षिता की प्रथम कहानी " अपने अपने दायरे " संचेतना जून 1969 में प्रकाशित हुई । इनके कहानी संग्रह " कमरे में बंद आभास " तथा " धराशयी " । इनके लिए कहानी लिखना एक गम्भीर खेल लड़ना है ।

मृदुला गर्ग :-

मृदुला गर्ग की कहानी " कितनी कैद " कहानी पत्रिका 1972 मे प्रकाशित हुई जिस पर श्रेष्ठ पुरस्कार मिला इनके कहानी संग्रह है " कितनी कैद ", " टुकड़ा-टुकड़ा आदमी ", " डैफोडिल जल रहे है ", " उर्फ सैम " इन्होंने अपनी कहानियों में विशेषकर यौन, प्रश्नों, कुण्ठाओं तथा नारी की मानसिकता की भिन्न स्थितियों को नैसर्गिक रूप में उठाया है ।

सूर्यबाला :-

सूर्यबाला की प्रथम कहानी " जीजी " अक्टूबर 1972 में सारिका में प्रकाशित हुई । इनके कहानी संग्रह है " एक इन्द्र धनुष जुबदा के नाम " तथा " दिशाहीन ", " थाली भर चाँद " जीवन के हर पहलू को भिन्न दृष्टिकोणों से पकड़ने का अभिव्यक्ति कौशल लेखिका में है ।

मन्नू भण्डारी :-

मन्नू भण्डारी ने परम्परागत रूढ़ियों से मुक्त नूतन शैली के साथ रचनायें लिखा है । इनके कहानी संग्रह " मैं हार गई ", त्रिशंकु और अन्य कहानियाँ, "यही सच है ", मेरी प्रिय श्रेष्ठ कहानियाँ आदि है ।

उषा प्रियंवदा :-

उषा प्रियंवदा की कहानियों की विशेषता कल्पना पर यथार्थ आग्रह है । व्यक्ति की सुन्दर कल्पनाऐं जीवन के यथार्थ की कठोर शिला से टकराकर चूर चूर हो जाती है तो वह दु:खी हो जाता है जिसके कारण उसमें कुण्ठा, पीड़ाओं, आकांक्षाओं में उसका जीवन आकस्मिक परिवर्तित हो जाता है जिसका चित्रण इनकी कहानियों में मिलता है । इनके कहानी संग्रह " जिन्दगी और गुलाब के फूल ", " कितना बड़ा झूठ ", " एक कोई दूसरा और अन्य कहानियाँ ।"

कृष्णा सोबती :-

कृष्णा सोबती कम लिखने को अपना साहित्यिक परिचय मानती है और यही इनके परिचय की विशिष्टता भी है । इनकी दृष्टि में " कम लिखना " दरअसल विशिष्ट लिखना " है । इनके कहानी संग्रह है " बादलों के घेरे ", यारो के यार तिन पहाड़ (लम्बी कहानी) " मित्रो मरजानी " (लम्बी कहानी), " ऐ लड़की ", " यारों के यार " दफ्तरी जीवन और बाह्य यथार्थ के अनेकानेक रहस्यों को खोलनेवाली लघुउपन्यासनुमा कहानी है । ये प्रेम क्षेत्र में रोमांटिक बोध से आधुनिक बोध की ओर तथा आत्मीयता से शारीरिकता की ओर गई है । व्यंग्य और आक्रोश चित्रण उनकी विशेषता है ।

राजी सेठ :-

राजी सेठ की प्रथम कहानी " समान्तर चलते हुए ", प्रतीक 1974 में प्रकाशित हुई । इनके कहानी संग्रह " अन्धे मोड़ से आगे " तथा " तीसरी हथेली ", " यात्रा मुक्त " है । लेखिका साहित्य का सम्बन्ध अपने अस्तित्व से मानती है ।

चित्रा मुद्गल :-

इनके कहानी संग्रह है " आपनी वापसी ", " इस हमाम में ", " ग्यारह लम्बी कहानियाँ " ।

मंजुल भगत :-

मंजुल भगत के कहानी संग्रह है " गुलमोहरे के गुच्छे " (लघु कहानियाँ), " बावन पत्ते और एक जोकर ", " कितना छोटा " " सफर ", " सफेद कौवा " ।

दीप्ति खण्डेलवाल :-

दीप्ति खण्डेलवाल के कहानी संग्रह है - " सलीब पर ", " दोपहर की छांह ", "वह तीसरा ", " औरत और नारी ", " कोहरे " ।

मालती जोशी :-

मालती जोशी के कहानी संग्रह है " एक घर सपनों का, विश्वास गाथा " । इनकी कहानियाँ जीवन के यथार्थ को दर्शाती है । कहानी के पात्र इर्द-गिर्द के ही होते है ।

सुमति अय्यर :-

सुमती अय्यर का कहानी संग्रह " घटना चक्र " है ।

नासिरा शर्मा :-

इनका कहानी संग्रह " किस्सा जाम का है " ।

अमृता प्रीतम :-

ये पंजाबी कहानीकार है किन्तु इनकी कहानियाँ हिन्दी में अनुदित है । इनके कहानी संग्रह - " एक छोटी जगह ", " एक लड़की एक शाप ", मेरी प्रिय कहानियाँ ", ﹙" तत्र कहानियाँ ", " अमृता प्रीतम की कहानियाँ " ।

प्रभा खेतान :-

प्रभा खेतान की कहानियाँ " आओ पेपे घर चले " ﹙लम्बी कहानी ﹚ तथा " तालाबन्दी " मिलते है ।

अन्य कहानीकार मृणाल पाण्डेय, सरयूशर्मा, कुसुम अन्सल, इस्मत चुगताई, कमला सिंघवी, मटो, प्रमिला कपूर, सुधा अरोड़ा, विनीता पल्लवी, अलका सरावगी आदि उल्लेखनीय है ।

7.2. महिला कहानीकार का प्रमुख विषय बिन्दु और समस्यायें :-

स्वतन्त्रता के पश्चात् कहानीकारों ने कहानियों में व्यक्ति के जीवन के यथार्थ को चित्रित किया । जिसमें उसके जीवन में परिवेश के दबावों में बनते, बिगड़ते मानवीय रिश्तों, मूल्यों तथा संवेदनों को अभिव्यक्त किया । रचनाकार व्यक्ति के व्यापक परिवेश की विसंगतियों को जुड़े हुए चित्रित किया । कहानी को नये ढंग से उभारा जिससे कहानी के विविध रूप सामने आए । भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से भी कहानी ने नया रूप ग्रहण किया ।

स्वातन्त्र्योत्तर काल में महिला रचनाकार स्वतन्त्र रूप से लेखन करने लगी । उन्होंने विभिन्न वर्गों से सम्बन्धित अपनी कहानियों के पात्र चुना निम्न, मध्य, उच्च वर्ग । स्वतन्त्रता के बाद देश के बदलते परिवेश के प्रभाव से मनुष्य के सामने विभिन्न समस्यायें उत्पन्न होने लगी । महिला रचनाकार महिलायें होने के कारण समाज में विभिन्न वर्गों से सम्बन्धित नारी की समस्याओं का सूक्ष्म रूप से चित्रण किया ।

महिला कहानिकारों ने नारी के विभिन्न रूपों का पारि - वारिक संदर्भ में प्रेम संबंध, सामाजिक शोषण, कामकाजी महिलाओं तथा नारी की आर्थिक, मनोवैज्ञानिक नैतिक आदि समस्याओं को लेकर कहानियाँ लिखी । विशेष कर मध्यवर्ग पर कहानीकार का विशेष ध्यान गया । मध्यवर्ग में स्त्री एक आजीविका का साधन मात्र बन कर

रह गयी है । महादेवी वर्मा ने शृंखला की कड़ियाँ में कहा कि नारी में नारीत्व की सजग चेतना का जागरण जरूरी है । इसीलिए यह स्वाभाविक है कि लेखिकाओं ने अधिकांशतः नारी जीवन से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं को अपनी कहानियों में उठाया ।

सीमोन द बउवार ने एक स्थान पर कहती है कि लेखन के स्तर पर स्त्री अपनी मुक्ति तथा अस्तित्व, अस्मिता की लड़ाई स्वयं लड़ेगी क्योंकि उसकी अपनी जड़े इसमें निहित है ।

शशि प्रभाशास्त्री की " क्रोध " कहानी में पति-पत्नी के सम्बन्धों में अलगाव तथा नारी अस्तित्व के लिए संघर्ष का चित्रण मिलता है । यह कहानी " अनुत्तरित " कहानी संग्रह में संग्रहित है । कहानी की नायिका " उमा देवी " कामकाजी महिला है । वह अपने पति की हीनभावना का शिकार होती है । क्योंकि वह घर एवं बाहर का काम स्वतन्त्र रूप से करती है । पति अपनी पत्नी के कमाऊ होने को पसंद नहीं करता । पत्नी के घर देर से आने पर शंक करता है और उसे मानसिक रूप से पीड़ित भी करता है । शशि प्रभा शास्त्री ने विवाहित कामकाजी महिला के परिवार में विभिन्न समस्याओं को दर्शाती है ।

कृष्णा अग्निहोत्री :-

कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियाँ सच्चाई, ईमानदारी और गंभीर अभिव्यक्ति से जुड़ी होती है । इनका कहानी संग्रह " जिन्दा आदमी " में जीवन के कई मोड़ों को संघर्ष व पीड़ाओं से जागरूकता से समेटे हुए है । " बिखराव " कहानी में मध्यवर्ग की अविवाहित युवती का आर्थिक समस्या के कारण उम्र से पहले परिवार के दायित्व के बोझ से बोझिल चित्रण मिलता है । " " खुली राह की बन्द दराज में अविवाहित युवती की विवाह की समस्यायें तथा नैतिक मूल्यों को तोड़ती पुरानी तथा नयी पीढ़ी के बीच संघर्ष को दर्शाती है ।

मेहरुन्निसा परवेज की कहानी "साल की पहली रात " में धार्मिक बन्धनों से मुक्ति के लिए संघर्ष का चित्रण तथा " गलत पुरुष " की कहानियों में जीवन के प्रति आशावादी दृष्टि मिलती है । प्रतिमा वर्मा की कहानियों में स्त्री-पुरुष के अनिच्छा से होने वाले सम्बन्ध पर मिलती है । शिवानी कथा साहित्य में मध्य बिन्दु है जिनके द्वारा कथा परम्परा की पिछली और अगली पीढ़ी की परम्परा को पकड़ने में सहायता मिलती है । इन्होंने अपनी कहानियों में समाज के विभिन्न वर्गों से विभिन्न पात्रों को लिया है इनके पात्र परिस्थितियों एवं पृष्ठ भूमि से जुड़े रहते है इनके पात्र यथार्थ के निकट होते है ।

मणिका मोहनी की कहानी " भागीदार " में आधुनिक नारी के अस्तित्व के लिए संघर्ष का चित्रण मिलता है । " ढाई आखर प्रेम का कहानी में " लेखिका नारी अस्मिता की पहचान करवाती है ।

ममता कालिया के " प्रतिदिन " कहानी संग्रह की कहानियों में मध्यवर्गीय नारी की आशाओं, आकांक्षाओं, संघर्षों और स्वप्नों का यथार्थपरक अंकन हुआ है । इन्होंने मध्यवर्गीय भाव बोध को अपनी कहानियों का विषय बनाया है । इस वर्ग के प्रति इनकी तीखी व्यंग्य दृष्टि का सहज और तार्किक विकास उनकी जीवन दृष्टि की गतिशीलता का विकास है । नारी के प्रति परम्परागत भारतीय दृष्टिकोण को नकार कर समाज के स्वस्थ जीवन मूल्यों को आत्मसात करती हुई उन्हें नयी सामाजिक अर्थवत्ता प्रदान करती है । इनकी कहानियों का प्रस्थान बिन्दु नारी मुक्ति की आकांक्षा तथा उसका संघर्ष है ।

प्रतिदिन कहानी संग्रह में भारतीय नारी के संघर्ष एवं छटपटाहट का चित्रण हुआ है ।

निरुपमा सेवती :-

युवा कथाकारों में निरुपमा सेवती अत्याधिक चर्चित संवेदनशील लेखिका है । इनकी कहानियों में बदलते जीवनमूल्यों और मध्यवर्गीय आंतरिक संघर्षों का चित्रण मिलता है । इनकी कहानियों में गुमशुदा अस्तित्व की तलाश का सार्थक प्रयास तथा आधुनिक नारी मन का यथार्थ अंकित करने का साहस दिखाया गया है । इनकी कहानियों में आदमी विद्रोह, संघर्ष और समर्पण, बाहर का कुछ तोड़ता हुआ या भीतर ही भीतर खुद घुटता टूटता हुआ कहानीकार की सोच से युक्त मानवीय आवेग तंतुओं की सहज और अर्थपूर्ण अन्विति के साथ आकृति पाता है जो आतंक बीज कहानियों में संग्रहित है ।

इनके " कच्चे मकान " कहानी संग्रह में संग्रहित कहानियाँ वास्तविक सतह के खिलाफ व्यक्ति के आतर यथार्थ को संप्रेषित करती है । इन कहानियों की विशेषता आज की मानव विरोधी चुनौतियों के बीच व्यक्ति अनुभव के माध्यम से एक सुदृढ़ मानवीय आस्था की तलाश करना है ।

इनकी कहानी " माँ यह नौकरी छोड दो " में आर्थिक विवशता के कारण निम्न वर्ग की स्त्री अपने मालिक के शोषण को स्वीकार करती है ।

" बस्युष्टि " कहानी में मध्यवर्गीय युवती की आर्थिक मुक्ति के लिए मानसिक शोषण शिकार होने को दर्शाया गया है ।

" घातक " कहानी में मध्यवर्ग की नारी द्वारा उच्चवर्ग की झूठी प्रतिष्ठा को तोड़ने तथा अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष का चित्रण मिलता है । " चुनौती और स्वीकृति " कहानी में शोषण के विरुद्ध आवाज उठाती नारी का चित्रण मिलता है । " किवाड़ और खिड़की " मध्यवर्ग का आर्थिक विवशता के कारण अपमान, " छटपटाहट " कहानी में कामकाजी महिला का अपने पति से अधिक वेतन पाने पर पति की हीन भावना से उत्पन्न समस्यायें तथा " तलाश " कहानी में नारी मुक्ति की छटपटाहट आदि का चित्रण मिलता है ।

मृदुला गर्ग ने अपने कहानी संग्रह " कितनी कैदें में कितनी कैदें कहानी " में व्यक्ति-व्यक्ति के सम्बन्धों में विघटन, सामाजिक सम्बन्धों में टूटन, व्यक्ति की मनःस्थिति का संवेदनात्मक चित्रण, घुटन, संत्रास आदि को " कितनी कैदें में नारी सम्बन्धी परम्परागत भारतीय मान्यताओं को तोड़कर पाश्चात्य सभ्यता के आलोक में भारतीय नारी में आये बदलाव को चित्रित किया है ।

" वितृष्णा " कहानी में पति-पत्नी के बीच अलगाव को लेकर उत्पन्न मानसिक तनाव का चित्रण मिलता है । " बासंपत " कहानी में मध्यवर्ग की स्वाभिमानी वृद्धा नारी के अस्तित्व के लिए संघर्ष तथा "योग दीक्षा " कहानी में निम्न मध्यवर्गीय परिवार की अविवाहित युवती के आर्थिक अभाव के कारण परिवार द्वारा शोषण, लौटना तथा लौटना कहानी में पुरानी तथा नयी पीढ़ी के बीच आर्थिक विषमता के कारण उत्पन्न टकराहट का चित्रण मिलता है ।

सूर्यबाला के कहानी संग्रह में संग्रहित कहानी " पराजित " कहानी में दाम्पत्य जीवन में नारी शोषण का चित्रण मिलता है । कहानी के मुख्य पात्र को कम्पनी में प्रमोशन न मिलने के कारण पत्नी द्वारा अफसरों को संतुष्ट करवाने के उद्देश्य से पत्नी को मानसिक रूप से पीड़ित करता है ।

मन्नू भण्डारी की कहानियों में हास्य रस का पुट मिलता है जिसके द्वारा अनेक असफल प्रेमिकाओं को विभिन्न कोणों से आधुनिक दृष्टि मिली है । इनकी लेखनी नारी के विभिन्न रूपों पर चली है । इन्हें वर्तमान कहानी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान, मौलिक कथानक, मनोवैज्ञानिक सूझ-बूझ, शैलीगत विविधता और भाषा प्रवणता के कारण मिला । इनकी बहु चर्चित कहानियाँ है यही सच है तथा ऊँचाई । इनकी अधिकांश कहानियों का केन्द्र बिन्दु नारी है । मन्नू भण्डारी ने अपनी कहानी ऊँचाई द्वारा सेक्स सम्बन्धित प्रचलित मान्यताओं को तोड़ने का प्रयत्न किया है । इनकी " क्षय " कहानी मध्यवर्गीय

अविवाहित युवती की आर्थिक विवशता से उत्पन्न पारिवारिक शोषण के विरुद्ध संघर्ष को दर्शाती है । और " सखाने आकाश नाई " में मध्यवर्ग की अपने माता-पिता लिए आजीविका का साधन बन गयी है ।

इनकी कहानी " रानी माँ का चबूतरा " में निम्न वर्ग की नारी का आर्थिक अभाव से उत्पन्न सामाजिक संघर्ष का चित्रण मिलता है । ईसा के घर इन्सान कहानी में धार्मिक बन्धनों से मुक्ति के लिए नारी की छटपटाहट का चित्रण मिलता है । " सजा " कहानी में आत्मीयता की खोज में भावनात्मक संघर्ष को दर्शाया गया है ।

उषा प्रियंवदा की बहुचर्चित कहानी " वापसी " है जिसमें मध्यवर्ग की स्थिति एवं उसके जीवन की सूक्ष्मताओं, जटिलताओं और विडम्बना का यथार्थ चित्रण मिलता है । साथ ही आधुनिक युग में व्यक्ति के अकेलेपन एवं अजनबीपन तथा आधुनिक परिस्थितियों में पीढ़ियों की अन्तराल तथा गृहिणी द्वारा सीमित आय में परिवार का गुजारा आदि की समस्या को भी चित्रित करती है । इस कहानी के माध्यम से लेखिका यथार्थ के निकट पहुँच जाती । इनकी कहानियों में सेक्स की अभिव्यक्ति भी मिलती है । " मछलियाँ " कहानी में असफल प्रेम से उत्पन्न दमित काम का चित्रण किया गया है । सेक्स को लेकर नारी प्रति एक वस्तु की दृष्टि रही है ।

"जिन्दगी और गुलाब के फूल" कहानी में आधुनिक युग में सम्बन्धों की अपेक्षा अर्थ को अधिक महत्व दिया गया है। अर्थ को लेकर भाई-बहन सम्बन्ध में तनाव का चित्रण मिलता है। " पैरेम्बुलेटर " कहानी निम्न मध्यवर्गीय परिवार की विषम आर्थिक स्थिति को दर्शाती है। " दो अँधेरे " पति पर पत्नी का विश्वास टूटना, आर्थिक मुक्ति तथा आत्म निर्भर होने की छटपटाहट देखी जा सकती है। " नींद " कहानी में मौत से पलायन तथा जिजीविषा के लिए नारी के भावनात्मक संघर्ष का चित्रण मिलता है।

कृष्णा सोबती की कहानियों की विशेषता आधुनिक संदर्भ है। कृष्णा सोबती ने " यारों के यार तिन पहाड़ " लम्बी कहानी जो दफ्तरशाही वातावरण को दर्शाती है। उसमें जिस भाषा और मुहावरों का प्रयोग किया गया उससे हिन्दी साहित्य में हलचल मची।

एक महिला लेखिका होने के नाते दफ्तरशाही गालियों को यथावत् अपनी कहानी में निःसंकोच प्रयोग करने के साहस को लेखिका का दुस्साहस कहा जा सकता है।

" मित्रो मरजानी " (लम्बी कहानी) के माध्यम से इन्होंने यह बतलाने का प्रयत्न किया कि स्त्री को भी अपना यौगिक जीवन होता है जिसमें अतृप्ता के कारण कुण्ठा का शिकार होती है।

लेखिका ने आंख में उंगली गड़ाकर यह बताने का प्रयत्न किया है कि जीवन में स्त्री के कुण्ठित होने का यह भी एक कारण होता है ।

" ऐ लड़की " कहानी में उन्होंने नारी अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए नयी पीढ़ी को जागृत करने का प्रयत्न किया है ।

राजी सेठ का बहुचर्चित कहानी संग्रह अन्धे मोड से आगे है इनके कहानी के पात्र आमतौर से जीवन के अनुभवों के बीच की तार्किक संगति के साथ जोरे हैं ।

चित्रा मुद्गल की कहानी " बावजूद इसके " में दाम्पत्य जीवन में सम्बन्ध विच्छेद के बाद भी नारी का अस्तित्व के लिए संघर्ष का चित्रण, शून्य कहानी में पति-पत्नी के बीच तीसरे की समस्या, तेंदुल तथा " लेन " कहानियों में निम्नवर्ग की नारियों का प्रेम, आर्थिक विषमता, अन्याय एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध पात्रों का स्वर तथा " फातिमाबाई कोठे पर नहीं रहती " में वेश्याओं की समस्याओं का चित्रण मिलता है ।

मंजुल भगत की कहानियों में एक तनाव भरी असरदार बुनावट होती है । उनका कहानी संग्रह " बावन पत्ते और एक जोकर " की कहानियों की सामाजिकता के प्रति कोई अतिरिक्त आग्रह या पूर्वाग्रह नहीं है लेखिका ने गहरे लगाव के साथ अपने चरित्रों के आपसी रिश्तों और टकराव को पहचानने, दिखाने की कोशिश की है जिसमें क्रूर सामाजिक परिवेश में संत्रस्त होती मानवीय संवेदना का हम अहसास कर सकते हैं ।

इनकी कहानी " झरोखे से मुंडेर तक " में आर्थिक अभाव के कारण निम्न वर्ग की दयनीय स्थिति का चित्रण हुआ है । " तीसरा अस्तित्व " कहानी में नारी अस्मिता के लिए मूक संघर्ष का चित्रण मिलता है ।

दीप्ति खण्डेलवाल ने सम्पूर्ण नारी-जीवन को एक मूर्त ट्रेजिडी के रूप में अपनी रचनाओं में आधुनिक शैली-शिल्प और वाणी के साथ प्रस्तुत किया है । इनकी कहानी " सलीब पर " में परम्परा से चले आ रहे सम्पत्ति को लेकर नयी पीढी की पुरानी पीढ़ी के प्रति आशावादी दृष्टि का चित्रण मिलता है । " विघटन " कहानी मध्यवर्ग में आर्थिक विषमता से उत्पन्न विभिन्न पारिवारिक समस्याओं का चित्रण मिलता है ।

कुमरी अय्यर की कहानियों में मध्य वर्ग की कामकाजी महिलाओं का कार्यालय में मानसिक स्तर पर शोषण का चित्रण मिलता है । " दो किनारे " कहानी में पुरूष की प्रेम में नाटकीयता का विरोध नारी पात्र द्वारा करवाया गया तथा अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को महत्व दिया गया ।

अमृता प्रीतम की कहानियों में नारी पीड़ा अपनी पूरी गहराई से व्यक्त हुई है । उनकी कहानियाँ जीवन और प्रेम के प्रति नारी के दृष्टिकोण का एक तरह से प्रतिनिधित्व करती है । गहन अनुभूतियों से भरे उनके पात्रों में यथार्थ जीवन की धड़कनें महसूस की जा सकती है ।

" शाह की कंजरी " कहानी में धर्म एवं प्रेम पर अधिकार प्राप्ति के लिए नारी संघर्ष को दर्शाती है ।

प्रभा खेतान तीसरी पीढ़ी के कहानिकारों के अन्तर्गत आती है । समाज में नारी अस्मिता एवं अस्तित्व के लिए इनकी लेखन के स्तर पर लड़ाई जारी है ।

इनके दो कहानियाँ " आओ पेपे घर चले " और " तालाबंदी " है । आओ पेपे घर चले आर्थिक मुक्ति के लिए नारी संघर्ष को दर्शाया गया है । इस कहानी के माध्यम से प्रभा खेतान ने नारी समाज को अपने अस्तित्व एवं अस्मिता की लड़ाई के लिए आर्थिक रूप से स्वतन्त्र होने के लिए कहती है ।

हिन्दी साहित्य में महिला रचनाकारों द्वारा नारी के विभिन्न पहलुओं का सफल चित्रण करने का प्रमुख कारण उनका अपना अनुभव जगत है । इस ठोस आधार पर वे नारी की विभिन्न समस्याओं का सूक्ष्म चित्रण अपनी रचनाओं में कर पायी है । उनका अपने अस्तित्व के साथ जुड़ा अनुभव निजी अनुभव होता है ।

अतः नारी जीवन के यथार्थ को कहानी के पात्रों द्वारा अंकित करना उनके लिए सहज कार्य है। यही सहजता उन्हें यथार्थ तक पहुंचाती है काल्पनिकता एवं आदर्श रूप उन्हें यथार्थ के निकट नहीं पहुंचा पाते। कहानी के माध्यम से कहानीकार के पात्रों द्वारा व्यक्त स्वर सम्पूर्ण नारी जाति का स्वर होता है। नारी पात्रों का संघर्ष रचनाकार के निजी अस्तित्व एवं रचनात्मक अस्तित्व से जुड़ा संघर्ष होता है।

7·3· स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी – नारी संघर्ष रचनाकार पात्र के रूप में :-

बौद्धिक अपरिपक्वता, पति-पत्नी में समस्यायें उत्पन्न करती है। आज की नारी सभ्य जीवन जीना चाहती है।

कृष्णा अग्निहोत्री की कहानी " स्वाभिमानी " की नायिका " बेंती " बचपन से सुसंस्कार परिवार में पलती है। और एक अच्छी लेखिका बनती है। विवाह के बाद परिवार में पति, बेटा, बहू आदि के असभ्य व्यवहार से उसे घृणा होती है। परिवार का कोई भी सदस्य उसके विशेष व्यक्तित्व को समझ नहीं पाता बल्कि बेंती को घर के सदस्यों से यही वाक्य सुनने को मिलता है कि " आप अपने आप को क्या समझती है। " अतः परिवार वालों को बेंती के महत्व की परख नहीं होती। परिवार में

अलगाव की भावना बढ़ने लगती है । बहू अपने बच्चे के जिन्म दिन सुबह जब बच्चे को पीटती है तब बेटा विष्णु पत्नी को डांटता है और कहता है कि बच्चे को माँ को सम्भालन दिया जाय । परन्तु बहू उल्टे विष्णु को ही डांटती है कि हर समय माँ, माँ की रट लगाता है बहू कहती है कि " कम्बख्त ! बेअंतो ! जाती भी तो नहीं यहाँ से .... "

बेअंतो बहू द्वारा उपेक्षा देख तुरन्त अपनी सहेली को एक कमरा किराए के लिए फोन करती है । " बेअंतो दो सूटकेस तैयार कर बढ़ते अंधेरे में अपनी उजली देह के साथ बाहर आ गयी और अपनी पतली भीगी आवाज से उसने पुकारा " टू सीटर । "

जैसे ही वह मुड़ी, निर्मल अटैचियाँ उठा बोले, " आखिर आप अपने को क्या समझती है जी ? मैं क्या ऐसा हूँ कि पत्नी को इस उम्र में अकेले जाने दूँगा ? जब इतनी उम्र तक इस बोझे को घसीटती आयी हो तब अब क्यों छोड़े जा रही हो ? निर्मल की आँखें पानी-पानी हो गयी थी ।

बेअंतो ने चाहा था कि लम्बे समय बाद पति के कंधों पर सिर रख वह रोती रहे और निर्मल उसे बच्चों-सा दुलारता रहे, लेकिन ऐसा करना निरर्थक ही था ।

उसने आहिस्ते से कहा " किसी भी एक में स्वाभिमान व अपनी रुचि से जीने की चाह गलत नहीं .... " लेखिका कहती है और वह उस छोटे से कमरे में अकेली नये संघर्ष के लिए प्रवेश कर रही थी ।"[1]

इस कहानी में पारिवारिक मोह एवं कुसंस्कारों से मुक्त, लेखन के लिए नारी संघर्ष को दर्शाया गया है ।

समाज में लेखन के स्तर पर किसी भी नारी को जो सम्पादक की पत्नी के साथ-साथ लेखिका भी है । उसे विभिन्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है ।

चित्रा मुद्गल की कहानी " होना सम्पादक की पत्नी " इसी बात को दर्शाती है । कहानी की नायिका एक सफल लेखिका के साथ-साथ सम्पादक की पत्नी भी है । नये रचनाकार अपेक्षा रखते है कि इनके द्वारा सम्पादक तक रचनाऐं सीधे पहुँच सकती है । और उनकी रचनाओं के साथ न्याय हो सकता है ।

---

1. जिन्दा आदमी - कृष्णा अग्निहोत्री - पृ. 36.

इसी उद्देश्य से कहानी की नायिका को, एक सुसंगठित संस्था, बसन्तोत्सव के उपलक्ष्य में मनायी जा रही एक कवि सम्मेलन तथा गोष्ठी पर आमन्त्रित करती है और गोष्ठी में नये रचनाकार अपनी-अपनी रचनाएँ पढ़ते है । जिसकी प्रशंसा श्रोता एवं स्वयं लेखिका को करते देखा जाता है ।

गोष्ठी समाप्त होने के बाद लेखिका को विदा करते समय नये रचनाकार अपनी पढ़ी हुई रचनाएँ आत्मीयता के साथ उन्हें पकड़ाते हुए कहते है कि आप इन रचनाओं को सम्पादक जी को दे कर इनके साथ करवाइए । वह घर लौट कर पति को लिफाफा देती है । पति क्रोधित होते है । पत्नी के द्वारा लाई गई रचनाएँ अपने नौकर से कहानियों पर लिखे पते पर एक टिकट लगा कर नौकर को पोस्ट बाक्स डालने के लिए कहते है । नौकर के जाने के बाद सम्पादक जी ने अपने पत्नी को डाँटा कर कहा कि आइन्दा वह उनके दफ्तरी काम में दखल नहीं देगी । कहानी की नायिका कहती है " मैंने आग की लपटे बरसाते हुए अपने सम्पादक पति को क्षमांश तिरस्कार से देखा फिर गर्दन झटकर कोप भवन (अपने ही बेडरूम) में जा लेटी । इस घोर अपमान को मैं सहन नहीं कर पा रही थी कि आखिर दूसरे लोगों के सामने मेरी औकात और सामर्थ्य की पोल खोलकर मुझे अपमानित करने की क्या जरूरत है लोग यह नहीं सोचेंगे कि एक पत्नी की सम्पादिका की दृष्टि में क्या बकत है । यही सोचेंगे कि एक लेखिका का सम्पादक पति की नजर में धेले भर की भी बकत नहीं है । ऐसा लग रहा था कि मैं किसी दलदल में फँस गयी हूँ । यह क्या तमाशा है ।

इसमें मेरा क्या दोष है । काश कि मैं सम्पादक – पत्नी न होती । किसी भी पन्टू या बण्टू की पत्नी होती तो इस कदर अपमानित या ठगी तो न जाती । बुक्का मन तो यूं पदक रहा था जैसे हांडी में कोदो का अधपका भात । जी में आ रहा था कि सारे झमेलों का एक ही उपाय है या तो मैं लिखना छोड़ दूं या सम्पादक पति से तलाक ले लूं ताकि मैं लेखिका ही बनी रहूं और सम्पादक पति के प्रभामण्डल से अप्रभावित रहूं । बड़ी मुश्किल से हूं । न उगलते बनता है न निगलते । बस इतना रही हूं कि मैंने अपनी एक पढ़नी छोड़ रखी है और कानों को हाथ लगाकर तोबा कर ली है कि अब चाहे कैसा भी आमन्त्रण हो, न मैं गोष्ठी में जाऊंगी न आए दिन इन लफड़ों में फंसूंगी । आप ही सोचिए मेरी समस्या मामूली नहीं है । समझ नहीं पाई कि मैं अच्छा इसलिए बोलती और लिखती हूं कि मैं एक सजग लेखिका हूं या इसलिए कि सम्पादक – पत्नी हूं । आखिर मुझे बोलने के लिए बुलाया जाता है या रचनाएँ तौलने के लिए ।" 1

इस कहानी में नारी के लेखिका एवं सम्पादक की पत्नी होने तथा लेखन के स्तर पर मानसिक संघर्ष को देखा जा सकता है । कहानी में लेखिका द्वारा लाए गए कहानियों के लिफाफे को देख का पहले पूछते हैं कि यह क्या है । तब लेखिका कहती है —

---

1. इस हमाम में – चित्रा मुद्गल – पृ. 125 – 126.

" कहानियाँ है " मैंने उनके रोब का दबाव झटके हुए उत्तर दिया ।

" यह तो मैं देख रहा हूँ पर तुम और मुझे किसलिए दे रही हो ?

" रचनाओं के साथ न्याय नहीं होता मैं इन्हें न्याय दिलाने लायी हूँ । एक लेखिका के नाते । आपसे गुजारिश है कि आप न्याय की खातिर स्वयं इन्हे पढ़े .... अपने सहकर्मियों से न पढ़ाये । वरना इन कालजयी रचनाओं के साथ अन्याय हो सकता है । यह मैं बरदाश्त नहीं कर सकती ।" 1

इस कहानी में लेखन के स्तर पर अन्याय के विरुद्ध नारी संघर्ष को देखा जा सकता है । नये रचनाकार को अपनी रचनाओं के प्रति आशावादी दृष्टि रहती है । यदि कोई उससे यह कहे कि उसकी रचनाऐं दूरदर्शन या फिल्मों के लिए चुनी गई है । यह सुन कर वह और भी ऊँची काल्पनिक उड़ान अपने रचना संसार में भरने लगता है ।

---

1. इस हमाम में - चित्रा मुद्गल - पृ. 124.

यही भाव हमें चित्रा मुद्गल की कहानी " बावरिया " में मिलती है । कहानी की नायिका गृहणी है, पति " निगम " इंजीनियर है । कहानी की नायिका को दूरदर्शन में अभिनय करने वाले " विवेक बतरा " से ठगी जाती है । विवेक बतरा फिल्म निर्माता द्वारा फिल्मों में काम करने का प्रस्ताव पाकर बम्बई में रुकना चाहता है परन्तु बम्बई में उसका कोई सम्बन्धी या मित्र नहीं होता । विवेक बतरा एक उपाय करता है । वह कहानी की नायिका बम्बई की निवासी होने के कारण उसे पत्र लिखता है । पत्र में वह झूठ लिखता है कि नायिका की कहानियाँ दूरदर्शन एवं फिल्म के लिए चुनी गयी है । कहानी की नायिका का पति निगम जान जाता है कि उसकी पत्नी को ठगा जा रहा है । वह पत्नी को वास्तविकता से अवगत कराता है किन्तु वह पति की बात को नहीं मानती, विवेक पर विश्वास करती है । वह पति का विरोध करती है । कहती है कि — " तुम सुविधाभोगी इंजीनीयर हो न । तुम्हारे पास रचनाकार का संवेदनशील हृदय कहाँ कि जो दूसरों की परेशानी और पीड़ा को महसूस कर सके । आखिर विवेक बतरा हमारा कुछ तो लगता है । मेरी कहानी पर ही फिल्म बनाये ? कहानियों का अकाल तो नहीं पड़ा है ? "

" बेवकूफ मत तर्क मत दो । कहानी उसने स्वयं चुनी । तुम उसके पास दौड़ी नहीं गई थी । "

" ठीक मैं दौड़ी नहीं गयी थी लेकिन फिर भी यह कोई मामुली बात तो नहीं ? मेरे लेखन कैरियर में यह कितना बड़ा फ्लश प्वाईंट होगा सोंच पा रहे हो तुम । अगर आज वह कहानी दुरदर्शन पर प्रसारित कर सकता है तो भविष्य में अगर वह फिल्मों में सफल हो गया तो निर्माता-निर्देशकों को भी मेरा नाम सुझा सकता है ।

इस कहानी में हम यहाँ रचनात्मक सता स्थापित करने की कल्पना करती नारी के संघर्ष को चित्रण मिलता है । विवेक बम्बई आता है और कहानी की नायिका के घर रुकता है अपने काम से निपट कर चला जाता है । और फिर से पत्र लिखता है कि कहानी की नायिका की कहानी दुरदर्शन के अधिकारियों ने फिल्म की स्क्रिप्ट अस्वीकार कर दिया है । पत्र पढ़ कर उसे क्रोध आता है । वह मन ही मन में क्रोधित होती है । " दुरदर्शन के अधिकारियों पर रोष उबल पड़ा । दुच्चे और कम अक्ल लोग । वातानुकूलित कमरों में बैठे हुए उन्हें साहित्य की समझ है ? मशीनीकरण के इस युग में निःस्वार्थ रिश्तों के सत्य तेजी से व्यापते, व्यवसायीकरण का एहसास है ? औरत का मानसिक धरातल किस संक्रमणता से क्षत-विक्षत हो अपने अस्तित्व की पहचान के लिए संघर्षरत है । इसकी जानकारी है ।"[1]

---

1. इस हमाम में : चित्रा मुदगल - पृ. 113.

यहाँ हम रचनात्मक स्तर पर नारी के मानसिक संघर्ष को देख सकते है । जैनेन्द्र के अनुसार नारी विश्वास करती है अतः ठगी जाती है । चित्रामुद्गल की कहानी " जगरिया " की नायिका दूरदर्शन एवं फिल्म की सफल लेखिका बनने की कल्पना में, दूरदर्शन पर अभिनय करने वाले विवेक बतरा से ठगी जाती है ।

7·4· निष्कर्ष :-

राजेन्द्र बाला घोष की कहानी " दुलाईवाली " को कुछ विद्वान आधुनिक हिन्दी कहानी की पहली कहानी मानते है । स्वतन्त्रता से पूर्व कुछ महिला लेखिकायें अपने लेखन के माध्यम से भारतीयों को देश के संघर्ष के लिए जागृत किया और जेल भी गयी । प्रमुख रूप में सुभद्राकुमारी, महादेवी वर्मा, श्रीमती विजय चौहान है ।

कहानी के क्षेत्र में स्वतन्त्रता से पूर्व से आज तक तीन महिला रचनाकारों की पीढ़ियाँ आ चुकी है । जिनमें सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, श्रीमती विजय चौहान, उमा नेहरू, शिवरानी देवी, उषा देवी मित्रा, सत्यवती मलिक, होमवती देवी, तारा पाण्डेय, रत्न कुमारी, चन्द्रकिरण, सोनरिक्ता आदि है । दूसरी और तीसरी पीढ़ी के महिला कहानीकार शशि प्रभाशास्त्री , और परिवार के विरोध एवं वांछित प्रोत्साहन की कमी के कारण अधिक सक्षम नही पायी । उनकी प्रतिभा मातृत्व एवं आर्थिक विषमतायें रूकावट बनी ।

दूसरी और तीसरी पीढ़ी के महिला कथाकारों की स्वतन्त्रता के बाद नयी दुनिया रही । नारी लेखिकायें स्वतन्त्र रूप से लेखन करने लगी । उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों निम्न, मध्य, उच्च वर्ग की पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं को अपनी कहानियों का विषय बना कर यथार्थ समीप पात्रो द्वारा पहुंच कर नारी के विभिन्न रूपों द्वारा उद्घाटित किया । अधिकांश रूप में मध्यवर्ग को कहानी के विषय वस्तु के लिए चयन किया । महिला कहानिकारों ने नारी के विभिन्न रूपों में प्रेम संबंध, सामाजिक शोषण, कामकाजी महिलाओं तथा नारी की आर्थिक मनोवैज्ञानिक, नैतिक आदि समस्याओं का सूक्ष्म चित्रण अपनी कहानियों में किया । प्रतिमा वर्मा, कृष्णा अग्निहोत्री, मणिका मोहनी, मेहरु - निसा परवेज, शिवानी ममता कालिया, नामता सिंह, निरूपमा सेवती, सिम्मी हर्षिता, मृदुला गर्ग, सूर्य बाला, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियम्वदा, कृष्णा सोबती, राजीसेठ, चित्रा मुदगल, मंजुल भगत, दीप्ति खण्डेलवाल, मालती जोशी, सुमती अय्यर, नासिराशर्मा, अमृता प्रीतम प्रभा खेतान तथा मृणाल पाण्डेय, सरयू शर्मा, कुसुम अन्सल, इस्मत चुगताई, कमला सिंघवी, मंटो, प्रमिला कपूर, सुधा अरोड़ा, विनोरिता पल्लवी अलका सरावगी आदि उल्लेखनीय है ।

पहली पीढ़ी के कहानिकारों की कहानियों में आदर्श का पुट अधिक मिलता है । इस काल की नारी लेखिकायें पुरूषों से साहित्य सेवा में विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा, अध्ययन की सीमाएं, कार्यक्षेत्र में व्यापकता के अभाव, पारिवारिक उत्तर दायित्वों

समाज इनकी कहानियों में नारी अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष की चेतना मिलती है । हिन्दी साहित्य में महिला रचनाकारों द्वारा नारी के विभिन्न पहलुओं का सफल चित्रण करने का प्रमुख कारण उनका अपना अनुभव जगत है । कहानी में नारी पात्रों का संघर्ष रचनाकार के अस्तित्व एवं रचनात्मक अस्तित्व से जुड़ा संघर्ष होता है । जिसके लिए ये प्रयास कर रही है ।

x/x/x/x/ :=:=:=:=:= -*-*-*-*-* :=-:=-:=-:=-

अष्टम - अध्याय

उ प सं हा र

x/x/x/x/x/ :=:=:=:=:=:=:=: -*-*-*-*-* :=-:=-:=-

अष्टम अध्याय

उपसंहार

सन् 1947 के बाद प्रकाशित कथा साहित्य में देश के बदलते परिवेश के प्रभाव से कहानीकार की दुनिया सर्वथा एक नयी दुनिया रही है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय का शीर्षक " नारी संघर्ष अस्तित्व एवं अस्मिता " रखा गया है जिसके अन्तर्गत नारी के अस्तित्व से संबन्धित विभिन्न स्थितियों, संघर्ष की प्रक्रिया, संघर्ष के प्रस्थान बिन्दु पर प्रकाश डाला गया है । सम्पूर्ण अध्याय को एक ही शीर्षक के अन्तर्गत रखा गया है । नारी संघर्ष को उसके अस्तित्व से सम्बन्धित विभिन्न स्थितियों बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, दार्शनिक, नैतिक से जोड़ कर देखा गया है ।

नारी की यौन स्थिति को समझने के लिए उसके यौविक अस्तित्व की पड़ताल उसके प्राकृतिक तथा सामाजिक रूपों के परिप्रेक्ष्य में इस उद्देश्य से की गई है कि उसकी यौविक स्थिति उसका कितना अस्तित्व बन पायी है और विभिन्न सांस्कृतिक व्याख्याकारों द्वारा इस अस्तित्व को कितना विकृत किया गया है। प्राकृतिक रूप से स्त्री-पुरुष की शारीरिक संरचना में अन्तर है। सीमोन द बोउवार ने कहा है -- "स्त्री और पुरुष के बीच कुछ मौलिक आधार भूत भेद रहेंगे ही उसका कामनात्मक जीवन उसकी संवेदनशीलता और उसकी सेक्सुअल दुनिया के स्वाद ही अलग है।" इस अलग होने पर ही नारी का अपना यौविक अस्तित्व होता है। इस बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिए नौन्सी चाडो के विचार रखें गये उनके अनुसार "प्रकृति ने प्रजनन के उद्देश्य से प्राणी जगत में नर-मादा का भेद किया और नारी का जैविक अस्तित्व उसके मादा होने में सन्निहित है।" नर-मादा के मूलभूत भेद को जानने के लिए अनेक विद्वानों के कथनों की सहायता से प्रजननात्मक स्तर का विवेचन किया गया है। जिससे ये निष्कर्ष सामने आते है कि नर की अपेक्षा नारी का यौविक जीवन जटिल होता है और प्राकृतिक दृष्टि से नर-नारी का अस्तित्व यौन जीवन के विरोध में जाता है जिस पर किसी का कोई नियंत्रण नहीं होता, स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध प्राकृतिक दृष्टि से यौन सम्बन्ध कहलाता है, गर्भावस्था से ही नारी पूर्णरूप से पुरुष पर आश्रित होने लगी। इस प्रजननात्मक भेद के कारण ही बुनियादी श्रम विभाजन स्थापित हुआ जो नारी की यौविक स्थिति का

सर्वयुगीन सत्य है । जैविक अस्तित्व के इस मूलभूत आधारों के होते हुए भी मनोसामाजिक धरातल पर स्त्री-पुरुष का भेद इतना जटिल होता गया है कि उसे किसी भी अर्थ में प्राकृतिक नहीं कहा गया है । एक विशिष्ट सामाजिक व्यवस्था में एक विशिष्ट सामाजी - करण का ही यह परिणाम था । स्त्री के शरीर की संरचना एक अलग तत्व है और उसकी भूमिका को निर्धारित कर देना एक नितान्त ही अलग तथ्य रहा है ।

जब किसी व्यवहार को स्त्रियोचित आदि कहा जाता है तो स्त्री का अस्तित्व प्राकृतिक-परिप्रेक्ष्य में नहीं बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में उसकी अस्मिता से निर्धारित होता है । इसी अर्थ में सीमोन द बोउवार का यह वाक्य नयी सार्थकता प्राप्त करता है " स्त्री पैदा नहीं होती बल्कि उसे बना दिया जाता है ।" सामाजिक क्षेत्र में स्त्री को मात्र गृहिणी और शिशु पालिका की भूमिका दे दी गई है । इसी संदर्भ में केटमिलेट का कथन है -- " नारी को प्रदत्त सीमित भूमिका उसे जैविक अनुभवों के स्तर पर बन्दिनी रखती है ।" इस कथन से नारी की जैविक अस्मिता का रहस्य उद्घाटित हुआ है । प्राकृतिक रूप से स्त्री-पुरुष की शारीरिक संरचना के अन्तर को मूल्यांकन का प्रयास सदा-सर्वदा सामाजिक सांस्कृतिक होता रहा है परिणामतः स्त्री की मानसिकता अधिक दुर्बल होती रही है ।

शारीरिक संरचना के अन्तर को विचार का विषय बना कर प्राय: जीवन अंगों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है । यह प्रक्रिया अपने आप में ही एक विशिष्ट मनोविज्ञान की ओर ध्यान आकृष्ट करती है । मनोविज्ञान शारीरिक विकृतियों का विवेचन मानसिक धरातल पर करता है । फ्रायड का सारा मनोविज्ञान एक विशिष्ट चिकित्सकीय स्थिति का परिणाम सिद्ध हुआ है जिसके अन्तर्गत प्रथम महायुद्ध से प्रभावित रोगी स्त्री-पुरुषों का अध्ययन मिलता है अर्थात् स्त्री के सम्बन्ध में भी फ्रायड की यही धारणा रही है । तसलीमा नसरीन का कथन है " स्त्री को दुर्बल कौन समझते है । जो कहते है कि स्त्री शारीरिक रूप से दुर्बल है वे गलत कहते है वे झूठ बोलते है आज भी अगर एक नर और नारी शिशु को भरे तालाब में छोड़ दिया तो पहले जिस शिशु की मौत होगी वह नर शिशु ही होगा । यदि नारी शिशु का फेफड़ा या हृदय नर शिशु से ज्यादा शक्तिशाली है, यदि प्रतिरक्षा या जिंदा-रहने की क्षमता नारी शिशु में अधिक है तो कैसे एक झटके में यह राय दे दी जाती है कि स्त्री दुर्बल, कोमल, भीरु और लाजवंती होती है ।" नारी की मनोवैज्ञानिक स्थिति की परख करने के बाद यह तथ्य सामने आता है कि नारी-मनोविज्ञान के सम्बन्ध में मनोविश्लेषकों के सिद्धान्त एकांगी सिद्ध हुए है, जिसमें पुरुष की प्राणी रूप तथा स्त्री की नारी रूप में परिभाषा मिलती है ।

स्त्री-पुरुष की शारीरिक संरचना को अधिक महत्व देकर जो भ्रम खडे किए गये है उनका निराकरण सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टिकोणों से किया जा सकता है इसी उद्देश्य से नारी की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति की पड़ताल की गयी है ।

मनुष्य की मनुष्यता उसके सामाजिक होने में ही निहित है यही बात नारी पर भी लागू होती है । परिवार को एक सामाजिक इकाई के रूप में स्वीकारा किया गया है । परिवार को स्त्री सम्भालती है और सामाजिक जीवन को एक दिशा प्रदान करती है । अपना घर दूसरों को दिखाने की खुशी हो अथवा अपने रूप प्रदर्शन की वृत्ति इनकी प्रासंगिकता समाज में प्रशंसा पाने से जुडी है । वस्त्र, आभूषण और प्रसाधन सामग्री स्त्री की मानसिकता को जिस प्रकार प्रस्तुत करते है कि उससे सामाजिकता पुष्ट रहे प्राय: सामाजिक रीति-रिवाज भी ऐसे ही बनाए गये है जिससे स्त्री का अधिक से अधिक प्रदर्शन हो साथ ही उस पर पुरुष का शासन भी बना रहे । नारी के आत्म प्रदर्शन की इच्छा एक दिन उसके वास्तविक रूप को कुचल देती है । वह स्वयं को पुरुष की आंखों से देखते-देखते अपनी आंखों से देखना भूल जाती है । सामाजिक क्षेत्र में लगातार पुरुष द्वारा स्त्री के दमन के विरोध में स्त्री का अपनी सत्ता पुन: स्थापित करना एक प्रयत्न है ।

आज के पूँजीवादी युग में सामाजिकता बिना आर्थिक आधार के समझी नहीं जा सकती । स्त्री की सामाजिक स्थिति उसकी आर्थिक स्थिति का प्रतिबिम्ब होती है इसी को ध्यान में रख कर स्त्री की आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला गया है । परिवार में स्त्री,पुरुष पर आर्थिक रूप से निर्भर रहती है । मातृत्व या गृहिणी धर्म द्वारा स्त्री को जीवन में सम्पूर्ण परितृप्ति नहीं मिल पाती । आर्थिक रूप से स्वाधीन व्यक्ति ही इस स्थिति में होता है कि वह अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा कर सके । वर्तमान व्यवस्था में नौकरी करना आर्थिक स्वाधीनता के साथ-साथ स्त्री के लिए एक प्रकार से गुलामी ही सिद्ध हो रही है क्योंकि ये स्त्रियाँ पूरी तरह से न तो संतुष्ट रही जा सकती है और न असंन्तुष्ट ये अपने आप को बीच की स्थिति में पा रही है । अर्थशास्त्र के लिए स्त्री के श्रम को सही तौर पर मूल्यांकन करना एक जटिल समस्या रही है । आज की विज्ञापन एवं फिल्मी दुनिया के क्षेत्र में रोजगार के नाम पर नारी व्यापार की वस्तु बनी है । स्त्री की विवशता यह है कि वह आर्थिक दृष्टि से पुरुष की भूमिका निभाए और घर में स्त्री की भूमिका को जिए । परिणाम स्वरूप स्वतन्त्रता का भ्रम पालती हुई पढ़ी-लिखी और कामकाजी स्त्रियाँ भी वस्तुत: परतन्त्रता के अनुभव जगत में छटपटा रही है । प्रभा खेतान के शब्दों में वह " अन्या " है यहीं पर स्त्री की दार्शनिक स्थिति की पड़ताल करना आवश्यक हो गया है । प्रख्यात भारतीय विद्वान डॉ देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय के शब्दों में -- " पुरुषों के हाथ में निश्चित रूप से आर्थिक सत्ता पहलीबार तब आई जब जानवरों को पालतू-बनाना शुरू

किया । यह कार्य हमेशा से शिकारियों का कार्य समझा गया और ये तब शुरू हुआ जब जन जातियाँ विकसित होते-होते पशुपालक समाज में परिवर्तित होती गयी ।" विद्वानों ने कृषि को मातृसत्तात्मक व्यवस्था से जोड़ा है स्पष्टतः भारत में वैदिक और अवैदिक परम्परा का द्वन्द्व रह और डॉ॰ चटोपाध्याय ने अवैदिक परम्परा को लोकायत से जोड़ दिया । कृषि को स्त्रियों का अविष्कार माना गया किन्तु परवर्तीकाल में स्त्रियों की सत्ता बहुपत्नीक विवाह पद्धति द्वारा धीरे-धीरे घटती गई और उसकी स्थिति सदियों से आधीनस्थता की रही है । यही अधीनस्थता स्त्री का अस्तित्व रह गयी । अस्तित्ववाद की दार्शनिक शब्दावली में स्त्री को अन्या, मार्क्सवादी दर्शन में शोषक और शोषित का रूपक प्रचारित हुआ । सामाजिक संरचना में यदि स्त्री के लिए देवीरूप या दासी का मिथक प्रचारित हुआ परन्तु उसे न तो गुलाम कह कर नकारा जा सकता है और न देवी कह कर माना जा सकता है क्योंकि वह पूरी मानवता का आधा हिस्सा है । दार्शनिक दृष्टि से देखा जाए तो स्त्री की परिभाषा उसकी देह रचना को केन्द्र में रखकर की गई है । सारी भाववादी दार्शनिकता उसे अंततः गर्भ या गर्भाशय में घटा कर रख देती है । भारत में देवी या दुर्गा के सारे मिथक उसे जगत जननी या जगत माता से सम्बोधित करते हैं अतः अस्त्री के माता रूप को ही प्रधानता दी गई है और माता रूप सगर्भ होने का दूसरा नाम है ।

स्त्री दृष्टि के लिए अनिवार्य बनी रही । एक साथ अनिवार्य और अनावश्यक होने की द्वन्द्वात्मक स्थिति उसके व्यक्तित्व को कुचलती रही और वह दर्शन के प्रधान जगत से खदेड़ी जाती रही । तथा वह समाज के नैतिक बंधनों में बंधती गई । और चार दीवारी में कैद हुई । नैतिक बन्धनों में बंधी नारी की नैतिक स्थिति की पड़ताल की गई । नारी की नैतिक स्थिति किसी विशिष्ट ऐति-हासिक पड़ाव पर उपर्युक्त धारणाओं द्वारा ही गढ़ी गई है । नैतिकता समाज द्वारा प्रतिष्ठित अच्छाई एवं बुराई पर निर्भर होती है । नैतिक मूल्यों का निर्माण आदर्श समाज की कल्पना को केन्द्र में रख कर किया गया है । अत: नैतिक मूल्य सामाजिक मूल्य होते हे अपने-अपने स्वभाव से रूढ़ होकर मानव मन को रूढ़िवादी बनाते है । भारत में नैतिकता सामाजिक संरचना पर आधारित होती हे स्त्री के लिए भिन्न नैतिक मूल्य तथा पुरुष के लिए भिन्न निर्धारित किए गए है । नारी को नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिए पुरुष के आधीन होना पड़ा है । प्रत्येक युग में सामाजिक परिवर्तन के साथ स्त्री की नैतिक स्थिति में भी परिवर्तन होता रहा है ।

नारी के अस्तित्व एवं अस्मिता से सम्बन्धित विभिन्न स्थितियों की परख के बाद हिन्दी कहानी में नारी संघर्ष को समझने के लिए संक्षेप में नारी संघर्ष की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला गया है जिसके अन्तर्गत सबसे पहले संघर्ष और विद्रोह तथा संघर्ष और क्रान्ति में अन्तर जाना गया है ।

संघर्ष विद्रोह का एक प्रकार है । संघर्ष अमूर्त एवं अस्पष्ट होता है किन्तु विद्रोह नकारात्मक होता है । विद्रोह मानव का प्राकृतिक गुण है । विद्रोह की मानसिक स्थिति अधिकारों को पाने के लिए संघर्ष द्वारा आरम्भ होती है निरन्तर संघर्ष द्वारा विद्रोह सफल हो सकता है । मानव की सहनशीलता की सीमा पार होने पर विद्रोह प्रारम्भ होता है । संघर्ष विद्रोह को विद्रोह की सफलता की ओर अग्रसर करता है । क्रान्ति के लिए संघर्ष अनिवार्य है क्रान्ति सकारात्मक होती है । संघर्ष साध्य है क्रान्ति साधन है ।

संघर्ष का अर्थ " लड़ना " से ग्रहण किया गया है नारी संघर्ष का अर्थ नारी का " मानवीय अवसर प्राप्ति " तथा " अस्तित्व के लिए लड़ना " से ग्रहण किया गया है । नारी को जब अपने प्रति किये जाने वाले अन्याय या अत्याचार का बोध होता है तो उसके मन में असन्तुष्टि छा जाती है वह उस अन्याय एवं अत्याचार का विरोध करती है यही विरोध व्यक्त या अव्यक्त रूप में प्रकट होकर संघर्ष कहलाता है । अर्थात् संघर्ष के लिए उसे इन प्रस्थान बिन्दुओं से गुजरना पड़ता है ।

अन्याय या अत्याचार – बोध, असन्तुष्टि विरोध संघर्ष नारी अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष करती है समाज में एक मनुष्य के रूप में विकास की अवसर प्राप्ति उसका लक्ष्य होता है व्यावहारिक पक्ष के अन्तर्गत नारी मानवीय बनना चाहती है ।

कहानियों में नारी संघर्ष के प्रस्थान बिन्दु को समझने के लिए कुछ चर्चित कहानियों का विवेचन किया गया है जिनमें जैनेन्द्र की " पत्नी " अज्ञेय की " गैंग्रीन " (रोज़े), अमरकान्त की " दोपहर का भोजन ", राजेन्द्र यादव की " जहाँ लक्ष्मी कैद है " भीष्म सहानी की " चीफ की दावत ", कमलेश्वर की " दूसरे " सूर्यबाला की " न किन्नी न " है ।

प्रेमचन्द द्वारा हिन्दी कहानी को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई । कहानी के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद प्रेमचन्द आदि की कहानियों की चर्चा किए बिना कहानियों का क्रम प्रारम्भ नहीं होता इसी उद्देश्य से द्वितीय अध्याय का शीर्षक " हिन्दी कहानी और नारी संघर्ष - स्वातन्त्र्यपूर्व संदर्भ " रखा गया है जिसके अन्तर्गत स्वातन्त्र्यपूर्व कुछ महत्वपूर्ण कहानि कारों की नारी संघर्ष से सम्बन्धित कहानियों का विश्लेषण किया गया । जिससे नारी संघर्ष के विभिन्न आयाम बीजरूप एवं काल्पनिक रूप में उभर कर सामने आते है । कहानिकारों का उद्देश्य संघर्ष के लिए नारी में चेतनाजागृत करना रहा । देश की स्वतन्त्रता के साथ नारी भी अपनी स्वतन्त्रता की खोज करने लगी ।

"रमता" कहानी में जगदीश्वर प्रसाद शोषक वर्ग द्वारा शोषित वर्ग की हत्या के प्रयास की घटना को सामने रख कर नारी मुक्ति की कल्पना की है इस कहानी में " मारने वाले से बचाने वाला बड़ा " उक्ति सटीक है क्योंकि निम्न वर्ग की नायिका रमता जमींदार का पुत्र मंगल को यह बतलाती है कि उसके साथ किया गया षड्यन्त्र असफल सिद्ध हुआ अत: वह समाज में सामन्ती शोषण से मुक्त एवं स्वतन्त्र जीवन जी सकती है । सामन्ती शोषण से मुक्ति की कहानी यशपाल की " छलिया नारी " है जिसमें लेखक मध्यवर्ग की नायिका नन्दो का अपने पति के शोषण के विरुद्ध संघर्ष चित्रण किया है । इसमें नारी मुक्ति का उपदेश मिलता है । सुभद्रा कुमारी चौहान ने भी नारी मुक्ति की बात अपनी कहानी " मंगला " के माध्यम से की है । उनका जीवन ही संघर्षमय जीवन रहा । लेखिका कहती है कि जो नारी विवाह के बाद मुक्ति का भ्रम पालती है वह मात्र भ्रम ही होता है क्योंकि विवाह के बाद सदैव पति अपनी पत्नी को निजी सम्पत्ति समझता है । इस कहानी में पुरानी पीढ़ी तथा नयी पीढ़ी के बीच संवाद महत्वपूर्ण है । " मुक्ति " कहानी में जैनेन्द्र पति-पत्नी के बीच संवाद द्वारा नारी मुक्ति के अर्थ को समझाने का प्रयास किया है कहानी की नायिका मनोरमा द्वारा लेखक कहलवाता है कि नारी मुक्ति का व्यापक अर्थ होता है । व्यावहारिक रूप में अपनी सीमाओं में बंध कर कोई भी नारी मुक्ति की कल्पना मात्र भी नहीं कर सकती है ।

प्रेमचन्द के अनुसार साहित्य की उत्कृष्टता की वर्तमान कसौटी अनुभूति की तीव्रता और गति है । यह अनुभूति की तीव्रता ही व्यक्ति की गति या संघर्ष का उद्गम स्त्रोत है । संघर्ष परिवर्तन के लिए किया जाता है । प्रेमचन्द की दृष्टि वर्ग-संघर्ष की दृष्टि रही है अत: प्रेमचन्द के चरित्र वर्तमान स्थितियो से उदास होकर राजनीतिक एवं आर्थि अधिकारों के लिए संघर्ष करते है प्रेमचन्द की " घासवाली " कहानी में निम्न वर्ग की मुलिया द्वारा जाति एवं वर्ग के स्तर पर आर्थिक अभाव के कारण गांव के ठाकुर के शोषण के विरूद्ध संघर्ष देखा जा सकता है, जिससे ठाकुर का हृदय परिवर्तन होता है । हृदय परिवर्तन द्वारा लेखक ने सामन्तोयों की वस्तुरुप में नारी के प्रति दृष्टि को परिवर्तित करने का प्रयास किया है " अग्नि समाधि " कहानी में आलसी पति को श्रम करने का उपदेश मिलता है और साथ ही आत्म निर्भर पत्नी ही पति के आलसीपन, उपेक्षा, तथा आर्थिक शोषण के विरूद्ध संघर्ष साहस पूर्वक कर पाती है तथा इसी कहानी में दो पत्नियों का पति का प्रेम पाने के लिए संघर्ष भी देखा जा सकता है । इलाचन्द जोशी की कहानी " एक डाक्टर की फीस " में आर्थिक विषमता के कारण पति श्यामलाल अपनी पत्नी जमुना से वेश्यावृत्ति अपनाने को विवश करता है और उसकी कमाई से शराब पीता है जमुना दैहिक एवं आर्थिक शोषण के विरूद्ध संघर्ष करती है । क्रय-विक्रय कहानी में पुरुष की अवसरवादी दृष्टि के कारण नारी को दैहिक शोषण के लिए संघर्ष करते देखा गया है । और इस कहानी में अनैतिक मुल्यों के विरूद्ध नारी संघर्ष भी मिलता है ।

" पुरस्कार " बहुचर्चित कहानी में जयशंकर प्रसाद ने कृषि महोत्सव की घटना को उदाहरण रूप में रख कर यह समझाने का प्रयास किया कि नारी भी देश की रक्षा एवं प्रेम के खातीर बलिदान एवं संघर्ष करती है । सामन्ती परिवेश में राजा अपनी महानता बनाये रखने के लिए जनता को मानव अधिकार से वंचित रखता है किन्तु मधुलिका का राजा से मानव अधिकार प्राप्ति के लिए संघर्ष इसी कहानी में देखा जा सकता है । " देवरथ " कहानी में बौद्ध धर्म के नाम पर मनुष्य का जीवन समाज में कुचला जाने लगा । कहानी की नायिका सुजाता बौद्ध धर्म के आडम्बर पूर्ण पक्ष के विरूद्ध संघर्ष करती है । प्रेमचन्द की विध्वंस कहानी में सम्पत्ति पर समान अधिकार प्राप्ति के लिए नारी संघर्ष मिलता है । लेखक ने इस कहानी के माध्यम से ये बताने का प्रयास किया है कि परिवार में पति के जीवित रहने तक पत्नी का सम्मान होता है पति के देहान्त के बाद पत्नी अपनी ही संतान द्वारा उपेक्षित रह जाती है । किन्तु कहानी की नायिका फूलमती का परिवार में अस्मिता के लिए संघर्ष देखा गया है । " विध्वंस " कहानी में सामन्ती परिवेश में जमीन्दार द्वारा निम्न वर्ग की नारी भुनगी की झोपड़ी हड़पे जाने के विरूद्ध नारी संघर्ष मिलता है । राघेय राघव की कहानी " विक्षोभ " कहानी में शहर एवं गांव के परिवेश का चित्रण हुआ है कहानीकार ने इस कहानी के माध्यम से यह समझाने का प्रयत्न किया है कि आधुनिक विचारोंवाली नारी गांव के रूढ़िवादी विचारों को स्वीकार नही करती बल्कि शहरी परिवेश में ही वह अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष करती है ।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानी " अभियुक्ता " में मालिक अपनी नौकरानी से काम भावना को तृप्त करना चाहता है किन्तु नौकरानी मालिक का जब विरोध करती है तो उस पर सोने की चैन चोरी का आरोप लगाकर कानूनी करवाई करता है तब नौकरानी का अन्याय एवं अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष देखा गया है ।

अमृत लाल नागर ने अपनी कहानी " मलकाटूरिया " के माध्यम से यह बतलाना चाहा है कि नयी पीढ़ी, पुरानी पीढ़ी के प्रति आशावादी दृष्टि रखती है जब नयी पीढ़ी की आशा पूर्ण नही होती है तो दोनो पीढ़ियों में संघर्ष होता है किन्तु कहानी की नायिका मलका टूरिया का नयी पीढ़ी के विरूद्ध संघर्ष देखा गया है । " मोहमाया " कहानी में मानव ईश्वर में आस्था रखता है और मोह माया से सम्बन्धित वक्तव्य देता है परन्तु स्वयं उससे छुटकारा नहीं पाता । इस बात को स्पष्ट करने कहानी में लाला ठेकेदार की बहू का उदाहरण रखा गया है । जिसके विरूद्ध सम्पूर्ण नारी मण्डली संघर्ष करती है ।

अमरकान्त की कहानी " लड़का-लड़की " के माध्यम से लेखक ने नारी संघर्ष के यथार्थ बोध से परिचित करने का प्रयास किया है जिसमें मध्यवर्ग की युवती तारा तथा उच्चवर्ग का युवक चन्दर के बीच संवाद महत्वपूर्ण है । विश्वम्भरनाथ कौशिक की कहानी " ताई "

के माध्यम से लेखक यह समझाने का प्रयत्न किया है कि विवाह के बाद हर पत्नी " माँ " बनना चाहती है यदि वह माँ नहीं बनती है तो मानसिक रूप से कुण्ठित हो जाती है दूसरों के बच्चों के प्रति उसके मन में घृणा उत्पन्न होती है । अतः इस कहानी में मानसिक स्तर पर नारी संघर्ष के रूप को देखा जा सकता है । प्रस्तुत शोध प्रबंध के इसी द्वितीय अध्याय में उपर्युक्त कहानियों का विस्तार से विश्लेषण किया गया है ।

स्वातन्त्र्यपूर्व कहानियों में बीजरूप एवं काल्पनिक रूप में उभरकर आए नारी-संघर्ष के विभिन्न आयामों का विकास स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानियों में यथार्थ रूप में परिलक्षित होता है इसके अतिरिक्त युगानुसार कुछ नई प्रवृत्तियाँ भी देखने को मिलती है ।

प्रस्तुत प्रबन्ध के तृतीय अध्याय में हम उसके प्रतिपाद्य विषय पर आ जाते है । यह प्रतिपाद्य विषय है " स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी-संघर्ष : पुरुष सत्ता, शासन और शोषण के संदर्भ " में इस अध्याय के दो उपशीर्षक है एक, पुरुष सत्ता, शासन और शोषण के विरुद्ध नारी-संघर्ष पारिवारिक संदर्भ दो, पुरुष सत्ता, शासन और शोषण के विरुद्ध नारी-संघर्ष : सामाजिक संदर्भ । स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में दोनों संदर्भों में नारी संघर्ष देखा जा सकता है । पारिवारिक संदर्भ के अन्तर्गत पुरुष के विभिन्न रूपों पिता, पति, देवर, ससुर, भाई, पुत्र, पोता द्वारा नारी के विभिन्न रूपों पुत्री,

पत्नी, भाभी, बहू, बहन, माता, दादी आदि का पारिवारिक स्तर पर शोषण होते देखा जा सकता है जिनके विरूद्ध नारी का विभिन्न रूपों में संघर्ष मिलता है ।

सामाजिक संदर्भ के अन्तर्गत प्रेमी-प्रेमिका संबंध, देह विक्रय एवं शोषण के स्तर पर, सामन्ती परिवेश: शोषण का दायरा, नागरिक अधिकार प्राप्ति के लिए नारी-शोषण : सामन्तवाद और पूंजीवाद का गठबन्धन, नारी संघर्ष कानून और व्यवस्था के संदर्भ में, पुरूष सत्ता : कार्यालयीन परिवेश तथा पुरूष अत्याचार एवं भ्रष्टाचार आदि के विरूद्ध नारी संघर्ष देखा जा सकता है ।

स्वातन्त्र्योत्तर काल में राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विषम परिस्थितियों के दबाव में संयुक्त परिवार का विघटन होने लगा । अत्याधिक परिवर्तन पारिवारिक स्तर पर नारी-जीवन में हुआ । आर्थिक दबावों के कारण आजीविका के लिए कमाने उसे बाहर निकलना पड़ा । यहीं से नारी का अस्तित्व के लिए संघर्ष आरम्भ होता है । औद्योगिक पूंजीवादी युग में नारी पण्यवस्तु में रूपान्तरित हुई और समाज में दोहरे स्तर पर { घर, बाहर } शोषण का शिकार हुई । इस काल में व्यक्ति में आए विभिन्न परिवर्तन से कहानीकार प्रभावित हुए फलस्वरूप इनका एक ऐसा समूह का उदय हुआ जिसने कहानी को नया आयाम देना आरम्भ किया इसलिए

" स्वातन्त्र्योत्तर कहानी " शब्द का प्रयोग किया जाने लगा । इनकी कहानियों में परिवर्तित परिवेश का यथार्थ रूप में चित्रण मिलता है । विशेषकर इनकी कहानियों में मध्यवर्ग का संघर्ष उभर कर आता है ।

स्त्री-पुरुष के पारस्परिक संबंधों का पहला, आधार भूत और अपेक्षाकृत संकुचित क्षेत्र है परिवार और दूसरा अपेक्षाकृत व्यापक और समुन्नत क्षेत्र है समाज । वशिष्ठ धर्मसूत्र में लिखा है —
" पिता रक्षति कौमारे, भ्राता रक्षति यौवने रक्षति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति " [5/12, 2/13,44,45] इसका अर्थ है कुमारी अवस्था में नारी की रक्षा पिता करेंगे, यौवन में पति और बुढ़ापे में पुत्र यह श्लोक स्त्री के प्रति पुरुष की प्राथमिक भूमिका तय करता है जो कि परिवार के दायरे में सीमित है यह भूमिका है पिता, भाई, पति और पुत्र की और प्रकारान्तर से यह भूमिकायें पुरुष की सत्ता को उसके शासन, संरक्षण को स्त्री के लिए अनिवार्य बनाती है स्वाभाविक है कि शासक और संरक्षक की भूमिका शोषक में स्थान्तरित होने लगी । समाज के व्यापक क्षेत्र में आकर यही भूमिकायें वृहत्तर रूप धारण करती है अतएव नारी संघर्ष का मूलभूत आधार है पुरुष की इन विभिन्न भूमिकाओं के बहाने किए जाने वाले शोषण, अतिक्रमण और अनाचार का विरोध । इसी उद्देश्य से इस अध्ययन को दो आधारों पर प्रस्तुत किया गया है —[1. पुरुष सत्ता, शासन और शोषण के विरुद्ध नारी-संघर्ष : पारिवारिक संदर्भ 2. पुरुष सत्ता, शासन और शोषण के विरुद्ध नारी संघर्ष : सामाजिक संदर्भ] इन संदर्भों में प्रस्तुत पुरुष की विभिन्न भूमिकाओं

अर्थात स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के विभिन्न आयामों की चर्चा का विषय बनाया गया है । सर्वप्रथम स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में पारि - वारिक सम्बन्धों में पुरुष की भूमिकायें शासक, शोषक एवं संरक्षक आदि का विश्लेषण किया गया है । " राधा अनुराधा " कहानी में भीष्म साहनी ने यह समझाने का प्रयत्न किया है कि निम्नवर्ग में आर्थिक अभाव के कारण पिता / अपनी छोटी उम्र की बालिका को परिवार की आजीविका का साधन बनाता है । इस कहानी में कहानी की नायिका राधा 13 वर्ष की बालक है जिसका परिवार द्वारा शोषण दो स्तरों पर { घर, बाहर } होता है । राधा अपने पिता के शासन एवं शोषण को अच्छी तरह जानती है इसलिए वह शोषण के विरुद्ध संघर्ष करती है । दाम्पत्य जीवन में पति द्वारा शोषण के विरुद्ध पत्नी के संघर्ष का चित्रण सूर्यबाला की कहानी " पराहित " चित्रा मुद्गल की " बावजूद इसके ", " शून्य ", रवीन्द्र कालिया की " काला रजिस्टर ", " रात के अंधेरे नन्हें पांव " शिवमूर्ति की कसाईबाड़ा, कृष्णा सोबती की मित्रो मरजानी " निरुपमा सेवती की " चालाक ", उषा प्रियंवदा की " दो अंधेरे " राजीसेठ की किसके पक्ष में, मृदुला गर्ग की " पितृहन्ता " कमलेश्वर की " नौकर पेशा " आदि कहानियों में नारी शोषण के विरुद्ध संघर्ष मिलता है ।

रांगेय राघव की " गदल " तथा शिवप्रसाद सिंह की " धरातल " में भाभी का देवर के विरूद्ध, शिवमूर्ति की " तिरिया चरित्तर " कहानी में बहू का ससुर के शोषण के विरूद्ध, सृंजय की " उत्तर-ओताब " में भाई के शोषण के विरूद्ध बहन का, दीप्ति खण्डेलवाल की " सलीब पर " में माता का पुत्र के विरूद्ध, मृदुला गर्ग की " बांसफल " आदि कहानियों में दादी का पोते के विरूद्ध संघर्ष का चित्रण मिलता है ।

सामाजिक संदर्भ में निर्मल वर्मा की " अन्तर ", निरुपमा सेवती की " चुनौती और स्वीकृति " चित्रामुद्गल की " केंचुल " भीष्म साहनी की " डोरे " रांगेय राघव की " गदल " कृष्णा अग्निहोत्री की " बिलराव " आदि में प्रेमी द्वारा प्रेमिका के शोषण के विरूद्ध, तथा देह विक्रय एवं शोषण के विरूद्ध भीष्म साहनी की " अभी तो मैं जवान हूँ " आदि में नारी संघर्ष का चित्रण मिलता है । सामन्ती परिवेश में संजीव की " जलीबहू " पूंजीवादी परिवेश में " धनुष की टंकार " सामन्ती और पूंजीवादी का गठबन्धन में शिवमूर्ति की कसाई बाड़ा तथा " तिरिया चरित्तर " आदि कहानियों में नारी शोषण के विरूद्ध संघर्ष तथा भीष्म साहनी की " पिकनिक " में नागरिक अधिकार प्राप्ति के लिए, कानून और व्यवस्था के विरूद्ध कमलेश्वर की " बयान ", कार्यालयीन परिवेश में पुरूष सत्ता के विरूद्ध, सुमती अय्यर की " एक और शुरूआत ", चित्रा मुद्गल की कहानी " लेन " आदि कहानियों में अत्याचार एवं भ्रष्टाचार के विरूद्ध नारी संघर्ष देखा जा सकता है । इन संपूर्ण

कहानियों का विश्लेषण इसी [तृतीय] अध्याय के अन्तर्गत विस्तार से किया गया है। स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर पुरुष शोषण के विरुद्ध नारी-संघर्ष का उद्देश्य पुरुष द्वारा संरक्षक, शासक की भूमिका नारी शोषण में परिणत होने से है।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक " स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी : संघर्ष आर्थिक संदर्भ " इस उद्देश्य से रखा गया है कि स्वातन्त्र्योत्तरकाल में परिवर्तित विषम सामाजिक परिवेश से आर्थिक स्थिति भी प्रभावित हुई मुख्यतः नारी को निर्यात आर्थिक कठिनाइयों से जूझने को होने लगी। पुराना पितृसत्तात्मक समाज पूंजीवाद का प्रतीक रहा है क्योंकि घर की स्त्री को धन के लिए उसका मुंह ताकना पड़ता है यही भावना पुरुष को शासक बनाकर शोषित करने का भाव पैदा करती है।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में अधिकांशतः निम्नवर्ग की नारी के लिए आर्थिक अभाव के कारण रोटी जुटाना एक कठिन समस्या रही है और आलसी एवं अत्याचारी पति द्वारा उसकी कमाई छीन-कर निरन्तर शोषण का शिकार होना दूसरी समस्या है, जिसके विरुद्ध वह संघर्ष करती है निरन्तर आर्थिक कठिनाई से जूझती नारी एक दिन क्षय रोग का शिकार हो जाती है। नारी को आर्थिक अभाव के कारण अपनी संतान के उज्ज्वल भविष्य की कामना

करना कठिन होता है इसके लिए वह शारीरिक शोषण का शिकार, कामकाजी स्त्री के वेतन में वृद्धि को लेकर मानसिक स्तर पर मूक संघर्ष, अक्सर मध्यवर्ग में अविवाहित युवती को आर्थिक सहायता का साधन बनाया जाता है और उसकी भावनाओं की कोई कद्र नहीं की जाती है । माता पिता उसके प्रति मात्र संवेदना प्रकट करते है और उसका जीवन परिवार में अप्रत्यक्ष रूप में दासत्व का जीवन जीते आदि का चित्रण मिलता है ।

भीष्म साहनी की कहानी " पिकनिक, " , मन्नू भण्डारी की " क्षय " , " एखाने आकाश नाई ", निरुपमा सेवती " माँ " यह नौकरी छोड दो ", " बुद्धिमुष्टि ", राजीसेठ - " योग - दीक्षा " आर्थिक शोषण के विरुद्ध नारी संघर्ष तथा डॉ॰सुवास कुमार की " स्थानपूर्ति ", चित्रा मुदगल की " प्रतिमा बाई कोठे पर नहीं रहती " आदि कहानियों में आर्थिक विवशता के कारण नारी का वेश्यावृत्ति अपनाने का चित्रण मिलता है । उषा प्रियंवदा की कहानी " पैरेम्बुलेटर " निरुपमा सेवती की किवाड भर रोगनी " आदि कहानियों में विषम आर्थिक अभाव के कारण, अपमान बोध के विरुद्ध संघर्ष देखा जा सकता है । चित्रामुदगल की " केंचुल " में जीविका के लिए संघर्ष, दीप्ति खण्डेलवाल की कहानी " विघटन ", में आर्थिक अभाव के कारण उत्पन्न मानसिक कुण्ठा, राजेन्द्र यादव की कहानी " लकड़हारा " में अमानवीकरण, मन्नू भण्डारी की कहानी " रानी माँ का चबूतरा " में विषम आर्थिक स्थिति से उत्पन्न सामाजिक संवेदना, आर्थिक कठिनाइयों से संघर्ष अमरकान्त की कहानी

"दोपहर का भोजन," उषा प्रियंवदा की "पापतो" कहानी में सीमित आय में गृहिणी द्वारा परिवार का गुजारा, मृदुला गर्ग की कहानी "बांसफल" में आर्थिक अधिकार की पहचान के लिए नारी संघर्ष मंजुल भगत की कहानी "झरोखे से मुंडेर तक" प्रभा खेतान की "आओ पेपे घर चले" में आर्थिक मुक्ति के लिए नारी संघर्ष, निरुपमा सेवती की कहानी "तलफलाहट" में कामकाजी स्त्री का संघर्ष, कमलेश्वर की कहानी "तलाश" में आर्थिक स्वतन्त्रता के लिए नयी पीढ़ी का संघर्ष, मृदुला गर्ग की कहानी "लौटना और लौटना" आदि कहानियों में भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित नयी एवं पुरानी पीढ़ी के बीच अंतराल तथा आर्थिक अभाव से उत्पन्न नारी संघर्ष का चित्रण मिलता है। इन कहानियों का विस्तार से विवेचन इसी [चतुर्थ अध्याय] में किया गया है। आज की नारी पुरुष की पूँजीवादी दृष्टि की दासता से मुक्ति के लिए आर्थिक स्तर पर स्वतन्त्र हो रही है अब उसे पैसों के लिए पुरुष का मुंह ताकना नहीं पड़ रहा है वह आत्म निर्भर हो रही है।

प्रस्तुत प्रबन्ध के पंचम-अध्याय का शीर्षक स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी नारी: संघर्ष - भावनात्मक एवं नैतिक संदर्भ रखा गया है। इस शीर्षक के दो उपशीर्षक है 1. भावनात्मक संघर्ष 2. नैतिक संघर्ष। यह शीर्षक इस उद्देश्य से रखा गया है कि स्वतन्त्रता के बाद परिवर्तित राजनैतिक परिवेश ने जीवन मूल्यों को बदल दिया। बढ़ती महंगाई ने नारी में आर्थिक मुक्ति एवं आत्मनिर्भरताकी भावना जागृत की तथा

वह समाज में अपनी अस्मिता की पहचान के लिए संघर्ष करने लगी । नारी दास-जीवन एवं पति-शोषण के विरुद्ध लड़ने लगी । नारी मनो - विज्ञान पर अब उसका विश्वास नहीं रहा क्योंकि नारी मनोविज्ञान मानसिक शोषण करता है ।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में गृहिणी तथा कामकाजी स्त्री के घर एवं बाहर के मानसिक तनाव से उत्पन्न मानसिक संघर्ष का चित्रण मिलता है । " मिसपाल " मोहन राकेश की चर्चित कहानी है जिसमें नारी जीवन की एकान्त विडम्बना के कारण संघर्ष के पूर्व की स्थिति मानसिक असंतुष्टी को दर्शाती है । लेखक ने इस माध्यम से यह समझाने का प्रयास किया है कि व्यक्ति समाज को पलायन नहीं कर सकता । निरूपमा सेवती की " चालाक ", तलाश के बाद कहानी, उषा प्रियंवदा की " दो अंधेरे " अस्तित्व एवं अस्मिता तथा मुक्ति, जिजीविषा आदि के लिए भावनात्मक संघर्ष का चित्रण मिलता है । ये कहानीकार अपनी कहानी के माध्यम से ये कहना चाहती है कि जो स्त्री आत्मनिर्भर होने या आत्मनिर्भर होती है वह शोषण का शिकार नहीं हो पाती । फणी - श्वरनाथ रेणु की कहानी दफ्तरशाही परिवेश में नारी की मानसिक स्थिति एवं टेबुल के माध्यम से प्रेम पाने के लिए भावनात्मक संघर्ष को दर्शाती है । लेखक इस कहानी के माध्यम से यह समझाने का प्रयत्न करता है कि प्रेम कोई वस्तु नहीं होता जिसे सरलता से पा सके । भीष्म साहनी की कहानी " डोरे " में लेखक यह बतलाते है कि प्रेम पर अधिकार प्राप्ति के लिए जीवन में आये सुनहरे अवसरों को भी त्यागती है । रवीन्द्र कालिया की कहानी " पत्नी " मानसिक तनाव से उत्पन्न अलगाव एवं मूक संघर्ष को

दर्शाती है । लेखक ने इस कहानी के माध्यम से यह बतलाने की चेष्टा कि दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी में सामीप्य या निकटता आवश्यक होती है । यदि पति, पत्नी से नौकरी के कारण दूर रहता है तो दोनों की मानसिक स्थिति में परिवर्तन देखा जा सकता है । पति-पत्नी में तीसरे की समस्या गंगा प्रसाद विमल की कहानी " सम्बन्ध " में उभरकर आती है । इस कहानी में पत्नी का विवाह से पूर्व किसी अन्य व्यक्ति से प्रेम सम्बन्ध होता है । विवाह के बाद प्रेमी जब घर आता है तो पत्नी स्वतन्त्र रूप से प्रेम व्यक्त नहीं कर पाती । पति-पत्नी के बीच प्रेमी को लेकर मूक संघर्ष होता है । पति-पत्नी के बीच आयु में अन्तराल से उत्पन्न मानसिक संघर्ष रवीन्द्र कालिया की चर्चित कहानी " नौ साल छोटी पत्नी " में देखा जा सकता है । लेखक इस कहानी के माध्यम से यह बतलाने का प्रयास करता है कि पति से उम्र में छोटी पत्नी जीवन के यथार्थ को उससे छिपा नहीं सकती क्योंकि बड़ी उम्र का पति उससे अधिक अनुभवी होता है । कृष्णा अग्निहोत्री की कहानी " खुली राह पर बंद दरवाजे " में पुरानी पीढ़ी द्वारा अन्याय के विरुद्ध एवं नैतिक मूल्यों को तोड़ती दोनों पीढ़ियों के बीच भावनात्मक संघर्ष को दर्शाती है । लेखिका यह बतलाती है कि पुरानी पीढ़ी में जब पति को पत्नी त्यागती है तो वियोग में कोई एक भी अपनी संतान के भविष्य की चिन्ता नहीं करता । अमृता प्रीतम की कहानी " शाह की कंजरी " में पत्नी एवं प्रेमिका के बीच धर्म एवं प्रेम पर अधिकार प्राप्ति के लिए संघर्ष देखा जा सकता है । लेखिका इस कहानी के माध्यम से यह बतलाने का प्रयास करती है कि प्रेमिका का प्रेम में तथा पत्नी का अपने पति पर समान

अधिकार होता है किन्तु मानसिक विकृति के कारण एक दूसरे की तुलना में स्वयं को विशिष्ट समझना व्यर्थ है ।

स्वतन्त्रता के बाद राजनैतिक परिवेश ने जीवन मूल्यों को अधिक प्रभावित किया जिससे सम्पूर्ण देश का जन-जीवन अस्त-व्यस्त हुआ । व्यक्ति शंकालु, निराशा जनक होने लगा फलत: देश का चारित्रिक एवं नैतिक पतन होने लगा । मनुष्य में व्यक्तिगत स्वार्थ की भावना बढ़ने लगी जिसका चित्रण स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में उभरकर आया है । फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी " संवादिया " में कहानी की नायिका बड़ी हवेली की बड़ी बहू का परिवार के नैतिक मूल्यों को बचाये रखने मानसिक संघर्ष का चित्रण मिलता है । लेखक इस कहानी के माध्यम से यह समझाने का प्रयास किया है कि स्त्री अपने घर की प्रतिष्ठा बचाए रखने परिवार के सदस्यों के दुर्व्यवहार एवं परिवार की कठिनाइयों को समाज में व्यक्त नहीं करती । वह परिवार के नैतिक मूल्यों को बचाए रखने का प्रयत्न करती है । निरन्तर संकटों से जूझते हुए वह कभी भावुक होती है और फिर अपनी गलती पर बाद में पछताती है । कमलेश्वर की " तलाश " कहानी में नैतिक मूल्य को बचाए रखने सुमी की माँ तथा सुमी का अनैतिक मूल्य के विरुद्ध मानसिक संघर्ष का चित्रण मिलता है । इस कहानी में लेखक यह समझाने का प्रयास करता है कि आधुनिक नारी एक ओर प्रेम सम्बन्ध बनाये रखना चाहती है तो दूसरी ओर अपनी संतान के सम्मुख नैतिक मूल्य भी बचाये रखना चाहती है । उषा प्रियंवदा की " मित्रो मरजानी " कहानी सेक्स के संदर्भ में नैतिक बन्धनों को

तोड़ती है । इस कहानी के माध्यम से लेखिका यह समझाने की चेष्टा करती है कि नारी का भी अपना बौधिक अस्तित्व होता है जिसमें अतृप्ति के कारण उसकी मानसिकता कुण्ठित होती है । मन्नू भण्डारी की " ऊँचाई " कहानी की नायिका शारीरिक पवित्रता के परम्परागत मूल्यों को तोड़ती है । इस कहानी के माध्यम से लेखिका मानवनिष्ठ नैतिक बोध की अछूती ऊँचाई का स्पर्श करवाती है । मन्नू भण्डारी की कहानी " ईसा के घर इन्सान ", मेहरुन्निसा परवेज की " सात की पहली रात " में धार्मिक बन्धनों से मुक्ति के लिए नारी संघर्ष का चित्रण मिलता है । लेखिकाएँ इन कहानियों के माध्यम से यह समझाने का प्रयत्न करती है कि व्यक्ति को धार्मिक बन्धनों में बांधा नहीं जा सकता क्योंकि धर्म व्यक्ति की इच्छानुसार अपनाया जाता है । " सजा " कहानी के माध्यम से मन्नूभण्डारी यह कहना चाहती है कि निरपराध व्यक्ति को दुर्भाग्य से कानूनी सजा होती है तो उसकी मानसिकता विकृत हो जाती है । इस स्थिति में वह परिवार के हर सदस्य को दुःख पहुँचाता है । " क्षय " कहानी के माध्यम से लेखिका कहती है कि परिवार का दायित्व माता-पिता के बजाय जब संतान पर आता है तो उस दायित्व को निभाना कठिन होता है । उपर्युक्त कहानियों की विस्तृत विवेचन इसी (पंचम) अध्याय में किया गया है ।

संघर्ष समाज सापेक्ष होता है । नारी समाज में अस्तित्व एवं अस्मिता, मानवीय अवसर प्राप्ति के लिए संघर्ष करती है । इसी उद्देश्य से षष्ठम अध्याय का शीर्षक " स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी-संघर्ष-अस्तित्व एवं अस्मिता " रखा गया है । प्रभा खेतान के शब्दों में -- " भारतीय समाज में नारी की जीवन-यात्रा उसी छिन्नमस्ता देवी की भांति है । यहाँ स्त्री प्रकृति है, शक्ति है और जननी किन्तु आदि-काल से ही वह सर्वाधिक शोषित और पीड़ित भी है । उसका कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है, उसकी कोई सत्ता नहीं है और उसे कोई आजादी भी नहीं है । समाज की सारी वर्जनाएँ सिर्फ स्त्री को ही बांधती है, जबकि पुरुष उन वर्जनाओं के बंधन में कभी नहीं बंधता । यदि कभी-बंधता भी है तो जब जो चाहे उन्हें तोड फेंकता है । स्त्री कभी पिता और भाई के लिए तो कभी पति और पुत्रों के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देती है । नतीजा यह होता है कि औरत को हर क्षेत्र में हर जगह सिर्फ रोते हुए जीवन कुर्बान कर देना पड़ता है ।" स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी अस्तित्व एवं अस्मिता का चित्रण मिलता है । शिवमूर्ति की कहानी " तिरिया चरित्तर " एक निम्नवर्गीय बालिका विमली के अस्तित्व के लिए संघर्ष को दर्शाती है । लेखक इस कहानी में यह समझाने का प्रयास किया है कि जिस नारी में मेहनत की आग होती है वह अपनी रोटी के लिए कड़ी मेहनत करने पीछे नहीं हटती । अस्तित्व के लिए संघर्ष भीष्म साहनी की " रास्ता ", निरुपमा सेवती की "चालाक" मणिका मोहनी की " ढाई आखर प्रेम का ", " राघेय राघव की " गदल ", भीष्म साहनी की " पहिचान ", राजेन्द्र यादव की " भविष्य के आसपास " मंडराता अतीत ", महीप सिंह की " लोग ", मणिका मोहनी की

" भागीदार " आदि में संघर्ष का चित्रण मिलता है। स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में आर्थिक मुक्ति एवं स्वतन्त्र अस्तित्व के लिए कामकाजी स्त्रियों के संघर्ष का शशि प्रभा शास्त्री की " क्रोध ", चित्रामुद्गल की " बावजूद इसके " राघेय राघव की " गदल " आदि में चित्रण मिलता है। नारी अस्मिता के लिए शैलेश मटियानी की कहानी " महाभोज ", सुमति अय्यर की " दो किनारे " में संघर्ष देखा जा सकता है। मंजुल भगत की "तीसरा अस्तित्व," भीष्म साहनी की "अभी तो मैं जवान हूँ"। फणीश्वरनाथ रेणु की " लालपान की बेगम ", नरेश मेहता की " आबार ऐसो " आदि में नारी अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष का चित्रण मिलता है। कृष्णा सोबती की बहुचर्चित कहानी " ऐ लड़की " भारतीय परम्परागत नारी के मृत्यु और जीवन दोनों छोरों से जुड़ा संघर्ष को दर्शाती है। इस कहानी के माध्यम से लेखिका पुरानी पीढ़ी द्वारा नयी पीढ़ी को अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष करने, सचेत करवाती है। उपर्युक्त कहानियों का विस्तार से विश्लेषण इसी (षष्टम) अध्याय में किया गया है।

सप्तम अध्याय का शीर्षक " स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी संघर्ष रचनाकार के रूप में " इस उद्देश्य से रखा गया है कि हिन्दी साहित्य में महिला-रचनाकारों द्वारा नारी के विभिन्न पहलुओं का सफल चित्रण करने का प्रमुख कारण उनका अपना अनुभव जगत है। इस ठोस आधार पर वे नारी की विभिन्न समस्याओं का सूक्ष्म चित्रण अपनी रचनाओं में कर पायी है। उनका अपने अस्तित्व के साथ जुड़ा अनुभव निजी अनुभव होता है।

अतः नारी जीवन के यथार्थ को कहानी के पात्रों द्वारा अंकित करना उनके लिए सहज कार्य है । यही सहजता उन्हें यथार्थ तक पहुँचाती है काल्पनिकता एवं आदर्श रूप उन्हें यथार्थ के निकट नहीं पहुँचा पाते । कहानी के माध्यम से कहानीकार के पात्रों द्वारा व्यक्त स्वर सम्पूर्ण नारी जाति का स्वर होता है । नारी पात्रों का संघर्ष रचनाकार के निजी अस्तित्व एवं रचनात्मक अस्तित्व से जुड़ा संघर्ष होता है ।

आधुनिक कहानी का वास्तविक रूप 19 वीं शताब्दी में विकसित एवं पुष्ट हुआ । राजेन्द्रबाला घोष की कहानी " दुलाई - वाली " को कुछ विद्वान आधुनिक हिन्दी कहानी की पहली कहानी मानते हैं । देश की आजादी के लिए नारी ने पुरुष के कदम से कदम मिलाया । विभिन्न आन्दोलनों में भाग लेकर पुरुषों का साथ दिया । स्वतन्त्रता से पूर्व कुछ लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से भारतीयों को देश के संघर्ष के लिए जागृत किया और जेल भी गयी । कथा-साहित्य में आज तक महिला कथाकारों की तीन पीढ़ियाँ आयी जिनमें राजेन्द्रबालाघोष, सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, उमा नेहरू, शिवरानी देवी, उषा देवी मित्रा, सरस्वती मलिक, होमवती देवी, तारा पाण्डेय, रत्नकुमारी, चन्द्रकिरण, सौन रिक्सा आदि को पहली पीढ़ी के अन्तर्गत रखा जाता है । इनकी कहानियों में आदर्श का पुट अधिक मिलता है । कुल मिलाकर यदि कहा जाए तो इस काल की नारी, पुरुषों से

साहित्य सेवा में, विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा, अध्ययन की सीमाएं, कार्यक्षेत्र में व्यापकता के अभाव पारिवारिक उत्तरदायित्वों समाज और परिवार के विरोध एवं वांछित प्रोत्साहन की कमी के कारण महिला लेखिकाएँ उतनी सक्षम नहीं हो पायी । साथ ही मातृत्व तथा आर्थिक विषमताएँ भी उनकी प्रतिभा में रूकावट बनी ।

स्वतंन्त्रता केबाद कथाकार की दुनिया सर्वथा एक नयी दुनिया थी । नारी लेखिकाएँ स्वतन्त्र रूप से लेखन करने लगी । उन्होंने पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं के हल के लिए अपने लेखन में विभिन्न पहलुओं के रूपांकन में उपेक्षित सूक्ष्म अर्न्तदृष्टि को पकड़कर विभिन्न परि - स्थितियों को यथार्थ परख स्वार दिया है । जिनमें उर्मिला गुप्ता के अनुसार निम्न प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है । " पूँजीवादी शोषण की निन्दा पीड़ित वर्गों के प्रति संवेदना, वर्तमान सभ्यता में निहित छिद्रों का व्यंग्यपूर्ण अन्वेषण, समाज सुधार की आकांक्षा से परम्परागत लीढ़ियों पर प्रहार, शोषित नारी वर्ग के उत्थान की अकुलाहट, प्राकृतिक एवं मानसिक वातावरण का सूक्ष्म-चित्रण, व्यक्तिगत चरित्र स्खलनों एवं यौन विकृतियों का यथार्थपरक विश्लेषण, शरणार्थी समस्या, साम्प्रदायिक वैमनस्य, बेकारी, महंगाई जैसी समसामयिक राजनैतिक समस्याओं का स्वतन्त्र निरूपण अथवा प्रासंगिक उल्लेख है । " इस काल में कहानिकारों की

दो पीढ़ियाँ आयी जिन्हें दूसरी तथा तीसरी पीढ़ी के कहानी - कार कहा जाता है । जिनमें शशि प्रभा शास्त्री, प्रतिमा वर्मा, श्रीमती विजय चौहान, कृष्णा अग्नि होत्री, मणिका मोहिनी, मेहरुन्निसा परवेज, शिवानी, ममता कालिया, नमिता सिंह, निरुपमा सेवती, सिम्मी हर्षिता, मृदुलागर्ग, सूर्यबाला, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, राजी सेठ, चित्रा मुद्गल, मंजुल भगत, दीप्ति खण्डेलवाल मालती जोशी, सुमति अय्यर, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान आदि उल्लेखनीय है ।
कुछ कहानिकारों की कहानियों में नारी संघर्ष, एक रचनाकार पात्र के रूप में उभर कर आता है ।

आधार ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ सूची

	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक	संस्करण
	1	2	3	4
1.	जैनेन्द्र की कहानियाँ (आठवाँ भाग)	जैनेन्द्र	सूर्योदय प्रकाशन पूर्वोदय प्राइवेट लि. 718, दरियागंज, दिल्ली - 6.	1972
2.	जहाँ लक्ष्मी कैद है	राजेन्द्र यादव	अक्षर प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, अन्सारी मार्ग, दरियागंज नयी दिल्ली-2.	प्रथम संस्करण 1957 चतुर्थ संस्करण 1984
3.	थाली भर चाँद	सूर्यबाला	प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली - 6.	प्रथम संस्करण 1988
4.	प्रसाद ग्रंथावली	जयशंकर प्रसाद	लोक भारती प्रकाशन, 15-ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद-1, द्वारा प्रकाशित	प्रथम संस्करण 1986

	1	2	3	4
5·	अभिशाप	यशपाल	लोक भारती प्रकाशन, इला-हाबाद-1, विप्लव कार्यालय शिवाजी मार्ग, लखनऊ की ओर से प्रकाशित	सातवां संस्करण फरवरी 1977
6·	उन्मादिनी	सुभद्रा कुमारी चौहान	हंस प्रकाशन, इलाहाबाद	नवीन संस्करण 1976
7·	दिल एक हज़ार अफ़्साने	अमृतलाल नागर	राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली, द्वारा प्रकाशित	1986
8·	मानसरोवर भाग-8	प्रेमचन्द	सरस्वती प्रेस प्रधान कार्यालय 5 सरदार पटेल मार्ग, इलाहा-बाद - 5·	1977

1	2	3	4
9• जैनेन्द्र की कहानियाँ भाग-10	जैनेन्द्र	पूर्वोदय प्रकाशन 7/8 दरियागंज नई दिल्ली	1978
10• मानसरोवर प्रथम भाग	प्रेमचन्द	सरस्वती प्रेस, 2/43, अंसारी रोड, दरियागंज नयी दिल्ली-2 प्रधान कार्यालय डॉ•सरदार पटेल मार्ग, इलाहा-बाद - 1•	वर्तमान संस्करण, 1971
11• मित्र मिलन	अमरकान्त	लोक भारती प्रकाशन, 15-ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहा-बाद-1•	प्रथम संस्करण 1979
12• मेरी प्रिय कहानियाँ	इलाचन्द जोशी	राजपाल एण्ड सन्ज, काश्मीरी गेट - दिल्ली	चौथा संस्करण 1978

1	2	3	4
13. कँटीले फूल : लजीले काँटे	इलाचन्द्र जोशी	राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली	प्रथम संस्करण 1957
14. मानसरोवर भाग-5	प्रेमचन्द	सरस्वती प्रेस इलाहाबाद, वाराणसी, दिल्ली	1976
15. 11 श्रेष्ठ कहानियाँ	सं. सुरेश सिन्हा	सुमित्र प्रकाशन, सुमित्रावास, 1E/4, हेस्टिंग्स-रोड, इलाहाबाद-1	प्रथम संस्करण 1993
16. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग-1	रांगेय राघव	आलोक प्रकाशन, जयपुर	प्रथम संस्करण 1988
17. वाङ्चू	भीष्म साहनी	राजकमल प्राइवेट लिमिटेड, 8 नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-2.	प्रथम संस्करण 1978

1		2	3	4
18•	अपनी वापसी	चित्रा मुदगल	रेवती कुंज हापुड़ 245101, आवरण अवधेश कुमार	प्रथम संस्करण
19•	मित्रो मरजानी	कृष्णा सोबती	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 8, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली-2	प्रथम संस्करण 1967
20•	कच्चे मकान	निरुपमा सेवती	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23, दरियागंज, नयी - दिल्ली - 2•	प्रथम संस्करण,
21•	जिंदगी और गुलाब के फूल	उषा प्रियंवदा	भारतीय ज्ञानपीठ, बी/45-45 कनॉट प्लेस, नयी - दिल्ली - 1•	छठा संस्करण, 1978
22•	अन्धे मोड़ से आगे	राजी सेठ	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 8 नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली - 2•	प्रथम संस्करण 1979 द्वितीय संस्करण 1983

1		2	3	4
23.	उर्फ सैम	मृदुल गर्ग	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 8 नेताजी सुभाष मार्ग, नयी - दिल्ली - 2.	प्रथम संस्करण
24.	कस्बे का आदमी	कमलेश्वर	शब्दकार, 2203, गली डकौतान तुर्कमान गेट दिल्ली - 6.	दूसरा संस्करण 1982
25.	अन्धाकूप (सम्पूर्ण कहानियाँ संग्रह भाग-1	शिवप्रसाद सिंह	वाणी प्रकाशन, 4697/5-21-5 दरियागंज, नयी दिल्ली-2	प्रथम संस्करण 1985
26.	कामरेड का कोट	सृंजय	राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 2/38, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नयी - दिल्ली -110002.	प्रथम संस्करण 1993

1		2	3	4
27.	सलीब पर	दीपिका खण्डेलवाल	राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली	प्रथम संस्करण 1977
28.	मेरी प्रिय कहानियाँ	निर्मल वर्मा	राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली	तीसरा संस्करण 1977
29.	ग्यारह लम्बी कहानियाँ	चित्रा मुद्गल	प्रभात प्रकाशन चावड़ी बाजार, दिल्ली - 6.	प्रथम संस्करण 1977
30.	ज़िंदा आदमी	कृष्णा अग्निहोत्री	4114 रूपनगर दिल्ली-7.	प्रथम संस्करण 1986
31.	पटरियाँ	भीष्म साहनी	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 8 नेताजी सुभाष मार्ग, नयी - दिल्ली - 2.	द्वितीय संस्करण 1978
32.	आप यहाँ हैं	संजीव	अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. 2/36. अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - 2.	प्रथम संस्करण 1984

1		2	3	4
33.	कसाई बाड़ा	शिवमूर्ति	दिशा प्रकाशन, 138/16, त्रिनगर दिल्ली- 35	प्रथम संस्करण 1987
34.	कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ	कमलेश्वर	3/114, विश्वास-नगर, शाहदरा, दिल्ली-32.	प्रथम संस्करण 1976
35.	घटना चक्र	सुमति अय्यर	सन्मार्ग प्रकाशन, 16 यू.बी.बैंग्लो रोड, दिल्ली-7	प्रथम संस्करण 1979
36.	इस हमाम में	चित्रा मुद्गल	प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली - 6.	प्रथम संस्करण 1987
37.	यही सच है तथा अन्य कहानियाँ	मन्नू भंडारी	अक्षर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 2/3 ए अन्सारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-2.	तृतीय संस्करण 1978

1		2	3	4
38.	अन्य रस तथा अन्य कहानियाँ	सुभाष कुमार	इतिहास शोध संस्थान, भूलभुलैया रोड, महरौली, नयी दिल्ली-30	प्रथम संस्करण 1992
39.	बावन पत्ते और एक जोकर	मंजुल भगत	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23, दरिया-गंज, नयी - दिल्ली-2.	प्रथम संस्करण 1982
40.	चितकोबरा	मृदुला गर्ग	इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन के-71, कृष्णनगर, दिल्ली-51	प्रथम संस्करण 1975
41.	अच्छे आदमी	फणीश्वरनाथ रेणु	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 8 नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली-2.	प्रथम संस्करण 1986
42.	कितना बड़ा झूठ	उषा प्रियंवदा	राजकमल प्राइवेट लिमिटेड, 8, नेताजी सुभाष रोड, नई दिल्ली-2.	तृतीय संस्करण 1976

1		2	3	4
43·	गली कूचे	रवीन्द्र कालिया	और मल्होत्रा, रचना प्रकाशन, 45 ए, खुल्दाबाद, इलाहाबाद	प्रथम संस्करण 1977
44·	कोई गुस्ताख	गंगाप्रसाद विमल	राजकमल प्रकाशन, 8, फैजबाजार, दिल्ली - 6	प्रथम संस्करण 1973
45·	मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ	मोहन राकेश	1,2,3,4 राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	दूसरा संस्करण 1976
46·	सत्रह कहानियाँ	अमृता प्रीतम	भारतीय ज्ञानपीठ 18, इंस्टीट्यूशनल एरिया लोधी रोड, नयी दिल्ली-3·	प्रथम संस्करण 1985
47·	माँस का दरिया	कमलेश्वर	शब्दकार 2203, गली डकौतान, तुर्कमान गेट, दिल्ली - 6·	तीसरा संस्करण 1977

1		2	3	4
48.	एक प्लेट सैलाब	मन्नू भण्डारी	अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. 2/36, अन्सारी रोड, नई दिल्ली - 2.	--
49.	मैं हार गई	मन्नू भण्डारी	अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. 2/36, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली - 6.	अक्षर संस्करण 1973
50.	गलत पुरुष	मेहरुन्निसा परवेज	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23, दरियागंज, नयी-दिल्ली-2.	प्रथम संस्करण 1978
51.	एक श्रावणी दोपहरी की धूप (कहानी संग्रह)	फणीश्वरनाथ रेणु	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 8, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नयी दिल्ली-2.	द्वितीय संस्करण 1987
52.	जलसागर	श्री नरेश मेहता	लोक भारती प्रकाशन 15-5, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद	प्रथम संस्करण 1987

1		2	3	4
53·	पहला पाठ	भीष्म साहनी	शीर्षक प्रकाशन, गढ़ रोड हापुड़, मुद्रक,शाम प्रिन्टर्स शाहदरा,दिल्ली-32	प्रथम संस्करण 1975 द्वितीय संस्करण 1981
54·	मेरी प्रिय कहानियाँ	फणीश्वरनाथ रेणु	राजपाल एण्ड सन्ज,कश्मीरी गेट,दिल्ली	तीसरा संस्करण 1977
55·	अपना अपना सच	मणिका मोहनी	पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी जयपुर-302003	प्रथम संस्करण 1982
56·	अनुतरित	शशि प्रभा शास्त्री	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 8 नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-6·	प्रथम संस्करण 1975
57·	ऐ लड़की	कृष्णा सोबती	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 1-बी नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-2· मुद्रक-मेहरा ऑफसेट प्रेस,दरियागंज, नयी दिल्ली-2·	प्रथम संस्करण 1991

	1	2	3	4
58·	अपने पार	राजेन्द्र यादव	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2135, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली - 6	प्रथम संस्करण 1968
59·	कोल और अन्य कहानियाँ	महीप सिंह	लिपि प्रकाशन, 1, अन्सारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-2·	प्रथम संस्करण 1978
60·	टूटना	राजेन्द्र यादव	अक्षर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 2/36 अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली -2·	1977
61·	महाभोज	शैलेश मटियानी	3/114 विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-32·	1975
62·	रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ-1	रांगेय राघव	एक मात्र वितरक पंचशील प्रकाशन फिल्म कॉलोनी, जयपुर 302003	प्रथम संस्करण 1988

1	2	3	4
63. श्रेष्ठ कहानियाँ	मन्नू भण्डारी	अक्षर प्रकाशन प्रा॰लि॰2/36, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली	1977
64. कथा क्रम	सं॰डॉ॰देवेश ठाकुर	मीनाक्षी प्रकाशन बेगम ब्रिज, मेरठ	1978
65. स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी कोश – भाग-2	सं॰महेश दर्पण	अनिल पालीवाल सचिन प्रकाशन 7/34 अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली – 110002.	1988

संदर्भ ग्रन्थ सूची

हिन्दी

के

काव्य-ग्रन्थ

एवं

पत्रिकाएं

संदर्भ ग्रन्थ सूची

अंग्रेजी

संदर्भ ग्रन्थ सूची (हिन्दी)

	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक	संस्करण
	1	2	3	4
1.	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में प्रेम की परिकल्पना	विजय मोहन सिंह	जोत मल्होत्रा रचना प्रकाशन	1972
2.	स्त्री उपेक्षिता	सीमोन द बोउवार	सरस्वती विहार जी.टी. रोड, शाहदरा	1990
3.	यौन शास्त्र	यश	पुस्तक भवन	1963
4.	विवाह और नैतिकता	बर्ट्रेंड रसेल	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 8 फैज बाजार दिल्ली-6 पटना 6.	—
5.	लोकायत	देवी प्रसाद चटोपाध्याय	एस जी वसानी द्वारा मैकमिलन इंडिया लिमि. दिल्ली	प्रथम हिन्दी संस्करण 1982

	1	2	3	4
6.	साहित्य और जनसंघर्ष	शंभुनाथ	संभावना प्रकाशन, रेवती कुंज, हापुड़-245001.	प्रथम संस्करण 1980
7.	छायावाद का समाजशास्त्र	डॉ. शशि मुदिराज	परिमल प्रकाशन, 17, एम.आई.जी. बाघम्बरी आवास योजना	प्रथम संस्करण 1988
8.	साठोत्तरी हिन्दी कहानी मूल्यों की तलाश	डॉ. वासुदेव शर्मा	शारदा प्रकाशन 16/एफ.3 अन्सारी रोड नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1986
9.	समकालीन हिन्दी कहानी युगबोध का संदर्भ	डॉ. पुष्प पाल सिंह	नेशनल पब्लिशिंग हाउस 23, दरियागंज, नयी दिल्ली	प्रथम संस्करण 1986
10.	सुभद्राकुमारी चौहान की जीवनी	सुधा चौहान	साहित्य अकादेमी	प्रथम संस्करण 1981

	1	2	3	4
11·	स्वातन्त्र्योत्तर कथा लेखिकाएं	उर्मिला गुप्ता	राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली	—
12·	स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में मानव प्रतिमा	डॉ· हेतु भारद्वाज	पंचशील प्रकाशन दिल्ली	प्रथम संस्करण 1983

अन्य पत्र पत्रिकाएं

1· भाषा 1982

2· हंस मासिक पत्रिका, नवम्बर 1993

3·7 हंस मासिक पत्रिका, नवम्बर – दिसम्बर 1994

4· हंस पत्रिका मई 1993

5· हंस : औरत के हक में, अगस्त 1994

6· अतएव – अगस्त – सितम्बर, 1994

7· जनसत्ता, 11 सितम्बर 1994

8· भाषा त्रैमासिक पत्रिका, सितम्बर

9· प्रखर : फाल्गुन, 2050

10· "समीक्षा" अप्रैल – जून 1993

11· "हंस" नवम्बर – दिसम्बर 1994

12. हंस, अक्तूबर 1990

13. "साक्षात्कार" जून 1993 : पुस्तक समीक्षा

14. "साक्षात्कार : मार्च 1994

कोश ग्रन्थ

1. मानक अंग्रेजी हिन्दी कोश : सत्य प्रकाश : बलभद्र प्रसाद

2. मीनाक्षी हिन्दी अंग्रेजी कोश : डॉ. ब्रजमोहन : डॉ. बद्रीनाथ कपूर

3. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी कोश भाग - 2 : महेश दर्पण

अंग्रेजी ग्रन्थ सूची

Name of the Book	Author	Publisher	Edition
1. The Reproduction Mathering Psychoanalysis and the Sociology of Gender.	Nancy Chodorow	University of California Press	1978
2. The Dialectic of Sex	Schulmith Firestone	Women Press	1979
3. Theory of Sexual Politics	Kate Millett	Double Day	1970
4. Sex Gender and Society	Annaockley	Maurice Temple Smith Ltd.	1972
5. Feminine Psychology	Karen Horney	Dubl rout ledge & Keganpaul U.K.	1967